83

Jyotish Sar

a

Jahangirabad
Bulandshahr
(U. P.)

आर. के. विद्या
डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट
अशोकनगर
आगरा

योगफल ५१
करणफल .... ,,
राशि फल ५२
होराफल .... ,,
लग्नफल .... ,,
ग्रहोंका फल ५३
रक्तफल .... ,,
कालफल .... ,,
पहिने वस्त्रोंका फल ५४
रजस्वलाधर्म .... ,,
गर्भाधान मुहूर्त ५५
ऋतुकी १६ रात्री .... ,,
तिथिवार मुहूर्त ५६
नक्षत्र.... .... ,,
गर्भिणीपुंसवन ५७
वारफल .... ,,
सीमन्तोन्नयनविष्णुबलि ५८
पक्षछिद्रातिथि .... ,,
मासेश्वरज्ञानमाह .... ,,
गर्भिणीधर्म ५९
गर्भिणीप्रश्न .... ,,
प्रसूतिस्थान प्रवेशन .... ,,
प्रसूतिकालका प्रश्न ६०
तिथिगंडान्त .... ,,
लग्नगंडान्त ६१
नक्षत्रगंडान्त .... ,,
जातक .... ,,
जन्मकालकाशुभाशुभ ६२
गंडान्तकाल .... ,,
कृष्णचतुर्दशीका फल .... ,,
अमावास्याके फल .... ,,
दिनक्षयादितिथिफल .... ,,
ज्येष्ठानक्षत्रका फल ६३
मूलका फल .... ,,
जन्मकालमें मूलनक्षत्र कहां है .... ,,

तिसका ज्ञान ....
आश्लेषा नक्षत्रका नराकारचक्र ....
जन्मकालके ग्रहोंका फल ....
पुरुषजातक कोष्टक ....
जन्मकालमेंबालककेमृत्युकारकग्रह ....
जन्मकालमें स्त्रीकेमृत्युकारकग्रह ....
पराक्रमी ग्रह ....
अपराक्रमी ग्रह ....
जातिभ्रंश कारक ....
माता पिताके नाशक.... ....
मृत्यु कारक ....
ग्रहोंकी दृष्टि.... ....
ग्राहोंकाउच्चत्व व नीचत्व ....
जन्मलग्नका फल ....
स्त्रीजातक ....
कोष्टक ....
अष्टोत्तरीकी महादशा ....
संख्याका क्रम ....
अंतर्दशालानेका क्रम ....
कोष्टक.... ....
विंशोत्तरी महादशाऔर अंतर दशा....
दशाओंकी भोक्तृवभोग्यकी रीति ....
विंशोत्तरीक्रम कोष्टक ....
महादशा अंतर्दशाफल ....
रविकी दशा ....
चंद्रकी दशा ....
भौमकी दशा ....
राहुकी अंतर्दशा ....
गुरुकी अंतर्दशा ....
शनिकी अंतर्दशा ....
बुधकी अंतर्दशा ....
केतुकी अंतर्दशा ....
शुक्रकी अंतर्दशा ....
योगिनी दशा क्रम ....
वर्ष संख्या ....

योगिनी दशाको कोष्टक ८३
अंतर्दशाका फल .... ,,
वर्षदशा ८४
सूर्यकी दशाफल ८६
चंद्रकी दशा.... .... ,,
मंगलकी .... ,,
बुधकी .... ,,
शनिकी .... ,,
गुरुकी.... .... ,,
राहुकी .... ,,
शुक्रकी .... ,,
नित्यानित्यदशाकाप्रत्य० .... ,,
दूसरा मत ८७
गोचरप्रकरण ८८
द्वादशभवनके .... ,,
जन्मके चंद्रमामें पांच .... ,,
गोचरचक्र ८९
वेधचक्र .... ,,
जन्मचन्द्रमामे पांचवर्जनीय ९०
नेष्टस्थानके अनुसारचन्द्रफल .... ,,
नेष्टस्थानके अनुसारदान ९१
वारोंके अनुसार दान .... ,,
ग्रहोंकेदान और जप.... .... ,,
कोष्टक ९२
ग्रह पीडा निवारणार्थ .... ,,
जातकर्म ९३
नामकर्म .... ,,
नामकाअवकहडाचक्र .... ,,
कोष्टक ९४
मंचकारोहण .... ,,
पालनेका मुहूर्त ९५
दुग्ध पान .... ,,
तांबूल भक्षण.... .... ,,
सूर्यावलोकन ९६
कर्णवेध ....
भूमिमें बैठना ९६
अन्नप्राशन मुहूर्त .... ,,
चौल कर्म मुहूर्त ९७
विद्यारंभ .... ,,
यज्ञोपवीतका मुहूर्त्त.... .... ९८
मासादि मुहूर्त्त .... ,,
वर्ष संख्या .... ,,
गुरुबल .... ,,
गलग्रह तिथि ९९
शूद्रादिका संस्कार.... .... ,,
विवाह प्रकरण .... ,,
विवाह समय प्रश्न.... .... ,,
वर्ष प्रमाण.... ....१००
मंगलविचार १०१
भौम परिहार .... ,,
ज्येष्ठविचार १०२
कन्यालक्षण .... ,,
वरलक्षण .... ,,
वरदोष १०३
अस्तोदय .... ,,
अस्त और उदय काल .... ,,
अस्तमें वर्जनीयकर्म .... ,,
विवाहे वर्जनीय १०४
मूलादि जन्मनक्षत्रका द्रोष .... ,,
जन्मनक्षत्रादिवर्ज्य .... ,,
वर्षसारणी १०५
वर्षप्रमाण १०६
गुरुचंद्रबल .... ,,
गुरुका फल .... ,,
गुरु अनुकूल करनेका .... ,,
अष्टमैत्रीज्ञानम् .... ,,
वर्गादिज्ञान १०७
योनि .... ,,
वश्यावश्य .... ,,
कोष्टक १०९

नाडी	११०
नवपंचक	,,
मृत्युषडष्टक	,,
प्रीतिषडष्टक	,,
द्विर्द्वादश	,,
चतुर्थसप्तमादि	,,
वश्यावश्ययो०	१११
ग्रहोंकाशत्रुत्वमित्रत्व	,,
ताराके कोष्टक	११२
योनिको कोष्टक	११३
ग्रहोंका कोष्टक	११४
गुणोंका कोष्टक	,,
नाडीका कोष्टक	,,
सत्कूटअसत्कूटकोष्टक	,,
कोष्टक	११५
वर्णादिकका फल	,,
वैरयोनिका फल	,,
गणोंका फल	,,
कूटफल	११६
नाडीफल	,,
पार्श्वनाडी	,,
असत्कूटविचार	,,
दुष्ट कूटोंका दान	११७
विवाहके उक्तनक्षत्र	,,
एकविंशतिमहादोष	,,
कोष्टकानि	११८
दोषलक्षण	१२०
कर्तरीदोष	,,
वधूवरकी राशिमे अष्टमलग्नवर्ज्य	,,
दुष्टमुहूर्त्तकथन	,,
यामार्द्धादिक कथन	,,
कोष्टक	१२१
लत्तादोष	,,
ग्रहण तथा उत्पात	,,
पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र	,,
एकार्गलदोष	१२२
चंडायुध	,,
पंच शलाका यंत्र	,,
पंचसप्तशलाका यंत्र	,,
क्रांतिसाम्य चक्र	१२३
जामित्र दोष	,,
चरत्रयदोष	,,
तिथि अनुसार वर्जित लग्न	१२४
दोषनिवारण	,,
लग्नमुहूर्त	,,
राश्युदय	,,
लग्नकी घटिकाओंकी संख्या	,,
प्रतिदिवस भुक्तफल	,,
उदयास्त लग्न कथन	१२५
लग्नके उक्त अंशदेनेका क्रम	,,
तात्कालस्पष्ट सूर्य लानेका साधन	१२६
उदाहरण	,,
सूर्यकी गति	[illegible]
स्पष्ट रविके उत्तर	,,
अभुक्तदिवसके उदाहरण	१२७
अयनांशलानेका क्रम	,,
लग्नसें इष्ट काल लानेका क्रम	१२८
भोग्यभुक्तसे इष्टकाल लानेका क्रम	,,
उदाहरण	१२९
रविके भोग्यकाल लानेका क्रम	,,
लग्नसें भुक्तकाल लानेका क्रम	,,
इष्ट काल समयका तत्काल सूर्य	१३०
इष्ट काल	,,
भुक्तभोग	,,
इष्ट घटीसे लग्नलानेका	१३१
सूर्य और लग्न एकराशिमे हों तो इष्ट लानेका क्रम	,,
लग्नके शुभाशुभ ग्रह	१३४
षड्वर्ग शुद्धिजाननेका क्रम	१३५
त्रिंशांशादि कथन	,,

आदौ ग्रह ज्ञानं	....१३५	ग्रहोंके नाम	....१४६
होरा कथन....	.... ,,	ग्रहोंके नामलानेकाप्रकार	.... ,,
द्रेष्काण कथन	.... ,,	अंशलानेकाप्रकार	.... ,,
सप्तमांस	....१३६	ग्रहोंके भाग	.... ,,
लग्नका नवांश	.... ,,	ग्रहोंके द्वार....	.... ,,
द्वादशांश	....१३७	ग्रहोंके स्थानोंकीयोजनाकाप्रकार	.... ,,
विषम त्रिंशांश	.... ,,	अल्प दोष....	....१४७
समत्रिंशांश	....१३८	ग्रहारंभ चक्र	.... ,,
षड्वर्ग जाननेका	.... ,,	ग्रहआरंभकेमास	.... ,,
उक्तांश	....१३९	गृहारंभके मासोंका फल....	.... ,,
लग्नांशफल	.... ,,	मास प्रवेश सारणी	....१४८
लग्नवर्गोत्तमलक्षण	.... ,,	दिशानुसार ग्रहोंका मु०	....१४९
गोधूललग्नकाकथन....	....१४०	गृहारंभके नक्षत्र	.... ,,
वधूप्रवेश	.... ,,	वृषचक्र	.... ,,
उक्तमासादि	.... ,,	शिलान्यास	.... ,,
नूतन पल्लव धारण....	....१४१	शेषोंके मुख	....१५०
गंधर्वविवाहमुहूर्त्त	.... ,,	दुष्ट योग	.... ,,
दूसरेमत अनुसार	.... ,,	कर्म चक्र	.... ,,
दत्तक पुत्रलेनेका मुहूर्त	.... ,,	स्तंभ चक्र....	....१५१
वास्तुप्रकरण	....१४३	देहलीका मुहूर्त	.... ,,
ग्रामादि अनुकूल....	.... ,,	द्वार चक्र	.... ,,
ग्रहबल	.... ,,	शांतिका अग्निचक्र	....१५२
द्वारशुद्धि	.... ,,	गृहके मुखमें आहुति	....१५३
ग्राम अनुकूल	.... ,,	गृह प्रवेशका मुहूर्त्त	.... ,,
जातक जाननेका क्रम	.... ,,	कलश चक्र	....१५४
वर्गोंके स्वामी	.... ,,	वामार्कलक्षण	.... ,,
काकिणी	.... ,,	शुभाशुभ ग्रह और लग्न	.... ,,
चंद्रमाके मुखजाननेका विचार	....१४४	गृहारंभीलग्न शुद्धि....	.... ,,
आयादि साधन	.... ,,	अशुभयोगोंकालग्न....	.... ,,
क्षेत्र फल	.... ,,	आयुष्य प्रमाण	....१५५
आयोंके नाम	.... ,,	पृथ्वी शोधनेका प्रकार	.... ,,
वर्ण अनुसार आय....	.... ,,	प्रश्न अक्षर फल	....१५६
आयोंके फल	....१४५	यात्रा प्रकरण	....१५७
नक्षत्र अनुसार व्यय साधन	.... ,,	शुभाशुभ फल	.... ,,
ग्रहोंकी राशि	.... ,,	घातचंद्र निर्णय	....१५८

घातप्रकरणम्	१५७
काल चंद्र	,,
तिथि परत्व वर्जितलग्न	१५८
यात्राके नक्षत्र	,,
मध्यनक्षत्र	,,
वर्ज्यनक्षत्र	,,
प्रयाणमें शुभाशुभवार	१५९
होराकथन वारसहित	,,
उत्तम प्रश्न न होयतौ	१६१
वारानुसार वस्त्रधारण	,,
नक्षत्र तिथिवार अनुसार दिशा शूलवर्ज्य....	,,
शूल दोषनिवारणार्थ पदार्थ भक्षण	१६२
कुंभमीनके चंद्रमें वर्जित	१६३
सन्मुख चंद्रविचार	,,
दिशानुसार सन्मुखचंद्र	,,
काल वेलाविचार	,,
योगिनी वास	,,
वारानुसार काल राहुका वास	१६४
क्षुधित राहु....	,,
काल कहांहै तिसकाज्ञान	१६५
पंथा राहु चक्र	,,
धर्मार्थकाम मोक्ष मार्गके फल	१६६
पंथा राहु कर्म करनेयोग्य....	१६८
गर्गादिकोंका मुहूर्त्त	,,
शुभाशुभ वाहन	,,
अंक मुहूर्त्त	१६९
भ्रमणाडल मुहूर्त्त	,,
हैवर मुहूर्त्त	१७०
घवाड मुहूर्त्त....	,,
वार अनुसार स्वर शकुन	,,
वार अनुसार छायाशकुन	,,
काक शब्द शकुन....	१७१
पिंगल शब्द शकुन....	,,
छिकानुसार पद छाया	,,
छिका शकुन	,,
पल्ली शब्द शकुन	१७२
पल्ली पतन और सरठावरोहण	,,
अंग स्फुरण	१७३
स्त्रियोंका अंगस्फुरण	१७५
नेत्र स्फुरण....	,,
त्रिशूल यंत्र....	,,
गमनकी लग्न	१७६
द्वादशस्थानोंके अनुसार	१७७
गमन लग्नमें ग्रहबल	१७९
प्रस्थान रखना	१८०
प्रस्थानकितनेदिवस	,,
प्रस्थानके स्थानके विचार	,,
प्रस्थानके दिवसमें वर्ज्य पदार्थ	,,
मात्स्योक्तशकुन	,,
दुष्ट शकुन दोष निवारण	१८२
गमन कालमें उत्तमशकुन	,,
शिवाद्विघटी मुहूर्ताः....	१८४
शिवालिखितं	१८६
गोरखनाथ कृत यात्रामुहूर्तारंभः	१९१
गोरक्षमते तिथिचक्र....	१९२
आनंदादि शुभाशुभयोग	१९३
उनोंका कोष्टक	१९४
चरयोग	१९५
दासदासीलेनेका मुहूर्त्त	१९६
गवादि पशुलेनेकामु०	१९७
अश्वमोललेनेकामु०....	,,
हाथीमोललेनेका मुहूर्त्त	१९८
शिबिकारोहण चक्र मुहूर्त्त....	,,
छत्रचक्र	१९९
मंचक चक्र	,,
शरसहित धनु चक्र....	,,
रथ चक्र	२००
तिलोंकी घानीकरनेकामु०	,,
उखोके रसकाढनेकामु०	,,
कृषिकर्मका मुहूर्त्त	२०१
हल चक्र	,,

नौका बनाने व जलमें उतारनेका मुहूर्त २०२
नौका चक्र.... .... ,,
लग्न और ग्रहबल .... ,,
नौका स्थापनेका गृह २०३
दीपिका चक्र .... ,,
कूप चक्र .... ,,
बागलगानेका मुहूर्त्त २०४
सिक्काचलनेका मुहूर्त २०५
प्रश्न प्रकार .... ,,
तिथ्यादि संयुक्त प्रश्न .... ,,
आत्मछाया प्रश्न .... ,,
पंथा प्रश्न .... ,,
कार्याकार्य प्रश्न २०६
अंक प्रश्न २०७
नवग्रहोंका यंत्र .... ,,
वार नक्षत्र युक्त पंथा प्रश्न .... ,,
नष्टवस्तु प्रश्न .... ,,
गर्भिणी प्रश्न .... ,,
मुष्टि प्रश्न .... ,,
लग्नसे मनचिंतित प्रश्न २०८
संज्ञानुसार लग्नोंके० ....२०९
अंक प्रश्न .... ,,
रोगी प्रश्न .... ,,
केवल लग्नसे प्रश्न २१०
मेघकाप्रश्न .... ,,
जल लग्न .... ,,
मेघनक्षत्र २११
स्त्रीनपुंसक पुरुष न० .... ,,
सूर्य व चंद्र नक्षत्र सं० .... ,,
धान्य प्रश्न .... ,,
पशुके विषयमें प्रश्न २१२
राज्य भंगादि योग्य २१३
सूर्य तथा चंद्र परिवेष अर्थात् मंडलका फल .... ,,
उत्पातोंका फल .... ,,
छायाबल यात्रा २१३
वायुपरीक्षाकथन २१४
वर्षनिकालनेका प्रकार २१५
तिथिबनानेका क्रम २१६
नक्षत्र लानेका क्रम.... .... ,,
ग्रह चालन क्रम .... ,,
ग्रह स्पष्टीकरण .... ,,
भयातभभोगबनानेकी रीति.... ....२१७
चन्द्र स्पष्ट क्रमः .... ,,
लग्नसाधनम् .... ,,
मुंथा २१८
पंचाधिकारी .... ,,
दृष्टिक्रमः .... ,,
स्पष्टार्थचक्रम् २१९
त्रिपताकी चक्र २२०
वेधविचार .... ,,
मुद्दादशा २२१
मुद्दादशाचक्रं .... ,,
मासबनानेका क्रम .... ,,
ग्रहचक्र प्रकरण २२२
सूर्य चंद्र भौम कोष्टक २२३
बुध .... ,,
गुरु .... ,,
शुक्र .... ,,
कोष्टक २२४
शनि, राहु.... .... ,,
केतु २२५
कोष्टक .... ,,
जन्म नक्षत्र कहां पडाहै तिसकाज्ञान.... ,,
लग्न शुद्धि वा पंचकज्ञान २२६
वारोंमें पंचकवर्जित.... .... ,,
दिन मान रात्रि मान.... ....२२७
दिवस कितना चढाहै .... ,,
रात्रि कितनी गई .... ,,
अंतरंग बहिरंग नक्षत्र .... ,,
सूतिका स्नान .... ,,

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ज्योतिषसारः ।

(भाषाटीकासमेतः)

तत्रादौ मङ्गलाचरणश्लोकाः—

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥
अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान् मुनीन् ॥ १ ॥
नानाग्रन्थान् समालोक्य दैवज्ञानां च तुष्टये ॥
कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टीका—ग्रंथके निर्विघ्न परिसमाप्तिकेलिये प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करके और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानको नाशकरनहारी ऐसी जो सरस्वतीजी ताको नमस्कार करके और गर्गाचार्य, लल्ल, वसिष्ठ, नारद इत्यादिक जो ज्योतिश्शास्त्रके प्रवर्त्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके और सूर्यसिद्धांतादिक नाना प्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करके ज्योतिर्वित्के संतोषकेलिये और बालकोंको थोडेमें मुहूर्त्तादिकका ज्ञान होय इसकारण अत्युत्तम ज्योतिषसारनामक ग्रंथको करते भये ॥ १ ॥ २ ॥

शकप्रकरणप्रारंभः ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम् ।

शकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हृते ॥ शेषाः
संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका—शालिवाहनशकमें जिस संवत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीतिहै कि, शककी संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावै और ६० का भाग देय जो शेष बचै वही संवत्सरका नाम जा[illegible] ३ ॥

संवत्परिज्ञानम्।

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका-जो शालिवाहनके शकमें १३५ मिलावै तो वही विक्रम संवत् होजाय जो रेवानदीके उत्तरतटमें संवत् नामसें प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

संवत्सरोंके नाम।

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका-संवत्सरके अंकोंमें ९ युक्त करे और ६० के भाग लेनेसे जो शेष रहै सो प्रभवादि संवत्सर जानना. उदाहरण जैसे १९३५ में ९ मिलाये तो १९४४हुए. अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहे इसकारण इस संवत्सरका नाम विकृतिनाम जानना चाहिये ॥ ५ ॥

प्रभवो विभवःशुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैवच ॥ ६ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ७ ॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ८ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ९ ॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादीच आनन्दो राक्षसो नलः ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ११ ॥

संख्या	नामानि	नामानि	सूर्य	देवी	देवता
१	चैत्रमास	मधुः	वेदांगः	रमा	विष्णुः
२	वैशाखमास	माधवः	भानुः	मोहिनी	मधुसूदनः
३	ज्येष्ठमास	शुक्रः	इन्द्रः	पद्माक्षी	त्रिविक्रमः
४	आषाढमास	शुचिः	रविः	कमला	वामनः
५	श्रावणमास	नभाः	गभस्तिः	कांतिमती	श्रीधरः
६	भाद्रपदमास	नभस्यः	यमः	अपराजिता	हृषीकेशः
७	आश्विनमास	इषः	सुवर्णरेताः	पद्मावती	पद्मनाभः
८	कार्तिकमास	ऊर्जः	दिवाकरः	राधा	दामोदरः
९	मार्गशीर्षमा.	सहाः	मित्रः	विशालाक्षी	केशवः
१०	पौषमास	सहस्यः	विष्णुः	लक्ष्मी	नारायणः
११	माघमास	तपाः	अरुणः	रुक्मिणी	माधवः
१२	फाल्गुनमास	तपस्यः	सूर्यः	धात्री	गोविन्दः

वार अनुसार मास फल ।

पञ्चार्कवासरे रोगाः पञ्चभौमे महद्भयम् ॥ पञ्चा-
र्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥ ३२ ॥

टीका—एक महीनामें पांच रविवार पडैं तो रोग उत्पन्न होय और ५ पांच भौमवार पडनेसे अधिक भय उपजे, और ५ शनिवारसे दुर्भिक्ष होय और शेष वार ५ पडै तो वे शुभदायक होय ॥ ३२ ॥

पक्ष ।

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥ पूर्वस्तु
दैवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपञ्चमीतः ॥ ३३ ॥ आदौ
शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित् कृष्णेपि मासके ॥ ३३ ॥

टीका—शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णमासीतक शुक्लपक्ष और वदीप्रतिपदासे अमावस्यातक कृष्णपक्ष होताहै शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका

होताहै ॥ ३३ ॥ दूसरा भेद-शुदी पंचमीसे लेकर वदी ५ तक शुक्लपक्ष जानिये पहिले शुक्लपक्ष तदनंतर कृष्ण जो अमावास्याको मास पुरा होता हो तो प्रथम कृष्णपक्ष तिसके पीछे शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमाको मासांत हो तो ये दोनों पक्ष देश अनुसार प्रचलित हैं ॥ ३४ ॥

अधिक मास।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ॥ घटि-
कानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ३४ ॥

टीका-३२ महिनें १६ दिवस ४ घडी वीतजानेपर्यंत अधिकमासका संभव होताहै.

शाके बाणकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते ।
शेषा वह्निमधौ च माधवशिवे ज्येष्ठे वरे चाष्टके ॥
आषाढे नृपतौ नभश्च शरके भाद्रे च विश्वांशके ।
नेत्रे चाश्विनकेऽधिमाससमुदिते शेषेऽन्यके स्यान्नहि ॥ ३५ ॥

टीका-वर्तमान शाकके अंकमें ९२५ हीनकरो और शेष अंकमें १९ का भागदो जो शेष ३ रहैं तो अधिक चैत्रमास जानना-और ११ शेष रहैं तो वैशाख और जो ००। ०९ बचैं तो ज्येष्ठमास अधिक होगा और जो १६ शेष रहैं तो आषाढ अधिक होगा और जो ५ बचैं तो श्रावण अधिक जानना और जो १३ शेष रहैं तो दो भाद्रपद होंगे-और जो२शेष रहै तो आश्विनमास की वृद्धि होगी और अंक शेष रहनेसे कोई मास अधिक नहीं जानना ॥ ३५ ॥

क्षयमास।

असंक्रांतिमासोधिमासःस्फुटंस्याद्द्विसंक्रांतिमासः क्ष-
याख्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः
स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ ३६ ॥

टीका-जो दो अमावास्याके बीचमें सक्रांति न होय तो वह अधिकमास होताहै और जो दो अमावास्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रांति होय तो क्षय-मास जानना और जो कार्तिक आदि ३ मास क्षय होते हैं और जिस संवत्में क्षयमास होगा उसी संवत्में अधिकमास २ होगा इन सब श्लोकोंका आशय ग्रहणके सूर्य चंद्रमाका स्पर्श मोक्ष सहित नीचे चक्रोंमें देखलेना चाहिये॥ ३६॥

संक्रांति अनुसार ऋतु।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात् षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः॥
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः॥ १८॥

टीका—मकर आदि लेकर दो राशि सब सूर्य भोगतेहैं तब एक ऋतु होती है उसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगतेहैं उससे ६ ऋतु होतीहैं॥ १८॥

तथा मतांतरं राशि।

चैत्रादि द्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्दतवश्च षट्॥
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्येच कर्मणि॥ १९॥

टीका—चैत्रादिक दोमासमें १ ऋतु इसप्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतु होतेहैं सो दक्षिणदेशमें देव पितृकर्ममें प्रसिद्ध है॥ १९॥

१ मकर २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंतऋतु २	९ कन्या १० तुला	शरद्ऋतु ५
५ वृषभ ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमंतऋतु ३

मतांतरराशिअनुसार	मासानुसार.
मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते है इस प्रमाणसे वसंत आदिक६ होती है.	चैत्रसे लेकर दो २ मास वसंत आदिक छः ६ ऋतु होती हैं.

१ मेष २ वृषभ	वसंत	७ तुला ८ वृश्चि.	शरद्	१ चैत्र २ वैशा.	वसंत	७ आश्वि. ८ कार्ति.	शरद्
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म	९ धन १० मक.	हेमंत	३ ज्येष्ठ ४ आषा	ग्रीष्म	९ मार्ग. १० पौष	हेमंत
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा	११ कुंभ १२ मीन	शिशिर	५ श्राव. ६ भाद्र.	वर्षा	११ माघ १२ फाल.	शिशिर

१ दक्षिण देशवासी इस महिनेमें पितृकर्म करते हैं।

मास प्रकरण तत्र मासपरिज्ञानम् ।

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ॥
साराशिः संक्रमाख्या स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥ २० ॥

टीका–पूर्व राशिको छोंडके जिस आगेकी राशिमें सूर्य जाता है उसी सूर्यकी राशिसे १२ संक्रांति मास ऋतु अयन इन सबोंकी गणना होतीहै ॥२०॥

दर्शावधिं माससुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर राशिभोगात् ॥
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाच्च ॥ २१ ॥

टीका–मास कईप्रकारके होते हैं एक चांद्रमास जो शुक्ल प्रतिपदासे अमावास्या पर्यंत होताहै दूसरा सौर मास जो सूर्यके एकराशि भोगनेसे होताहै, तीसरा सावनमास जो तीस दिनका होताहै चौथा नाक्षत्रमास जो चंद्रमाके गिरद नक्षत्रोंके फिरनेसे होताहै ॥ २१ ॥

मासोंके नाम, तथा सूर्य देवता और देवी ।

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः॥तथेष ऊर्जश्च सहाःसहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ॥ २२ ॥ अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ॥ चैत्रमासे तु वेदाङ्गो भानुर्वैशाख एवच ॥ २३ ॥ ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः॥ गभस्तिः श्रवणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥ २४ ॥ सुवर्णरेताश्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः ॥ मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः ॥ इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ॥ २५ ॥ केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ माधवं माघमासे तु गोविन्दमथ फाल्गुने ॥ २६ ॥ चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद्वैशाखे मधुसूदनम्॥त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः॥२७॥श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ॥ आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥ २८ ॥ मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥ माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥ २९ ॥ चैत्रे मासि रमा देवी वैशाखे मोहिनी तथा ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च॥३०॥ कान्तीमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी तु कार्तिके ॥ ३१ ॥

सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.
१	प्रभवः	१३	प्रमाथी	२५	खरः	३७	शोभनः	४९	राक्षसः
२	विभवः	१४	विक्रमः	२६	नन्दनः	३८	क्रोधी	५०	नलः
३	शुक्लः	१५	वृषः	२७	विजयः	३९	विश्वावसुः	५१	पिंगलः
४	प्रमोदः	१६	चित्रभानुः	२८	जयः	४०	पराभवः	५२	कालयुक्तः
५	प्रजापतिः	१७	सुभानुः	२९	मन्मथः	४१	प्लवङ्गः	५३	सिद्धार्थी
६	अङ्गिराः	१८	तारणः	३०	दुर्मुखः	४२	कीलकः	५४	रौद्रः
७	श्रीमुखः	१९	पार्थिवः	३१	हेमलंबी	४३	सौम्यः	५५	दुर्मतिः
८	भावः	२०	व्ययः	३२	विलंबी	४४	साधारणः	५६	दुन्दुभिः
९	युवा	२१	सर्वजित्	३३	विकारी	४५	विरोधकृत्	५७	रुधिरोद्गारी
१०	धाता	२२	सर्वधारी	३४	शार्वरी	४६	परिधावी	५८	रक्ताक्षी
११	ईश्वरः	२३	विरोधी	३५	प्लवः	४७	प्रमादी	५९	क्रोधनः
१२	बहुधान्यः	२४	विकृतिः	३६	शुभकृत्	४८	आनंदः	६०	क्षयः

संवत्सरोंका फल।

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥ सप्तभिस्तुहरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ १२ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरोंमेंसें चलते हुये संवत्सरको द्विगुणा करै उसमेंसे तीन घटाके सातका भाग देनेसे जो शेष रहै तिससे शुभाशुभ फल जानिये ॥ १ ॥ अथवा ४ शेष रहैं तौ दुर्भिक्ष और ५ वा २ बचैं तो सुभिक्ष ३ अथवा ६ शेष रहैं तो साधारण और जो शून्य आवै तो पीडा जाननी ॥ १२ ॥

संवत्सरोंके स्वामी।

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या ॥ भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥ विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥ १३ ॥

टीका—पांच वर्षका एक युग होताहै इसीप्रमाणसे ६० वर्षके १२ युग और क्रमसे उनके १२ स्वामी विष्णु १ बृहस्पति २ इन्द्र ३ अग्नि ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ पितर ७ विश्वेदेवा ८ चन्द्र ९ अग्नि १० अश्विनीकुमार ११ सूर्य १२. ॥ १३ ॥

भेद।

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोन्यस्तस्मादिडान्वि
दिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीय
नाथा वह्न्यर्कशीतगुविरञ्चिशिवाः क्रमेण ॥ १४ ॥

टीका-इष्ट शकमें पांचका भाग दे शेष बचैं उनसे संवत्सरोंके नाम क्रमसे जानिये ॥ पहिले संवत्का स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २ तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा ३ चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा ४ पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ॥ १४ ॥

दूसरामत।

आनन्दादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेवच ॥ जयादेः शङ्करः
प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका-आनंदादिक २० संवत्सरोंके स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्त्ता है और भावादिक २० संवत्सरोंके स्वामी विष्णुहैं जो सबका पालन करतेहैं तीसरे जयादिक २० संवत्सरोंके स्वामी रुद्र संहार कर्ता है ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम्।

अयन.

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदाऽमरम् ॥ भवति
दक्षिणमन्यऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १६ ॥

टीका-शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तर दिशाको होतीहै तिसको उत्तरायण कहते है, यही देवताओंका दिवसहै और वर्षा शरद हेमंत इन तीनों ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणको होती है तिसको दक्षिणायन कहतेहैं यही देवताओंकी रात्रिहै ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभकर्म।

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षा ॥ सौम्या-
यने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणेच ॥ १७ ॥

टीका-गृहप्रवेश देवप्रतिष्ठा विवाह मुंडन व्रतधारण मंत्र लेना ये सब शुभ कर्म उत्तरायणमें करावे और सब निंद्यकर्म दक्षिणायनमें करने योग्यहैं ॥ १७ ॥

संवत् सर फल	नामसंख्या अंकोंकेजो शेषफलवचे	अधि पति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
५७ शेष ३ ६ सम	सं. १९९१ शकः १८५६ व्यय	ब्रह्मा अग्नि ५	० ० ज्येष्ठ	आषा.१५स्प.२७मो. ३५पौ.१५स्प.२९मो. ३७ खग्रास ४।१८	व्ययाब्देनिखिलालोका बहुव्ययपराभृशम्। विरमंतहितुरगैरर्थैर्भूतानिसर्वदा ॥
५८ शेष ५ १दुर्भि.	सं. १९९२ शकः १८५७ सर्वजित्	विष्णु त्वाष्ट्र	१ ०	पौ. १५ बुधे स्प. ३५ ४३ मो. ४४।० चंद्रग्रहण	सर्वजिद्वत्सरेसर्वे जनाश्छिदस्तरात्रिभाः। राजानोविलयंयांति भीमसंग्रामभूमिपाः।
५९ शेष ० पीडा २	सं. १९९३ शकः १८५८ सर्वधारी	विष्णु त्वाष्ट्र	२ आश्वि.	आ.१४स्प९।४८मो. १४आ.१५स्प.४०।८ मोक्ष ४३।२	सर्वधार्यब्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः। प्रशांतवैराःसर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
६० शेष २ ३ सम	सं. १९९४ शकः १८५९ विरोधी	विष्णु त्वाष्ट्र	३ संभव	ग्रहणंनास्ति ०	विरोधिवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः। भूरि-भूरियुताभूमि भूरिकारिसमाकुलाः ॥

सिद्धांतशिरोमणौ।

क्षयमासविचार

गतोऽब्ध्यद्रिनंदैर्मिते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः
गजाद्र्यग्निभूमिस्तथा प्रायशोयं कुवेदेंदुवर्षैः क्वचिद्गोकुभिश्च ३७

टीका—पहिले जिस संवत्में क्षयमास पडै तौ उसके १४१ वर्ष पीछे फिरि होताहै इससें आगे १९ वर्षमें या इससे बाहर इसके मध्यमें जो९७४केसंवत्में क्षयमास हो तो फिर आगे १११५। १२५६। १३७८ में पडैगा और इसके पीछे१४१ और १९ वर्षके अंतरसें क्षयमासका संभव जानना योग्यहै॥ ३७॥

तिथिप्रकरण—मासभाच्चांद्रभं यावत् गणयेत्तावदेवतु ॥
यावंति गणनाद्रानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ ३८ ॥

टीका—चैत्रादि बारह मासोंके नाम और तिन नामोंके नक्षत्रसे मासनक्षत्र जानिये जैसा चैत्रका चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी इस प्रकार नक्षत्रोंके क्रमसें जानिये, इन मासनक्षत्रसे दिनके चांद्रनक्षत्र जहाँतकहो तहाँतक गिणना, गिणनेसे जितनी संख्या आवे उतनीही क्रमसे तिथी जानना. **उदाहरण**—किसीने पूछाकि चैत्र कृष्णमें अनुराधानक्षत्रके दिन कौन तिथीहै. **उत्तर**—चैत्रमासमें मासनक्षत्र चित्राहै और वहाँ चांद्रनक्षत्र अनुराधाहै इसलिये चित्रासे अनुराधातक गिणनेसे सं-

ख्या ४ आई इससे चैत्रकृष्णमें अनुराधाके दिन तृतीया थिथीहै परंतु पूर्णिमान्त महींनेसे गणित बराबर होताहै ॥ ३८ ॥

तिथिसंज्ञापरिज्ञानम् ।

प्रतिपत्सिद्धिदाप्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्य दात्रीच हानिदा च चतुर्थिका ॥ ३९ ॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता ॥ सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधि नाशिनी ॥ ४० ॥ मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ४१ ॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा पौर्णिमा ज्ञेया त्व- मावस्याऽशुभा तिथिः ॥ ४२ ॥ वृद्धिश्चाथ सुमंगलाथ सबला प्रोक्ता खला श्रीमती कीर्तिर्मित्रपदातथा बलवतिस्वोग्राक्रमा द्धर्म्मिणी ॥ नंदाख्याहियशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या तिथिर्नाम्ना तुल्यफलाक्रमात् प्रतिपदो दर्शस्त्वमासंज्ञकः४३ नंदासिते सोमसुते च भद्राकुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ॥ पूर्णा गुरौ ताश्चमृताः कुजार्के सितांबुजेज्ञेच गुरौशनिःस्युः४४

॥ इन श्लोकोंकी टीका चक्रमें लिखी है ॥

स्वामी

वह्निर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः॥ दुर्गांतको विष्णुहरी स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ४५ अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात्

संज्ञा

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः॥४६॥ वर्जित-कूष्मांडी बृहती फलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसला शीर्षं कपालांत्रकम् ॥ निष्पा-

संव-त्सर फल	शेषफलवचे अंकोंकेजो नामसंख्या	अधि पति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभावादिसंवत्सरोंकेफल ॥
२९ शेष १ सम	सं. १९६३ शकः १८२८ काल	वि. शि. अश्वि. कुमार	१ नास्ति	का.३०सूस्प.९।३६मो १४।२४मा.१५मं.स्प. २५।२४मो.३०।२४	वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनःसर्वजतवः । सन्त्य थापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥
३० शेष ३ सुभिक्ष	सं. १९६४ शकः १८२९ सिद्धार्थ	वि. शि. अश्वि. कुमार	११ वैशाख	ग्रहणंनास्ति	सिद्धार्थवत्सरेभूपो ज्ञानवैराग्यथाप्रजाः । सकलावसुधाभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
३१ शेष ० पीडा	सं. १९६५ शकः १८३० रौद्र	वि.शि. अ-श्वि. कुमार १४	१२ नास्ति	प्र.मार्ग.शु.१५चं.स्प. ४८।२०मो.५१।३०	रौद्राब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसभागिने । सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
३२ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९६६ शकः १८३१ दुर्मति	वि. शि. अश्वि. कुमार	१३ भाद्र	१ प्र. ज्ये. शु. १५ भृ. स्प. ५९।३मो.७।४३	दुर्मत्यब्देखिलालोका भूपादुर्मतयःसदा । तथापिसुखिनःसर्वे संग्रामाःसंतिचेदपि ॥
३३ शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९६७ शकः १८३२ दुंदुभि	वि. शि. १६ भग	१४ नास्ति	१ प्र. का. शु. १५ बु. स्प. ५३।३७ मोक्ष ५६।३७	सर्वसस्ययुताधात्री पालिताधरणीधरे । पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥
३४ शेष ६ सम	सं. १९६८ शकः १८३३ रुधिरोद्गारी	शि. वि. १७ भग	१५ नास्ति	का. कृ. ३० स्प.५९। २६ मो. ४।५०	आहवेनिहिताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः । यथाकथंचिज्जीवंतिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥
३५ शेष १ दुर्भिक्ष	सं. १९६९ शकः १८३४ रक्ताक्षी	शि. वि. १८ भग	१६ आशा.	चं.चै.१५सो.स्प.३१/१मो ५६चै.३०शु.स्प.२९। ०मो. ३३।३१	रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा । प्रेक्षंतेसर्वदान्योन्यंराजानोरक्तलोचनम् ॥
३६ शेष ३ सं.१९	सं. १९७० शकः १८३५ क्रोधन	१७ ना. भग	१७ नास्ति	फा. १५स्प. २२।२० चं.भा.१५स्प.२४।९ मोक्ष ३२।५९	क्रोधनाब्देमध्यवृष्टिः पूर्वदेशेचवृष्टयः । संपूर्णमितरत्सर्वे भूपाःक्रोधपरायणाः ॥
३७ शेष ३ सं.२०	सं. १९७१ शकः १८३६ क्षय	शि. वि. २० भग ५	१८ नास्ति	सू. भा.३०भृ. स्प.३०। ३८मो३५।२८भा.२५ भृस्प२५।१मो३३।१६	कार्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनं । क्षयमाणाश्चापिनराजीवंतिक्षयवत्सरे ॥
३८ शेष ५ पीडा	सं. १९७२ शकः १८३७ प्रभव	विष्णु १ ब्रह्मा १	० ० ज्येष्ठ	नास्ति ०	काश्यप्यामीतयश्चाग्निकोपाश्चव्याधयोभुवि । प्रभवाब्देमंदवृष्टिस्तथापिसुखिनोजनाः ॥
३९ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९७३ शकः १८३८ विभव	ब्रह्मा २ विष्णु २	१ नास्ति	नास्ति १	दंडनीतिपराभूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः । विभवाब्देखिलालोकाः सुखिनःस्युर्विवैरिणः॥
४० शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९७२ शकः १८३९ शुक्ल	ब्रह्मा ३ विष्णु ३	२ आश्वि.	१ चं. आषा. शु. १५ खग्रासस्पर्श ४९।५५ मो. ५९।२९	शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनःस्वजनैःसह । राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः ॥
४१ शेष ४ सम ६	सं. १९७५ शकः१८४० प्रमोद	ब्रह्मा ४ विष्णु ४	३ चैत्र संभव	नास्ति	प्रमोदाब्देप्रमोदंतेराजानोनिखिलाजनाः । वीतरोगावीतभयाईतिशत्रुविनाशकाः ॥
४२शा६ १५ दुर्भिक्ष	सं. १९७६ शकः १८४१ प्रजापति	ब्रह्मा ५ विष्णु ५	० ०	नास्ति	नचलंतिचलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन । अब्देप्रजापतौनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ।

संवत्सर फल	शेषफलवचे अंकोंकेजो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
४३ शेष ५ सम ७	सं. १९७७ शकः १८४२ अंगिरा	ब्रह्मा ६ बृहस्पति	५ श्रावण	चं.ग्र.वै.शु.१५चं.स्प. ५८।३मो.६।४७आ. ११ गु. स्प. ३२।९	अन्नाद्यंभुज्यतेशश्वज्जनैरातिथिभिःसह । अंगिराब्देखिलालोकाभूपाश्चकलहोत्सुकाः ॥
४४ शेष ५ सुभि.७	सं. १९७८ शकः १७४३ श्रीमुख	ब्रह्मा बृहस्पति २	६ नास्ति	आश्वि. १५र. स्प. ४९।३१मो. १७।४९ चंद्रग्रहण	श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्धसंयुता ।अध्वरेनिरताविप्रावीतरोगाविवैरिणः ॥
४५ शेष ० पीडा ०	सं. १९७९ शकः १८४४ भाव	ब्रह्मा बृहस्पति ३	७ नास्ति	आश्वि. कृ. ३०गु. सू. स्प.५।५मो. १०।११ ३० आषा.	भावाब्दे प्रचुरारोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः । राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥
४६ शेष २ सुभि.९	सं. १९८० शकः १८४५ युवा	ब्रह्मा गुरु ४	८ ज्येष्ठ	माघ. १५बु. खग्रास ५।४७स्प. ३२।३८ मो. ४१।४८चं. ग्र.	प्रभूतपयसोगावः सुखिनस्सर्वजंतवः । सर्वकामक्रियायुक्तो युवाब्देयुवतीजनः ॥
४७ शेष ४ १०	सं. १९८१ शकः १८४६ धाता	ब्रह्मा बृहस्पति ५	९ नास्ति	श्रा.१५शु.५०स्प.४६/२ मो.५५ख.मा.१५र.स्प ४६।१मो.५१।३६चं.ग्र	धातृवर्षेखिलाःक्ष्मेशाःसदायुद्धपरायणाः। संपूर्णाधरणीभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
४८ शेष ६ सम ११	सं. १९८२ शकः १८४७ ईश्वर	ब्रह्मा इंद्र १	१० नास्ति	श्रा.१५भौ. दृष्टि. ना. माघ३०गु.स्प.१२।१७ मो.१५।३३सू. ग्रहण	ईश्वराब्देखिलाजंतुधात्रीधात्रीवसर्वदा । पोषयत्यतुलेवान्नफलमाषैस्तुव्रीहिभिः ॥
४९ शेष ६ दु. १२	सं. १९८३ शकः १८४८ बहुधान्य	ब्रह्मा इंद्र १२	११ वैशाख	० ० ०	अनीतिरतुलावृष्टिर्बहुधान्याख्यवत्सरे । विविधैर्धान्यनिचयः सुखपूर्णाखिलाधरा ॥
५० शेष ३ सम १३	सं. १९८४ शकः १८४९ प्रमाथी	ब्रह्मा इंद्र ०	१२ नास्ति	० ० ०	नमुंचातिपयोवाहःकुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् । मध्यमावृष्टिरर्घश्चनूनमब्देप्रमाथिनि ॥
५१ शेष ५ सुभिक्ष	स. १९८५ शकः १८५० विक्रम	ब्रह्मा १४ इंद्र	१३ भाद्रपद	ज्ये.शु.१५र.संभवअदृष्टिका. ३०चं.स्प.१६। ३७मो.२१।२१चं.सू.	विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयाः । सर्वत्रसर्वदामेघामुंचंति प्रचुरंजलम् ॥
५२ शेष ० पी. १५	सं. १९८६ शकः १८५१ वृष	ब्रह्मा १५ इंद्र	१४ नास्ति	वै.३०गु. संभव ग्रहणं नास्ति सू.	वृषाब्देनिखिलाः क्ष्मेशायुद्ध्यंतिवृषभाइव ।विद्याप्रसक्ताविप्रेन्द्राः पूज्यंतेसततंभुवाम् ॥
५३ शेष २ १६सम	सं. १९८७ शकः १८५२ चित्रभानु	ब्रह्मा १६ अग्नि	१५ नास्ति	० ०	वित्तार्घवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा । निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे ॥
५४ शेष ४ १७दु.	सं. १९८८ शकः १८५३ सुभानु	ब्रह्मा १७ अग्नि	१६ आषाढ	चै.१५स्प४४।३मो५३ भा.१५स्प.४०मो.४९ फा१६स्प१५मोर३ख	सुभानुवत्सरेभूमिर्भूमिपानांचविग्रहः । भातिभूर्भरिसस्याढ्या भयंकरभुजंगमाः ॥
५५ शेष ६ १७सम	सं. १९८९ शकः १८५४ तारण	ब्रह्मा १८ अग्नि ३	१७ नास्ति	भा. ५५बु. स्प. ० ४४मो. ५३।०ख. चंद्रग्रहण	कस्यचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रतिपन्नताम् । नृपाहुंवक्ष्यताद्रोगा भैषज्यैस्तारणाब्दके ॥
५६ शेष १ १९दु.	सं. १९९० शकः १८५५ पार्थिव	ब्रह्मा अग्नि ०	१८ ०	भा.३०सो. स्प. ७मो. ५४।३४फा.३०संभव. दृष्टनास्ति सू. २	पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाभृशम् । बहुभिःफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥

संव-त्सर फल	नामसंख्या अंकोंके जो शेषफलवचे	अधि पति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१ शे. ३ सम	११३५ विकृति शा. १८००	विष्णुअ धिपति त्वाष्ट्र	शेष १ नास्ति	श्रावण १५ चंद्र स्प.५२। १७ मो. २।३१	प्रकृतिर्विकृतिंयातिविकृतिंप्रकृतिस्तथा। तथापिसुखिनो लोकाश्चास्मिन् विकृतिवत्सरे ॥
२ शे. ५ सुभि.	१९३६ खर शाके १८०१	विष्णुअ धिपति त्वाष्ट्र	आश्विन शेष २	श्रा.कृ.३०मं.सू.पो.गु. १५ चं. स्पर्श३३।५२ मो. ३८।१८	खराब्देनिःस्वनालोकाअन्योन्यसमरोत्सुकाः। मध्यमावृष्टिरत्युग्रं रोगैर्भूयात्प्रकंपनम् ॥
३ शे. ० पीडा	१९३७श. १८०२ नंदन ६	विष्णुअ धिपति अहिर्बुध्न्य.	चैत्रसभं व शेष३ अब्दांश	ज्ये.शु१५च.प्र.स्प ३१/३६ मो.३९/२८ मार्ग.शु.१५चं. स्प. २८।३४ मो ३७/२२	नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टयः। आनंदोप्यखलानां च जंतूनांसमहीभुजाम् ॥
४ शे. २ महर्घ.	सं. १९३८ श. १८०३ विजय	विष्णुअ धिपति अहिर्बु०	नास्ति शेष ४	मार्ग. शु. १५ चं स्प. ३८।८ मो. ४१। २२ उत्तरआशा	विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकांक्षिणः सुखिनोजंतवः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
५ शे. ४ दुर्भि.	सं. १९३९ श. १८०४ जय.	वि. अ. अहिर्बु.	श्राव. शेष ५	ज्येष्ठ कृ.३०स्प. १५। ५८ मोक्ष २३।५७ संभवदृष्टिनास्ति	जयमंगलघोषाद्यैर्धरणीभातिसर्वदा। जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः ॥
६ शे. ६ सम	सं. १९४० श. १८०५ मन्मथ	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ६	०	मन्मथाब्देजनाःसर्वे तस्करारतिलोलुपाः। शालीक्षुयवगोधूमैर्नेयनाभिनवाधरा ॥
७ शे. १ दुर्भि.	सं १९४१ श १८०६ दुर्मुख	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ७	वै.शु.१५चं.प्र.दृष्टिनास्तिआ.शु.१५चं.स्प. ४५।२०मो.४७।२४	दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा माहावैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥
८ शेष ३ सम	सं १९४२ श १८०७ हेमलंब	वि. अ. पितर	ज्येष्ठ. शेष ८	चै. शु. १५ चं. स्प. ३४।५०मो.४२।५८	हेमलंबेत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः। भातिभूर्भूपतिक्षोभाखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥
९ शे. ५ दुर्भि.	सं. १९४३ श. १८०८ विलंबी	वि. १२ पितर	नास्ति शेष ९	माघशुक्ल १५ चंद्रग्रहणसंभव दृष्टिनास्ति	विलंबवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः। प्रजापीडात्वनर्घत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥
१० शे. ० पीडा	सं. १९४४ श. १८०९ विकारी	वि. १३ पितर	नास्ति शेष१०	श्राव.१५चं.स्प.४३।६ भा. ३० ग्र. सू. ९।४८ मो. २२।४४	विकार्यब्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः। पूर्वसस्यफलंस्वल्पं बहुलंचापरंफलम् ॥
११ शे. २ सुभि.	सं. १९४५ श. १८१० शर्वरी	वि. १४ पितर	वैशा शेष११	मा.१५ग्र.स्प.४९।५२ मो. ५९।१२ सं. १९।४५ नास्ति	शर्वरीवत्सरेपूर्णा धरासस्यार्थवृष्टिभिः। जनाश्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥
१२ शे०४ दुर्भिक्ष	सं. १९४६ श. १८११ प्लव	वि. १५ पितर	नास्ति शेष१२	आषाढ शु. १५ चं. ग्र. स्प. ४९।१३ मोक्ष ५६।४०	प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्रवसंतिभाः। रोगाकुलात्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥
१३ शे. ६ सम	सं. १९४७ शक. १८१२ शुभकृत्	विष्णु १६ विश्वेदेवा	भाद्रप. शेष १३	आ.३०सू.स्प.२२।४४ मो.२९।५७का.चं.स्प. २६।२५मो. ३०।४७	शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी राजते त्रिविधोत्सवैः। आतंकचौराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ॥
१४ शे. १ दुर्भि.	सं. १९४८ शक.१८१२ शोभन	विष्णु १७ विश्वेदेवा	शेष १४ नास्ति	वैशा.१५चं.स्प.४१। १६ मो.५० का. १५ चं. स्प. ५२।५७	शोभनेवत्सरेधात्री प्रजानांरोगशोकदा। तथापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥

संवत्सरफल	शेषफलबचे अंकोकेजो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१५ शेष ३ सम	सं. १९४९ शकः१८१४ क्रोधी	विष्णु १८ विश्वेदेवा	शेष १५ नास्ति	वै.शु१५चं.स्प५१।४६ का. शु. १५ चं. स्प. ३२ मो. ४०।४४	क्रोध्यब्देत्वाखिलालोकाः क्रोधलोभपरायणाः इति दोषेणसततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
१६ शेष ५ दुर्भि.	सं. १९५० शकः१८१५ विश्वावसु	विष्णु १९ विश्वेदेवा	आषाढ शेष १६	फा.शु१५चंस्प३१।३१ मो. ३५।० चै. कृ. ३० सू.स्प.१।२७मो.७।१९	अब्देविश्वावसोःशश्वद्घोररोगाधरासुच । सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥
१७ शेष ० पीडा	सं. १९५१ शकः१८१६ पराभव	विष्णु २० विश्वेदेवा	शेष १७ नास्ति	नास्ति	पराभवाब्देराजास्यात् सपरंसहशत्रुभिः । आमयक्षुद्रसस्यातिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥
१८ शेष २ सम	सं. १९५२ शकः १८१७ प्लवंग	विष्णु शिव चंद्रमा	शेष १८ नास्ति	फा. शु. १५ भृ. चं. ग्र. स्प. ४१।४ मो. ४५।५४	प्लवंगाब्देमध्यवृष्टी रोगचौराकुलाधरा । अन्योन्यसमरेभूपाःशत्रुभिर्हृतभूमयः ॥
१९ शेष ४ दुर्भि.	सं. १९५३ शकः १८१८ कीलक	शिव अधिपति चंद्रमा	ज्येष्ठ ०	०	कीलकाब्देत्वीतिभीतिः प्रजाक्षोभनृपाह्वयौ । तथापिवर्द्धतेलोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥
२० शेष ६ सम	सं. १९५४ शकः १८१९ सौम्य	शिव ३ चंद्रमा	शेष १ नास्ति	पा.शु.१५चं.स्प३६मो. १६मा.कृ.३०श.सू.स्प. १३।५१ मो. २०।२६	सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः। विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चांध्यपरंपराः ॥
२१ शेष १ सुभि.	सं. १९५५ शकः १८२० साधारण	शिव अधिपति चंद्रमा	आश्विन २ ०	आ.१५र.चं.स्प५०मो. ५८।२२मार्ग.१५भौ. चं.स्प.४८।२८मो.१७/१२	साधारणाब्देवृष्टयर्द्धमयंचमारणेमनः । मध्य- संपद्धराधीश प्रजाःस्युः स्वस्थचेतसः ॥
२२ शेष ३ सम	सं. १९५६ शकः १८२१ विरोधक	शिव ५ चंद्रमा	चैत्र ३ संभव अंतमे	ज्ये.१५भृ.चं.ग्र.स्प३१/२८ मो.३५/३१मार्ग. १५श.स्प. ५३।४०मो.५७।२६	विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिनः । सर्वेजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
२३ शेष ५ सम	सं. १९५७ शकः १८२२ परिधावी	वि. शि. ६ अग्नि	शेष ० ४	०	भूपा ह्वोमहारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टयः । दुःखिनोजंतवःसर्वेवत्सरेपरिधाविनः ॥
२४ शेष ० पीडा	सं. १९५८ शकः १८२३ प्रमाथी	शिव ७ अग्नि	० श्रावण ५	१ ग्रह. सू. ३० चै. स्प. ७।३२ मो. १२।२७	प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः । प्रजा- नांजीवनेदुःखंसमात्सर्याःक्षितीश्वराः ॥
२५ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९५९ शकः १८२४ आनंद	शिव ८ अग्नि	० ६	१ ग्रह. चं. चैत्र १५ भौम स्प. ४०।२२ मोक्ष ४२।४८	आनंदाब्देखिलालोकाः सर्वदानंदचेतसः । राजानः सुखिनः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
२६ शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९६० शकः १८२५ राक्षस	वि. शि. अग्नि	७ नास्ति	२ग्र.चै.शु१५श.स्प२६/३ मो.२।४५आ.शु१५स्प ३१।२ मो. २९।१०	स्वस्वकार्येरताः सर्वेमध्यसस्यार्धवृष्टयः । राक्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रियाः ॥
२७ शेष ४ सम	सं. १९६१ शकः १८२६ नल	वि. शि. अग्नि	८ ज्येष्ठ	१ ग्र. मा. शु. १५ र. स्प. ४०।३९मो.४६। ५९	नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिःप्रवराधरा । नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥
२८ शेष ६ दुर्भिक्ष	सं. १९६२ शकः १८२७ पिंगल	वि. शि. अश्वि. कुमार	नास्ति	३ ग्र.ना. श्रा. १५ स्प. २७।० मो. ३०।११	पिंगलाब्देत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्धवृष्टयः । राजानोविक्रमाक्रांताभुंजतेशत्रुमेदिनीम् ।

टीका

ति.	नामतिथि	तिथि०	फल	स्वामी	संज्ञा नाम	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपाल. न करनेसे
१	वृद्धि	प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२	सुमंगला	द्वितीया	कार्यसाध.	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेरीफ.
३	सबला	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	खला	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	श्रीमती	पंचमी	शुभा	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई
६	कीर्ति	षष्ठी	अशुभा	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तैल
७	मित्रपदा	सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आंवला
८	बलवती	अष्टमी	व्याधिना.	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफल
१०	धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	नंदा	एकादशी	शुभा	विश्वेदे.	नंदा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	यशोबला	द्वादशी	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	जयकरा	त्रयोदशी	सर्वसिद्धा	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चंद्र	पूर्णा	शुभ	अशुभ	द्यूत
१६	दर्श	अमा०	अशुभा	पितर	०	०	०	स्त्रीसंगम

वांश्च मसूरिकाफलमथो वृंताकसंज्ञं मधु द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमा
त्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ ४७ ॥
नंदासु चित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादिकुर्वीत तथैवनृत्यम्॥ विवाह
भूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ४८ ॥
जयासु संग्रामबलोपयोगी कार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि॥
रिक्तासु विद्वद्धवातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यांति सिद्धिम्
॥४९॥ पूर्णासु मांगल्यविवाहयात्रा सु पौष्टिकं शांतिककर्मकार्य

र्य्यम्॥सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि५०॥

टीका-पडवा,छटि, एकादशीको नंदा तिथि कहतेहैं इसमें आनन्दादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य्य गृहस्थल बनाना वस्तु मोल लेना नृत्य सम्बन्धी गीत वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये ॥ १ ॥ द्वितीया सप्तमी द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह गाडी संबन्धी काम मार्ग सम्बधी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये ॥ २ ॥ तीज आठ, त्रयोदशीको जया कहते हैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र शस्त्र ध्वजा पताका आदि निर्माण करने योग्यहैं ॥ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी ये रिक्ता इनमें विद्वानोंका वध; घातकर्मकी सिद्धि विष प्रयोग शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने योग्यहै ॥ पंचमी दशमी पूर्णमासी इन तिथियों को पूर्णा कहते है इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्यहैं॥५०॥

अथ वारसंज्ञापरिज्ञानं।

आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः।शुक्रःशनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिताः॥५१॥ शिवोदुर्गा गुहोविष्णुः कालब्रह्मेंद्रसंज्ञकाः। सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥५२॥ गुरुश्चंद्रो बुधःशुक्रःशुभा वाराःशुभेस्मृताः॥क्रूरास्तु क्रूरकृत्येस्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ५३ ॥ सूर्यश्चरः स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रोबुधः समः। लघुर्जीवो मृदुःशुक्रःशनिस्तीक्ष्णः समीरितः॥५४॥

अष्टदिशाओंके स्वामी।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजोविधुः॥बुधो बृहस्पति श्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः॥५५॥

टीका-पूर्वका स्वामी रवि १ आग्नेयका स्वामी शनि२ दक्षिणाका स्वामी मंगल ३ नैर्ऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी

चन्द्र ६ उत्तराका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रहभी जानिये ॥ ५५ ॥

ग्रहोंकी जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौच क्षत्रियौ भौमभास्करौ ॥
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ ५६ ॥

टीका-गुरु शुक्र ये ब्राह्मण मंगल रवि ये क्षत्त्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य, राहु केतु और शनि ये तीन शूद्रहैं ॥ ५६ ॥

ग्रहोंका वर्ण

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥
गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराहू सितौ शुभौ ॥ ५७ ॥

टीका-मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि राहु केतु इनका वर्ण कृष्णहै ॥ ५७ ॥

वारोंके अनुसार कर्म

रविवारके कर्म।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ॥ सुवर्ण
ताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥ ५८ ॥

टीका-राज्याभिषेक गीत वाद्य यानकर्म राजसेवा गायबैलका लेना देना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेशलेना देना औषधिका लेना शास्त्रप्रारंभ सोना तांबा ऊर्णावस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग खरीदना बेचना ये कर्म रविवारको करै ॥ ५८॥

सोमवारके कर्म

शङ्खाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्याम्बुविभूषणाद्याः ॥
गीतक्रतुक्षीरविकारशृङ्गी पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥५९॥

टीका-शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्प वस्त्र इत्यादि भोगने सोम वारको योग्य हैं ॥ ५९ ॥

र्य्यम्॥सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि५०॥

टीका-पडवा,छटि, एकादशीको नंदा तिथि कहतेहैं इसमें आनन्दादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य्य गृहस्थल बनाना वस्तु मोल लेना नृत्य सम्बन्धी गीत वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये ॥ १ ॥ द्वितीया सप्तमी द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह गाडी संबन्धी काम मार्ग सम्बधी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये ॥ २ ॥ तीज आठ, त्रयोदशीको जया कहते हैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र शस्त्र ध्वजा पताका आदि निर्माण करने योग्यहैं ॥ चतुर्थी नवमी चतुर्दशी ये रिक्ता इनमें विद्वानोंका वध; घातकर्मकी सिद्धि विष प्रयोग शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने योग्यहै ॥ पंचमी दशमी पूर्णमासी इन तिथियों को पूर्णा कहते है इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्यहैं॥५०॥

अथ वारसंज्ञापरिज्ञानं।

आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः।शुक्रःशनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिताः॥५१॥ शिवोदुर्गा गुहोविष्णुः कालब्रह्मेंद्रसंज्ञकाः। सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः॥५२॥ गुरुश्चंद्रो बुधःशुक्रःशुभा वाराःशुभेस्मृताः॥क्रूरास्तु क्रूरकृत्येस्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ५३ ॥ सूर्यश्चरः स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रोबुधः समः। लघुर्जीवो मृदुःशुक्रःशनिस्तीक्ष्णः समीरितः॥ ५४ ॥

अष्टदिशाओंके स्वामी।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजोविधुः॥बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः॥५५॥

टीका-पूर्वका स्वामी रवि १ अग्नियका स्वामी शनि २ दक्षिणाका स्वामी मंगल ३ नैर्ऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी

चन्द्र ६ उत्तराका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रहभी जानिये ॥ ५५ ॥

ग्रहोंकी जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौच क्षत्रियौ भौमभास्करौ ॥
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ ५६ ॥

टीका-गुरु शुक्र ये ब्राह्मण मंगल रवि ये क्षत्त्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य, राहु केतु और शनि ये तीन शूद्रहैं ॥ ५६ ॥

ग्रहोंका वर्ण

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥
गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराहू सितौ शुभौ ॥ ५७ ॥

टीका-मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि राहु केतु इनका वर्ण कृष्णहै ॥ ५७ ॥

वारोंके अनुसार कर्म

रविवारके कर्म।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ॥ सुवर्ण
ताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥ ५८ ॥

टीका-राज्याभिषेक गीत वाद्य यानकर्म राजसेवा गायबैलका लेना देना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेशलेना देना औषधिका लेना शास्त्रप्रारंभ सोना तांबा ऊर्णावस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग खरीदना बेचना ये कर्म रविवारको करै ॥ ५८ ॥

सोमवारके कर्म

शङ्खाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्याम्बुविभूषणाद्याः ॥
गीतक्रतुक्षीरविकारश्टङ्गी पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥ ५९ ॥

टीका-शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्प वस्त्र इत्यादि भोगने सोम वारको योग्य हैं ॥ ५९ ॥

भौमवारके कर्म

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाठ्यदम्भान् ॥
सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ॥ ६० ॥

टीका-भेद करना अनृत चोरी विष अग्नि शस्त्र वध नाश संग्राम कपट दंभ सेनाका पडाव खानि धातु सुवर्ण मूंगा रक्तस्राव ये कर्म करावें ॥ ६० ॥

बुधवारके कर्म

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ॥
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः॥६१॥

टीका-चातुर्य पुण्य अध्ययन कला शिल्प शास्त्र सेवा लिखना चित्र काढना धातुक्रिया सुवर्णयुक्ति सख्यत्व व्यायाम और वाद करना ये कर्म बुधवारको करावे ॥ ६१ ॥

गुरुवारके कर्म

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामाङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः ॥
रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ॥ ६२ ॥

टीका-धर्म करना नवग्रहादि पूजा यज्ञ विद्याभ्यास सुभग वस्त्र गृह कर्म यात्रा रथ अश्व औषधि विभूषणआदि कृत्य गुरुवारको करावे ॥ ६२ ॥

शुक्रवारके कर्म

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म ॥ भूपण्य
गोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥६३॥

टीका-स्त्री गायन शय्या मणि रत्न हीरा गंध वस्त्र उत्साह अलंकार वाणिज्य पृथ्वी दुकान गाय द्रव्य खेती ये कर्म शुक्रवारको करावै ॥ ६३ ॥

शनिवारके कर्म

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषार्कविद्याम् ॥
गृहप्रवेशद्विपबन्धदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेह्नि कुर्यात् ॥ ६४ ॥

टीका-लोहा पत्थर सीसा जस्त शस्त्र दास पाप अनृत भाषण चोरी विष अर्क काढना गृहप्रवेश हाथी बांधना मंत्र लेना और स्थिर कर्म इत्यादि शनिवारको करावै ॥ ६४ ॥

वारोंके देवता अधिदेवताके नाम

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्रकालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम् ॥ वह्न्यम्बुभूमिहरिशक्रशचीविरिञ्चिस्तेषां पुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥ ६५ ॥

टीका–शिव पार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्य्यादिक वारोंके देवता जानना, और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा ये ७ सूर्यादिक वारोंके अधिदेवता जानना ॥ ६५ ॥

विचार करनेका कालपरिमाण

पतङ्गसूनोर्दिवसाधिपत्यं निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः ॥
रात्रिद्वयं चैकदिनं च सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ ६६ ॥

टीका–शनैश्चरसे कालका प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्ट प्रहरका कहना चाहिये–और सूर्यसे दिन अर्थात् चार प्रहरका कहना–और चंद्रमासे दो रात्रि १ दिनका कहना–और शेष ग्रहोंसे उदय प्रवृत्ति अर्थात् उदयसे आठ प्रहरका काल प्रमाण कहना चाहिये ॥ ६६ ॥

दोषादोषमाह

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ॥
दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्रनिन्द्यो बुधवारदोषः ॥ ६७ ॥

टीका–गुरु शुक्र रवि इन तीन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है. और सोम शनि मंगल इन तीन वारोंका दिनको दोष नहीं मानना–और बुधवारको सर्वत्र निंदित जानना ॥ ६७ ॥

कृत्य

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासरास्सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ॥
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ॥ ६८ ॥

टीका–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारोंमे सर्व कर्म सिद्धि जानना–और रवि भौम शनि इनमें उक्त कार्य मात्रकी सिद्धि जानना ॥ ६८ ॥

तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ

रविस्तापं कान्तिं वितरति शशी भूमितनयो मृतिं लक्ष्मीं

सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभो गानुगमनं नृणां तैलाभ्यङ्गात् सपदि कुरुते सूर्य्यतनयः ॥ ६९ ॥

टीका—रविवारको तैलाभ्यंग संताप प्रदहै—सोमवारको कांतिप्रद—मंगलको मृत्युप्रद—बुधवारको लक्ष्मीप्रद—गुरुवारको वित्तनाशक—शुक्रवारको तेल लगानेसे विपत्ति आती है—शनिवारको तेल लगाना संपत्तिका कर्ता है ॥ ६९ ॥

वस्त्रपरिधान शुभाशुभ

जीर्णं रवौ सततमम्बुभिरार्द्रमिन्दौ भौमे शुचे बुधदिने च भवेद्धनाय ॥ ज्ञानाय मन्त्रिणि भृगौ प्रियसङ्गमाय मन्दे मलायच नवाम्बरधारणं स्यात् ॥ ७० ॥

टीका—रविवारको नूतनवस्त्रपरिधान करनेसे शीघ्र जीर्ण होगा—सोमवारको अशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्रही रहैगा—मंगलके दिन पहरनेसे शोकप्रद होगा—बुधवारकी धन प्राप्ति—गुरुवारको ज्ञानप्राप्ति—शुक्रवारको मित्रप्राप्ति—शनिवारको पहरनेसे मलिन रहैगा ॥ ७० ॥

श्मश्रुकर्म

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तण्डसूनुर्भौमश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पञ्च मासान् ॥ सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥ ७१ ॥

टीका—रविवारको क्षौर करनेसे १ महीना आयुष्य नाश जानना—सोमवारको क्षौर करनेसे ७ महिना आयु वृद्धिजानना—मंगलको ८ महिना आयुष्य नाश जानना—बुधवारको ५ महीना आयुकी वृद्धि जानना—गुरुवारको १० महीना आयुकी वृद्धि जानना—शुक्रवारको ११ महिने आयुकी वृद्धि जानना—शनीवारको ७ मास आयुका नाश जानना—यह गर्गल छ नारदप्रभृति मुनियोंने क्षौर कार्यमें लिखाहै ॥ ७१ ॥

विद्यारम्भः

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्त्तुश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुमामध्यन्मोत्र ॥ नीहारांशौ भवति जडता पञ्च

ता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयःकीर्त्तयन्त्येवमाद्याः॥७२॥

टीका—गुरु, शुक्र, बुध इन तीन वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्या शीघ्रही प्राप्त होतीहै—और चिरंजीवी होताहै—और रविवार मध्यम है—सोमवारको बुद्धि जड होतीहै—मंगल और शनिवारको विद्यारंभकरनेसे मृत्यु होताहै—यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहाहै ॥ ७२ ॥

टीका

वारोंकेनाम	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारोंकेपति	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
विचारयोग्य समय	८ प्रहर	२रात्री ४प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	दिनदोष	रात्रिदो.	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उक्तकर्म सिद्ध	सर्वकाम सिद्ध	उक्तकर्म सिद्धि	कर्मसिद्ध	कर्मसि.	कर्मसि.	उक्तकर्म सिद्धि
तैलाभ्यंग	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युद	लक्ष्मीप्र.	वित्तना.	दुःखद	संपत्तिप्र.
वस्त्र परिधान	जीर्ण होय	सदा गीलारहे	शोक प्राप्ति	धन प्राप्ति	ज्ञान प्राप्ति	इष्ट सन्मान	मलिन रहे
श्मश्रुकर्म	१ महीना आ.न्यून	७महीना आ.वृद्धि	८महीना आ. न्यून	५ मास आ.वृद्धि	१०मास आ० वृ.	११मास आ० वृ.	७ मास आ.न्यू.
विद्यारम्भः	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	आयु.वृ. अर्थसि.	तथा	तथा	मृत्यु

नक्षत्रपरिज्ञान

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो भशेषितः स्यादुडुशेषसंख्या ॥
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णे द्विहीने मुनयो वदन्ति ॥७३॥

टीका—चैत्रसे लेकर गत मास चलते मास सहित दूने करे और उसमे गत तिथि चलते दिवस समेत मिलावे मास दिन जोडे और एक घटावे शेषमें

सत्ता इसका भाग देनेसे शेष बचे वही नक्षत्रकी संख्या जानिये ॥ ७३ ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रा पुनर्वसुःपुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥७४॥ पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ॥ हस्तश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ ७५ ॥ अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ धनिष्ठा शततारारुयं पूर्वभाद्रपदा ततः ॥ उत्तराभाद्रपदश्चैव रेवत्येतानि भानिच ॥७६॥

अथ गमनादौ शुभाशुभनक्षत्र

अश्विनीतु शुभा प्रोक्ता भरणी नाशकारिणी॥कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः॥७७॥मृगः शुभस्ततश्चार्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ॥ पुष्यः शुभः सार्पमघापूर्वाः शुङ्नाशमृत्युदाः ॥ ७८ ॥ उत्तराहस्तचित्रास्तु विद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः ॥ स्वातीविशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ ७९ ॥ ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयक्षयनाशार्थहानिदम् ॥ विश्वब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ॥ ८० ॥ वासवं वरुणं शैवं शुभं भद्रं मृतिप्रदम् ॥ उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका

नक्षत्रोंके स्वामी

भेशादस्त्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता अदित्यङ्गिराः ,सर्पाः कव्यभुजो भगोर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ॥ इन्द्राग्नी त्वथ मित्र इन्द्रनिर्ऋतिर्नीरं च विश्वेविधिर्वैकुण्ठो वसुपाश्यजैक चरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ ८२ ॥ ॥ अधोमुख नक्षत्र ॥

मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणि पूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्त्तितम् ॥ तिर्यङ्मुख नक्षत्र ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः पूषानुराधानिलत्वष्ट्राख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषुच ॥ ८३ ॥

ऊर्ध्वमुख नक्षत्र ॥ पुष्यार्द्राश्रवणोत्तरा शतभिषक् ब्राह्मश्रवि

ष्टाह्वयान्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषुतु ॥ ८४ ॥ ॥ ध्रुवस्थिर नक्षत्र ॥ ॥ रोहिणीसहितमुत्तरात्रयंकीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ ८५ ॥ मृदुन० ॥ त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ॥ ८६ ॥ लघु नक्षत्र ॥ ॥ अश्विनी गुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघु चतुष्टयं मतम् ॥ ८७ ॥ ॥ तीक्ष्ण नक्षत्र ॥ ॥ मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथचतीक्ष्णसंज्ञया ॥ ८८ ॥ चरनक्षत्र ॥ वैष्णवत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतंच चरपञ्चकं त्विदम् ॥ ८९ ॥ उग्रनक्षत्र ॥ ॥ पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ॥ ९० ॥ मिश्रनक्षत्र ॥ हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मित्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥ ९१ ॥ चरादिनक्षत्र ॥ चरं चलं क्रूरमुशन्ति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ॥ क्षिप्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवन्ति ॥ ९२ ॥

अन्धादिक नक्षत्रसंज्ञा

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥ रोहिणी प्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनःपुनः ॥ ९३ ॥

नक्षत्रोंके स्वरूप

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्तमाङ्गेन तुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रं भाति शालोपमम्भं शयन सदृशमन्यच्चात्र पर्यङ्करूपम् ॥ ९४ ॥ हस्ताकारमतश्च मौक्तिक समं चान्यत् प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवत्स्थितं बलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्या समानं परं चान्यद्दन्तिविलासवत्स्थितमतःशृङ्गानिभं व्यक्तिमत् ॥ ९५ ॥ त्रिविक्रमाभंचमृदङ्गरूपं वृत्तं ततोन्यद्यमलद्वयाभम् । पर्यङ्करूपं मुरजानुकारी चेत्यवमश्वादिवचक्ररूपम् ॥ ९६ ॥

नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या

वह्नित्रिऋत्विषु गुणेन्दुकृताग्निभूतबाणाश्विनेत्रशर-
भूकुयुगाब्धिरामाः ॥ रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वियु-
ग्मदंन्ताबुधैर्निगदिताः क्रमशो भताराः ॥ ९७ ॥

संख्या	नक्षत्रोंके नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामिको नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा नाम	रूपसंज्ञा नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृति	संख्या तारोंकी
१	आश्विनी	शुभ	आश्वि.कु.	तिर्यङ्मु.	लघु	क्रूर	मंदलोच.	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	साधा.	मध्यलो०	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	स्थिर	सुलोचन.	क्षुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	मैत्र	अंधलो०	शकट	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	दारुण	मंदलोच.	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	चल	मध्यलो०	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यङ्मु.	चर	क्षिप्र	सुलोचन.	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	दारुण	अंधलो०	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	क्रूर	मंदलोच.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	शालासम	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युद	भग	अधोमुख	उग्र	स्थिर	सुलोचन	शय्यासम	२
१२	उत्तराफा.	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	क्षिप्र	अंधलो०	पर्यंकसम	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु.	लघु	मैत्र	मंदलोच.	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	तिर्यङ्मु.	मृदु	चल	मध्यलो०	मौक्तिक	१
१५	स्वाति	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मु.	चर	साधा	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	मैत्र	अंधलो०	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	क्षिप्र	मंदलोच.	वलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	तिर्यङ्मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	कुंडल	३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोचन	सिंहसम	११
२०	पूर्वाषाढ	हानि	उदक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	अंधलो०	शय्यासम	४
२१	उत्तराषा.	बुद्धिदा	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजित्	वृद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	अंधलो०	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अंधलो०	वामनसम	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मंदलोच.	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजैक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा.	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्रं	अंधलो०	मृदंगसम	३२

कार्याकार्यविचार

अधोमुख

वापीकूपतडागगर्तपरिखाखाता निधेरुद्धृतिक्षेपौ।
द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिध्यन्ति च॥

टीका—अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्ले-षा पूर्वाफा॰पूर्वाषा॰ पूर्वाभाद्रपदा इनमें वापी कूप तालाव गर्त और खाई खोदना द्रव्यकाढना और रखना जुआ खेलना बिलान्तःप्रवेश गणितारम्भ ये कर्म करने योग्य हैं॥

तिर्यङ्मुख

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरश्रादिदान्त्यश्विनौ।
गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च॥

टीका—तिर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोडा हाती ऊंठ भैंस गधा बैल मेंढा सूकर श्वान लेना, नाव पानीमें डालना गंत्रि यंत्र हल चलाना धारणगमनादिक करे॥

ऊर्ध्वमुख

प्रासादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणोच्छ्राया।
शमविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादिच॥

टीका—पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफा॰ उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा शतभिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको ऊर्ध्वमुख कहते हैं इनमें देवस्थान ध्वजा मंडप घर कोट भींति तोरण वाग राज्याभिषेक आदिकर्म करने योग्य हैं॥

ध्रुवनक्षत्र

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषुहितं स्थिरेषुच॥

टीका—रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्रहैं। बीज बोपना, हर्म्य तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, वाग लगाना, ये करने योग्य हैं॥

मृदुनक्षत्र

मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषुतु ।

टीका–मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इनको मृदु कहते हैं. इनमें मित्र कार्य स्त्रीप्रसंग भूषण और वस्त्रधारण गाना आदि नानाप्रकारके मंगल कर्म करने योग्य हैं ॥

लघुनक्षत्र

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानाशिल्पगमनेषुसिद्धिदम् ।

टीका–अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनको लघु कहते हैं इनमें दुकान खोलना, भूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारखाना, ज्ञान, विद्या, शिल्पविद्या, प्रस्थान गमनादिक शुभ हैं ॥

तीक्ष्णनक्षत्र

भूतयक्षनिधिमन्त्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्रतु ।

टीका–आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा मूल ये तीक्ष्ण नक्षत्र हैं इनमें भूत और यक्षादिकोंकी पीडाका निवारण करना, द्रव्यकाढना, मंत्र साधन, भेद, बंधन, वध ये कर्म उक्त हैं ॥

चरनक्षत्र

दन्तवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ।

टीका–पुनर्वसु स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका ये चार नक्षत्र हैं इनमें हाथी, घोडा, नानाप्रकारके वाहन, बागमें जाना, पालखी रथ गाडी आदिकी सवारीमें बैठना योग्य हैं ॥

उग्रनक्षत्र

शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषुस्मृतम् ।

टीका–भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बंधन, उत्साह, शस्त्र, जलाना आदिकर्म करना, विहितहै ॥

मिश्रनक्षत्र

स्वाभिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ॥

टीका–कृत्तिका विशाखा भरणी ये मिश्रहै इनमें नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य है ॥

नष्टवस्तुकेदेखनेकाप्रकार

नक्षत्रोंकीलोचनसंज्ञा

अन्धके लभतेशीघ्रं मन्दके च दिनत्रयम् ।
मध्यके च चतुःषष्ठिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥

टीका–अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मंदलोचनमें जानेसे ३ दिन पीछे प्राप्त होतीहै मध्यलोचन नक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो ६४ दिवस पर्यंत मिलजाय सुलोचनमें गई वस्तु कभी प्राप्त नही होती ॥

नष्टवस्तुदिग्ज्ञान

अन्धके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणेतथा ॥
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरेतु सुलोचने ॥

टीका–अंधे नक्षत्रमें नष्टवस्तु पूर्व दिशामें जानिये और मंदलोचनमें नष्ट वस्तु दक्षिणमें और मध्यलोचनमें पश्चिम दिशामें और सुलोचनमें गत वस्तु उत्तर दिशामें जानिये ॥

अंधादिनक्षत्रोंमें नष्टवस्तुको प्राप्तिहोनी वा न होनी ॥

अन्धे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्दनेत्रे च तद्वत् ॥
दूरात्श्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥

टीका–अंध नक्षत्रमें नष्टवस्तु शीघ्र प्राप्ति होतीहै, मंदलोचनमें वस्तु परिश्रम और विलंबसे और मध्य लोचनमें गई वस्तु दूर जानिये और मिलने हारभी नहीं और सुलोचनमें नष्ट हुई वस्तु न सुननेमें आवे न मिले ॥

नक्षत्रअनुसारप्रश्न

मघादिआर्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते ॥ हस्तादिवसु

पर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ॥ १ ॥ शततारायमान्तंतु स्वगृहे वस्तु दृश्यते ॥ अश्व्यादिसार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगंतथा ॥

टीका-मघासे लेकर उत्तराफाल्गुनीपर्यंत नक्षत्रोंमें जो वस्तु चोरी जाय तो वह समीप जानिये हस्तसे धनिष्ठातक दूसरे हाथमें वस्तु जानिये शतभिषासे भ-रणीतक अपने घरमें जानिये और कृत्तिकासे श्लेषातक गई वस्तु प्राप्त नहीं होती ॥

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ॥ दिक्संख्ययाहतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः॥एकेनभूतले द्रव्यं द्वयंचेद्भाण्डसंस्थितम्॥ तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षेचतुर्थके ॥ तुषस्थं पञ्चमेतुस्या त्षष्ठेगोमयमध्यगम् ॥ सप्तमेभस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्॥

टीका-प्रश्नसमयकी तिथिवार और गत नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करे और इनमें प्रहर मिलाके आठ गुणा करे और सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उस्से फल विचारे-एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये. और २ शेष रहे तो बर तनमें. ३ शेष रहें तो जलमें ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये. और ५ बचें तो तुस-में ६ बचें तो गोवरमें और ७ बचेंतो भस्म में वस्तु जानिये ॥

दिवारात्रिमुहूर्तान्याह

शिवोहिर्मित्रपितरौ वस्वम्भाविश्ववेधसः॥ विधिरिन्द्रोथ शक्रा-ग्नीरक्षोऽधीशोर्यमाभगः॥ मुहूर्त्तेशा इमे प्रोक्ता दिवा पञ्चदश-क्रमात् ॥ मुहूर्ता रजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ॥ दस्रात्पञ्चा-दितेर्जीवो विश्वकौतक्षमारुतैः ॥ दिनमानस्य तिथ्यंशो रात्रे रपि मुहूर्त्तकाः ॥ नक्षत्रनाथतुल्येस्मिन् स्थितकार्यात् खभो-दितम् ॥ दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसंघेषु सत्स्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥

अथ रव्यादिवारेत्याज्यमुहूर्त्ताः

अर्यमाभानुमद्वारे चन्द्रेहि विधिराक्षसौ ॥ पित्राग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ पित्रब्राह्मोभृगोर्वारे राक्षसाम्बूगुरो र्दिने ॥ रौद्रसार्पौशनेरह्नि इमे त्याज्या मुहूर्त्तकाः ॥ २ ॥

दिवारात्रिचक्रम् ॥

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	सं
शिंव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अम्बु	विश्वे	विधि	विधि	इंद्र	इंद्रा.	राक्ष.	वरुण	अर्य	भग	मुहू.
आ०	श्लेषा	अनु.	मघा	धनि	पूषा	उत्त.	ऽभि.	रोहि	ज्ये.	वि.	मूल	शत	उ.	पू०	नक्ष.
रुद्र	अजे.	अहि	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदि	गुरु	वि.	सूर्य	त्वा.	वायु	रात्रि
आ०	पू.भा	उ.	रेवती	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि	मृग	पुन	पुष्य	श्रव	हस्त	चि.	स्वा	नक्ष.

अथरव्यादिवारे त्याज्यचक्रम् ॥

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
अर्यम	ब्रह्माराक्ष.	पितृअग्नि	ऽभिजित्	राक्षसअंबु	पितृब्रह्म	शिवसर्प	मुहूर्ताः
उ०फा०	रोहिणी.	मघाकृत्ति	ऽभिचित्	मूलपूर्वाषा	मघा. रो	आर्द्राश्लेषा	नक्षत्र
दिन १४	दिन९।१२ रा. ८।	दि. ४। रा. ७।	दिन. ८ रा. ०	दिन१२। रा. ६	दिन ४।८ रा. ९	दिन१।२ रा. १.	दिनरात्रि

मद्यकाढनेकामुहूर्त

रौद्रेपैत्र्येवारुणे पौरुहूते याम्ये सार्प्पेनैर्ऋते चैवधिष्ण्ये।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारम्भः कालविद्भिःपुराणैः ॥

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी श्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मद्य काढनेका प्रारंभ करे ॥ १॥

नवीनवस्त्रधारण

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभेत्र्युत्तरेपि च पुनर्वसुद्वये।
रेवतीषु वसुदैवते च भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते ॥

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और करावे ॥

मोतीसुवर्णमणिरक्त वस्त्रधारण

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च मार्त्तण्डभौमगुरुमन्त्रित्रिशशाङ्कवारे। मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदन्तशङ्खरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्धौ ॥

टीका-अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक्र सोम इन वारों में मोती सुवर्ण मणि मूगा हस्तिदंतका चूडा, नूतन शंख पूजामें लाना, रक्तवस्त्र धारण करना शुभ जानिये ॥

पुंसवनकेनक्षत्र

श्रवणःसकरः पुनर्वसुर्निर्ऋतेर्भं च सपुष्यको मृगः।
रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ॥

टीका-श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर और रवि भौम गुरु ये ३ वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं ॥

कर्णवेधन

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रे ।
सैन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयो हि शिशूनाम् ॥

टीका-रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनमें बालकका कर्णवेध करावै ॥

अन्नप्राशन

रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मतः पृथगपि द्वितये च ।
त्र्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम् ॥

टीका-रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंनें आद्यमें और नया अन्न भक्षण करना कहाहै ॥

क्षौरकर्म

पुष्येपौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवेच शाक्रे हस्ताद्येत्रिके भेष्वादित्याः।
क्षौरंकार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वाभौमादित्यपातङ्गिवारान् ॥

टीका-पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमें श्मश्रुकर्म कराइये और ये वार वर्जितहैं भौम रवि शनि इनमें नकरे ॥

दन्तबन्धन

येषुयेषुप्रशंसन्ति क्षौरकर्ममहर्षयः।
तेषुतेष्वेव शंसन्ति नखदन्तादिलेखनम् ॥

टीका-दंत बंधन और वेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्रऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे हैं इन्हींमें करना॥

आज्ञयानरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥

टीका-राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतक के अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनसे छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देने वाला होताहै॥

ताराशुद्धंक्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा।
शुक्रविशुद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥

टीका-क्षौरकर्ममें नक्षत्रकी शुद्धि और व्रतके प्रारंभमें दीक्षाके लेनेमें रवि गुरुकी शुद्धि और यात्रामें शुक्र शुद्धि और चंद्रमाकी शुद्धि सब कामोंमें चाहिये॥

श्मश्रुकर्ममें वर्जनीय

भद्रापक्षान्तरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीषुरात्रौ संध्यापातार-भास्वच्छनिषुघटधनुःकर्ककन्यागतेर्के । जन्मर्क्षेजन्ममासे सुरदिनयजने भूषितो ग्रामयायीभुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः सम-दिनरजिगः श्मश्रुकार्यं न कुर्यात् ॥

टीका-भद्रा पूर्णिमा अमावस्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिवस अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिवस षष्ठीमें रात्रिमें संध्याकाल व्यतिपातादिक दुष्टयोग भौमवार रविवार शनिवार में कुंभ धनु कर्क कन्या इन चार राशियोंके सूर्यमें जन्मनक्षत्र और जन्म मास देवताके पूजन वा हवनादिकर्म दिवस अलंकारादिधारण दिवस ओ यात्रा जानेकी तय्यारी हो उसदिन भोजनके पीछे तेल लगाने और स्नानके पीछे मंगल अभिषेक तथा स्त्रीके रजस्वला होने और सम दिवस आदिकर्में क्षौरकर्म वर्जनीय है॥

मौंजीबंधन

सौम्येपौष्णे वैष्णवेवासवाख्ये हस्तेस्वातित्वाष्ट्रपुष्याश्विभेषु ।
ऋक्षेदित्यांमेखलाबन्धमोक्षौ संस्मर्यंते नूनमाचार्यवर्यैः ॥

टीका–मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमे मौंजी बंधन और त्यागना आचार्योंने श्रेष्ठ कहाहै ॥

विवाहनक्षत्राणि

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ।
निर्विधाभिरुडुभिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥

टीका–मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा तीनों उत्तरा इन सब नक्षत्रोंमें विवाह शुभ जानिये ॥

अग्निहोत्रारम्भ

प्राजापत्ये पूषभेसद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥

टीका–रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका और तीनों उत्तरा इनमें प्रथम अग्निहोत्र प्रारंभ करे ॥

विद्यारम्भमुहूर्त

मृगादिपञ्चस्वपिभेषु मूले हस्तादिकेच त्रितयेश्विनीषु ।
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारम्भमुशन्तिसिद्ध्यै ॥

टीका–मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पूर्वाषाढा पूर्वा फाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें बालकको प्रथम विद्याभ्यास आरंभ करावे ॥

औषधीग्रहण

पौष्णद्वयेचादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ॥

टीका–रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रोंमें औषध बनाना खाना शुभहै ॥

रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभनक्षत्र

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रेभौमे सूर्यजेसूर्यवारे ॥
नन्दारिक्तास्वेवरोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करोरक्षितापि ॥

टीका—स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा और भौम शनि रवि ये वार नंदा तिथी कहियें पडवा षष्ठी एकादशी और रिक्ता कहिये चौथ नौमी चतुर्दशी इनमें रोग उत्पन्न होते हैं. उनकी शिवभी रक्षा नहीं कर सकते ॥

रोगसे मुक्ति होनेका प्रमाण

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात्॥
वश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्यास्याद्वासराणांमघासु ॥

टीका—रोग उत्पन्न होनेके दिवस जो रेवती अथवा अनुराधा होय तो रोगीके प्राण अति कठिनतासे बचैं, उत्तराषाढा अथवा मृगशिर होय तौ एकमासपर्य्यंत और मघा होय तो वीस दिवसतक पीडा रहै ॥

पक्षाद्धस्तेवासवे सद्विदैवे मूलाश्विन्योराग्निधिष्ण्येनवाहात् ॥ याम्येत्वाष्ट्रेवैष्णवे वारुणे च नैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशाहात् ॥

टीका—हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न रोग १५ दिवस रहताहै और धनिष्ठा विशाखा मूल अश्विनी कृत्तिकामें उत्पन्न ९ दिन और भरणी चित्रा श्रवण शततारकामें उत्पन्न हुआ रोग ११ दिवस भोगना होता है ॥

आहिर्बुध्न्येतिष्यसंज्ञेसभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ॥
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥

टीका—उत्तराभाद्रपदा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी अभिजित् पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमे उत्पन्न हुआ रोग सात दिवसतक निश्चय भोगना पडता है यह गर्गमुनिका वाक्यहै ॥

रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र

इन्दोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सार्पादित्यस्वातियुक्तेषुभेषु ॥
पित्र्येचान्त्येचैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः

टीका-सोम शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा और श्लेषा पुनर्वसु स्वाती ये शुभ हैं. और मघा रेवती इनमें रोगीका स्नान अयोग्य और दुःख दायक है ॥

रोगमुक्तस्नानलग्न

लग्नेचरे सूर्यकुजेज्यवारेरिक्तातिथौचन्द्रबले च हीने ॥
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानंहितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥

टीका-मेष कर्क तुला मकर ये चरलग्न रवि भौम गुरु ये वार और रिक्तातिथि ४ । ८ । १४ और चन्द्र हीनबल होय केंद्र तथा त्रिकोणमें पाप ग्रह होय ऐसी लग्नमें स्नान करावे तो आरोग्य होय ॥

लताऔषधीवावृक्षारोपण

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानिमूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ॥
लतौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥

टीका-हस्त पुष्य अश्विन शततारका मूल विशाखा और मृदु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें लता औषधी और वृक्षोंका लगाना शुभहै ॥

कूपारंभकेनक्षत्र

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ॥
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका-हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा तीनों उत्तरा और रोहिणी इन नक्षत्रोंमें अगले मुनीश्वरोंनें कूपारंभ श्रेष्ठ कहाहै ॥

द्रव्यदेनावास्थापितकरना

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ॥
हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥

टीका-साधारण उग्र ध्रुव और दारुणसंज्ञक नक्षत्रोंमें जो दूसरेको द्रव्य दे वा स्थापित करै तो वह वस्तु फिर प्राप्त नहीं होय ॥

हस्तीलेनावादेना

तभिषा स्तेषुचित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुनर्वसौ च ॥ श्रो

Madan Gopal Sharma

क्तानि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥

टीका—हस्त चित्रा अश्विनी स्वाती पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें हाथी लेना और देना और उसके अलंकार शृंगारादिक सकल कर्म करना गर्गादिमुनियोंनें शुभ कहेहैं ॥

अश्वलेनावादेना

पुष्यश्रविष्ठाश्विनसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ॥
सवारुणर्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् ॥

टीका—पुष्य धनिष्ठा अश्विनी मृगशिर रेवती स्वाती पुनर्वसु हस्त शतभिषा इन नक्षत्रों में तुरंग ले और दे तथा उसके अलंकार और शृंगार आदि कर्म करे ॥

गवादिपशुओंकेनगरमेंलानेऔर पहुंचानेमें वर्ज्य ॥

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥

टीका—चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी इनमें गवादिपशुओंको ग्राममें न लावे और न बाहिर पहुंचावे ॥

गवादिपशुओंकेक्रयविक्रयमेंवर्जित

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥

टीका—ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रोंमें गायका बेचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय हैं ॥

तृणकाष्ठादिसंग्रहमेंवर्ज्य

वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ॥
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकावितरणं च वर्जयेत् ॥

टीका—धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे लेकर पांच नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं इनमें दक्षिणदिशाका गमन और घर बनाना प्रेतदाह तृणकाष्ठसंग्रह शय्यादिक निर्माण करना वर्जित है ॥

हलचलानेकानक्षत्र

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु ॥
हलप्रवाहंप्रथमं विदध्यान्नीरोगसुष्कान्वितसौरभेयैः ॥

टीका-मृदु ध्रुव क्षिप्र चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें तथा मूल और मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें रोग रहित आंडू बैलोंसे प्रथम हल चलावे ॥

बीजवोना

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेन्द्रान्याहुर्जघन्यानि तथा बृहन्ति ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनीन्द्रैः ॥
बृहत्सुधान्यं कुरुतेसमर्घं जघन्यधिष्ण्येभ्युदितो महर्घः ॥
समेषुधिष्ण्येषु समंहिमांशुर्वदन्ति संदिग्धमिदं महान्तः ॥

टीका-आर्द्रा श्लेषा भरणी स्वाती शतभिषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंको जघन्य कहते हैं इनमें मासकी आदिमें जो चंद्रमा उदय होय तो धान्य महंगा होय ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु इनको बृहत् कहतेहैं इनमें चंद्रमा उदय होय तो अन्न सस्ता होय और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चंद्रोदय होनेसे अन्नका भाव साधारण रहताहै ॥

राशिपरत्वमेंचन्द्रोदयकाफल

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततंदक्षिणोन्नतः ॥ शेषोन्नतश्चोत्तरा-
यां समतावृषकुम्भयोः ॥ विड्वरंतुसमे चन्द्रेदुर्भिक्षं दक्षिणो-
न्नते ॥ सुभिक्षंक्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचन्द्रमाः ॥

टीका-मीन अथवा मेष राशिमें जो शुक्ल द्वितीयाका चंद्रमा उदय होय तो उससे दक्षिणको उन्नत जानिये और उससे दुर्भिक्षका संभव होताहै और मिथुन से लेकर मकरपर्यंत जो चंद्रोदय होय तो उत्तरको उन्नत जानिये यह चंद्रमा सुभिक्ष क्षेम और आरोग्यताका कर्ता वृष और कुंभमें चंद्रमाका उदय होय तो सम रहताहै इसमें राजाओंके कलह और विड्वरता होतीहै ॥

पुष्यनक्षत्रकेगुणदोष

परकृतमखिलं निहन्तिपुष्यो न खलु निहन्ति परन्तु पुष्यदोषम् ॥
ध्रुवममृतकरोष्टमेपिपुष्ये विहितमुपैति सदैवकर्मसिद्धिम् ॥

टीका–पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थानस्थित चंद्रके दोषको दूर करता है परंतु उसी नक्षत्रका दोष होय तो वह दूर नहीं होता और इस नक्षत्रमें किया हुआ कार्य सिद्ध होताहै ॥

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषुचित्रानुराधामृगरेवतीषु ॥
स्वातौधनिष्ठासु मघासुमूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठा ॥

टीका–हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनो उत्तरा, रोहिणी चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती स्वाती धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज बोपनेसे खेत अधिकफलतेहैं॥

सर्पदंशविचार

यःकृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासु भुजंगदष्टः ॥
सवैनतेयेन सुरक्षितोपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥

टीका–कृत्तिका मूल मघा विशाखा श्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रोंमें जो सर्प काटै तो गरुडकोभी रक्षक होनेपर मनुष्य मृत्युको प्राप्त होय ॥

गानारंभविचार

हस्तस्तिष्योवासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ॥
पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चन्द्रवर्ती नृत्यारम्भे शोभनो ऋक्षवर्गः ॥

टीका–हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनों उत्तरा और शुभ चन्द्रमा पाकर गाने और नृत्यका प्रारंभ करना पूर्वाचार्योंने शुभकहाहै ॥

राज्याभिषेकनक्षत्र

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषु तिसृषूत्तरासुच ॥
रेवतीमृगशिराश्विनीषु चक्ष्माभृतां समभिषेकइष्यते ॥

टीका–अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनो इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक करना उचित है ॥

राजदर्शन

सौम्याश्वितिष्यश्रवणधनिष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभपूषभानि ॥
मित्रेणयुक्तानिनरेश्वराणां विलोकनेभानि शुभप्रदानि ॥

टीका-मृगशिर अश्विनी पुष्य श्रवण धनिष्ठा हस्त ध्रुव चित्रा रेवती अनुराधा इन नक्षत्रोंमें राजाका प्रथम दर्शन शुभदायक है ॥

पुष्यकाफल

सिंहोयथासर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्योबलवानुडूनाम् ॥
चन्द्रेविरुद्धेप्यथ गोचरेपिसिद्ध्यन्ति कार्याणिकृतानिपुष्ये

टीका-जैसे सब चतुष्पद जीवोंमें सिंह बलवान् है वैसेही नक्षत्रोंमें पुष्य है पुष्यमें किया कार्य गोचर दोष और कनिष्ठ अर्थात् चौथा आठवां बारहवां चंद्र होने परभी सिद्ध होताहै ॥

ग्रहेणविद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारोपि विलोमगोपि ॥
करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥

टीका-ग्रह करिके विद्ध वा अशुभ ग्रह करिके युक्त होय अथवा तारा इससे प्रतिकूल होय तथापि पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होताहै परंतु विवाह में पुष्य नक्षत्र वर्जित है ॥

योगप्रकरण

प्रतिदिनके योगजाननेकी रीति

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेवच ॥
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ॥

टीका-पुष्यसे सूर्य नक्षत्रतक चलते नक्षत्रोंको गिनै और श्रवणसे दिनके नक्षत्रतक गिनै दोनों संख्याओंको इकट्ठा करै और सत्ताईसका भाग देवै जो शेष रहै वही योग जानिये ॥

योगोंकेनाम

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अतिगण्डःसुकर्माचधृतिः शूलस्तथैवच ॥गण्डोवृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातोहर्षणस्तथा ॥ वज्रासिद्धी व्यतीपातो वरीयाणः परिघः शिवः ॥ सिद्धःसाध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥

टीका-विष्कंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्ध १६ व्यतीपात १७ वर्याण १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये सत्ताईस योग निजनामके तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नामोंका अर्थ है वही फल जानो.

योगोंमेंवर्जनीयघटिका

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः॥सवैधृतिस्तुव्यतिपातनामासर्वोप्यनिष्टः परिघस्यचार्द्धम् ॥ तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपञ्चशूले ॥ गण्डेतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥

टीका-और इनमें अशुभ योगोंका आदिका चतुर्थांश वर्जनीयहै व्यतीपात वैधृती ये सम्पूर्ण और विष्कंभकी ३ वज्रकी ४ व्याघातकी ५ गंडकी ६ अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घडी सकल शुभकार्यमें वर्जनीय हैं॥

करणजाननेकी रीति

गततिथ्योद्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रपिदादितः॥
एकोनाःसप्तहृच्छेषः करणं स्याद्ववादिकम्॥

टीका-शुक्ल प्रतिपदासे जिस तिथिका करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथिको द्विगुणी करे तिसमें एक मिलाकर सातका भाग दे जो शेष बचै वही उस तिथिका करण जानिये. और प्रत्येक तिथिको दो करण भोगते हैं॥

नाम

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततोभवेत्तैतिलनामधेयम् ॥
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानिसप्त॥
अन्तेकृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः ॥ ज्ञेयंचतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नम्प्रतिपद्दले ॥

स्वामी

इन्द्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूः श्रीःकीनाशश्वेति तिथ्यर्धनाथाः ॥ कक्ष्युक्षाख्यौसर्पवायुस्तथैव येचत्वारते स्थिराणां चतुर्णाम् ॥

कृत्य

पौष्टिकस्थिरशुभानिववाख्येबालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवेप्रमदमित्रविधानं तैतिलेशुभगताश्रयकर्म ॥ गरेचबीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥ न सिद्धिमायाति कृतं च विष्टयां विषारिघातादिषु तन्त्रसिद्धिः ॥ मन्त्रौषधानिशकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्मचतुष्पदेति ॥ सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे किंस्तुघ्नाम्निनिखिलं शुभकर्मकार्यम् ॥

शुक्लथिति ६०				कृष्णतिथि ६०				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरद		पूर्वदल		उत्तरद				
१	स्थिर			०	०	०	०	किंस्तु.	वायु	समस्त शुभकार्य करै
९	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रतउत्साह देवालय आदि शुभकर्म करै
२	९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणोंसे हितकरै
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रताकरै
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादिक मंगलकार्य करै
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गरज	भूमि	बीजबोना हल चलाना [करावै
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा घर दुकान और व्यापार
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	सकल कर्म वर्जित परंतु विष और घात ये क्रूरकर्म वर्जित नहीं
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कालि	मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावै
स्थिर		०	६	३०	०	०	०	चतुष्प	वृषभ	गौ ब्रह्माण राज्य पितृ इनसंबंधी कृत्य करावै
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्यकर्म युद्धमेंजाना धीरज और विद्याभ्यास करना ये कर्म करावै

कल्याणीतिथिमानम्

कृष्णोग्निदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ॥ शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्णयोः ॥ मनुवसुमुनितिथियुगदशशिवगुण

संख्यासुतिथिषुपूर्वान्त्याः ॥ आयातिविष्टिरेषापृष्ठेषुभद्रा पुरस्त्वशुभा ॥ शास्त्रार्थ ॥ दिवासर्पमुखी भद्रारात्रौभद्रा च वृश्चिकी ॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् ॥ रात्रिभद्रायदाहिस्यादिवाभद्रायदानिशि ॥ नतत्रभद्रादोषःस्यात्सर्वकार्याणि साधयेत ॥ शरीरभागः ॥ नाड्यस्तु पञ्चवदनेथगले तथैकावक्षोदशैकसहितंनियतं चतस्रः ॥ नाभ्यांकटौषडथ पुच्छलता चतिस्रोविष्टेर्बुधैरभिहितोङ्गविभागएषः।स्थानफलम्। मुखेकार्यध्वस्तिर्भवति मरणं चाथगलके धनाहानिर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौदेशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः शरीरे भद्रायाः पृथगितिफलं पूर्वमुनयः ॥चन्द्रः॥ मीने मेषालिकर्केशशिनि निवसति स्वर्गसंस्थापिविष्टिः कन्यायां तौलिसंस्थेधनमिथुनगते नागलोकेनिवासः ॥ कुंभेसिंहेवृषेवा मकरमुपगतेराजतेमृत्युलोके भन्द्राचन्द्रप्रभावा हिमकरतनया नोशुभा लौकिके स्यात् ॥ स्थानफलम्॥ स्वर्गेभद्राभवेत् सौख्यं पाताले च धनागमः॥मृत्युलोके यदाभद्राकार्यसिद्धिस्तदानहि ॥ वारानुसारनाम ॥ सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैवतुवृश्चिकी ॥ गुरौपुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषुभद्रिका ॥

तिथी		शास्त्रार्थ	सं	स्थान	फल	चन्द्र स्थान		फल	वार	नाम
	३	इनतिथियोंकी ३० घडी	३	पुच्छ	विजय	मीन			सो	
कृष्ण		उत्तरार्द्धकीभद्रातिस्कानाम				मेष		सौख्य	शु०	कल्याणी
	१०	वृश्चिकीदिवसमें होती है	६	कटि	बुद्धि	वृश्चि	स्वर्ग			
	४	उत्तरकी ३० घटिकापुच्छ			नाश	कर्क			श.	वृश्चिकी
शुक्ल		वर्जनीय मुख शुभहोय,	४	नाभि	कलह	कन्या				
	११	उत्तरार्द्ध कहिये रात्रि	११	कपाल	धन	तुला	पाताल	धनप्रा-		
	७	३० घ०पूर्वार्द्धकी भद्राका			नाश	धन		प्ति	गुरु	पुण्यवती
कृष्ण		मसार्पिणी रात्रिमेंआतिहैउ-	१	गल	मरण	मिथु				
	१४	सकी ९ घडी मुखवर्जनीय				कुंभ			रवि	
	८	है विध्वंस करता पीछे पु-	५	मुख	विध्वंस	सिंह	मृत्युलोक	अशुभ	बुध	भद्रका
शुक्ल		च्छ शुभहोय पूवार्द्ध कहि-				वृषभ			भौ.	
	१५	ये दिवसमें भद्राहोय.	३०			मकर				

दैत्येन्द्रैःसमरेऽमरेषु विजतेष्वीशःक्रुधादृष्टवान् स्वंकायात्किलनिर्गताखरमुखीलाङ्गूलिनीचक्रपात् ॥विष्टिःसप्तभुजामृगेन्द्र

गलकाक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नीमुदितैःसुरैस्तुकरणप्रान्तेनिशुक्ताशुसा

टीका–दैत्य और देवताओंमें बडा घोरयुद्ध हुआ तब देवताओंका पराजय हुआ तिस समय शिवजीके क्रोध करनेसे उनकी देहसे एक स्त्री गर्दभ-मुखी पुच्छवती पहियेके समान जिसके चरण विष्टि नाम सप्त भुजा मृगकी सी ग्रीवा कृश उदर प्रेतपर चढी दैत्योंके वध करने वाली निकली और देवताओंने प्रसन्न होकें अपने कानोंमें लगाया ॥

संक्रान्तिः

वारानुसारनाम ॥ ॥ घोरारवौध्वाङ्क्षचमृतद्युतौचसंक्रांतिवारेच महोदरीस्यात् ॥ मंदाकिनीज्ञेचगुरौचनन्दामिश्राभृगौराक्षसि चार्कपुत्रे ॥ ॥ नक्षत्रोंके अनुसारनाम ॥ ॥ उग्रक्षिप्रचरैर्मैत्रध्रुव-मिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैःसंक्रांतिरर्कस्यघोराद्याःक्रमशोभवे-त् ॥ फल ॥ ॥ ध्वाङ्क्षीवैश्यान्सुखयति महोदर्यलंचौरसार्था-न् घोराशूद्रानथनरपतीनेवमन्दाकिनीच ॥ नन्दाख्याचद्विजव-रगणान्मिश्रकाख्यापशूंश्च चाण्डालांतांप्रकृतिमखिलांराक्षसी-संज्ञिताच ॥ ॥ कालफलम् ॥ ॥ पूर्वाह्णकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्म-ध्यंदिनेचाथविशोपराह्णे ॥ शूद्रान्खावस्तमितेप्रदोषेपिशाच-कान्रात्रिचरान्निशीथे ॥नटादिकांश्चापररात्रिकालेप्रत्यूषका-लेपशुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्कस्यसमस्तलिङ्गा प्रभातसंध्या-समयेनिहन्ति ॥ ॥ दिशाकोमुख ॥ ॥ अर्केशुक्रेमुखंपूर्वे सौ-म्येभौमेचदक्षिणे ॥ शनौचन्द्रेमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी ॥

वारऔरनक्षत्रोंके अनुसार जाननेका कोष्टक

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा मुख
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रोंकोसुख	पूर्वाण्ह	विप्रराजाओं	पूर्वको
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंकोसु०	मध्यान्ह	वैश्योंको	पश्चिमको
भौम	चर	महोदरी	चोरोंकोसु०	अपराण्ह	शूद्रोंको	दक्षिणको
बुध	मैत्र	मंदाकि.	राजाओंकोसु.	प्रदोष	पिशाचोंको	दक्षिणको
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजगणको०	अर्द्धरात्रि	राक्षसोंको	उत्तरको
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुको०	अपररात्रि	नटादिकको	पूर्वको
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालोंको०	प्रत्यूषका	पशुपालकोंको	पश्चिमको

करणअनुसारसंक्राति

॥ स्थितिः ॥ ॥ चतुष्पदेतैतिलनागयोश्च सुतोरविःसंक्रमणंकरोति ॥ विंद्याद्ववाख्येचगराह्वयेच सबालवाख्येस्थितएवविष्टौ ॥ ॥ फलम् ॥ ॥ किंस्तुघ्ननाम्निशकुनेवणिक्कौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्यखलुसंक्रमणंरवेस्स्यात् ॥ धान्यार्घवृष्टिषुभवेत्क्रमशस्त्वनिष्टो मध्येष्टतेतिमुनयःप्रवदन्तिपूर्वे॥ वाहनम् ॥सिंहो व्याघ्रोवराहश्वगर्दभःकुञ्जरस्तथा ॥ महिषीघोटकःश्वाच छागो वृषभकुक्कुटौ उपवाहन गजोवाजिर्वृषोमेषःखरोष्ट्रोकेसरीक्रमात्॥ शार्दूलमहिषोव्याघ्रवानराश्वबवादितः ॥ फलम् ॥ गजेलक्ष्मीर्वृषेस्थैर्यं घोटकेवाहनेतथा॥ सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षंगर्दभेशुनौ ॥ वाराहे महतीपीडाजायतेमेषवाहने ॥ महीष्यांचभवेत्क्लेशः कुक्कुटेमृत्युरेवचवस्त्रम् श्वेतपीतहरितंचपांडुरंरक्तश्याममसितंबहुवर्णम् ॥ कंबलोविवसनंघनवर्णान्यंशुकानिच बवादितःक्रमात् ॥ आयुधम् ॥ भुशुण्डीचगदाखड्ग दण्डकोदण्डतोमरान् ॥ कुन्तपाशांकुशास्त्रंच बाणश्चैवायुधंबवात् ॥ ॥ भोजनपात्रम् ॥ ॥ सौवर्णराजतंताम्रं कांस्यंलौहंचखर्परम् ॥ पत्रंवस्त्रंकरोभूमिः काष्ठपात्रंबवादितः ॥ ॥ भक्ष्यपदार्थः ॥ ॥ अन्नंचपायसंभक्ष्यं पक्वान्नंचपयोदधि ॥ चित्रान्नंगुडमध्वाज्यं शर्करातुबवादितः ॥ ॥गन्धम्॥ ॥ कस्तूरीकुङ्कुमंचैव चन्दनं मृत्तिकातथा॥गोरोचनमलक्तंच हरिद्राचतथाञ्जनम् ॥ सिन्दूर मगुरुश्चैव कर्पूरश्चबवादितः॥ ॥ जातिः ॥ ॥ देवभूताहिविहगपशवोमृगएवच ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रमिश्रजातिर्बवादितः ॥॥ पुष्पम्॥॥ पुन्नागजातिबकुलाश्चकेतकी बिल्वस्तथार्कःकमलंचदूर्वा ॥ मल्लीतथापाटलिका जपाचबवादिपुष्पाणिचयोजयेत्तु ॥ ॥ भूषणम् ॥ ॥ नूपुरंकङ्कणंमुक्ता विद्रुमंमुकुटं मणिम् ॥ गुञ्जावराटकंनीलंमरुत्मंरुक्मकंबवात् ॥ ॥ कञ्चुकी॥

विचित्रपर्णांशुकभूर्जपत्रिका सीतातथापाटलनीलवर्णा ॥ कृ-
ष्णाजिनंचर्मचवल्कपाण्डुरा ववादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ॥ व-
य ॥ शिशुःकुमारीचगतालकायुवा प्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा
वन्ध्यातिवन्ध्याचसुतार्थिनीच प्रव्राजिकाचैवफलंशुभंववात् ॥

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तु
स्थिति	बेठी	बेठी	खडी	निद्रित	बेठी	खडी	बेठी	निद्रित	खडी	निद्रित	खडी
फल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्य	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेंढा	वैल	कुक्कुट
उपवा	गज	अश्व	बैल	मेंढा	गर्दभ	ऊंट	सिंह	शार्दू	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कंवल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भृशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रा.	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोच	अलक्त	दलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भुषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलक	पुन्ना	सुवर्ण
कंचु	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सीत	पांढरी	नील	कृष्ण	अंजन	वल्कल	पांडुर
वय	बाल	कुमारी	गताल.	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वंध्या	अतिवं	पुत्रव०	संन्या.

फलश्रुति

वाहनादिबुधैर्ज्ञेयमथोत्क्रान्तिविशेषतः ॥
वाहनादिकवस्तूनांसंक्रमात्तुविनाशता ॥

टीका–संक्रांति जिसवाहनपर स्थित होय और जो वस्तु धारण करे उ
सबका नाश होय ॥ २३ ॥

मुहूर्त्त

संक्रान्तिकितनेमुहूर्त्तहोतीहै उसकेनक्षत्रऔरफल.

संक्रान्तौमुहूर्तभेदा हरपवनयमे वारुणेसार्परौद्रे एषापञ्चेन्दुसंज्ञा

गुरुकरपितृभे चाग्निदस्रेचसौम्ये ॥ त्वाष्ट्रमैत्रेचमूले श्रुतिवसुवपुषा त्रीणिपूर्वाखिरामे ब्राह्मेदित्येद्विदैवे भवतिशरकृतादुत्तरात्रीणिऋक्षम् ॥ बाणवेदैः समर्घस्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः ॥ मूर्तौपञ्चदशेयाते दुर्भिक्षंचप्रजायते ॥

टीका—आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा श्लेषा ज्येष्ठा इनमें जो संक्रांति अर्कें वह १५ मुहूर्त्त होती है और दुर्भिक्ष करनेवाली और पुष्य हस्त मघा कृत्तिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंकी संक्रांति ३० मुहूर्त्त होती है यह साधारण फलदायक है और रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इनमें संक्रांति अर्कें तो ४५ मुहूर्त्त होती हैं यह स्वस्थताका कारण है ॥

दूसराप्रकार

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम् ॥
द्वित्रिसंख्यासमर्घस्याच्चतुःपञ्चमहर्घता ॥

टीका—गतमासदिन संक्रांति नक्षत्र और प्राप्त संक्रांति दिन नक्षत्र इनका अंतर २ अथवा तीन होय तो सस्ता और ४ वा ५ का नक्षत्रोंमें अंतर आवे तो महर्घ अर्थात् महंगा जानिये ॥

धान्यविचार

संक्रांतिनाड्यातिथिवारऋक्षधान्याक्षरंवह्निहरेत्तुभागम् ॥ संक्रांतिनाडीनवमिश्रितांच सप्ताहतापावकभाजिताच ॥ एके समर्घंद्वितयेचसौम्यं शून्येसमर्घंमुनयोवदन्ति ॥

टीका—संक्रांतिकी घडी और गततिथि वार नक्षत्र और धान्यके नामाक्षर एकत्र करके तीनका भाग दे वह एक मत और दूसरे मतके आज्ञानुसार संक्रांतिकी घडियोंमे ९ मिलाके ७ से गुणकर ३ का भाग दे शेषका फल विचारे १ शेष रहे तो धान्यको स्वस्थता और दो बचें तो साधारणता और निःशेष हो तो महर्घता जानिये ॥

नक्षत्र अनुसारसंक्रांतिपीडा

संक्रांत्याधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ॥ त्रिकंषट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुन पुनः ॥ पन्थाभोगव्यथावस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥

टीका-संक्रांतिके अधर नक्षत्रसे अपने नक्षत्र तक गिने और इसरीतिसे उसका विचार करे प्रथम ३ पंथा चलावे फिर ६ भोग फिर ३ दुःख ६ वस्त्र फिर ३ हानि और ६ धनप्राप्ति कहते है ॥

जन्म नक्षत्रोंका फल

यस्यजन्मर्क्षमासाद्यतिथौ संक्रमणं भवेत् ॥
तन्मासाभ्यन्तरेतस्यवैरं क्लेशं धनक्षयः ॥

टीका-जाके जन्म नक्षत्र विषे संक्रांति अर्कै उसका किसीसे वैर होय और जिसके जन्ममासमें संक्रांतिका संभव हो उसे क्लेश और जिसके जन्मतिथिमें संक्रांति पडे उसका धनक्षय होता है ॥

संक्रांतिकास्वरूप

षष्टियोजनविस्तीर्णासंक्रांतिः पुरुषाकृतिः ॥ एकवक्त्रानव भुजालम्बोष्ठीदीर्घनासिका॥ पृष्टेलोकाभ्रमन्त्येव गृहीत्वाखर्परंकरे॥ एवंसंक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

टीका-शरीर साठ योजन लम्बा और चौडा पुरुषाकृति एक मुह ९ भुजा ओठ और नासिका लंबे और खर्पर हाथमें लिये पीछेसे लोक भ्रमण करते हैं

चंद्रसे संक्रांतिकावर्णऔरफल.

मेषालिकर्केच तथैवरक्तंचापेच मीनेच तुलेचपीतम् ॥ श्वेतं वृषेस्त्रीमिथुनेच चन्द्रेकृष्णंचनक्रेथघटेच सिंहे ॥ रक्तेफलं भवेद्दुःखंश्वेतंचैवसुखंशुभम् ॥ पीतेश्रीस्तुतथाप्रोक्ताश्यामेमृत्युर्न संशयः ॥

टीका-मेष वृश्चिक कर्क इन राशियोके चंद्रमामें जो संक्रांतिका प्रवेश होय तो उसका रक्तवर्ण जानिये वह दुःखदायक है और धनु मीन तुलाके चं-

चंद्रमामें संक्रांतिका पीतवर्ण ये लक्ष्मीकी प्राप्ति करती हैं और वृष कन्या मिथुनकी संक्रांतिका श्वेतवर्ण सुख और शुभप्राप्ति करानेवाली है मकर कुंभ और सिंहके चंद्रमाको संक्रांति कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है ॥

राशिअनुसार चंद्रमा

याद्दशेनहिमरश्मिमालिनासंक्रमोभवतितिग्मरोचिषा॥ताद्दशं फलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपिवशेनशीतगोः ॥

टीका—जैसे चंद्रमा नष्टस्थानी व उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फलको देता है उसी भांति नष्ट अथवा उत्तम चंद्रमाकी अर्की हुई संक्रांति चंद्रमाके अनुसार फलदायक होती है ॥

पुण्यकाल

पूर्वतोपिहिरवेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ॥ अर्धरात्रिसमयादनन्तरंसंक्रमेपरदिनंहि पुण्यदम् ॥

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होताहै जो संक्रांति दिनमें पडे पूर्व रात्रि तांई तो पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और जो वृद्धि रात्रिके पीछे पडे तो दूसरे दिवस पुण्यकाल होगा ॥

ग्रहणप्रकार

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति

भानोःपञ्चदशेऋक्षेचन्द्रमायदितिष्ठति ॥ पौर्णमास्यानिशामेषेचन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्यसे पंद्रहवें नक्षत्रमें जो चंद्रमा स्थित होय तौ पूर्णमासीके निशाशेष अर्थात् प्रतिपदाकी संधिमें चंद्र ग्रहण होता है ॥

सूर्यग्रहण

मघोनंग्रस्तनक्षत्रात्षोडशं यदिसूर्यभम् ॥
अमावास्यादिवाशेषसूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—संपूर्ण महीनोंकी अमावास्याके दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशिके

होते है परंतु अमावास्याके दिन सूर्य नक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक होय तो अमावस्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र देखिये उसमें से ११ दिन काटि शेष १६ वें सूर्यनक्षत्र होय तो वही सूर्य ग्रहण होता है ॥ २ ॥

राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहणफल

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदंस्याद्ग्रहणंरवीन्द्वोः ॥
द्विसप्तनन्देषु च मध्यमंस्याच्छेषेष्वनिष्टंमुनयो वदन्ति ॥

टीका–सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर होय उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छठी दसवी राशि पर होय तो शुभ जानिये और दूसरा सातवाँ नवमां ये मध्यम और पहिला चौथा पांचवां आठवां ग्यारहवां बारहवां ये नेष्ट हैं ॥

दूसरापक्ष

ग्रासात्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगःस्वराशेः ॥
ग्रासाद्रविः पञ्चनवर्तुमध्यस्ततो धमोक्ताश्चबुधैश्चशेषाः ॥

टीका–जिस राशिपर सूर्यग्रहण होय उससे अपनी राशितक गिनै तो ३। ८। ४। ११ ये उत्तम और ५। ८। ६ ये मध्यम और १। २। ७। १०। १२ ये राशि अधम जैसी राशि होय तैसाही फल होता है ॥

ऋतुप्रकरणशुभाशुभ फल

तिथिरेकगुणाप्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ॥ वारःषष्ठगुणोज्ञेयो मासश्चाष्टगुणः स्मृतः॥ वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दर्शनं च ततोधिकम् ॥

टीका–तिथि एक गुणी नक्षत्र ४ गुणा वार ६ गुणा मास ८ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिक ज्ञान होय तिसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस होय तो अच्छा गुण और दुष्ट होय तो बुरा जानिये ॥

मासफल

आर्तवेप्रथमेचैत्रेवैधव्यंजायते ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनवृद्धिः

स्याज्ज्येष्ठरोगान्विता भवेत् ॥ आषाढेमृतवत्साच श्रावणेध-
नसंयुता ॥ भाद्रे च दुर्भगानारी आश्विनेधनधान्यभाक् ॥ का-
र्तिकेनिर्द्धनानारी मार्गशीर्षेबहुप्रजा ॥ पौषेचपुंश्चला नारी
माघेपुत्रवती भवेत् ॥ फाल्गुने पुत्रसंपन्नाज्ञेयंमासफलंबुधैः ॥

टीका—चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो विधवा होय, वैशाखमें धनवृद्धि, ज्येष्ठमें रोगयुक्त आषाढमें मृतवत्सा, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्त्तिकमें निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ॥

तिथिफलम्

शुचिर्नारीप्रतिपदि द्वितीयायांतुदुःखिनी ॥ तृतीयायांपुत्रव-
तीचतुर्थ्यांविधवा भवेत् ॥ पञ्चम्यांचैवसौभाग्यं षष्ठ्यांकार्य-
विनाशिनी ॥ सप्तम्यांसुप्रजानारीचाष्टम्यां राक्षसीतथा ॥
नवम्यां विधवानारी दशम्यांसौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यांशु-
चिर्नारी द्वादश्यांमरणंध्रुवम् ॥ त्रयोदश्यांशुभाप्रोक्ताचतुर्द-
श्यांपरान्विता ॥ पौर्णमास्याममायां च शुभंचाशुभमेवच ॥

टीका—प्रतिपदामें ऋतुदर्शन होय तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी, सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्यभोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पौर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ॥

ग्रहण और संक्रांतिका फल

संक्रान्त्यांग्रहणेचैववैरिणी चगतालका ॥

टीका—संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो वैरिणी और ग्रहणमें होय तो विधवा जानिये ॥

वारफल

आदित्येविधवानारीसोमेचैवमृतप्रजा ॥ मङ्गलेआत्मघा-

Madan Gopal Sharma

तास्याद्बुधेकन्याप्रसूःस्मृता ॥ गुरुवारेसुतप्राप्तिः कन्या-
पुत्रयुता भृगौ ॥ मन्दे च पुंश्चलीनारीज्ञेयंवारफलंशुभम् ॥

टीका-रविवारको ऋतुदर्शन होय तौ विधवा होय, सोमवारको मृतप्रजा, भौमवारको आत्मघातिनी, बुधवारको कन्या संतति होय, गुरुवारको पुत्र प्रसूति, भृगुवारको कन्या और पुत्रप्रसूति और शनिवारको होय तौ स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥

नक्षत्रफल

अश्विन्यांसुभगानारीभरण्यांविधवाभवेत् ॥ कृत्तिकायां च
वन्ध्यास्याद्रोहिण्यांचारुभाषिणी ॥ मृगेदारिद्र्ययुक्तोक्ताचा-
र्द्रायांक्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौपुत्रवतीपुष्येपुत्रधनेश्वरी ॥
आश्लेषायांभवेद्वन्ध्यामघायांचार्थसंयुता ॥पूर्वायांचार्थयुक्ताहि
चोत्तरायांसतीतथा ॥ हस्तेपुत्रधनैर्युक्ताचित्रायामनुचारिणी॥
स्वात्यामन्यगर्भावयवाविशाखायांतुनिष्ठुरा ॥ मैत्रे च दुर्भगाना-
रीज्येष्ठायांविधवाभवेत् ॥ मूलेपतिव्रतासाध्वीपूर्वासौभाग्य
भोगिनी ॥ उत्तरार्थवतीप्रोक्ताश्रवेसौभाग्यसंपदः ॥ धनिष्ठा-
यांशुभानारीशतेभद्रान्विताबुधैः ॥पूर्भे प्रोक्ताकामिनीतु उभे
लक्ष्मीयुता शुभा ॥ रेवत्यांपतिरिक्तातुज्ञेयं भानांफलंबुधैः॥

टीका-अश्विनी नक्षत्रमें जो स्त्रीके प्रथम ऋतुस्नात होय तौ शुभ और भरणीमें विधवा, कृत्तिकामें वंध्या, रोहिणीमें प्रियभाषिणी, मृगशिरमें दरिद्रिणी, आर्द्रामें क्रोधिनी, पुनर्वसुमें पुत्रवती, पुष्यमें पुत्र और धनवती, आश्लेषामें बांझ, मघामें धनवती, पूर्वामें अर्थवती, उत्तरामें पतिव्रता, हस्तमें पुत्रवती धनवती, चित्रामें दासी, स्वातीमें अन्यगर्भवती, विशाखामें निष्ठुर, अनुराधामें दुःभागिनी, ज्येष्ठामें विधवा, मूलमें पतिव्रता, पूर्वाषाढामें सौभाग्यवती, धनिष्ठामें शुभ, शतभिषामें शुभ, पूर्वाभाद्रपदामें उत्तमभोगवती, उत्तराभाद्रपदामें लक्ष्मीवती, रेवतीमें पतिरहित जानिये

योगफल

आद्यतौंविधवानारी विष्कम्भेचरजस्वला॥ स्नेहःप्रीत्यातुदम्पत्योरायुष्मांस्तुधनप्रदः॥ सौभाग्येपुत्रयुक्ता तु शोभनेमङ्गलान्विता ॥ अतिगण्डेतुविधवासुकर्मणितु शोभना ॥ धृतौसंपत्तियुक्ताचशूले रोगयुताभवेत् ॥ गण्डेदुःखान्वितानारी वृद्धौपुत्रान्विताभवेत्॥ ध्रुवेतुशोभनानारीव्याघातेभर्तृघातकी ॥ हर्षणेहर्षयुक्तातुवज्रेचैवानपत्यता ॥ सिद्धौपुत्रान्विताभर्तृका नारी व्यतीपाते विभर्तृका ॥ मृतवत्साचवर्याणे परिघेचाल्पजीविनी॥ शिवेपुत्रवतीनारी सिद्धेशीघ्रफलान्विता॥ साध्ये धर्मपरानारी शुभेशुभगुणान्विता ॥ शुक्लेशुभकरानारीब्रह्मणिस्वपतौरता ॥ ऐन्द्रेदेवररक्ता च वैधव्यंवैधृतौस्मृतम् ॥

टीका—विष्कंभ योगमें जो प्रथम ऋतुदर्शन होय तौ स्त्री विधवा होय और प्रीतियोगमें पतिसे स्नेह, आयुष्मानमें धनप्राप्ति, सौभाग्यमें पुत्रवती, शोभनमें मंगलदायक, अतिगंडमें विधवा, सुकर्मामें शुभ, धृतिमें संपत्तियुक्त शूलमें रोगिणी, गंडमें दुःखान्विता, वृद्धिमें पुत्रयुक्ता, ध्रुवमें शुभ, व्याघातमें पतिघातिनी, हर्षणमें हर्षयुक्ता, वज्रमें वंध्या, सिद्धियोग पुत्रयुक्ता, व्यतीपातमें पतिरहिता, वर्याणमें मृतपुत्रा, परिघमें अल्पजीविनी, शिवमें पुत्रवती, सिद्धिमें शीघ्र फलयुक्ता, साध्ययोगमें अधर्मपरा, शुभयोगमें शुभगुणयुक्ता. शुक्र योगमें शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोगमें निजपतिरता, ऐंद्रमें देवररता, वैधृतियोगमें विधवा होय ॥

करणफलम्

बवेप्रोक्तातुवन्ध्यास्त्रीबालवेपुत्रसंपदः॥ कौलवेपुंश्चलीनारीतैतिले चारुभाषिणी ॥ गरे च गुणसंपन्नावणिजेपुत्रिणीस्मृता ॥ विष्ट्यां चमृतवत्साच शकुनौकामपीडिता॥ चतुष्पदे शुभानारीनागे पुत्रवतीभवेत् ॥ किंस्तुघ्नेव्यभिचारःस्यात्करणानांशुभंफलम्॥

टीका—बव करणमें जो स्त्री प्रथम पुष्पवती होय तो वह वंध्या होय, बालवमें पुत्रकी प्राप्ति, कौलवमें वेश्या, तैतिलमें प्रियभाषिणी, गरमें गुणसंपन्ना, वणिजमें पुत्रिणी, विष्टिमें मृतवत्सा अर्थात् उसके बालक मरजायं, शकुनिमें कामातुरा, चतुष्पदमें शुभ, नागमें पुत्रवती किंस्तुघ्नमें व्यभिचारिणी जानिये ॥

राशिफलम्

व्यभिचारीतुमेषेस्याद्वृषभेसुखभोगिनी ॥ मिथुनेधनयुक्तोक्ताकर्कटेदुःखिताबुधैः ॥ सिंहेपुत्रवतीनारी कन्यायांमानिनीशुभा ॥ तुलेविचक्षणानारी वृश्चिकेव्यभिचारिणी ॥ धनेपतिव्रताज्ञेयामांसहीनाचनक्रके ॥ कुम्भेधनवतीज्ञेयामीने च चपलाबुधैः ॥

टीका—मेष राशिमें जो ऋतुवती होय तो व्यभिचारिणी, वृषमें सुखभोगिनी, मिथुनमें धनयुक्ता, कर्कमें दुःखी, सिंहमें पुत्रवती, कन्यामें अभिमानी, तुलामें कुचाली, वृश्चिकमें जारिणी, धनमें पतिव्रता, मकरमें कृशा, कुंभमें धनवती, मीनमें चपला ऐसे जानिये ॥

होराफल

सूर्येचव्याधिसंयुक्ता चन्द्रेहोरे पतिव्रता ॥ कुजेहोरेतुदौर्भाग्यंबुधेहोरेतुपुत्रिणी ॥ जीवेसर्वसमृद्धिःस्याद्भृगौसौभाग्यमेवच ॥ शनौसर्वविनाशायहोरकस्यफलंबुधैः ॥

होरा	फल	होरा	फल
रविका होरा	रोगिनी	गुरुका होरा	सर्वसिद्धि
सोमका होरा	पतिव्रता	शुक्रका होरा	सौभाग्य
भौमका होरा	दुर्भगा	शनिका होरा	सर्वविनाशिनी
बुधका होरा	पुत्रिणी		

लग्नफलम्

मेषलग्नेदरिद्राचवृषभेधनसंयुता ॥ कामिनीमिथुनेलग्नेककंटेपतिनाशिका॥ सिंहेपुत्रप्रसूताचपतियुक्तत्याख्यलग्नके॥ तुलेचैवान्य-

तादायीवृश्चिकेदद्रुदुःखिनी ॥ धनलग्नेधनैश्वर्यंमकरेकर्कशाभवेत् ॥ कुम्भेवंशद्वयघ्नीच मीनेसर्वगुणान्विता ॥

टीका—प्रथम संक्रांति चलती होय सोई प्रथम लग्न जानिये और १ मेषलग्नमें ऋतुवती होय तौ दरिद्रिणी २ धनयुक्ता ३ कामिनी ४ पतिनाशिनी ५ पुत्रप्रसूता ६ पतिव्रता ७ अंधतादायक ८ दद्रुदुःखित ९ धनैश्वर्यवती १० कर्कशा ११ उभयवंशनाशिनी १२ गुणयुक्ता ॥

ग्रहोंके फल

लग्नेराहुश्चसौरिश्चरविचन्द्रौतथैवतु ॥
तदासाविधवानारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ॥

टीका—जिस लग्नमें स्त्री प्रथम रजस्वला होय उसमें राहु शनि रवि चंद्र ये चारि ग्रह स्थित होयँ तो वह स्त्री विधवा होय ॥

रक्तफल

शोणिताबिन्दुमात्रेण स्वैरिणीचाल्पशोणिता ॥ रक्तेरक्तेभवेत्पुत्रःकृष्णेचैवमृतप्रजा ॥ पिच्छिले च भवेद्वन्ध्याकाकवन्ध्याचपाण्डुर ॥ पीतेदुश्चारिणीज्ञेयासुभगा गुञ्जसादृशे ॥ सिन्दूरवर्णेरक्तेतुकन्यासंततिरेवच ॥

टीका—प्रथम ऋतुदर्शनके समय रक्त बिंदुमात्र और अल्पवर्ण होय तिसका फल यह है कि स्त्री व्यभिचारिणी होय, और रक्तवर्ण रुधिर होय तौ पुत्रवती, काला होय तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढा होय तौ बांझ, पांडुर वर्णसे वंध्या, पीतवर्णसे दुराचारिणी , गुंजा सदृशसे सुभागिनी, सिंदूरवर्णसे कन्याप्रसूति, इस प्रकार फल जानिये ॥

कालफल

पूर्वाह्णेसुभगाप्रोक्ता मध्याह्नेचैवनिर्धना ॥ अपराह्णेशुभाचैव सायाह्नेसर्वभोगिनी ॥ सन्ध्ययोरुभयोर्वेश्या निशीथेविधवाभवेत् ॥ पूर्वरात्रेतथावन्ध्या दुर्भगासर्वसंधिषु ॥

टीका-जो स्त्रीके प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये, मध्याह्नमें निर्धना, तीसरे पहर होय तौ शुभ, संध्याको होय तौ सर्वभोगिनी और दोनों संधिमें होय तो वेश्या,आधी रात्रिमें होय तौ विधवा, पूर्व रात्रिमें होय तो वांझ, सब संधिमें दुर्भगा ये फल जानिये ॥

पहिरे हुए वस्त्रोंका फल

सुभगाश्वेतवस्त्राच रोगिणीरक्तवस्त्रका ॥ नीलाम्बरधरानारीविधवापुष्पवन्तिका॥भोगिनीपीतवस्त्राच मिश्रवस्त्रावरप्रिया॥सूक्ष्मास्यात्सूक्ष्मवस्त्राच दृढवस्त्रापतिव्रता ॥ दुर्भगाजीर्णवस्त्राच सुभगामध्यवाससा॥धौतवस्त्राशुभानारी मलिनीमलिनाभवेत्॥

टीका-प्रथम ऋतु समय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तौ शुभ, लाल वस्त्र पहिरे स्त्री पुष्पवती होय तो रोगिणी, नीले वस्त्रसे विधवा, पीत वस्त्रसे भोगिना, मिश्रवर्णवस्त्रयुता पतिप्रिया, सूक्ष्मवस्त्रयुता कृशा, मोटे वस्त्रयता पतिव्रता, जीर्ण वस्त्र पहिरनेसे स्त्री दुर्भागिनी, मध्यम वस्त्रयुता सुभगा, धुले वस्त्रयुता सुभगा और मलीन वस्त्र पहिने स्त्री प्रथम ऋतुधर्मको प्राप्त होय सो मलीन जानिये ॥

॥ रजस्वलाधर्म ॥

आर्तवाभिप्लुतानारी नैकवेश्मनिसंश्रयेत् ॥ नचान्यजातिसंस्पर्श कुर्यात्स्पर्शनचक्वचित् ॥ त्रिरात्रंस्वमुखंनैव दर्शयेद्यस्यकस्यचित्॥स्ववाक्यंश्रावयेन्नैव नकुर्याद्दन्तधावनम्॥ नकुर्यादार्तवेनारी ग्रहाणामीक्षणंतथा॥ अञ्जनाभ्यञ्जनंस्नानं प्रवासंवर्जयेत्तथा ॥ नखादिकृन्तनंरज्जुतालपत्रादिबन्धनम् ॥ नवेशरावेभुञ्जीत तोयंचाञ्जलिनापिबेत् ॥

टीका-ऋतुवती स्त्रीको एक घरमें रखना अन्य जातिसे स्पर्श न करना, अपनी जातिमेंभी स्पर्श न करना, तीन रात्रि अपना मुख किसीको न दिखावना, अपनी वाणी किसीको न सुनाना, दांतुन नहीं करना, नक्षत्रोंका अवलोकन न करना, काजल-तैल-स्नान-रस्ता चलना-डोरीका स्पर्श-तालपत्रका बंधन इ-

तने कर्म न करे नवीन मृत्तिकाको पात्रमें भोजन करे और अंजुलीसे जल पीवे ॥

गर्भाधानका मुहूर्त्त

ऋतौतुप्रथमेकार्यं पुन्नक्षत्रेशुभेदिने ॥ म-
घामूलान्त्यपक्षान्तमुक्त्वाचन्द्रबलेसति ॥

टीका—प्रथम ऋतुदर्शनसमय पुरुष—नक्षत्र और शुभदिन में मघा मूल रेवती अमावास्या पूर्णिमा इनको छोडकर बलवान् चंद्रमामें गर्भाधान करना योग्य है॥

गर्भाधाने त्याज्यमाह

गण्डान्तंत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलान्तकं दास्रंपौष्णमथो-
परागदिवसंपातंतथावैधृतिम् । पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघा-
द्यर्द्धंस्वपत्नीगमे भानूत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभ-
म्॥भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च सन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्र्यश्चतस्रः ॥

टीका—गंडांत ३ प्रकारके अर्थात् तिथिगंडांत—लग्नगंडांत—नक्षत्रगंडांत—वधतारा—जन्मतारा—मूल—भरणी—अश्विनी—रेवती—ग्रहणदिन—व्यतीपात—वैधृति—श्राद्धदिन—परिघार्द्ध—उत्पातनक्षत्र—पापयुक्तनक्षत्र—जन्मलग्नसे अष्टमलग्न—भद्रा—षष्ठीतिथि—पर्वतिथि अर्थात् चतुर्दशी—अष्टमी—अमावास्या—पौर्णिमा—संक्रांति—रिक्तातिथि अर्थात् चतुर्थी—नवमी—चतुर्दशी- संध्याकाल भौम-रवि-शनि ये वार और प्रथम रात्रिसे चार रात्रि ये गर्भाधानमें त्याज्य हैं ॥

ऋतुकीषोडशरात्रियोंकाशुभाशुभनिर्णय

ऋतुःस्वाभाविकःस्त्रीणांरात्रयःषोडशस्मृताः॥तासामाद्याश्च-
तस्रस्तुनिन्दितैकादशीचया॥ त्रयोदशीचशेषाःस्युःप्रशस्ता-
दशवासराः॥तस्मात् त्रिरात्रंचाण्डालीं पुष्पितांपरिवर्जयेत् ॥

टीका—स्त्रियोंके ऋतु धर्मसंबंधी स्वाभाविक १६ रात्रि होता है उनमेंसे प्रथम तीनि रात्रिमें पुष्पवती चांडाली होती है और चौथी ग्यारवीं तेरहवीं ये निंदित अर्थात् वर्जनीय और शेष दशरात्रि प्रशस्त हैं ॥

रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रःस्यादल्पायुर्धनवर्जितः॥ पञ्चम्यांपुत्रिणीना-

रोपष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यमः ॥ सतम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामी-
श्वरःपुमान् ॥ नवम्यांसुभगानारी दशम्यांप्रवरःसुतः ॥ एका-
दश्यामधर्म्यास्त्री द्वादश्यांपुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यांसुतापा-
पावर्णसंकरकारिणी ॥ धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्च आत्मवेदीदृढव्रतः ॥
प्रजायतेचतुर्दश्यां पञ्चदश्यांपतिव्रता ॥ आश्रयः सर्वभूता-
नांषोडश्यांजायतेपुमान् ॥

टीका-चौथी रात्रिमें स्त्रीसंग करे तो पुत्र अल्पायु और धनवर्जित उत्पन्न होय, पांचवीं रात्रिमें पुत्रवती, छठी रात्रिमें मध्यम पुत्र, सातवींमें पुत्र उत्पन्न नहीं होगा, अष्टमी रात्रिमें ईश्वरभक्त, नवमी रात्रिमें सौभाग्यवृद्धि, दशमीमें गुणवान् पुत्र, ग्यारहवीं में अधर्मी पुत्र, बारहवीं रात्रिमें उत्तम पुरुष, तेरहवींमें पापकर्मिणी कन्या, चौदहवींमें धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करनेहारा पुत्र, पंदरहवीं रात्रिको पतिव्रता, सोलहवीं रात्रिको सब जीवोंका आश्रय देनेवाला पुत्र उत्पन्न होताहै ॥

निषेकके तिथि और वार

षष्ठ्यष्टमीपञ्चदशीचतुर्थींचतुर्दशी प्युभयत्रहित्वा ॥
शेषाःशुभाःस्युस्तिथयो निषेके वाराःशशाङ्कार्यसितेन्दुजाश्च ॥

टीका-षष्ठी अष्टमी पौर्णिमा अमावास्या चतुर्थी चतुर्दशी इन तिथियोंको छोडकर शेष तिथि और सोम गुरु शुक्र बुध ये वार शुभ जानिये ॥

नक्षत्र

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभा-
नि निषेककार्ये ॥ पूज्यानिपुष्यवसुशीतकराश्विचि-
त्रादित्याश्चमध्यमफलाविफलाःस्युरन्ये ॥

टीका-श्रवण रोहिणी हस्त अनुराधा स्वाती रेवती मूल तीनों उत्तरा शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम कहेहैं, और पुष्य धनिष्ठा मृगशिर अश्विनी चित्रा पुनर्वसु ये मध्यम हैं, और शेष नक्षत्र अधम जानिये ॥ मुहूर्त्तमार्त्तंडमते ॥

वैधृति संक्रांति महापात आदि दुष्ट योग और श्राद्धांत—पूर्व दिन जन्मनक्षत्र संधि दिवस रात्रि नक्षत्र इत्यादि वर्जनीय करते हैं. और जिस लग्नमें विषमस्थानी नवांशकमें उच्च बृहस्पति अथवा सूर्य चंद्रमा होय तो पुत्रप्राप्ति होय और येही ग्रह समराशिके होय तो कन्याप्राप्ति होय ॥

गर्भाधाने लग्नशुद्धिः

केन्द्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैस्त्र्यायारिगैःपुंग्रहदृष्टलग्ने॥ ओजांशके ऽब्जेपिचयुग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषुमध्यमंस्यात् ॥

टीका—प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम ये केन्द्र इसमें शुभग्रह होय त्रिकोण नवम पंचम इसमें शुभग्रह होय ३।११।१०।६ इसमें पापग्रह होय लग्नको पुरुष ग्रह देखते होय और विषम नवांशमें चंद्रमा होय तो इसमें गर्भाधान शुभ है और समरात्रो, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, ये नक्षत्र मध्यम होते हैं ॥

प्रथम गर्भिणीके पुंसवनादिक संस्कार

मूलादित्रितयंकरेश्रवणके भाद्रद्वयार्द्रात्रयेरेवत्यां मृगपञ्चके दिनकरे भौमेनरिक्तातिथौ ॥ नेत्रेमास्यथवाग्निमासिधनुषि स्त्री मानयोश्चास्थिरे लग्ने पुंसवनंतथैवशुभदंसीमन्तकर्माष्टमे ॥

टीका—मूल पूर्वाषाढा उत्तराषाढा हस्त श्रवण पूर्वाभाद्रपदा उत्तराभाद्रपदा आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका रोहिणी मृगशिर और रवि भौमवार लेने और रिक्ता तिथि वर्जनीय है और गर्भाधानसे दूसरा महीना व तीसरा मास और धन कन्या मीन और स्थिर लग्नोंमें पंसवन कर्मके करे और इनही नक्षत्र वा लग्नोंमें ये अष्टमासमें सीमंतकर्म करना शुभ कहाहै ॥

वारफलम्

मृत्युश्चसौरेस्तनुहानिरिन्दोः प्रजामृतिः पुंसवनेबुधस्य ॥ काका च वन्ध्याभवतीहशुक्रे स्त्रीपुत्रलाभोरविभौमजावैः ॥

टीका—शनिवार को पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु होय, चंद्रवार को शरीरका नाश, बुधवारको संताननाश, शुक्रवारको काकवंध्या एकवार प्रसूति और रवि

भौम गुरु इन वारोंमें पुत्र प्राप्ति होय, परंतु स्त्रीके चंद्रमा शुभ होय दुष्ट योगादिक वर्जितहैं ॥ उक्त नक्षत्र आदिमें और शुभ दिवसमें पुंसवन कहिये गर्भकी पुरुषाकृति होना यह कर्म करावे और जिस मुहूर्तमें गर्भकी स्थिरता कहीहै उसीमें अनवलोभनभी कर्म उक्त है ॥

अन्यमते

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजिसौरेणगर्भेप्रथमंविधेयम् ॥ सीमन्तकर्मद्विजभामिनीनां मासेष्टमेविष्णुबलिंचकुर्यात् ॥

टीका—प्रथम गर्भधारण होनेसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम ऐसे सम सौर मासोंमें आठ मास पर्य्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी स्त्रियोंका सीमंतकर्म और विष्णुबलि करना उचित है ॥

सीमन्तेतिष्यहस्तादितिहरिशशभृत्पौष्णविद्धयुत्तराख्या पक्षच्छिद्राचरिक्तापितृतिथिमपहायापराःस्युःप्रशस्ताः ॥

टीका—सीमंत कर्ममें पुष्य हस्त पुनर्वसु श्रवण मृगशिर रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्षरंध्र—तिथि रिक्ता—तिथि और अमावास्याको छोड़ शेष तिथि शुभ जानिये ॥

पक्षछिद्रातिथि

चतुर्दशीचतुर्थी च अष्टमीनवमीतथा ॥ षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्राह्वयाः स्मृताः ॥ क्रमोदितासुतिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ॥ भूताष्टमनुतत्त्वाङ्कदशशेषास्तुशोभनाः ॥

टीका—चतुर्दशीको प्रथमकी ५. घटिका, और चौथकी ८ घटिका, अष्टमीकी १४ घटिका, षष्ठीकी ८ घटिका, द्वादशीकी १० घटिका वर्जनीय हैं और शेष घटी शुभ हैं॥

मासेश्वरज्ञानमाह

मासेश्वराःसितकुजेज्यरवीन्दुसौरचन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराःस्युः ॥

मासेश्वरज्ञानार्थमासेशचक्रम्

१	२	३	४	५
स्वामी-शुक्र	स्वामी-भौम	स्वामी-गुरु	स्वामी-रवि	स्वामी-चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी-शनि	स्वामी-बुध	स्वा. गर्भाधा.ल	स्वामी-चंद्र	स्वामी-सूर्य

गर्भिणीधर्म

भूम्यांचैवोच्चनीचायामारोहणेवरोहणे ॥ नदीप्रतरणंचैवशकटारोहणंतथा ॥ उग्रौषधंतथाक्षारं मैथुनंभारवाहनम् ॥ कृते पुंसवनचैवगर्भिणीपरिवर्जयेत् ॥

टीका—पुंसवन कर्म होने उपरांत गर्भिणीको ऊंचे नीचे स्थानपर चढना उतरना, भागकर चलना, नदी तरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध नीरस क्षार आदि खाना, मैथुन, भार उठाना सर्व कर्म वर्जित हैं॥

गर्भिणीप्रश्नः

नामाक्षराणित्रिगुणीकृतानि तुरङ्गदेशे तिथिमिश्रितानि ॥
अष्टौ च भागं लभत च शेषं समे च कन्याविषमेचपुत्रः ॥

टीका—गर्भिणीके नामके अक्षर तिगुणे कर तिनमें घोडाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाकर वर्तमान तिथि मिलावे और आठका भाग दे शेष अंक सम बचें तो कन्या और विषम बचें तो पुत्र होय ॥

प्रसूतिस्थानप्रवेशनक्षत्र

रोहिण्यैन्दवपौष्णेषुस्वातीवारुणयोरपि ॥ पुनर्वसौपुष्यहस्त धनिष्ठास्युत्तरासुच॥मैत्रेत्वाष्ट्रेतथाश्विन्यां सूतिकागारवेशनम्॥ प्रसूतिसम्भवेकाले सद्य एवप्रवेशयेत् ॥

टीका—रोहिणी मृगशिर रेवती स्वाती शतभिषा पुनर्वसु पुष्य हस्त धनिष्ठा तीनों उत्तरा अनुराधा चित्रा अश्विनी ये नक्षत्र प्रसूतिका भवनके प्रवेशमें कहेहैं प्रसूति समयमें इन नक्षत्रोंमें तत्काल प्रवेश करावे ॥

॥ गर्भके लक्षण ॥

कललं च घनंशाखास्थित्वग्रोमोद्भर्मः स्मृतिः ॥
भुक्तिरुद्वेगसंसूतिर्मासेष्वाधानतः क्रमात् ॥

टीका—गर्भाधानसे १० मास तक गर्भका रूप कहतेहैं-प्रथम १ मासमें कलल कहिये शुक्र रुधिर इसके संयोगसे पिंडित होताहै-२मासमें घन कहिये वह पिंड दृढ होताहै-३ मासमें उस पिंडमें शाखा कहिये हस्त और पाद उत्पन्न होतेहैं-४ मासमें उसमें अस्थि-हाड होतेहैं-५ मासमें उसपर त्वचा कहिये चमडा-६ मासमें रोम कहिये केश होतेहैं-७ मासमें स्मृति अर्थात् ज्ञान होताहै-८ मासमें क्षुधा काहोना-९ नवम मासमें उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदरसे निकलनेकी इच्छा करताहै-१० मासमें प्रसव जानना चाहिये ॥

प्रसूतिसमयका प्रश्न

मीनेमेषस्त्रियौद्वे च चतस्रो वृषकुम्भयोः ॥ तुलाकन्यकयोः सप्तबाणाख्या धनकर्कयोः ॥ अन्यलग्नेभवेत्तिस्रएवंज्ञेयंविचक्षणैः ॥ यथाराहुस्तस्थाशय्या भौमेखट्वाङ्गभङ्गता ॥ रविस्था नेभवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ॥

टीका—मीन अथवा मेष इन लग्नोंमें जो स्त्रीके प्रसव होय तो उससमय उसके निकट दो स्त्रियाँ, और वृष कुंभ होय तो ४ ,तुला कन्या होय तो७.धन और कर्कमें ५ अन्य लग्नोंमें तीन तीन स्त्रियां जाननी चाहिये ॥ जन्म कुंडलीके मध्य जिस दिशामें राहु स्थित होय उसी दिशामें शय्या जाननी. जो लग्नमें मंगल बैठा होय तो खाटका अंगभंग जानिये, जिस स्थानमें रवि होय उसी दिशामें दीपक और जिस दिशामें शनि होय उसमें नाल समझना ॥

तिथिगण्डान्त

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः सन्धिर्नाडीद्वयंतथा ॥
गण्डान्तमृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥

टीका—पूर्णातिथि कहिये १५।५।१०। और पडवा छठ एकादशी कहिये नंदा इनकी संधिको दो २ घटी अर्थात् पूर्णिमा पंचमी दशमीके अंतको एक २ और पडवा छठि एकादशीके आदिको एक २ घटी गंडांत है यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें वर्जित है करे तो मृत्यु होय॥

लग्नगंडांत

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः॥
गण्डान्तमन्तरालेस्याद्धटिकार्द्धंमृतिप्रदम्॥

टीका—कर्क सिंह इन दोनों लग्नोंकी घटिका आधी और इस क्रमसे वृश्चिक और धन मीन मेष इनको आदिकी घटी गंडांतमें शुभकर्म न करे य मृत्यु देतीहैं

नक्षत्रगंडांत

पौष्णाश्विन्योः सर्पपित्र्यर्क्षयोश्चयच्चज्येष्ठामूलयोरन्तरालम्॥
तद्गण्डान्तंस्याच्चतुर्नाडिकं हियात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम्॥

टीका—रेवती अश्विनी इनकी संधिकी २ घटिका इसी क्रमसे श्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इनकी संधिकी ४ घटिका वर्जनीय और ऐसेही तिथी लग्न और नक्षत्र ये त्रिविध गंडान्त जानिये यह यात्रा जन्मकाल और विवाहमें वर्जित हैं॥

॥ जातक ॥

जन्मकालमें गंडांतका शुभाशुभफल.

अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धेबाध्यतेपिता॥ पूषादिशाक्रप-
श्चार्द्धेजननी बाध्यतेशिशुः॥ सर्वेषां गण्डजातानांपरित्यागो
विधीयते॥ वर्जयेद्दर्शनंशावं तच्चषाण्मासिकंभवेत्॥

टीका—अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमें जन्म होय तो पिताको अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें जन्म होय तो माताको अशुभ और गंडातमें जन्म होय तो शिशुका त्याग करना योग्य है अथवा छः मासतक पुत्रको न देखे॥

कृष्णचतुर्दशीकाजन्मफल

कृष्णपक्षेचतुर्दश्यांप्रसूतेः षड्विधंफलम् ॥ चतुर्दश्याश्चषड्भागान् कुर्यादादौशुभंस्मृतम् ॥ द्वितीये पितरं हन्ति तृतीयेमातरंतथा ॥ चतुर्थेमातुलं हन्ति पञ्चमेवंशनाशनम् ॥ षष्ठे च धनहानिःस्यादात्मनोवंशनाशनम् ॥

टीका-जो कृष्ण चतुर्दशीका जन्म होय तो तिथिके छः खंडदश २ घटिकाके करे जो प्रथम खंडमें जन्म होय तो शुभ द्वितीयमें पिताको अशुभ तृतीयमें माताको अशुभ, चतुर्थमें मामाको अशुभ, पंचममें वंशनाश, छठेमें धनहानिकारक और अपने वंशका नाशक जानिये ॥

अमावास्याके जन्मका फल

सिनीवाल्यां प्रसूताश्चदासीभार्यापशुस्तथा ॥ गजोश्वोमहिषीचैव शक्रस्यापिश्रियंहरेत् ॥ कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरीस्मृता ॥ यस्यप्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ॥ सर्वगण्डसमस्तत्रदोषस्तुप्रबलोभवेत् ॥

टिका-चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी अथवा भार्या गाय हस्तिनी घोडी भैंस जो प्रसूता होय तो इंद्रकीभी संपत्ति हरलेती हैं और ठीक अमावास्याको प्रसूता होतो बहुतसे दोष लगें और जिसकी इनमें प्रसूति होय उसकी आयुधनका नाश होय और गंडांतमें प्रसूति होय तो बहुतसे दोष जानिये ॥

दिनक्षयादिकफल

दिनक्षयेव्यतीपातेव्याघातेविष्टिवैधृतौ ॥ शूलेगण्डेतिगण्डे च परिघे यमघण्टके ॥ कालगण्डेमृत्युयोगेदग्धयोगे सुदारुणे ॥ तस्मिन्गण्डदिनेप्राप्ते प्रसूतिर्यदिजायते ॥ अतिदोषकरीप्रोक्तातत्रपापयुतासती ॥

टीका-दिनक्षय व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूलगंड अतिगंड परिघमें यमघंट कालगंड मृत्युयोग दग्धयोग दारुणयोग इनमें जन्म होय तो भारी पाप लगे ऐसी प्रसूति स्त्रीको पापयुक्त जानिये ॥

ज्येष्ठानक्षत्रफल.

ज्येष्ठादौजननेमाता द्वितीयेजननेपिता ॥ तृतीयेजनने भ्राता स्वयंमाताचतुर्थके॥ आत्मानं पञ्चमेहन्तिषष्ठे गोत्रक्षयोभवेत् ॥ सप्तमेचोभयकुलंज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥ नवमेश्वशुरंचैवसर्वंहन्ति दशांशके ॥

टिका—ज्येष्ठा नक्षत्रमें जोजन्म होय तो उस नक्षत्रकी छः घटियोंके दशभाग प्रमान करे तिसका फल प्रथमभाग माताको अशुभ, दूसरा पिताको, तीसरा मामाको, चौथा माताको, पांचवां शिशुको, छठा भाग गोत्रजोंको, सातवां पिता, नानाके परिवारको, आठवाँ बडे भ्राताको, नवमां श्वशुरको, दशवां सर्व जनोंको बुरा है ॥

मूलनक्षत्रफल

मूलंस्तम्भंत्वक् च शाखापत्रंपुष्पंफलंशिखा॥ वेदाश्चमुनयश्चैवदिशश्चवसवस्तथा॥ नदाबाणरसारुद्रामूलभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ मूलमूलविनाशायस्तम्भे हानिर्धनक्षयः ॥ त्वचिभ्रातृविनाशायशाखामातुर्विनाशकृत् ॥ पत्रेसपरिवारःस्यात्पुष्पेनृपवल्लभः॥ फलेषुलभतेराज्यं शाखायामल्पजीवितम् ॥

टीका—मूल नक्षत्रको मूल वृक्ष कल्पना करते हैं तिसकी ६० घटीके स्थान इस भांति हैं प्रथम ४ घटिका वृक्षका मूल, तिनमें जन्म होय तो नाश, दूसरा भाग ७ घटिका स्तंभ तिनमें हानि और धनका नाश, तीसरा भाग १० घटिका वृक्षकी त्वचा तिनमें भ्राताको अशुभ होय, चौथा भाग ८ घटिका शाखा तिनमें माताको अशुभ, पांचवां भाग ९ घटि वृक्षके पत्र तिनमें परिवार नाश, छठा भाग ५ घटिका पुष्प तिनमें राजमंत्री, सातवां भाग ६ घटि फल तिनमें राज्यप्राप्ति, आठवां भाग ११ घटिका वृक्षकी शाखा तिनमें जन्म होय तो शिशु अल्पायु होय ऐसे आठ स्थानका फल जानिये ॥

जन्मकालमेंमूलनक्षत्रकिसलोकमेंहैइसकेजाननेकीलग्न

वृषालिसिंहेषुघटे च मूलं दिविस्थितंयुग्मतुलाङ्गनान्त्ये ॥

पातालगंमेषधनुःकुलीरनक्रेषुमर्त्येष्ववितिसंस्मरन्ति ॥

टीका—वृष सिंह कुंभ वृश्चिक लग्नोंमें जन्म होय तो उस दिन मूल नक्षत्र स्वर्गमें होताहै तिसका फल राज्यप्राप्ति, और मिथुन तुला कन्या मीन में मूल पातालमें जानिये तिसका फल धनप्राप्ति, और मेष धन कर्क मकर इनलग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें होताहै इसका फल कुटुंब नाश, १२ लग्नोंका फल है ॥

आश्लेषानक्षत्रस्य नराकारचक्रम्

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहुहृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेह-भागः ॥ बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्रषण्नन्दपञ्चशिरसः क्रमशस्तुनाड्यः ॥ राज्यंपितृक्षयोमातृनाशः कामक्रियारतिः ॥ पितृभक्तोबली स्वघ्नस्त्यागीभोगीधनीक्रमात् ॥

टीका—आश्लेषा नक्षत्रकी घटिकाओंको नराकार चक्रमें स्थापन करनेमें प्रथम ६ घटिका मस्तक तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घटी मुख तिनका फल पिताका नाश, तीसरा विभाग दोघडी तिनका फल माताका नाश, चौथे ३ घटिका ग्रीवा तिनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग ४ घटी दोनों कांधे तिनका फल पितृभक्त, छठा भाग ८ घटी दोनों बाहु तिनका फल बली, ७ भाग ११ घटी हृदय तिनका फल आत्मघाती, आठवां भाग ६ घटी दोनों जानु तिनका फल त्यागी, नौवां विभाग ९ घटिका गुह्य तिसका फल भोगी, दशवां भाग ५ घटी दोनों पांय तिनका फल धनवान् जिस विभागमें जन्म होय जिसका फल स्थानानुसार कहना योग्य है ॥

जन्मसमयमें सूर्यादिग्रहोंका फल

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितोदिनकरः कुरुतेङ्गपीडांपृथ्वीसुतोवि तनुतेरुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतः प्रकुरुतेबहुदुःखभाजंजीवे-न्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः ॥ धनस्थान ॥ दुःखाव-हाधनविनाशकराः प्रदिष्टावित्तेस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥ चन्द्रोबुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनोवा नानाविधं धनचयंकुरुतेधनं-

स्थः ॥ सहजस्थानम् ॥ भानुः करोतिविरुजंरजनीकरोपि की-
र्त्यायुतंक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिंबुधः सुधिषणंसुवि-
नीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये ॥ सुहृत्स्थानम् ॥
आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गंकुर्वन्ति जन्मनिनरंसुचिरंच-
तुर्थे ॥ सोमोबुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनोवासौख्यान्वितं च नृपक-
र्मरतः प्रधानम् ॥ सुतस्थानम् ॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतंबुध-
श्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुत-
धामसंस्थाः कुर्वन्ति पुत्रबहुलंसुखिनं सुरूपम् ॥ रिपुस्थानम् ॥
मार्तण्डभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपङ्कुर्नरंरिपुगृहेष्वतिपूज[illegible] ॥
काव्येन्दुजौमतिविहीनमनल्परोगंजीवः करोतिविकलंमर[illegible]
शाङ्कः ॥ जायास्थानम् ॥ तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तम-
स्थाजायांकुकर्मनिरतां तनुसंततिं च ॥ जीवेन्दुभार्गवबुधा बहु-
पुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ॥ मृत्युस्थानम् ॥
सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितान्तंमृत्युस्थिताविततुते किलदुष्टबु-
द्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिंसौख्यैर्विहीनमतिरो-
गगणैरुपेतम् ॥ धर्मस्थानम्॥धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्तिधर्मरहितं विमतिंकुशीलम्॥चन्द्रोबुधोभृगुसुतः सुरराज-
मन्त्री धर्मक्रियासु निरतं कुरुतेमनुष्यम्॥ कर्मस्थानम्॥ आदि-
त्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्रम् ॥
चन्द्रःसुकीर्तिमुशना बहुवित्तयुक्तंरूपान्वितं बुधगुरूशुभकर्म
भाजम् ॥ [illegible]स्थानम्॥ लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तंता-
रापतिर्व[illegible] क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेकसुभगं च ध-
नायुषी[illegible]क्रःकरोतिसगुणंरविजःसुकीर्तिम्॥ व्ययस्थानम् ॥
सूर्यःव[illegible]पुरुषंव्ययगो विशीलं काणंशशीक्षितिसुतो बहु-
पापर[illegible] ॥ चन्द्राङ्गजो गतधनंधिषणःकृशाङ्गंशुक्रोबहुव्यय
करं[illegible]:सुतीव्रम् ॥ राहुकेतुफलंसर्वं मन्दवत्कुथितंकु:

सं०	स्था	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि राहु के.
१	तनु	अंगपीडा	कांति और सुख	रक्तकोप	कांति और सुख	कांतिऔरसुख	कांतिऔरसुख	अतिदुःखदायक
२	धन	अतिदुःखवाध नकानाश	संपत्तिकीबहुत प्राप्ति	दुःखप्राप्तिधन कानाश	नानाप्रकारके सं०प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्ति प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्तिप्राप्ति	अतिदुःखप्राप्ति धनकानाश
३	सह	निरोगीरहै	कीर्तिलाभ	क्रोधयुक्तरहै	समृद्धि	सुबुद्धि	नानावेषधारण०	स्त्रियोंकोप्रियहो
४	सुहृत्	शरीरकोपीडा बहुतहोय	सुखभोगी	शरीरकोबहुत पीडा	सुखभोगी	सुखभोगी	सुखभोग	शरीरकोपीडाब हुतहोय
५	सुत	रोगबहुतहोय	बहुतपुत्रहोय	संतानरहित	अल्पपुत्रसंतानि	बहुपुत्रप्राप्ति	बहुतपुत्र	संतानि नहो
६	रिपु	शत्रुकानाशकरै	मरणपावै	शत्रुनाश	बुद्धिहीनबहुरोग	शरीरविकलरहै	बुद्धिहीनबहुरोग	शत्रुग्रहपूज्य
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी संतानीअल्प	स्त्रीरूपवतीगुण वतीगुणयुक्तपुत्र	स्त्रीदुष्टकर्मी व संततिअल्प	स्त्रीरूपवान ब हु पुत्रप्राप्ति	औरमनहारण होयसुखभोगी	मनहरनेवाली पुत्रवतीचतुर	स्त्रीदुष्टकर्मी संतानथोडीउत्पन्न
८	मृत्यु	इसमें सब ग्रहोंकाफल एक समानहोताहै दुष्टबुद्धि शस्त्रघाति शरीरपीडा सुखरहित और रोगीहोय जो ग्रह इस स्थानमें होय ताका ऐसा फल जानिये						
९	धर्म	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धार्मिकहोय	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धर्मनिरंतरकरै	धर्मनिरंतरकरै	धर्मनिरंतरकरै	अधर्मी दुष्टबुद्धि
१०	कर्म	अत्यंतदुष्टकर्मी कुपुत्र	अत्यंतकीर्तिवा न होय	दुष्टकर्मीकुपुत्र	कीर्तिवान	शुभकर्मकरै	संपत्तिवान	अत्यंतदुष्टकर्मी व कुपुत्र
११	आय	राजासेसमाग मकरै	धनबहुतमिलै	पृथ्वीलाभ राजासे	विवेकयुक्तऔर सुंदर	धन और आयु की वृद्धि	गुणवान	अच्छीकीर्तिपावे
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	काणाहोय	पापकर्म	धनहीन	कृशगात्र	व्याधियुत	तीव्रहोय

पुरुषकेजन्मकालमेंजैसेग्रह पडेहोंयातिनकाफल।

भाषाटीका–जन्म लग्नके तनु आदि द्वादशस्थानोंमें जो जो ग्रह पडे होंय ति
चन्द्रोबुद्ध जाननेके लिये कोष्टक और राहुकेतुके फल शनिके समानजा

जन्मलग्नमेंबालककेमृत्युकारकग्रह।

चन्द्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च श-
निजन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तुपञ्चभृगुषष्ठबु-
धश्चतुर्थेजातो नजीवतिनरः प्रवदन्तिसन्तः ॥

टीका–जन्मलग्नसे चंद्रमा अष्टमस्थानी भौम ७ स्थानमें राहु ९ स्थानमें शनि जन्म लग्नमें गुरु तृतीयस्थानमें रवि ५ स्थनमें शुक्र ६ स्थानमें बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रह पडें तो शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

जन्मलग्नमेंस्त्रीकेमृत्युकारकग्रह।

षष्ठे च भवनेभौमोराहुः सप्तमसम्भवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्यभार्या नजीवति ॥

टीका–जन्म लग्नसे छठे स्थानमें भौम राहु ७ स्थानमें शनि ८ स्थानमें ऐसे ऐसे ग्रह जिसकी कुंडलीमें पडे होंय उस पुरुषकी स्त्री नजींवै ॥

अच्छेपराक्रमीग्रह।

मूर्तौशुक्रबुधौयस्य केन्द्रे चैवबृहस्पतिः ॥
दशमोङ्गारकोयस्यसज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका–जिसकी जन्म लग्नमें शुक्रबुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इनस्थानोंमें बृहस्पति तथा दशम स्थानमें मंगल होय तो उस बालकको कुलदीपक जानियें ॥

पराक्रमीग्[illegible]।

नैवशुक्रोबुधोनैवनास्तिके[illegible]तिः ॥
दशमोऽगारकोनैवसजातः [illegible]ष्यति ॥

टीका–जिस[illegible]कके लग्नमें बुध शुक्र अथवा केन्द्रमें बृहस्पति किंवा दशमस्थानमें मंगल [illegible] न पडे होय तौ उसका जन्म होना वृथा जानिये ॥

[illegible]तिभ्रंशकारक।

धनस्थानेयदार[illegible]हिकेयोधरात्मजः ॥ शुक्रोगुरुः

सप्तमे च त्वष्टमौरविचन्द्रकौ ॥ ब्रह्मपुत्रेपदेवापि वेश्यासु
च सदारतिः॥ प्राप्तेविंशतिमेवर्षैम्लेच्छोभवतिनान्यथा ॥

टीका–जिसके धनस्थानमें शनि राहु मंगल और सप्तम स्थानमें शुक्र गुरु तथा अष्टमस्थानमें रवि चंद्र ऐसे ग्रह होंय सो बालक कदाचित् ब्राह्मण जातिमें भी जन्म पावे तथापि वेश्या प्रसंगी होय और वीसवीं वर्षकी अवस्थामें अवश्य म्लेच्छ होय ॥

मातापिताकेनाशक।

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदापापग्रहोभवेत् ॥
तदामातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमेपितुः ॥

टीका–जो छठे अथवा बारहें स्थानमें पाप ग्रह होंय तौ माताको अशुभ किंवा चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रह होंय तौ पिताको अशुभ जानिये ॥

मृत्युकारकग्रह।

अर्कोराहुः कुजः सौरिर्लग्नेतिष्ठतिपञ्चमे ॥
पितरंमातरंहन्ति भ्रातरंस्वशिशूंन्क्रमात् ॥

टीका–जो सूर्य राहुमंगल शनि ये ग्रह जन्मलग्नसे पांचमें स्थानमें पडे होंय तौ क्रमसे रवि पिताको राहु माताको भौम भ्राताको और शनि अपने बालकों के लिये अशुभ जानिये ॥

लग्नस्थानेयदासौरिः षष्ठोभवतिचन्द्रमाः ॥
कुजस्तुसप्तमस्थाने पितातस्यनजीवति ॥

टीका–जिसकी जन्म लग्नमें शनि और छठे स्थानमें चंद्रमा सप्तममें मंगल ऐसे ग्रह होंय उसका पिता न जीवै ॥

पातालस्थोयदाराहुश्चेन्दुःषष्ठाष्टमेपिच ॥
पापदृष्टोपिशेषेणसद्यःप्राणहरः शिशोः ॥

टीका–जन्म लग्नके सप्तम स्थानमें राहु छठे अथवा आठमें स्थानमें चंद्रमा और शेष ग्रहोंकी पापदृष्टि जो ऐसे ग्रह होंय तो जन्म होतेही बालककी मृत्यु होय ॥

जन्मलग्नेयदाराहुः षष्ठोभवतिचन्द्रमाः ॥
जातोमृत्युमवाप्नोति कुदृष्टचांत्वपमृत्युना ॥

टीका—जन्मलग्नमें राहु षष्ठ स्थानमें चंद्रमा ऐसे समय जन्मै तौ बालककी मृत्यु होय और जन्म लग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि होय तौ अपमृत्यु जानिये ॥

जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशङ्करः ॥

टीका—जो जन्मलग्नमें मंगल और अष्टमस्थानी बृहस्पति ऐसे ग्रह होंय तौ बारहें वर्ष शंकर रक्षक हों तौभी मृत्यु जानिये ॥

शनिक्षेत्रेयदासूर्यो भानुक्षेत्रेयदाशनिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वैरक्षितायदि ॥

टीका—जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य होय और सूर्यके ग्रहमें शनि होय तौ बारहें वर्ष देव—रक्षितभी शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

षष्ठोष्टमस्तथामूर्तौ जन्मकालेयदाबुधः ॥
चतुर्थवर्षेमृत्युश्चयदि रक्षतिशङ्करः ॥

टीका—षष्ठ अष्टम अथवा जन्म लग्नमें बुध होय तौ चौथे वर्ष शंकरभी रक्षा करै तौभी बालक न बचै ॥

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ॥
वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वैईश्वरोरक्षितायदि ॥

टीका—मंगलके घरमें बृहस्पति और षष्ठ अथवा अष्टमस्थानी चन्द्रमा ऐसे ग्रह होय तौ ईश्वर रक्षितभी बालक आठवें वर्ष मृत्युको प्राप्त होय ॥

दशमोपियदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभवेत् ॥
वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥

टीका—जन्म लग्नसे दशमस्थानी अथवा जन्मलग्नमें राहु होय तौ सोलहवें वर्षमें मृत्यु होय ॥

ग्रहोंव[illegible]ष्टि।

दैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाद[illegible]वपञ्चमेवा ॥ त्रिपाददृष्टि-

श्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥ शनेस्त्वेकादशेपूर्णा दृष्टिर्जीवस्यकाणके ॥ बुधैर्ज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके ॥

टीका—जन्म लग्नसें दशमें और तीसरे स्थानमें जानैसे ग्रह होंय वे एकपाद दृष्टिसे जन्म लग्नको देखतेहैं इसी क्रमसे नवम पंचम स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टिसे देखते हैं चौथे और आठवें स्थान जो ग्रह पडे होंय वे त्रिपाद दृष्टिसे सप्तम स्थानी होंय तिसकी पूर्ण सम दृष्टि जानिये जन्म लग्नसे शनैश्चर एकादश अथवा तीसरे स्थानमें होय तौ पूर्णदृष्टिसे लग्नको देखताहै पांचवें नवमें गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थानमें भौम होय तो लग्नको पूर्ण दृष्टिसे देखता है ॥

ग्रहोंकाउच्चत्ववनीचत्व ।

रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचन्द्रस्तुवृश्चिके ॥ भौमश्चनक्रेकर्के च स्त्रियां सौम्यो झषे तथा ॥ गुरुःकर्के च नक्रे च मीनकन्ये सितस्य च ॥ मन्दस्तुलायां मेषे च कन्याराहुग्रहस्य च ॥ राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ॥ प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥

ग्रह	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुल	कन्या मिथुन	तुल
नीच	तुल	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

जन्मलग्नकाफल ।

मेषेदैन्यमुपैति गर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथेशूरः कर्कटकेधृती च वनपे कन्या च मायान्विता ॥ सत्यंचैवतुलेत्वलौ मलिनता पापान्वितंवैधनुर्मूर्खोयंमकरेघटे चतुरतामीनेत्वधीरामतिः ॥

टीका—मेष लग्नमें जन्म होय तौ दीनता, वृषमें गर्वित, मिथुनमें नाना प्रकार की बुद्धियुत, कर्कमें बडाशूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंत मानी, तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलीन, धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूर्ख, कुंभमें चतुर, मीन लग्नमें जो जन्म पावै सो बडा अधीर होय ऐसे जन्मलग्नका फल जानिये ॥

स्त्रीजातकमाह ।

लग्ने च सप्तमेपापेसप्तमेवत्सरेपतिः ॥
म्रियतेचाष्टमेवर्षेचन्द्रः षष्ठाष्टमेयदि ॥

टीका–स्त्रीके जन्म कालमें लग्नमें पापग्रह होय तौ ७ वर्षमें पतिनाश जानना और चंद्र षष्ठ वा अष्टम स्थानमें होय तौ अष्टमवर्षमें पतिका नाश जानना ॥

अन्यमते ॥ द्वादशेचाष्टमे भौमेक्रूरेतत्रैवसंस्थिते ॥
लग्ने च सिंहिकापुत्रेरण्डाभवतिकन्यका ॥

टीका–जन्म समयमें १२।८ स्थानमें जो मंगल होय और क्रूरग्रहभी १२।८ स्थानमें होय और जो लग्नमें राहु होय, तौ स्त्री विधवा होय ऐसा जानना ॥

अन्यमते ॥ लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोपिवा ॥
सद्योनिहन्तिदम्पत्योरेकंनास्त्यत्रसंशयः ॥

टीका–जो लग्नसे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमेंभी पापग्रह होय तौ विवाहसे अल्पकालमें स्त्री विधवा होय ॥

रविसुतोयदिकर्कमुपागतो हिमकरोमकरोपगतोभवेत् ॥
किलजलोदरसंजनिता तदानिधनतावनितासुतकीर्तिता ॥

टीका–जो शनैश्चर कर्कराशिमें होय और चंद्रमा मकरराशिमें होय तौ जलोदररोगसे स्त्रीका नाश जानिये ॥

निशाकरःपापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोति ॥
पापाःस्मरस्थेन्यखगे च धर्म्मेकिलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति ॥

टीका–जो चंद्रमा पापग्रहके मध्यमें बैठा होय तौ शस्त्रसे मृत्यु कहना और जो चंद्रमा मंगलकी राशिमें बैठा होय तौ अग्निसे जलकर नाश कहना और जो पापग्रह सप्तम स्थानमें अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह होय तौ स्त्री काषायवस्त्रधारी वेदांती होतीहै ॥

सप्तमेदिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजे च विधवाखलुबाल्ये ॥
पापखेचरविलोकनयाते मन्दगे च युवतिर्जरतीस्यात् ॥

टीका–जो स्त्रीके जन्मलग्नमें सप्तम स्थानमें सूर्य होय तौ पति त्यागी कहना–और जो मंगल सप्तम होय तौ बाला अवस्थामें वैधव्य प्राप्ति होय. और जो सप्तम पापग्रह देखता होय तौ यौवन अवस्थामें विधवा होय. और जो सप्तमस्थानमें शनैश्चर होय तौ वृद्ध अवस्थामें वैधव्य प्राप्ति हो ऐसा जानिये॥

लग्नेसितेन्दुचतथाकुजमन्दभस्थौक्रूरेक्षितौसान्यरता च बाला ॥
स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्चशुभाशुभांशे ॥

टीका–जो लग्नमें शुक्र-चंद्रमा होय और मंगल शनि ये दशम स्थानमें पडे होंय और उसको पापग्रह देखते होंय तौ वह स्त्री परपुरुषसे संग करै और जो सप्तम स्थानमें मंगलका अंश होय और शनैश्चर सप्तम स्थानको देखता होय तौ नष्टयोनी जानना. जो सप्तम स्थानमें शुभ ग्रहका अंश होय तौ शुभ कहना॥

सूर्यारौखचलाश्रितौहिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिर्भौमेन्द्व-
र्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥ सूर्या
चन्द्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यायुतौ बन्धुनातौचेद्वयङ्ग-
विलग्नसंस्थितकरौ तोयेनिमग्नत्वतः ॥

टीका–जो सूर्य मंगल ये दशमें वा चौथे स्थानमें होंय तौ पाषाणसे मृत्यु कहना. और जो मंगल-चंद्र-शनि ये अपने स्थानमें सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें बैठे होंय तौ कूवा-बावडी-तलाव आदिसे मृत्यु कहना और जो सूर्य-चंद्रमा को पापग्रह देखते होंय वा युक्त होंय तौ वह स्त्री बंधुयुक्त कहना. और जो सूर्य, चंद्र ये द्विस्वभावमें होंय तौ जलसे मृत्यु कहना चाहिये॥

समेविलग्नेयदिसंस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥
स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥

टीका–जो समराशिको लग्नहोय और उसमें शुक्र-बुध-चंद्र-गुरु-ये बलयुक्त होंय तौ वह स्त्री ब्रह्मविचार करै और उत्तम प्रकारको ज्ञानी होय॥

सप्तमेभार्गवेजाताकुलदोषकराभवेत् ॥
कर्कराशिस्थितेभौमेस्वैराभ्रमतिवेश्मसु ॥

टीका–स्त्रीके सप्तमस्थानमें जो शुक्र होय तौ कुलको दोषित करै और जो कर्क राशिमें मंगल होय तौ वंध्या और दूसरेके घरमें वास करै ऐसा जानना॥

पापयोरंतरेलग्ने चन्द्रेवायदिकन्यका ॥
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोःकुलम् ॥

टीका–जो लग्नके पापग्रहकी कर्तरी होय अथवा चंद्रमाके पापग्रहकी कर्तरी होय तौ वह स्त्री दोनों वंशकी वात करनेवाली होतीहै ॥

॥ तनुस्थानम्॥मूर्तौकरोतिविधवां दिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्टतनयांरविजोदरिद्राम् ॥ शुक्रः शशाङ्कतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः॥ धनस्थानम् ॥ कुर्वन्तिभास्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनियतं द्वितीये ॥ वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यानारीं प्रभूततनयांकुरुतेशशाङ्कः ॥ सहजस्थानम् ॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युःस्त्रियंबहुसुतांधनभागिनीं च ॥ सत्यंदिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मीं ददातिनियतं किलसैंहिकेयः ॥सुहृत्स्थानम्॥ स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुते चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुतेशशी च॥ राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पबीजां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ॥ सुतस्थानम् ॥ नष्टात्मजांरविकुजौखलु पञ्चमस्थौचन्द्रात्मजो बहुसुतांगुरुभार्गवौ च॥ राहुर्ददाति मरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनिरतां कुरुतेशशाङ्कः ॥ रिपुस्थानम्॥षष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहुसुतां धनभागिनीं च॥ चन्द्रःकरोति विधवामुशनादरिद्रां वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां च॥ जायास्थानम् ॥ सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रादद्युः प्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाः ॥ वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ मृत्युस्थानम्॥स्थानेष्टमेगुरुबुधौ नियतंवियोगं मृत्युंशशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः ॥ सूर्यःकरोतिविधवां धनिनींकुजश्चसूर्यात्मजोबहुसुतां पतिवल्लभां च॥ धर्मस्थानम् ॥ धर्मस्थिताभृगुदिवाकर-

भूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजः सुभोगाम् ॥ राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवन्ध्यांनारींप्रसूतितनयांकुरुतेशशाङ्कः॥कर्मस्थानम्॥ राहुर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चरश्च ॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चन्द्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च ॥ आयस्थानम् ॥ आयेरविर्बहुसुतां धनिनीं शशाङ्कः पुत्रान्वितांक्षितिसुतो रविजोधनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजःसुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ व्ययस्थानम् ॥ अन्त्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रांवंध्यांकुजःपररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वींसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुतेव्ययगोदिनान्धाम् ॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुका नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाशक
२	धन	दरिद्रदुःख	बहुपत्रव ती	दरिद्रदुःख	सौभाग्यसं पत्ति	सौभाग्य संपत्ति	सौभाग्य संपत्ति	दरिद्रदुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवती ध नाढ्या	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवतती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवती
४	सुहृत्	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्पसंता नि	अतिसुखि नी	अतिसु खिनी	अतिसु खिनी	दुग्धअल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्या अ धिक	शिशुनाश वती	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	रोगिणी	मरणप्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	कलहरूप	धनवती	दारिद्रिणी वेश्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासिनी	विधवा	क्षय	भयबंध	मृत्यु	वैधव्य मरण	वित्तनाश
८	मृत्यु	विधवा	वियोगी मरणांत	धनवती	स्वजनवि योग	स्वजनवि योग	मरणांत वियोग	अतिपुत्र संतान	मरणांतवि योग
९	धर्म	धर्मपुष्क ल करै	पुत्रवती	धर्मकार्य कर्त्री	उत्तमभोग वती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१०	कर्म	पापकारि णी	दरिद्रव्यभि चारिणी	मृत्यु	धनवती	धनवतीव- रकीप्राप्ति	धनांवर प्राप्ति	पापकर्मि णी	विधवा
११	आय	अति पुत्र प्राप्ति	लक्ष्मीव ती	बहुपुत्रवती	सुखिनी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यव ती
१२	व्यय	खर्चकरती	दिनांध	वांझव्यभि चारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चकरने हारी	व्यभिचारि णीपापिनी

अष्टोत्तरीदशाक्रम।

आर्द्रापुनर्वसुःपुष्य आश्लेषातुरवेर्दशा ॥ मघापूर्वोत्तराचैव चन्द्रस्य च दशातथा ॥ हस्तोविशाखाचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता ॥ ज्येष्ठानुराधामूले च सौम्यस्यचदशाबुधैः ॥ अभिजिच्छ्रवणःपूषा ऊषाचैवशनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शतताराचपूर्वाभाद्रपदागुरोः ॥ उभापूषाश्विनी कालेराहोश्चैव दशास्मृता ॥ कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः ॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाः सूर्यादिकादशाः॥क्रूरजाअशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटजा॥

संख्याकाक्रममहादशाकी।

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दोःपञ्चदशैवच ॥ भौमस्यवसुवर्षाणिऋषिचन्द्रबुधस्यच ॥ मन्दस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः ॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः ॥

टीका—आर्द्रासे मृगशिरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्य चंद्र भौम बुध शनि गुरु राहु शुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंके पृथक् दो कोष्टक लिखेहैं. तिनमेंसे महादशाकी वर्ष संख्या इस प्रकार है पापग्रहके नक्षत्र ४और शुभ ग्रहके ३नक्षत्र जानिये. आर्द्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभागके अंतमें होय तो इस क्रमसे भोग्य दशा जाननी और जन्मकालमें जो दशा होय वही प्रथम जाननी ॥ सूर्यकी दशा ६ वर्ष, चंद्रकी १५, मंगलकी ८, बुधकी १७,शनिकी १०,गुरुकी १९,राहुकी १२,शुक्रकी १९,वर्ष भोग्य दशा जानिये॥

अंतर्दशालानेकाक्रम।

महादशाःस्वस्वदशाब्दनिघ्नाभक्ताःस्ववाहूशशिभिःसमाद्याः ॥ अन्तर्दशाःस्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशास्यात् ॥

टीका—जो ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी होय तो जन्मदशाकी वर्ष संख्याको दूसरी दशाकी वर्षसंख्यासे गुणा करे और १०८का भागदे जो लब्धि आवे वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२ से गुणा करके १०८ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे सो मास जानिये, फिर ३० से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके [illegible] और ६० से गुणा करके घटी इत्यादि निकाल

लीजिये, और इसी क्रमसे १२० का भाग विंशोत्तरी दशामें दिया जाताहै ॥

सूर्यकी महादशाके वर्ष ६ आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा					
अंतर्दशाक्रम					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ
भौम	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	

चंद्रकी महादशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफा० उत्तराफा०					
अंतर्दशाक्रम					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
चंद्र	२	१	०	०	शुभ
भौम	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	

भौमकी महादशाके वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाती विशाखा					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकी महादशाके वर्ष १७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

शनिकीमहादशाके वर्ष १०
पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभिजित्‌श्र०

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
भौम	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	

गुरुकी महादशाके वर्ष १९
धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
भौम	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	

राहुकीमहादशाके वर्ष १२
उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
भौम	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	

शुक्रकी महादशाके वर्ष२२
कृत्तिका रोहिणी मृगशिर

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
भौम	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	२१	०	०	०	

विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा।

जन्मनोनजनुर्भमङ्कहृत् क्रमशोर्केन्दुकुजागुसूरयः ॥
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाःपरिशेषात्तुदशाधिपास्तथा ॥

टीका—जन्म नक्षत्रमें २ घटाकर ९ का भागदे शेष १ रहे तो सूर्यकी दशा, २ शेष रहे तो चंद्रकी दशा, ३ शेष बचें तो भौमकी, ४ शेष बचें तो राहुकी, ५ शेष रहें तो गुरुकी, ६ बचें तो शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, ८ शेष बचें तो केतुकी, ९ का पूरा भाग लगजाय तौ शुक्रकी दशा जानिये ॥

दशाओंके वर्ष भोग्याभोग्य निकालनेकीरीति।

ऋतुदिग्गिरयो धृतिर्नृपातिधृतिर्मेघहयो नखाःसमाः ॥ क्रमतो हिमता अथादिमाजनिभस्था घटिकाःसमाहताः ॥ भभोगेन भक्ताःफलंभुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ॥

टीका—ऋतु कहिये ६, दिक् कहिये १०, गिरि कहिये ७, धृति कहिये १८, नृप१६, अतिधृति १९, मेघ १७, हय ७, नख २० यह वर्ष संख्या सूर्यसे शुक्र पर्यन्त लिखी है ॥ जन्म समय जिस ग्रहके जितने वर्ष होंय तिन वर्षोंसे जन्मके गत नक्षत्रको गुणाकरे फिर भभोगसे भाग ले जो लब्धि मिले सो वर्ष फिर १२ के भागसे दिवस और शेष घटी पल फिर इनमें भुक्तवर्ष मासादि घटावे तो शेष भोग्य वर्षादिक निकल आते हैं ॥

विंशोत्तरीक्रम कोष्टक।

कृत्तिकादिक्रमेणवज्ञेयाविंशोत्तरीदशा ॥
अन्तर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिता ॥

टीका—कृत्तिकासे लेकर भरणीपर्यंत २७ नक्षत्र और दशा व अंतर्दशा और उनके पतियोंके नाम और तिनके वर्षादि संख्याका कोष्टक ॥

अन्यमते।

स्वदशारामगुणितातदशागुणितापुनः ॥
खगुणेनहरेल्लब्धंवर्षमासदिनंभवेत् ॥

टीका—अपनी प्राप्त दशाको तीनसे गुणा देना जिसकी अंतर्दशा लानी होयउस को वर्षसे गुणा देना अनंतर ३०से भाग लेनेसे अंतर्दशा वर्षमास दिन प्राप्त होताहै ॥

गुरुकी अंतर्दशा ।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिर्धर्माधिकार
परिपालनसिद्धिबुद्धिः ॥ सद्विग्रहोपिधनधान्य-
सम्पृद्धिता चस्यादेवतागुरुदशागमने भवंति ॥

टीका–राज्याधिकार और चित्तकी वृत्ति धर्ममें नेष्टा शरीरकी आरोग्यता निश्चय करके धन धान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशाका फल जानिये ॥

शनिकी अन्तर्दशा ।

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचनेषुचयुद्धबुद्धिः ॥
सिद्धंचकार्यमपियत्रसदाविनष्टंस्यात्सर्वदाशनिदशागमनेभवन्ति ॥

टीका–मिथ्यापवाद दूसरेका हनन बंधन द्रव्यका नाश मित्र तथा बांधवोंसे कलहकी बुद्धि और कार्यभी नष्ट होजाय यह शनिकी अंतर्दशाका फल जानिये ॥

बुधकी अंतर्दशा ।

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलास-
म[illegible]मनोभिरामम्॥हेमादिरत्नविभवागमके-
श[illegible] स्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवन्ति ॥

टीका–सुं[illegible] सुख और सर्व प्रकारके भोग विलास सुवर्ण और रत्न आदिकी प्राप्ति [illegible]ह ईश्वरस्मरण इत्यादि बुधकी अंतर्दशामें फल जानिये ॥

केतुकी अंतर्दशा ।

भ[illegible]योगजनितंचशरीरदुःखंद्रव्यस्यहानिर-
ति[illegible]रम्पराच ॥ रोगाश्चबंधुकलहश्चविदेश-
ता[illegible]ोर्दशाजननकालदशाभवन्ति ॥

टीका–स्त्री[illegible]से शरीरको दुःख द्रव्यकी हानि कष्ट रोग और बंधुक-लह देशांतर गम[illegible] केतुकी दशाका अशुभ फल है ॥

शुक्रदशाका फल ।

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रधन-
धान्यसमाकुलंच ॥ आयुःशरीरसुतपौत्रसुखं
नराणांद्रव्यंचभार्गवदशागमनेभवन्ति ॥

टीका—बाग आदिक स्थान प्राप्ति और शरीर पुष्ट श्वेत छत्रकी प्राप्ति धन धान्यकी वृद्धि आयुकी और पुत्र पौत्रकी वृद्धि द्रव्यकी प्राप्ति यह शुक्र दशाका फल जानिये ऐसेही सर्व ग्रहोंकी महादशाओंके फल जानिये ॥

योगिनीदशाके स्वामी ।

अथासामधीशाःक्रमान्मंगलायाःशशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः॥
बुधःसूर्यसूनुर्भृगुःसिंहिकायाःसुतःसंकटायास्तथांतेचकेतुः ॥

टीका—मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनि शुक्र राहु केतु संकटा दशाके स्वामी ये मंगलादिक दशाके स्वामी क्रमसे जानना ॥

योगिनीदशाक्रम ।

स्वर्क्षंपिनाकिनयनैः संयोज्यं वसुभिर्भजेत् ॥
योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातेनसंकटा ॥

टीका—जन्म नक्षत्रमें तीन अंक मिलावे और आठका भाग दे शेष अंक रहें सो मंगलादिक दशा क्रमसे जानिये इनका क्रम कोष्टकमें लिखाहै ॥

योगिनीदशाके नाम ।

मंगला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिकापि च ॥
उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशाःस्मृताः ॥

टीका—मंगला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिका उल्का सिद्धा संकटा ये आठों योगिनी दशाओंको क्रमसे जानिये ॥

वर्षसंख्या ।

एकद्वित्रीणिवेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ॥
अष्टवर्षाणिहि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥

टीका-मंगलादिदशाओंके नाम पृथक् २ और वर्ष संख्याके दिवस करि तिनमें अन्तर्दशा लानेका क्रम प्रथम दशा वर्ष एक तिसके दिवस ३६० दिन तिनमें ३६ का भाग दे लब्धिको अन्तर्दशा स्पष्ट जानिये और इसी रीति अनुसार दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये ॥

अन्तर्दशा।

अथान्तर्दशायाःप्रकारंप्रवच्मिदशावार्षिकंस्वस्ववर्षेणगुण्यम् ॥
ततःषट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदाखेटविद्भिर्विधेयाफलार्थम् ॥

टीका-प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उसके वर्ष संख्यासे प्राप्त दशाको गुण देना उसमें ३६ का भाग देनेसे अंतर्दशा होतीहै आगे चक्रमें स्पष्ट प्रतीत होगा ॥

मंगलाकेवर्ष १ तिसके दिन ३६०		पिंगलाके वर्ष २ दि० ७२०		धन्याके वर्ष ३ दि १०८०		भ्रामरी वर्ष ४ दि १४४०		भद्रिका वर्ष ५ दि १८००		उल्का वर्ष ६ दि २१६०		सिद्धा वर्ष ७ दि २५२०		संकटा वर्ष ८ दि२८८०	
मंगला	१०	पिं	४०	ध	९०	भ्रा	१६०	भ	२५०	उ	३६०	सि	४९०	सं	६४०
पिंगला	२०	ध	६०	भ्रा	१२०	भ	२००	उ	३००	सि	४२०	सं	५६०	मं	८०
धन्या	३०	भ्रा	८०	भ	१५०	उ	२४०	सि	३५०	सं	४८०	मं	७०	पिं	१६०
भ्रामरी	४०	भ	१००	उ	१८०	सि	२८०	सं	४००	मं	६०	पिं	१४०	ध	२४०
भद्रि०	५०	उ	१२०	सि	२१०	सं	३२०	मं	५०	पिं	१२०	ध	२१०	भ्रा	३२०
उल्का	६०	सि	१४०	सं	२४०	मं	४०	पिं	१००	ध	१८०	भ्रा	२८०	भ	४००
सिद्धा	७०	सं	१६०	मं	३०	पिं	८०	ध	१५०	भ्रा	२४०	भ	३५०	उ	४८०
संकटा	८०	मं	२०	पिं	६०	ध	१२०	भ्रा	२००	भ	३००	उ	४२०	सि	५६०
जोड	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

३६ वर्षमें ८ योगिनीकी दशा वीत जातीहै और वारंवार इसी क्रमानुसार जानिये।

दशाका फल।

वैरिणान्तुविपदाविनाशिका वाहनादिवसुरत्नलाभदा ॥
कामिनांसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥

टीका-शत्रुके उपद्रवका नाश, और घोडा हाथी सुवर्ण रत्न आदिका लाभ और स्त्री पुत्र ग्रहादिकका लाभ और मंगलादि कार्यका उदय होना यह मंगला दशामें फल जनना ॥

दुःखशोककुलरोगवर्धिता व्यग्रताचकलहः स्वजनैश्च ॥
अंशभागकथिता फलदासौ पिंगलाचविदुषांसुखदादौ ॥

टीका—दुःख शोक कुलमें रोग वृद्धी, चित्तमें व्याकुलता, बंधुनमें वैर पिंगला आदिमें सुख देतीहै तिसके अनंतर लिखा फल पिंगलाका जानना ॥

धनंधान्यवृद्धिंधरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतः ॥
कलत्रांगनानांसुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धान्यकाधान्यवृद्धिंकरोति ॥

टीका—धनवृद्धि धान्यवृद्धि राज्यपूजनीक सर्वकाल युद्ध भूमिमें जय धैर्ययुक्त स्त्री पुत्रका सुख और चित्रवस्त्रयुक्त धन्या दशाका यह फल जानना ॥

विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगताश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वम् ॥
ऋणंव्याधिवृद्धिर्जनानां प्रकोपं दशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशम् ॥

टीका—विदेशमें भ्रमण, युद्धमें हानि, स्त्रीको पीडा, सुखहीन ऋणयुक्त रोग वृद्धि जनका प्रकोप सर्व देशमें भ्रमण यह भ्रामरीदशामें फल जानना ॥

धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमंराजमान्यम् ॥
अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यं सदाभद्रिकाभद्रकार्यंकरोति ॥

टीका—धनकी वृद्धि. आनंदकी वृद्धि.गुणका प्रकाश.उत्तम वस्त्र प्राप्त. राजमान्य भूषणकी प्राप्ति. स्त्री भोगादिकका सौख्य और कल्याण यह भद्रिका दशामें फल जानना ॥

भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपं धनादेशदारादिकानांवियोगम् ॥
स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्बंधुवैरं दशाचोल्ककानर्थकारी सदैव ॥

टीका—भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देश वियोग स्त्री वियोग गोत्रमें कलह मित्र, बंधु इनसे वैर और नानाप्रकारके अनर्थ यह उल्का दशामें फल जानना ॥

राज्याभिमानंस्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभंगुणकीर्तिसिद्धिम् ॥
राज्यादिलाभंसुतवृद्धिसौख्यं सिद्धंचसिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥

टीका—राज्यप्राप्ति-अभिमान-अपने गोत्रमें सुख देखना, धान्य आदिक लाभ गुणसिद्धि, कीर्तिसिद्धि, राज आदिका लाभ, पुत्रवृद्धि, सुख और सर्वकार्यकी सिद्धि यह सिद्धादशामें फल जानना ॥

जनानांविवादंज्वराणांप्रकोपं कलत्रादिकष्टंपशूनांहिनाशम् ॥
गृहेस्वल्पवासंप्रवासाभिलाषं दशासंकटा संकटं राजपक्षात् ॥

टीका—जनोंमें कलह, ज्वरकी पीडा, स्त्रीआदिकका कष्ट और पशुओंका नाश घरमें थोडा वास प्रवास अभिलाष राजपक्षसे संकट यह संकटा दशाका फल जानना चाहिये ॥

मंगलामंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ॥ पिंगलातनुतेव्याधिम्मनसोदुःखसंभ्रमौ ॥ धान्याधनसुहृद्बंधुरूपसीमन्तिनीकरी ॥ भ्रामरीजन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतोदिशम् ॥ भद्रिकासुखसंपत्तिविलासवशदायिनी ॥ उल्काराज्यधनारोग्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ सिद्धा साधयते कार्यं नृणांवैसुखदा भवेत् ॥ संकटा संकटव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥

टीका—मंगला दशाका फल शुभ कार्य आनंद यश और द्रव्यप्राप्ति और पिंगलाका शरीरको व्याधि और मनको दुःख तथा भ्रम धान्याको फल धन मित्र बंधु मिलाप आरोग्यता और सुंदरता भ्रामरीका फल स्थाननाश दिशाभ्रमण भद्रिकाका सुख संपत्ति विलास यश इत्यादि उल्काका राजभय धननाश रोगग्रस्तता और पीडा सिद्धाका कार्यसिद्धि और सुखप्राप्ति संकटाका फल व्याधि मरण क्लेश इति ॥

रविदिननखसंख्याचंद्रमाव्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वीचंद्रजःषट्शराश्च ॥ शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्ततिःशुक्रसंख्या ॥ जन्मना विंशतिःसूर्ये तृतीये दशचंद्रमाः ॥ चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ सप्तमं दशसौरिःस्यान्नवमेचाष्टमेगुरोः ॥ दशमेराहुर्विंशत्यां तदूर्ध्वंतु भृगोर्दश ॥ ॥ फल ॥ पंथाभोगोनुतापश्च सौख्यंपीडाधनंक्रमात् ॥ नाशःशोकश्चसौख्यंच जन्मसूर्यदशाफलम् ॥

टीका—वर्षदशाका आरंभ ताको क्रम. जा मासमें जाके जन्मराशिके सूर्य होय सो द्वादशस्थान भोगतेहैं और सब दशाका क्रम इस रीतिपर है ॥

२० बीस दिवस सूर्यकी दशा जन्मस्थानसे जानिये तिसका फल मार्ग चलना ॥

५० दिवस चंद्रमाकी दशा तीसरे स्थानके १० दिवस रवि भोगतेहै तिसका फल नाना प्रकारके उत्तम भोग ॥

२८ दिवस मंगलकी दशा चौथे स्थान आठ दिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल रोग और तृमता होय ॥

५६ दिवस बुधकी दशा छटे स्थान ४ दिवस रवि भोगतेहैं तिसका फल सुख कारक होय ॥

३६ दिवस शनिकी दशा सप्तम स्थान १० दिवस रवि भोगतेहैं ताको फल पीडाकारक जानिये ॥

५८ दिवस गुरुकी दशा नवमस्थान ८ दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल धन प्राप्ति ॥

४२ दिवस राहुकी दशा दशमस्थान २७ दिन रवि भोगतेहैं तिसका फल नाना प्रकारका सोच ॥

७० दिवस शुक्रकी दशा द्वादश स्थानमें रवि संपूर्ण भोगते हैं तिसका फल सर्व सुखकारक जानिये ॥

ग्रहोंकी नित्यानित्यदशाओंका प्रकार ।

तिथिंवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ॥ नवभिश्वहरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमंदज्ञकेसिताः ॥ क्रमेणैकादशाज्ञेया फलंपूर्वोक्तमेवहि ॥

टीका—गततिथि और वार नक्षत्र और अपने नामके अक्षर सबको इकट्ठे करके ९ का भाग दे शेष १ रहे तौ रविकी दशा, २ बचैं तौ चंद्रमा की, ३ शेष बचैं तौ भौमकी दशा, ४ शेष रहैं तौ राहुकी, ५ बचैं तौ गुरुकी, ६ शेष रहैं तौ शनिकी, ७ शेष बचैं तौ बुधकी, ८ शेष रहैं तौ केतुकी, और पूरा भाग लगिजाय तौ शुक्रकी दशा जानियें, इसी प्रकार नित्यदशा क्रमसे जानिये और फल वर्षदशाके तुल्य जानिये ॥

दूसरा मत।

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितं ॥ नवभिस्तुहरेद्भागं शेषंदिनदशोच्यते ॥ रविणाशोकसंतापौ शशांकेक्षेमलाभकौ ॥ भूमिपुत्रेतु मृत्युःस्याद्बुधेप्रज्ञाविवर्द्धनम् ॥ गुरौवित्तं भृगौसौख्यं शनौपीडा नसंशयः ॥ राहुणाघातपातौच केतौ मृत्युर्दशाफलम् ॥

टीका—जन्मनक्षत्रको चतुर्गुण करै उसमें गत तिथि और वार मिलाके नव९ का भाग दे १ शेष रहै तौ एक दिनकी रविकी दशा जानिये—फल शोक संताप कारक,२शेष रहैं तौ चंद्रमाकी दशा फल कल्याण व लाभ कारक, और ३शेष रहें तौ मंगलकी दशा फल मृत्यु कारक,४शेष रहें तौ बुधकी दशा फल वद्धि वृद्धि,५ शेष रहें तौ गुरुकी दशा फल वित्तप्राप्ति, ६ बचैं तौ शुक्रकी दशा फल सुख कारक, ७ शेष रहै तौ शनिकी दशा फल पीडाकारक, ८ शेष रहैं तौ राहुकी दशा फल घातक, और जो भाग पूरा लगजाय तौ केतुकी दशा फल मृत्यु इस प्रकारसें फल जानियें ॥

गोचरप्रकरण।

ग्रह कितने मास एक२ राशिको भोगताहै।

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्द्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्वेदिनेशशी ॥ राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान्शनैश्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगाःप्रकीर्तिताः ॥ ॥ फल॥ सूर्यःपंचदिनं शशीत्रिघटिका भौमोष्टवैवासरं सप्ताहंह्युशना बुधस्त्रयदिनं मासद्वयंवैगुरुः ॥ षण्मासं रविजस्तथैवसततं स्वर्भानुमासद्वये केतोश्चैवतथाफलं परिमितं ज्ञेयंग्रहाणां फलम्॥ राशिप्रवेशेसूर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती ॥ राहुश्चंद्रःशनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभः ॥

टीका—उनके दिनोंकी संख्याका कम अनुक्रमसे लिखतेहैं ॥

सूर्य—एकमास एक राशि भोगतेहैं उसमें प्रथम पांच दिन फल देतेहैं ॥
चंद्रमा—सवादो दिन एकराशि भोगतेहैं और अंतकी ३ घटिका फलदेते हैं ॥
मंगल—डेढमास एकराशि भोगतेहैं और प्रथम ८ दिवस फल देतेहैं ॥
बुध—एकमास एक राशिको भोगतेहैं और सर्व दिवस फल देतेहैं ॥
गुरु—त्रयोदश १३ मास एक राशि भोगतेहैं तिसका फल मध्यम भागके दो मास जानिये ॥
शुक्र—एक मास एक राशि भोगतेहैं और मध्यम भागमें सात दिवस फल देतेहैं॥
शनि—तीस ३० मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके६ महीने फल देतेहैं ॥
राहु और केतु—अठारह मास एक राशि भोगतेहैं और अंतके दो मास फल देते हैं ॥

द्वादश भवनके स्थानोंके शुभाशुभ फल

द्वादश स्थानोंके नाम ।

तत्रादौतनुधनसहजसुहृत्सुतरिपवश्च ॥
जायामृत्युधर्मकर्मव्ययाख्यानि द्वादशभवनानि ॥

स्थानानुसार फल ।

सूर्यःस्थानविनाशं भयंश्रियंमानहानिमथदैन्यं ॥ विजयंमार्गं पीडांसुकृतंहंति सिद्धिमायुरथहानिम् ॥ चन्द्रोन्नंचधनंसौख्यं रोगं कार्यक्षतिंश्रियं ॥ स्त्रियंमृत्युंनृपभयं सुखमायव्ययंक्रमात्॥ भौमोरिभीतिं धननाशमर्थं भयंतथार्थक्षतिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययं शत्रुभयंचपीडां शोकंधनंहानिमनुक्रमेण ॥ बुधस्तुबंधं धनमन्यभीतिं धनंरुजं स्थानमथोचपीडाम् ॥ अर्थंरुजं सौख्यमथात्मसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखंशुचम् ॥ मानंरोगं सुखंदैन्यं लाभंपीडांच जन्मभात् ॥ कविःशत्रुनाशं धनंसौख्यमर्थं सुतात्तिं रिपोः साध्यसंशोकमर्थम् ॥ बृहद्वस्त्रलाभं विपत्तिंधनाप्तिं धनाप्तिंतनो-

त्यात्मनोजन्मराशेः ॥ शनिःसर्वनाशं तथावित्तनाशं धनंशत्रुवृद्धिं सुतादेःप्रवृद्धिम् ॥ श्रियंदोषसंधिं रिपुंद्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्यं बह्वनर्थम् ॥ राहुर्हानिं तथानैःस्वं धनंवैरं शुचं श्रियम् ॥ कलिंवसुंचदुरितं वैरंसौख्यं शुचंक्रमात् ॥ केतुः क्रमाद्रुजं वैरं सुखं भीतिं शुचंधनम् ॥ गतिंगदं दुष्कृतंच शोकं कीर्तिंचशत्रुताम् ॥

टीका—इसका अर्थ आगे चक्रमें स्पष्ट देख लेना ॥

गोचरचक्रम् ।

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नप्रा०	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुनाश	सर्वनाश	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	ध.प्रा.	धनप्रा०	वित्तना०	धनलाभ	वैर
सहज	धन	सुख	धनप्रा०	भीति	क्लेश	सौख्य	धनला०	धनप्रा०	सुख
सुहृत्	मानहा०	रोग	भय	धनप्रा०	ध.ना.	धनप्रा०	शत्रुवृ०	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यक्षय	अर्थप्रा०	रोग	सुख	पुत्रप्रा०	सुतप्रा०	शोच	शोच
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभं	स्थानला.	शोक	रिपुभय	धनप्रा०	लक्ष्मी	ध.प्रा.
जाया	मार्गक्रे०	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	शोक	दोष	कलह	मा.क्र.
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अर्थप्रा०	रोग	धनप्रा०	रिपु	धनला०	रोग
धर्म	पुण्यना०	राजभय	पीडा	रोग	सुख	वस्त्रलाभ	धनना०	पापकर्म	दु.क.
कर्म	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अस्वा०	वैर	शोक
आय	लाभ	आय	धनप्रा०	सौख्य	लाभ	धनप्रा०	धनप्रा०	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानी	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा०	धनना०	शुचि	श.ना.

वेधचक्रमाह ।

सूर्योरसांत्ये खयुगानिनंदे शिवाक्षयोर्भौमशनीनभश्च ॥ रसांकयोर्लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्रोवराब्दौ गुणनंदयोश्च ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञोद्विशराब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागविधौखनागे लाभव्यये देवगुरुःशराब्धौ ॥ द्व्यंत्येनवांशेद्रिगुणे शिवाष्टौ शुक्रःकुनागे द्विनगेग्निरूपे ॥ वेदांबरंपंचनिधौगजेशौ नदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ क्रमाच्छुभौविद्धइति ग्रहःस्यात् पितुः सुतःस्यान्नवेधमाहुः ॥ दुष्टोपिखेटो विपरीतवेधाच्छु-

भोद्विकोणे शुभदः सितेब्जे ॥ स्वजन्मराशेरिनवेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः॥हिमाद्रिविन्ध्यन्तरएववेधो नसर्वदेशे-ष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥

टीका—जन्म राशिसे और ग्रहके गतिसे गोचरका शुभाशुभ फल लिखे और ध्रुवांकसे ज्ञात करे। जैसा सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभ जो द्वादश स्थानमें शुभग्रह होय तौ शुभ अशुभ और जो अशुभ होय ऐसा सर्व ग्रह वेध जानना। परंतु पिता पुत्र सूर्य शनि चंद्र बुध इनका परस्पर वेध नहीं होय तौ जन्मस्थानसे द्वादशस्थानमें सूर्य होय और शनि षष्ठ स्थानमें होय अथवा अन्यग्रह होय तौ विपरीत वेध शुभ जानना। हिमाद्रि और विंध्य इनके अंतरमें यह वेध अन्य देशमें नहीं ऐसा जानना कश्यपऋषि कहते है॥

वेधचक्रम्।

रवेः				मं.	श.	रा.	चंद्रस्य					बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः					शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	३

जन्मके चंद्रमामें पांचकर्म वर्जनीय।

जन्मस्थर्क्षे शशाङ्केतु पञ्चकर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रां युद्धं विवाहंच क्षौरंच गृहवेशनम् ॥

टीका—यात्रा और युद्धको जाना विवाह और क्षौरकर्म करना तथा गृह-प्रवेश ये पांच कर्म जन्मके चंद्रमामें वर्जित हैं॥

नेष्टस्थानके अनुसार चंद्रमाका उक्तबल।

द्विपञ्चनवमेशुक्के श्रेष्ठश्चन्द्रोहिउच्यते॥अष्टमेद्वादशेकृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥ शुक्लपक्षे बलीचन्द्रः कृष्णेतारा बलीयसी ॥

टीका—दूसरे पांचवें अथवा नवमें स्थानमें चंद्रमा होय तौ शुक्लपक्षमें श्रेष्ठ

जानिये तैसेही कृष्णपक्षमें आठवें बारहवें चौथे स्थानका श्रेष्ठ परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रमाबल और कृष्णपक्षमें ताराबल ऐसे श्रेष्ठ जानिये ॥

ग्रहोंके नेष्टस्थान।

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवंति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥

टीका—गोचरका अथवा अष्टवर्गका किंवा दशाक्रमका जो ग्रह नेष्ट स्थानी होय उसके प्रसन्न करनेके लिये दान करावे इस कारण अब दानकी विधि कहतेहैं ॥

वारोंके अनुसार दान।

भानुस्ताम्बूलदानादपहरतिनृणां वैकृतं वासरोत्थंसोमः श्रीखण्डदानादवनिवरसुतो भोजनात्पुष्पदानात् ॥ सौम्यः शास्त्रस्य मन्त्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयोब्रह्मनत्यापरेच ॥

टीका—सूर्य तांबूलदानसे, चंद्रमा चंदनके दानसे, मंगल भोजन और पुष्पदानसे, बुध शास्त्रोक्त मंत्रके जपसे, गुरु शिवके आराधन और भोजनसे, शुक्र श्वेतवस्त्रसे, और शनि प्रातःकाल तैलस्नान और विप्र सन्मानसे अपने अपने अशुभ फलोंको दूर कर शुभ फल दायक होते हैं ॥

ग्रहोंके दान और जप।

॥ रवि ॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुम्भवासोगुडहेमताम्रम् ॥ आरक्तकंचन्दनमम्बुजंचवदन्तिदानंहि विरोचनाय ॥ चन्द्रमा ॥ सद्वंशपात्रस्थिततन्दुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम्॥ युगोपयुक्तं वृषभंचरौप्यं चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णकुम्भम् ॥ भौम ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापिगुडः सुवर्णम् ॥ आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रंचभौमायवदन्तिदानम् ॥ बुध ॥ वृषंचनीलंकलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् ॥ दासीचदन्तोद्विरदश्चनूनं वदन्तिदानंविधुनन्दनाय ॥गुरु ॥ शर्कराच

रजनीतुरङ्गमः पीतधान्यमपिपीतमम्बरम् ॥ पुष्परागलवणंस-
काञ्चनंप्रीतयेसुरगुरोःप्रदीयते ॥ शुक्र ॥ चित्राम्बरं शुभ्रतुरं-
गमंचधनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् ॥ सतन्दुलान्नुत्तमगन्धयुक्तंवदन्ति
दानंभृगुनन्दनाय ॥ शनि ॥ माषाश्चतैलंविमलेन्द्रनीलंतिलाः
कुलत्थामहिषीचलोहम् ॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदन्तिनूनं तुष्टयैच
दानंरविनन्दनाय ॥ राहु ॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैला-
मलकम्बलंच ॥ तिलाश्चतैलंखलु लोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमि-
दंवदन्ति ॥ केतु ॥ वैडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकम्बलाश्चापि मदो
मृगस्य ॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनी-
न्द्रैः ॥ ग्रहोंका जप ॥ रवेःसप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैवतु ॥
भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ॥ एकोनविंशतिर्जीवेशु-
क्रएकादशैवतु ॥ त्रयोविंशतिमन्देचराहोरष्टादशैवतु ॥ केतौ
सप्तसहस्राणि जपसंख्याप्रकीर्तिता ॥

नाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	माणिक	वेणुपात्र युक्ततंदुल	मूंगा	कालाबैल	शर्करा	चित्रवस्त्र	उडद	गोमेद	वैडूर्य्य
	गेहूं	कर्पूर	गेहूं	सोना	हलद	श्वेतअ०	तेल	घोडा	रत्न
	गोवत्स	मोति	मसूर	कांस्यपा.	घोडा	गाय	नील	नीलव०	तिल
	रक्तवस्त्र	श्वेतवस्त्र	ताम्रबैल	मूंगा	पीतअन्न	वज्र	तिल	कंबल	तेल
दान	गलर	श्वेतबैल	गुड	घृत	पीतवस्त्र	रूपा	कुलथी	तिल	कंबल
	सोना	रौप्य	सोना	गारुत्मत	पुष्परा०	सोना	भैंस	तेल	कस्तू.
	तांबा	रूपा	लालवस्त्र	सर्वपुष्प	नोन	तांबूल	लोहा	लोहा	शस्त्र
	रक्तचंदन	घृतकुंभ	कनेरपु.	दासी	सोना	चंदन	कृष्णगौ	का० पू०	मेंढा
	कमल	०	तांबा	हस्तिदंत	०	०	०	०	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थं।

देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामपिभाषणा-
च्छ्रुतिरवश्रेयःकथाकारणात् ॥ होमादध्वरदर्शनात् शुचिमनो-
भावाज्जपाद्दानतोनोकुर्वन्तिकदाचिदेवपुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ॥

टीका—देव और ब्राह्मणको सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु तथ साधुओंसे भाषण तथा उत्तम २ कथा श्रवण करे होम तथा यज्ञके दर्शन करें और शुद्ध मनके भावसे जप दान करे जो ग्रहोंके निमित्त ऐसे उपाय करें तौ पीडानिवृत्त होजाय और शुभफल मिलै ॥

जातकर्म।

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नान्दिश्राद्धंविधानतः ॥
जातकर्मततःकुर्यादन्यैरालम्भनात्पुरा ॥

टीका—पुत्र उत्पन्न होनेपर पिता तत्काल नांदिश्राद्ध विधिपूर्वक करे तिस पीछे जबतक कोई अन्यजाति बालकका स्पर्श न करें उससे प्रथम जातकर्म करें॥

नामकरणम्।

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरादित्याख्येषुचनामकर्म शुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ ॥ अह्निद्वादशकेतथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे गोसिंहालिघटेषुद्व्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच ॥

टीका—पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरात्रय पुनर्वसु ये नक्षत्र शुभ कहिये जन्मसे ११ अथवा १२ दिवस उक्त हैं और दूसरे मतके अनुसार १६।२०।२२।१०० ये दिवस उक्त हैं. और वृष सिंह कुंभ वृश्चिक ये लग्न शुभ हैं और रवि बुध गुरु शुक्र शशांक अर्थात् चंद्रवार शुभ हैं रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरणमें वर्जित हैं॥

नामका अवकहडाचक्र।

चूचेचोलाऽश्विनीप्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ॥ आईऊएकृत्तिकास्याद्वोवावीवूतु रोहिणी॥ वेवो काकीमृगशिरः कूघंगच्छतथार्द्रका॥ केकोहाहीपुनर्वसुर्हूहेहोडातुपुष्यभम्॥ डीडूडेडो तुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ॥ मोटाटीटूपूर्वफल्गुटेटोपाप्युत्तरंतथा ॥ पूषणाढाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रका ॥ रूरे रोतास्मृतास्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ नानीनूनेनुराध-

क्षंज्येष्ठानोयायियूस्मृता ॥ येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढा बुधाफडा ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ॥ खीखूखेखोश्रवणभं गागीगूगेधनिष्ठिका ॥ गोसासीसूशतभिषक्सेसोदादीतुपूर्वभाक् ॥ दुथाझभयथाञ्जेयो देदोचाचीतुरेवती ॥

चू चे चो ला	अश्विनी	हू हे हो डा	पुष्य	रू रे रो ता	स्वाती	जू ज जो खा	अभिजित्
ली लू ले लो	भरणी	डी डू डे डो	आश्लेषा	ती तू ते तो	विशाखा	खी खू खे खो	श्रवण
आ ई ऊ ए	कृत्तिका	मा मी मू मे	मघा	ना नी नू ने	अनुराधा	गा गो गू गे	धनिष्ठा
वो वा वी वू	रोहिणी	मो टा टी टू	पूर्वाफा०	नो या यी यू	ज्येष्ठा	गो सा सी सू	शततारका
वे वो का की	मृग	टे टो प पी	उत्तराफा०	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा
कू घ ग छ	आर्द्रा	पू ष णा ढा	हस्त	बू ध फ डा	पूर्वाषाढा	दु थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा
के को हा ही	पुनर्वसु	पे पो रा री	चित्रा	भे भो जा जी	उत्तराषाढा	दे दो चा ची	रेवती

मञ्चकारोहण ।

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरा-

स्वातिहस्ताः ॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य निगदित-मिहपूर्वैर्मञ्चकारोहणंतु ॥

टीका—मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा तीनों उत्तरा स्वाती हस्त इन नक्षत्रोंमें और बुध शुक्र गुरु ये वार और तुल वृश्चिक कुंभ इन लग्नोंमें शिशूको पूर्वदिशाको शिर करके प्रथम मंचकारोहण करावे तौ शुभ होय ॥

पालनेका मुहूर्त्त।

आन्दोलशयनंपुंसो द्वादशेदिवसेशुभम् ॥
त्रयोदशेतु कन्यायाननक्षत्रविचारणा ॥

टीका—जन्म होने उपरांत पुत्रको बारहवें और कन्याको तेरहवें दिवस पालनेमें शयन करावे और नक्षत्र आदिके विचारकी कुछ आवश्यकता नहीं है॥

अथ बृहस्पतीके मतानुसार दुग्धपानमुहूर्त्त।

एकत्रिंशद्दिनेचैव पयःशङ्खेनपाययेत् ॥
अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥

टीका—जन्म होनेके पश्चात् ३१ दिन अब अन्न प्राशन नक्षत्र जो आगे कहे जायंगे उनमें शंखमें दूध भरके बालकको पिलावे ॥

ताम्बूलभक्षणम्।

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्ताम्बूलं प्रथमंशिशोः ॥ कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासायहितायच ॥ मूलेचत्वाष्ट्रकरतिष्यहरीन्द्रभेषु पौष्णे तथामृगशिरेदितिवासरेषु ॥ अर्केन्दुजीवभृगुबोधनवासरेषुता-म्बूलभक्षणविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः ॥

टीका—जन्मके उपरांत ढाई मासमें कपूर आदि पदार्थ मिश्रित करी तांबूल खवावे और मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशिर पुनर्वसु धनिष्ठा और रवि सोम गुरु शुक्र बुध इन वारोंमें मुनीश्वरोंने तांबूल भक्षण शुभ कहा है ॥

सूर्य्यावलोकन ।

हस्तःपुष्यपुनर्वसूहरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनीमृगयुताषाढोत्तरास्वातिभे ॥ मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वा चरिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनंशस्यते ॥

टीका–हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढा स्वाती और चौथा व तीसरा मास शुभ शनि भौम रिक्ता तिथि वर्जनीय हैं और सिंह कन्या तुल कुंभ ये लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभदिन विचारके प्रथम बालकको बाहर निकालकर सूर्यावलोकन करावना उत्तम है ॥

कर्णवेध ।

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेर्कत्रये रेवत्यांचपुनर्वसुद्वययुगेकर्णस्यवेधःशुभः ॥ मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटे वर्षेचयुग्मेतिथौसौम्येचेन्दुगुरौरवौचशयनं त्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः ॥

टीका–रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृगशिर श्रवण धनिष्ठा शततारका हस्त चित्रा शुभ, और युग्मतिथि और युग्मवर्ष ये शुभ, और चंद्र गुरु रवि ये वार विष्णुशयनको छोडकर पंडितोंने कर्णवेध शुभ कहा है ॥

शिशुको पृथ्वीमें बैठाना ।

पञ्चमेचतथामासि भूमौतमुपवेशयेत् ॥ तत्रसर्वेग्रहाःशस्ता भौमोप्यत्रविशेषतः ॥ उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्यर्क्षशक्रदैवतम् ॥ प्राजापत्यंचहस्तश्च शतमाश्विनमित्रभम् ॥

टीका–पांचवें मासमें रविवार आदि समस्तवार शुभ दिनमें भौमवार विशेष करके और तीनों उत्तरा मृगशिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा ये नक्षत्र शुभ, ऐसे दिवसमें शिशूको भूमिपर बैठावना शुभ कहा है ॥

अन्नप्राशन ।

पूर्वार्द्राभरणीभुजङ्गवरुणं त्यक्त्वाकुजार्कीतथा नन्दापर्वचसप्तमी

मपितथा रिक्तामपिद्वादशीम्॥ षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिः स्त्रीणामयुक्पञ्चमे गोकन्याझषमन्मथे बुधबलेपक्षेचयोगेशुभे ॥

टीका—तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी आश्लेषा और भौम शनि ये अशुभ वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको त्यागकर छठे अथवा आठवें महीनेमें लडकेको और कन्याको पांचवें माससे कहा है और वृष मिथुन मकर कन्या इन लग्नोंका बल पाके शुक्लपक्ष तथा शुभ योगमें बालकको अन्न प्राशन करावे ॥

चौलकर्म।

रेवत्याद्यकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्येचोत्तरगेरवौगुरुकवीन्दुज्ञेषुपक्षेसिते ॥ गोस्त्रीमन्मथचापकुम्भमकरे हित्वाचरिक्तातिथिं षष्ठींपर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालींचचूडाशुभा ॥ जन्मतस्तु तृतीयेब्दे श्रेष्ठमिच्छन्ति पण्डिताः ॥ पञ्चमे सप्तमेवापि जन्मतोमध्यमंभवेत् ॥

टीका—रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और उत्तरायण गुरु शुक्र सोम बुधवार और शुक्लपक्ष मुंडनमें शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन मकर कुंभ इन लग्नोंको त्यागके शेष शुभ जानिये और रिक्ता छठ आठें अमावास्यादिक दुष्ट तिथि वर्जित हैं और जन्म होनेसे तीसरे वर्षमें पंडितोंने श्रेष्ठ और पांचवें सातवें वर्षमें मध्यम कहा है ॥

विद्यारंभका मुहूर्त्त।

रेवत्यांमृगपञ्चकेहरियुगे पूर्वासुहस्तत्रये मूलेश्वेअभिजिच्चभानुभृगुजे सौम्येधनुर्जीवयोः॥ अब्देपञ्चमकेविहाय निखिलानध्यायषष्ठीयुतान् रिक्तांसौम्यदिने तथैवविबुधैः प्रोक्तोमुहूर्त्तः शुभः॥

टीका—रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित् और रवि गुरु शुक्र बुध सोम ये वार और जन्मसे पांचवां वर्ष शुभ कहाहै और अनध्याय षष्ठी रिक्ता पर्व आदि

दुष्ट योगादिक तिथि वर्जनीय हैं उत्तरायण शुक्ल पक्ष और शुभ लग्नोंमें प्रथम विद्याभ्यास करावे ॥

यज्ञोपवीतका मुहूर्त ।

पूर्वाषाढहरित्रयेश्विमृगभे हस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषु चो-
त्तरगते भानौचपक्षेसिते ॥ गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रेर्कजी-
वेतिथौ पञ्चम्यांदशमीत्रयेव्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥

टीका—पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण शुक्लपक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्न और शुक्र रविवार सोम ये वार और पंचमी दशमी आदि तीन दिन अर्थात् १०।११।१२ में यज्ञोपवीत करना शुभ है ॥

मासादिमुहूर्त्त ।

विप्रंवसन्ते क्षितिपंनिदाघे वैश्यंघनान्ते व्रतिनंविदध्यात् ॥
माघादिशुक्रान्तिकपञ्चमासाः साधारणावा सकलाद्विजानाम् ॥

टीका—ब्राह्मणोंका वसंतमें, क्षत्रियोंका ग्रीष्ममें, वैश्योंका शिशिर ऋतुमें यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णोंके अनुसार व्रतबंधमें ऋतु कहाहै माघसे ज्येष्ठ पर्यंत ५ मास समस्त द्विजोंको साधारण केहहैं ॥

वर्षसंख्या ।

गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पञ्चमेसप्तमेपिवा ॥
द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशेनृपः ॥

टीका—गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें अथवा ५ । ७ वर्ष ब्राह्मणका और ग्यारहवेंमें क्षत्रियोंका यज्ञोपवीत करना उचित है ॥

गुरुबलम् ।

वर्णाधिपेबलोपेते उपनीतिक्रियाहिता ॥
सर्वेषांचगुरौसूर्ये चन्द्रेचबलशालिनि ॥

टीका—वर्णके अधिपति अनुसार बल देखिये और सर्वोंको गुरु सूर्य चंद्रमाका बल चाहिये ॥

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम् ॥
चतुर्थ्येकाकिनीप्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहाः ॥

टीका–त्रयोदशीसे प्रतिपदातक चारि तिथि सप्तमी अष्टमी नवमी चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रह वर्जनीय हैं ॥

अथ शूद्रादिकोंके संस्कारका मुहूर्त्त।

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यांमृगरोहिणी
दितिकरे मैत्रेतथावारुणे ॥ चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुसुते भौमे
तथाचान्द्रजे॥ शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकथितं संस्कारकर्मोत्तमम्॥

टीका–मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाती तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और शुक्र भौम बुध ये वार शूद्रादिक संकर अंत्यजातिके संस्कारमें शुभ जानिये ॥

विवाहप्रकरणम्।

तत्रादौदैवज्ञपूजनम्॥ दैवज्ञंपूजयेदादौ फलताम्बूलपू-
र्वकं ॥ निवेदयेत्सुमनसास्वकन्योद्वाहनादिकम् ॥

टीका–प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फल तांबूल पूर्वक पूजा करना तिसके पीछे कन्याका पिता कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करै ॥

विवाहसमये प्रश्नमाह।

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहेबलिनौ यदिपश्यतः ॥
रचयतोवरलाभमिमौयदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥

टीका–जो प्रश्नकालमें चंद्र शुक्र यह विषम राशिमें हॉय वा अंशमें हॉय और दोनों बली हॉयके लग्नको देखते हॉय तो कन्याको पति प्राप्त जानना और समराशिमें वा अंशमें चंद्र शुक्र हॉय तौ वरको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभ है ॥

प्रष्टुर्विलग्नात्प्रबलःशशाङ्कः शत्रुस्थितो मृत्युग्रहस्थितोवा ॥
यद्यष्टमाब्दात्परतोविवाहात्करोतिमृत्युंवरकन्ययोश्च ॥

टीका-जो प्रश्नलग्नसे बलवान् चंद्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें बैठा होय तौ विवाहसे अष्टम वर्षमें स्त्री पुरुष दोनोंको अरिष्ट जानना॥

यद्युदयस्थश्चन्द्रस्तस्माद्यदिसप्तमोभवेद्भौमः॥
समाष्टकंसजीवतिविवाहकालात्परंपुरुषः॥

टीका-जो प्रश्न लग्नमें चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल होय तौ विवाहसे अष्टम वर्षमें पतिको अरिष्ट जानना॥

स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पञ्चमगोयदा॥
मृतपुत्रांकरोत्येव कुलटांवानसंशयः॥

टीका-जो प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें होय अथवा शत्रु ग्रह देखते होंय अथवा पापग्रह पंचमस्थानमें बैठा होय तौ संतानका नाश और स्त्री वेश्या होय ऐसा जानना॥

भिद्यतियद्युदकुम्भः शयनासनपादुकाशुभङ्गोवा॥
प्रश्नसमयेपियस्यास्तस्यावैधव्यमादेश्यम्॥

टीका-जो विवाह प्रश्नकालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रानाश आसन भंग, पादुकाभंग, ऐसा जिस कन्याके विवाहप्रश्नसमयमें होय तौ उसको विधवा योग जानना॥

अज्येष्ठाकन्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि॥
व्यत्ययोवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासःशुभप्रदः॥

टीका-जो कन्या ज्येष्ठ न होय और पुरुष ज्येष्ठ होय ऐसा दोनोंका भेद होय तौ ज्येष्ठ मासमें विवाह करना शुभ है॥

वर्षप्रमाणमाह।

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयंततः॥
सोमोभुङ्क्तेततस्तद्वद्गन्धर्वश्चतथानलः॥

टीका-प्रथम ६ वर्षतक कन्याका विवाह नहीं करना कारण यह है कि प्रथम २ वर्ष चंद्रमा भोग करताहै, नंतर दो वर्ष गंधर्व भोग करतेहैं, नंतर २ वर्ष अग्निदेव भोग करता है, तदनंतर विवाहको शुद्ध जानना॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी ॥ दशवर्षाभवेत्कन्या द्वादशेवृषलीमता ॥ गौरीदानान्नागलोकं वैकुण्ठंरोहिणींददत् ॥ कन्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतुरजस्वला ॥

टीका—आठ वर्षकी कन्या होय तब उसका नाम गौरी, नव वर्षकी कन्या रोहिणी संज्ञा, दश वर्षकी होय तौ उसका नाम कन्या, जो बारह वर्षकी होय तौ उसे शूद्री नाम जानना, इसका फल गौरीदानसे नागलोक प्राप्ति, रोहिणीदानसे वैकुंठ प्राप्ति,कन्यादानसे ब्रह्मलोक प्राप्ति,शूद्रीदानसे घोर नरक प्राप्ति होय॥

विवाहोजन्मतःस्त्रीणां युग्मेब्देपुत्रपौत्रदः ॥
अयुग्मेश्रीप्रदंपुंसां विपरीतेतुमृत्युदः ॥

टीका—स्त्रीका विवाह काल जन्मसे सम वर्षमें करना तौ पुत्रपौत्र प्राप्ति और पुरुषका जन्मसे विषम वर्षमें विवाह होय तौ लक्ष्मी प्राप्ति, इससे विपरीत होय तौ मृत्यु प्राप्ति जानना ॥

कन्याद्वादशवर्षाणि याप्रदत्तावसेद्गृहे ॥
ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयम् ॥

टीका—कन्या १२ वर्षकी होय और पिताके घरमें रहै तौ पिताको ब्रह्महत्या प्राप्त होय, नंतर कन्या अपनी इच्छासे पति करे ऐसा आचार्य कहतेहैं ॥

मंगलविचार।

लग्नेव्ययेचपाताले यामित्रेचाष्टमेकुजे ॥
पत्नीहंतिस्वभर्तारं भर्ताभार्यांविनाशयेत् ॥

टीका—स्त्रीको और पुरुषको मंगल रहताहै तिसका प्रकार १।१२।४।७। ८ इतने स्थानमें मंगल होय तौ स्त्री मंगली कहना और मंगलीसे मंगलीको विवाह करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् होंय तौभी करना ॥

भौमपरिहार।

यामित्रेचयदासौरिर्लग्नेवाहिबुकेथवा ॥
नवमेद्वादशेचैव भौमदोषोनविद्यते ॥

टीका–स्त्रीको अथवा पुरुषको ७।३।४।९।१२ जो इतने स्थानोंमें शनि होय तौ मंगलका दोष नहीं जानना ॥

ज्येष्ठविचार।

द्विज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठःशुभावहः ॥
ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीत विवाहेसर्वसम्मतः ॥

टीका–पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा कोई ज्येष्ठमें करना मध्यम समझतेहैं और एक ज्येष्ठमें करना शुभ है, और पुरुष ज्येष्ठ स्त्री ज्येष्ठ मास ज्येष्ठ, ज्येष्ठ जो तीनों होंय तौ विवाह नहीं करना चाहिये॥

ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यवैमिथः ॥
विवाहोनैवकर्त्तव्यो यदिस्यान्निधनंतयोः ॥

टीका–प्रथम गर्भमें जो स्त्री होय उसको ज्येष्ठ कहना, जो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्याभी ज्येष्ठ होय तौ विवाह नहीं करना यह दुःखदायक होताहै ॥

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता ॥
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौपाणिग्रहोमतः ॥

टीका–दशवर्षके नंतर कन्या शुद्धिसे रहित होतीहै तौ ताराशुद्धि चंद्रशुद्धि लग्नशुद्धि देखके विवाह करना शुभ है ॥

कन्यालक्षणमाह।

हंसस्वरांमेघवर्णां मधुपिङ्गललोचनाम् ॥
तादृशींवरयेत्कन्यां गृहस्थःसुखमेधते ॥

टीका–स्त्रीका लक्षण स्त्रीका मीठा हँसके बोलना ऐसा होय और मेघका-सा वर्ण होय नेत्रका वर्ण सहतके तुल्य हो अथवा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसी कन्यासे विवाह करे तौ गृहस्थ सुख पाताहै ॥

वरलक्षणमाह।

जातिविद्यावयःशीलमारोग्यंबहुपक्षता ॥
अर्थित्वंवित्तसंपत्तिरष्टावेतेवरेगुणाः ॥

Madan Gopal Sharma

टीका–पुरुषका लक्षण जातिमें उत्तम होय और विद्यायुक्त वयमें वृद्धित्व होय और स्वभाव अच्छा होय और निरोगी, परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय, धन संपत्ति होय ऐसे आठ लक्षणसे युक्त वर होय तौ कन्या देना चाहिये ॥

वरदोषमाह।

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ॥
शूराणांनिर्धनानांच नदेयाकन्यकाबुधैः ॥

टीका–पुरुषके दूर रहनेवालेको कन्या देना नहीं, मूर्खको देना नहीं, मोक्ष धर्म योगाभ्यासादिक करै उसको देना नहीं, दरिद्री असमर्थको देना नहीं ऐसा पंडितजनोंने कहाहै ॥

अस्तोदय।

प्राग्गुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितःस्यात् पश्चाद्दशाहमिहपञ्चदिनानिवृद्धः ॥ प्राक्पक्षमेवगदितोत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥

टीका–पूर्वमें शुक्रका उदय होय तीन दिन शिशुत्व, और अस्त होय तो वृद्धत्व, पंद्रह दिन वर्जित और पश्चिमको उदय होय तो पांच दिन शिशुपन और १० दिन वर्जित है और गुरुके उदय अस्तमें १५ दिन वर्जनीय हैं ॥

अस्त और उदयका लक्षण।

यमशरभुजवासरवज्रिणोदिशिद्विसप्तसितास्तमनंतथा ॥
गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमेनवदिनास्तमनंतु भृगोर्बुधैः ॥

टीका–२५२ दिन शुक्रका अस्त पूर्वदिशामें होताहै, और उसका उदय ७२ वें दिवस पश्चिममें होताहै, और २५० दिवस पश्चिममें अस्त होता है तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्वमें होताहै यह पंडितोंने कहाहै ॥

अस्तमें वर्जनीयकर्म।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरंप्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिरकर्णवेधन-

महादानं गुरोःसेवनम् ॥तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशं शुभंदूरेणैवजिजीविषुः परिहरेदस्तेगुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावडी कूप तडाग अर्थात् तलाव यज्ञ और यात्रा करना चौल अर्थात् मुण्डन देवप्रतिष्ठा यज्ञोपवीत विद्यारंभ नूतन गृहप्रवेश बालकका कर्णवेध महादान गुरुसेवा तीर्थस्नान विवाह उत्तम कर्म मंत्रोपदेश ये कर्म जीवनेकी इच्छा रखनेवाला पुरुष गुरु शुक्रके अस्तमें दूरही वर्जित करे ॥

विवाहे वर्जनीयम् ।

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहोनोपौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः ॥ नैवास्तंगतवति भार्गवेचजीवेवृद्धत्वेनखलुतयोर्नबालभावे ॥ गीर्वाणमन्त्रिणिमृगेन्द्रमधिष्ठितेनमासेधिके त्रिदिनसंस्पृशिनामभेच ॥

टीका—आषाढ आदि लेके ४ मास और पौष चैत्र मास और गुरु शुक्रका अस्त और इन दोनोंका वृद्धत्व और बालत्व और सिंहकी बृहस्पति अधिक मास तथा क्षयमास ये सब विवाहमें वर्जित हैं ॥

मूलादिजन्मनक्षत्रका दोष ।

मूलजाचगुणंहन्ति व्यालजाकुलटाङ्गना ॥
विशाखजा देवरघ्नीज्येष्ठाजाज्येष्ठनाशिका ॥

टीका—मूल नक्षत्रमें कन्याका जन्म होय तो गुणोंका नाश करे, आश्लेषामें व्यभिचारिणी, विशाखामें देवरकी मृत्युकारक, और ज्येष्ठामें ज्येष्ठ बंधुको मृत्युदायक होतीहै ॥

जन्मनक्षत्रादि वर्ज्यम् ।

जन्मर्क्षेजन्मदिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत् ॥ ज्येष्ठेमासाद्यगर्भस्यशुभ्रवस्त्रंस्त्रियायथा ॥ अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥ व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासःशुभप्रदः ॥

टीका—जन्मके नक्षत्र दिवस और मासमें बालकोंका शुभ कर्म वर्जित है जैसे स्त्रियोंको श्वेतवस्त्र धारण करना और जो कन्या कनिष्ठ होय तथा वर ज्येष्ठ होय अथवा इससे विपरीत होय तो ज्येष्ठ मासमें विवाह शुभ है ॥

अथ वर्षसारणीयम् ॥

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	३	६
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	८	२१	३७	५२	८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१३	४६	१८	४९	२१	५२	२४
ऽक्ष	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१	३०	०	३०	०	३०	०
तिथि	११	२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२७	१	१२	२३	३	१५	२७
नक्षत्र	८	१८	१	११	२१	४	१४	२४	७	२०	३	१०	२०	४	१३	२३
वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वार	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घटी	२३	२९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	[illegible]	४३	५९	१४	३०	४५	[illegible]	१६
पल	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
ऽक्ष	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०
तिथि	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१३	२४
नक्षत्र	६	१६	२३	९	२९	२	२२	२२	५	१५	२५	८	१८	११	[illegible]	[illegible]
वर्ष	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४
घटी	३२	४७	[illegible]	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५
पल	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३७	३	३४	६	३७	९	४०	१२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	३	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१५	२५	६	१७	२९	१०	२१
लग्न	४	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	०	१६	२६	९	९
अंश	६	९	३	१३	६	९	०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४
वर्ष	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वार	५	६	१	२	४	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घटी	२४	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	५१	४७	२	२८	३३
पल	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	३७	५८	३०	१	३३	४	३६
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	२	१३	२४	५	१६	२७	८	२९	१	११	२२	४	१५	३६	७	१८
लग्न	२	१२	२२	५	१५	२५	२	१८	०	११	२१	४	४	१४	७	१७
अंश	७	११	२	५	०	११	१२	५	८	११	२	६	९	०	०	६
वर्ष	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	७	३९	१०	४२	५३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	३९	१०	३१	२	१३	२४	५	१६	२७	९	२०	१	१२	२३	४	१५
लग्न	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	२५
अंश	९	२	३	६	१०	१	४	५	१०	०	४	७	१०	१	५	८

वर्षप्रमाण।

जन्मतोगर्भाधानाद्वा पञ्चमाब्दात्परंशुभम् ॥
कुमारीवरणंदानं मेखलाबन्धनंतथा ॥

टीका—जन्म होनेसे अथवा गर्भ धारणसे पंचम वर्ष उपरांत कन्याका वरना अथवा दान और व्रतबंध उत्तम जानिये ॥

गुरुचन्द्रबल।

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम् ॥
तयोश्चन्द्रबलंश्रेष्ठमिति गर्गेणभाषितम् ॥

टीका—स्त्रियोंको गुरुका बल और पुरुषोंको रविका और दोनोंको चंद्रमाका बल गर्गमुनिने श्रेष्ठ कहाहै ॥

गुरुका बल।

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विता हतधवासुभगा विपुत्रा ॥ स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्यावंध्याभवेत् सुरगुरौक्रमशोभिजन्म ॥

टीका—जो कन्याके जन्म स्थानमें बृहस्पति होय तौ विवाहके अंतर बालकोंकी मृत्यु होय, द्वितीयमें धनवती, तृतीयमें विधवा, चतुर्थमें व्यभिचारिणी, पंचममें पुत्रवती, षष्ठमें पतिनाश, सप्तममें सौभाग्यवती, अष्टममें पुत्रहीन, नवममें पतिप्रिया, दशममें बालक नाश, और एकादशमें पति धनाढ्य, द्वादशमें वांझ, ऐसे क्रमसे फल जानिये ॥

गुरु अनुकूल करनेका विचार।

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजयाशुभदोगुरुः ॥
विवाहेच चतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रदः ॥

टीका—जन्मस्थ तृतीय षष्ठ और दशमस्थानी गुरु नेष्ट है परंतु पूजा करनेसे शुभ फल दायक होताहै और चौथा अष्टम द्वादशस्थ मृत्यु करताहै विचार विवाहमें देखना उचित है ॥

अष्टमैत्रीज्ञानम्।

वर्णोवश्यंतथातारा योनिर्ग्रहगणौतथा ॥

भकूटंनाडिमैत्रीचइत्येताश्चात्रमैत्रिकाः ॥

टीका—वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह गण भकूट नाडी और मैत्री आदि आठनको शुद्ध विवाहमें विचार लेना योग्य है ॥

वर्गादिकोंका ज्ञान।

मीनालिकर्कटाविप्रानृपाः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्यानक्रवृषावैश्याः शूद्राधुग्मतुलाघटाः ॥ वश्योंका ॥ द्वंद्वचापघटकन्यकातुलामानवाअजवृषौचतुष्पदौ ॥ कर्कमीनमकराजलोद्भवाः केसरीवनचरालिकीटकाः ॥

वश्यावश्यज्ञानमाह।

हित्वामृगेन्द्रनरराशिगते च वश्याः सर्वेतथैषां जलजाश्चभक्ष्याः ॥
सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिंज्ञेयं नराणांव्यवहारतोन्यत् ॥

इन तीनों श्लोकोंकी टीका चक्रसे यथाक्रमसे समझ लेना ॥

ताराबलम्।

कन्यर्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषेत्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

टीका—वधू नक्षत्रसे वरनक्षत्रतक जो नक्षत्र संख्यामें होय तामें नवके अंकका भाग देय जो शेष तीन आवें तो अथवा पाँच सात रहैं तौ अशुभ और सब शुभ होतेहैं। ऐसेही वरनक्षत्रसे वधूनक्षत्रतक गिनिके पूर्ववत् प्रमाण लिखिके अनुसार जानना ॥

योनि।

अश्वोगजश्छागसर्पौसर्पश्वानबिडालकाः ॥ मेषोबिडालकश्चैवमूषकोमूषकश्चगौः ॥ महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकं क्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथाश्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ नकुलोवानरस्सिंहस्तुरगोमृगराट्पशुः ॥ अघोरेणक्रमेणैव अश्विन्यादिभयोनयः ॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषंश्वैणंच बभ्रूरगंवैरंवानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरु ॥ लोकानां

व्यवहारतोन्यदपितज्ज्ञात्वाप्रयत्नादिदंदम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥ राश्यधिप ॥ मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयोः सौम्योगुरुस्तुधनमीनयोः ॥ शनिर्नक्रस्यकुम्भस्यकर्कस्यैवतुचन्द्रमाः ॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितोगणकैःक्रमात् ॥ गण ॥ अनुराधामृगोशिवस्तु श्रवणोदितिपुष्यके ॥ स्वाती हस्तोरेवती च नवदेवगणाः स्मृताः ॥ पूर्वात्रयंरोहिणी च उत्तरात्रयमेवच ॥ आर्द्रा तुभरणीचैवनवैते मानुषागणाः ॥ आश्लेषाशतभिष्मूलविशाखाः कृत्तिकामघा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः ॥

अंत्यनाडी।

कृत्तिकारोहिणी स्वाती मघाश्लेषाचरेवती ॥
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वंत्यनाडिका ॥

मध्यनाडी।

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठा भरणीमृगाः ॥
पूर्वाषाढानुराधाच पुष्योहिर्बुध्न्यमेवच ॥

आद्यनाडी।

पूर्वाभाद्रपदामूलं ज्येष्ठाहस्तःपुनर्वसुः ॥ अश्विन्यार्द्राशतभिषाश्चोत्तरात्वेकनाडिका ॥ अश्विनी भरणी कृत्तिकाः पादंमेषः ॥ कृत्तिकात्रयोरोहिणी मृगशिरार्द्धंवृषभः ॥ मृगशिरार्द्धं मार्द्रापुनर्वसुत्रयंमिथुनः ॥ पुनर्वसोःपादंपुष्य आश्लेषान्तंकर्कटकः ॥ मघापूर्वा उत्तरापादं सिंहः ॥ उत्तरात्रयं हस्तचित्रार्द्धं कन्या ॥ चित्रार्द्धस्वातीविशाखात्रयस्तूलः ॥ विशाखापादअनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ मूलपूर्वाषाढा उत्तराषाढापादं धनुः ॥ उत्तराषाढात्रयं श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः ॥ धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदात्रयः कुम्भः ॥ पूर्वाभाद्रपदापाद उत्तराभाद्रपदा रेवत्यन्तं मीनः ॥

टीका—सवा दो नक्षत्र एक राशि भोगतेहैं इस प्रमाणसे द्वादश राशिके भोगका क्रम और अंत्यमध्यआदि नाडीका क्रम चक्रसे प्रतीत होगा ॥

राशिअनुसार घटितमान।

राशि	वर्ण	वैश्य	स्वामी
मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	भौम
वृषभ	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जलजर	चंद्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	रवि
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तूल	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीटक	भौम
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	ब्राह्मण	जलचर	गुरु

नक्षत्रअनुसार घटितमान।

नक्षत्र	योनि	वैरयो.	गणः	नाडी
अश्विनी	अश्व	भैंस	देव	आद्य
भरणी	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	मेंढा	वानर	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प	नौला	मनुष्य	अंत्य
मृग	सर्प	नौला	देव	मध्य
आर्द्रा	श्वान	हरिण	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	मूसा	देव	आद्य
पुष्य	मेंढा	वानर	देव	मध्य
आश्लेषा	मार्जार	मूसा	राक्षस	अंत्य
मघा	मूसा	मार्जार	राक्षस	अंत्य
पूर्वा	मूसा	मार्जार	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	गौ	व्याघ्र	मनुष्य	आद्य
हस्त	भैंस	अश्व	देव	आद्य
चित्रा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
स्वाती	भैंस	अश्व	देव	अंत्य
विशाखा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
अनुराधा	हरण	श्वान	देव	मध्य
ज्येष्ठा	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य
मूल	श्वान	हरिण	राक्षस	आद्य
पूर्वाषाढा	वानर	मेंढा	मनुष्य	मध्य
उत्तराषा.	मुंगुस	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभिजित्	नकुल	सर्प	मनुष्य	०
श्रवण	वानर	मेंढा	देव	अंत्य
धनिष्ठा	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
शततार०	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
पूर्वभाद्र०	सिंह	सिंह	मनुष्य	आद्य
उत्तरभा.	पशु	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
रेवती	गज	सिंह	देव	अंत्य

नवपञ्चक।

मीनालिभ्यांयुतेकीटे कुम्भेमिथुनसंयुते ॥
मकरेकन्यकायुक्ते नकुर्य्यान्नवपञ्चके ॥

टीका–मीनसे नवके अंतर पर वृश्चिक राशि है, और वृश्चिकसे मीन पाँचवीं इसी प्रकार कर्क मीनका और वृश्चिकका कुंभ मिथुन मकर कन्या इन दो २ राशियोंके नवपंचक होतेहैं वे वर्जित हैं ॥

मृत्युषडष्टक।

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ॥ युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयो मृत्युर्वैनक्रसिंहयोः ॥ कुम्भकर्कटयोश्चैव वृषकोदण्डयोस्तथा ॥

टीका–मेष और कन्या ये परस्पर छठे और आठमें होंय इसी रीतिसे तुला और मीन मिथुन, वृश्चिक मकर, सिंह कुंभ, कर्क वृषभ, धन इन दो दो राशियोंका मृत्युषडष्टक कहाता है सो वर्जित है ॥

प्रीतिषडष्टक।

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतातथा ॥ धनुःकर्कयुतंचैव कुम्भकन्यकयोस्तथा ॥ नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योः प्रीतिरुत्तमा ॥

टीका–सिंह मीन, तुला वृष, कुंभ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धनु कर्क इन दो दो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होताहै सो शुभ है ॥

द्विर्द्वादश।

मेषझषौवृषमिथुनौ कर्कहरीतुलकन्यके ॥
अलिधनुषीमकरकुम्भावेतौ द्विर्द्वादशेराशी ॥

टीका–मेष मीन, वृष मिथुन, कर्क सिंह, तुल कन्या, वृश्चिक धनु, मकर कुंभ, ये दो २ राशि द्विर्द्वादश हैं सो वर्जनीय हैं ॥

चतुर्थदशमतृतीयएकादशउभयसप्तम।

चतुर्थदशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः ॥
उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षेशुभमुच्यते ॥

टीका—वधू और वरकी परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश होंय तौ शुभ और दोनों सप्तम सम होय अथवा एक नक्षत्र होय तौ शुभ जानिये ॥

वश्यावश्ययोजना।

सिंहंविनानृणांसर्वेवश्या भक्ष्याश्चतोयजाः ॥
सिंहस्यवश्यास्त्यक्त्वालिं सर्वेणव्यवहारिकः ॥

टीका—सिंहके विना समस्त चतुष्पद मनुष्योंके वशमें हैं और जल जंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिकको छोडके सिंहके सब वश होतेहैं शेष राशियोंमें भक्ष्याभक्ष्यको वर्जित करि वश्यावश्य व्यवहारसे जानिये ॥

ग्रहोंका शत्रुत्वसमत्वमित्रत्व।

शत्रूमन्दसितौ समश्वशशिजो मित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्चसुहृदौशेषाः समाःशीतगोः ॥ जीवेन्दूष्णकराः कुजस्यसुहृदोज्ञोरिः सितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौ बुधस्यहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ गुरोःसौम्यसितावरी रविसुतोमध्योपरेत्वन्यथासौम्यार्कीसुहृदौ समौकुजगुरूशुक्रस्यशेषावरी ॥ शुक्रज्ञौसुहृदौसमः सुरगुरुः सौरस्यत्वन्येरवेयें प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेमीमयाकीर्त्तिताः ॥

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चंद्र भौम
सम	बुध	शुक्र गुरु भौम श.	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगल	गुरु
मित्र	चंद्र गुरु मंगल	रवि बुध	चंद्र गुरु सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शुक्र	बुध शुक्र

मार्तंडमतसे गुणोंका मिलाना।

वर्णके गुण।

दोनोंका एक वर्ण अथवा वरका उच्च होय तौ शुभ।

वश्यका गुण।

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोः सौम्येगुणद्वयम् ॥ वश्यवैरेगुणश्चैको वशभक्ष्ये गुणार्द्धकम् ॥ १ ॥

टी०—शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य० एकजातिमें गुण २ वश्य और वैरमें गुण १ वश्य और भक्ष्यमें गुणअर्द्ध ॥ १ ॥

वधूका वर्ण	वरोंका वर्ण			
	ब्रा.	क्ष०	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

ताराके गुण।

एकतोलभ्यते ताराशुभा चैवाशुभान्यतः ॥
तदासार्द्धोगुणश्चैकस्ताराशुद्धौमिथस्त्रयः ॥
उभयोर्नशुभातारातदा शून्यंसमादिशेत् ॥

टीका—एककी शुभ और एककी अशुभ होय तौ गुण डेढ १॥ और दोनोंकी एक तारा अथवा शुभतारा होय तौ गुण ३ और जो दोनोंकी अशुभ होय तौ गुण शून्य०जानिये ॥

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	३
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	१॥
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	३
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	१॥
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	३
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	१॥
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनीके गुण।

महावैरेच वैरेच स्वस्वभावेयथाक्रमात् ॥
मैत्र्ये चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

टीका–महावैरका गुण शून्य० दोनोंकी शत्रुताका गुण १ स्वभावके गुण २ दोनोंकी मित्रताके गुण ३ अतिमित्रताके गुण ४ जानिये ॥

	अ.	ग.	भे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ.	भै.	व्या.	ह.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
भैंस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	५	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	५	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहोंके गुण।

दोनोंका स्वामी १ और मैत्रीके गुण ५ सम शत्रुत्व गुण ०॥० सम शत्रुत्व मित्रत्व गुण४ शत्रुत्व मित्रत्व गुण १ समत्व गुण २ शत्रुत्व गुण ० ॥ ० इस प्रकार जानिये ॥

गणोंके गुण।

दोनोंका गण १ होय तिसके गुण६ वर देवगण और वधू मनुष्यगण तिसके गुण ६ इससे विपरीत होय तौ ५ वर राक्षसगण और वधू देवगण तिसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

वधूके गुण	वरके गुण						
...	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
बृ	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

वधूके गुण	वरके गुण		
	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

नाडीके गुण ८

भिन्ननाडीगु. ८ एकनाडीकेगुण ०

वधूके गुण	वरके गुण		
	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

सत्कूटके गुण७।

टीका–राशि एक भिन्नचरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एकादश इनके भिन्नराशि नक्षत्र एक इनके गुण ५ प्रीतिषडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नव पंचम इनमें वर दूरत्व योनि शत्रुता होनेपरभी भकूटके गुण ६ होतेहैं ॥

असत्कूटके लक्षण।

टीका–वर योनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व होय तो षडष्टक द्विर्द्वादशक नवपंचमादि दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानिये ॥

योनि मैत्र व स्त्री दूरत्व इनमेंसे एक होय तौ दुष्टकूटका एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एकचरण ॥

	मे.	वृ.	मि.	क.	मिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष.	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

इस प्रकार गुणोंका मिलाना १८ गुण अधिक शुभ, शून्य अशुभ ॥

वर्णके फल ।

यास्याद्वर्णाधिकाकन्या भर्त्तातस्या नजीवति ॥
यदिजीवतिभर्त्ता तु ज्येष्ठपुत्रोविनश्यति ॥

टीका–कन्याका वर्ण वरसे श्रेष्ठ होय तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्रका नाश होय ॥

वैरयोनिका फल।

जैसे अश्व और भैंसकी वैरयोनि है इसी प्रकार वधू और वरकी वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादिभी विचारिये इसमें शुभकी इच्छा वर्जित है ॥

गणोंके फल ।

स्वगणेचोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः ॥
कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् ॥

टीका—दोनोंका एक गण होय तो उत्तम प्रीति, मनुष्य और देवमें मध्यम, देव दैत्यमें कलह, मनुष्य राक्षस गण मृत्यु देताहै ॥

कूटफल ।

षडष्टकेऽपमृत्युःपञ्चमनवमेऽनपत्यताज्ञेया ॥
द्विर्द्वादशे निधनताशेषेषु मध्यमताज्ञेया ॥

टीका—दोनोंका षडष्टक मृत्युकारक और नवपंचम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्द्धनताकारक शेष मध्यम जानिये ॥

नाडीफल।

अग्रनाडीव्यधेद्भर्त्तांमध्यनाडी व्यधेद्द्वयम् ॥
पृष्ठनाडीव्यधेत्कन्याम्रियते नात्रसंशयः ॥

टीका—दोनोंकी अग्रनाडी होवे तो भर्त्ताको बुरा मध्यनाडी दोनोंको अशुभ और अंत्यनाडी कन्याको मृत्युदायक होतीहै ॥

मध्यनाडी ।

जठरे निर्द्धनत्वं च गर्भे मरणमेवच ॥
पृष्ठेदौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तांपरिवर्जयेत् ॥

टीका—दोनोंका मध्यनाडी निर्धनताका कारण और गर्भनाश और अंत्यनाडी दुर्भागकारक जाननी चाहिये ॥

ज्योतिःप्रकाशे पार्श्वनाडी ।

निधनंमध्यनाड्यां तु दम्पत्योर्नैव पार्श्वयोः ॥
करग्रहेपृष्ठनाड्यौ न निन्द्ये इति तद्वचः ॥

टीका—दोनोंकी मध्यनाडी मृत्युप्रद तैसेही पार्श्वनाडी, परंतु विवाहमें पार्श्व नाडी निंदित नहीं, अंत्य मतमें क्षत्रियादिकोंको कहीहै ॥

असत्कूटविचार ।

स्त्रीनक्षत्रसे वरनक्षत्र निकट होय तो अशुभ और वरनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र दूर होय तो शुभ जो नक्षत्र एक अथवा स्वामी एक होय तो शुभ जानिये ॥

राजमार्तंड मतसे दुष्टकूटोंका दान।

षडष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यंनवपञ्चमे च ॥
नाड्यांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणं च ॥

टीका—अति आवश्यक विवाहमें वधू और वरके दुष्ट कूटादिकोंके दान षडष्टकमें दो गौ, नव पंचममें रूपा सहित कांसेका पात्र, एक नाडीमें गौ, और द्विर्द्वादशमें अन्न सुवर्ण वस्त्र तथा ब्राह्मणोंका तर्पण इत्यादि करानेसे दुष्ट कूटादिक दोष दूर होतेहैं ॥

फक्किका—यस्यवर्णस्ययोनिज्ञानं नोक्तंतस्यजातकाऽवलोकनप्रकारो वास्तुप्रकरणेउक्तः ॥

टीका—जिस वर्णकी योनिका जानना उक्त नहीं है तिसके जातक देखनेका प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहाहै ॥

विवाहके उक्तनक्षत्र।

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवैन्दवैः ॥
एतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणांविवाहः शुभदःस्मृतः ॥

टीका—मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा मृगशिर ये नक्षत्र स्त्रियोंके विवाहमें निर्दोष और शुभ हैं ॥

एकविंशतिमहादोष।

पञ्चाङ्गशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्त्तितः ॥ उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितियः सूर्यसंक्रमः ॥ तृतीयःपापषड्वर्गोभृगुः षष्ठः कुजोष्टमः ॥ गण्डान्तंकर्त्तरीरिःफषडष्टेन्दुश्चसंग्रहः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नंराशौविषघटीतथा ॥ दुर्मुहूर्तोवारदोषः खार्जूरीकंसमाङ्घ्रिगम् ॥ ग्रहणोत्पातभंक्रूरावद्धर्क्षंक्रूरसंयुतम् ॥ कुनवांशो महापातोवैधृतिश्चैकविंशतिः ॥

टीका—प्रथम पंचांग शुद्धि रहित दोष १ उदयास्तशुद्धिरहित २ संक्रांति दिवस ३ पापग्रहका वर्ग ४ लग्नसे छटा शुक्र ५ लग्नसे अष्टम मंगल ६ लग्नसे

		रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सिं	सिं	सिं	क	क
		भा	१	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१
रा.	भा.	नक्ष	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पुष्य	आ	म	पू	उ	उ	ह
मे.	१	अ	३६	३३	३२	२४	२१	३२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२	११	१२
मे.	१	भ	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	३६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	३२॥	२४॥	३२॥	२१॥	२०
मे.	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥	१५॥	१५॥
वृ.	।।।	कृ	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२३	२४	२०	१८	२१॥	३१॥	२८	२८
वृ.	१	रो	२३॥	२४॥	१३	१४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२५॥	२८	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृ.	॥	मृ	२४	११	११॥	३२॥	३६	३६	३५	३३	२९	२६	२०	२२	१८	२५	२५	३१	३४
मि.	॥	मृ	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३५	३४	३१	१०॥	१३॥	१४॥	२२॥	१८	२९॥	३१॥	३२॥
मि.	१	आ	२०	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४
मि.	।।।	पुन	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२१॥	१५॥	२०॥	२३	२४॥
क.	।	पुन	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१६	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२	१८॥	१८॥
क.	१	पु.	३०॥	२४	२७	२४	२०	१९	१३॥	२४	२३	३४	३६	३४	२५	३१	२०	१६॥	२६॥
क.	१	आ	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	३४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	२०॥
सिं.	१	म	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२७॥	२२॥	२०॥	२२	२५	२२॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिं.	१	पू	२६	२४॥	२२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२१	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिं.	।	उ	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	३१	३१	३२	३४	३६	३३	१५
क.	।।।	उ	१३	२२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३	३१	३४	३५	३५
क.	१	ह	१३	२०	२७॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	२३॥	२४॥	२८॥	२०	३५	३६
क.	॥	चि	१४	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	१४॥	२१॥	१३॥	२७॥	२९॥	२५॥	१४॥	३०॥	३३
तु.	॥	चि	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२७	३५॥	२२	१३	३१	२५	११॥	१७॥	१०॥	३४
तु.	१	स्वा	३०॥	१९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२७	३४	३३	३४॥	२२॥	२८	१५	१२॥	२४॥	२५॥	२६॥	३४
तु.	।।।	वि	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	३०॥	२१	२३॥	२२॥	२९॥	१७॥	१९॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृ.	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३	११॥	१८॥	१९
वृ.	१	अ	२४॥	१९॥	११॥	२४॥	२८॥	२१॥	१८	१६	२०॥	१७	११	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृ.	१	ज्ये	१२	१९॥	२४॥	२१॥	२३॥	१३॥	१३	३	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥	१२	१२
ध.	१	मू	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	१०॥	१९॥	२६॥	३२॥	२६॥	१७	१६॥	१३
ध.	१	पू	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२	३२॥	२०
ध.	।	उ	३२	३३	३४	१६	११॥	१८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	२४॥	१०॥	२३	३२॥	१२	१८
म.	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	१३	२९॥	२१॥	१३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०	२०	२७	२७
म.	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥	२६	२७
म.	॥	ध	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१०॥	२०
कुं.	॥	ध	३१	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९॥	१३॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	१४॥	२९
कुं.	१	श	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१	२५॥	१९॥	११॥	७॥	१०॥
कुं.	।।।	पू	१९	२६	२०	३४	३२॥	३२॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२१॥	१४	१९॥	२१॥	२६॥	१२॥	१५
मी.	।	पू	२१॥	२९॥	२३॥	२३॥	२७	२७	२७	२७	१८	१७	२६	७॥	३०	२३	१४	१८॥	१८
मी.	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	११	११	२७	२८	२६	११	२०	२०	२५॥	२५॥	१९	२८
मी.	१	रे	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६	२६॥	१४॥	१३	१३	१०॥	२२	२२	२६	०

क	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कु	कुं	कुं	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	०
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२२॥	२२	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३२	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४	१
५	१३॥	१९॥	२२॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७	२५	३०॥	२४	३२	२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८	२५॥	३३	३८॥	२०	१४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२६॥	१०॥	३
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	१॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३१॥	२४॥	२१॥	२१॥	१४	४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२९॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	२३	३१॥	३१	२८	२८	३०	५
२७	१०	३०	१५॥	२३॥	२१॥	२५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२१	२८	६
२१	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	११	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८	७
३४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	१३	८	२०॥	२८	२८	८
२७॥	२७॥	३४	२१	१६॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	११॥	१४	१०	१९	२८	२८	९
२२॥	२२	२८	२३	२१	१६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२१	१४	८॥	११॥	२०	२६	२५	१०
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१९॥	१७॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	२८	२७	११
२७॥	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३॥	२३	२६	९	२०	१३	२४	३१	१३	१२
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७	४	४	१९	२४॥	२४॥	१८	१८	१८	११॥	१३
१४	१६॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३३॥	३२॥	३४॥	३२॥	१९	१८	५	९	११॥	२४॥	२४॥	१६	२४	१४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२२॥	२३	३२॥	३२॥	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४	१५
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	१७	१३	२४	११॥	१९॥	२६	२६	१८	१६	१९॥	११	१८	३०	२८	१६
३३	२६	२२॥	२४॥	२०	२७	१४	१५	२७	२६॥	२५	२६	२१	१७	१०॥	१३	१८	३०	२८	१७
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	१५	२६	१२	२२	१८॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२८	१२	१२	१८
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	११॥	२१	१२	१२	२६॥	२६	२४	२४	२८॥	२४	२४	५	५	१९
२८	३६	३३	३३	२३	२०॥	२७॥	२३	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	१८	३४	२०	२१	१३	२०
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७	२१
२६	१९॥	२६॥	२६	३२	३३	३५॥	२०॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	११॥	२५	१५	१९॥	२२
१२	८	३२	१८	३३	३४	३४	२४	३२॥	३०॥	२६	३१	२६	११	२१	२४॥	३१	२५	२४	२३
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२१	२५	२५	२१॥	२५॥	१९॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८	२४
२७	२७	२६	२७	३१॥	१६॥	२४	३४	३५	३२॥	२२॥	२२॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८	२५
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	२६	३४	२४	३४	१६॥	१३	२३॥	२७	३०	१७	३२॥	२६
२१	१७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२	३३	२२॥	२९॥	३२॥	[illegible]	२४	२७
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७	२२	२८	२५	३३	२६	३४	३२	२१	१८॥	३१॥	३०	३०	२२	२८
२०	२७	२२॥	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३४	३६	१९॥	२१॥	२७	२९॥	२२॥	२९
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	२७	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	३४	१४	२२॥	३०
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	२२॥	१५॥	२४॥	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२॥	१७॥	८	१५॥	३१
२५	३३	२८	२३	२७	३१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१०	१५	३३॥	२६	३१	१८	१०॥	२०॥	३२
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	१७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२१॥	१८॥	३२	३३	३४	३४	३४	२१॥	३३
२०	१३	२०॥	१८॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१॥	१३॥	१०	१७॥	३४	३३	३०॥	३४
११	५	२१	१३॥	२६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२१॥	२१॥	२२	८॥	१७	२०	३३	३६	३५	३५
२२	१८	१२	८	१८॥	२७	२९	२८	२०	३२॥	२०॥	२३	२९॥	१५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३६	३६

६।८।१२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पापग्रह १० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मुहूर्त्त १३ यामार्द्ध आदि १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहोंकरि विद्धनक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त १९ पापांश २० संक्रांतिसाम्य २१॥

कर्त्तरीदोषलक्षण।

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौपापखेटौ यदातदा॥ कर्त्तरीवर्जनी-
यासाविवाहोपनयादिषु॥ नहिकर्त्तरिजोदोषः सौम्ययो-
र्यदिजायते॥ शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरी॥

टीका—लग्न अथवा चंद्रसे बारहवें और दूसरे स्थानोंमें पापग्रह पड़ैं तौ कर्त्तरी दोष होताहै इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है, कर्त्तरीदोषभंग जो इन्हीं उक्त स्थानोंमें सौम्य ग्रह होय तौ अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न होय तौ शुभ, और क्रूर ग्रह होय तो कर्त्तरीदोष नहीं होता॥

वधूवरकी राशिसे अष्टमलग्न।

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्चलग्नतः॥
त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः॥

टीका—वर वधू और बटु इनकी सबकी जन्मराशि और लग्नसे आठवीं लग्न विवाह और यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं॥

दुष्टमुहूर्त्त।

तिथ्यंशोदिनमानस्य रात्रिमानस्यचैवहि॥
मुहूर्त्तः कथितस्तेषुदुर्मुहूर्त्तंशुभेत्यजेत्॥

टीका—दिनमान और रात्रिमान इनका पन्द्रहवां अंश दुर्मुहूर्त्त होताहै सो शुभकार्यमें वर्जित है॥ यामार्द्धादिककथन।

सूर्याद्यामदलं दिवैवनिगमाद्यश्वीषुनामत्रिषट्संख्याकंकुलिकंदिवे-
न्द्ररविदिङ्नागर्तुवेदद्विकम्॥त्र्यंकंतंनिशिषोडशांशमपरातिथ्यंशमु-
ज्झन्तितैः कालंकण्टकमैनिघण्टममरेज्यज्ञास्फुजिद्भ्यःक्रमात्॥

टीका—रविवारसे अर्द्धयामार्द्ध कोष्टकके अंततक प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक होते हैं क्रमकरिके जानिये, और शुभ कर्ममें वर्जित हैं दिनमें दिनमानका सो-

लहवां भाग रविवारसे कुलिक कोष्टकके अंततक अंक होते हैं उनकी कुलिक संज्ञा है, और शुभ कर्ममें वर्जित हैं रात्रिमें एक २ घटाइये किसीके मतमें दिनमानका पंचदशांश वर्जित करके गुरुवारसे काल दोष बुधवारसे कंटक और शुक्रवारसे निघंट ये सब यथाक्रम कुलिकके समान वर्जित हैं ॥

वार	* यामार्द्धघटिका ४ संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घ० २	काल घ० २	कंटक घ० २	ऐनिघंट घ० २
रवि	४ था	१२	१६	१४वा	८ वा	६ वा	१०वा
चंद्र	७ वा	२४	२८	१२वा	६ वा	४ था	८ वा
मंगल	२ रा	४	८	१०वा	४ था	२ रा	६ वा
बुध	५ वा	१६	२०	८ वा	२ रा	१४वा	४ था
गुरु	८ वा	२८	३२	६ वा	१४वा	१२वा	२ रा
शुक्र	३ रा	८	१२	४ था	१२वा	१०वा	१४वा
शनि	६ वा	२०	२४	२ रा	१०वा	८ वा	१२वा

लत्तादोष——भौमात्त्र्याकृतिषट्जिनाष्टनखभंहन्त्यग्रतोलत्तया ॥ खेटोऽर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितं पूर्णोनसन्मालवे ॥

टीका-भौम जिस नक्षत्रका होय तिससे तीसरे नक्षत्रमें लत्ता दोष, और बुध जिस नक्षत्रका होय तिससे बाईसवें नक्षत्रमें, गुरुसे छठे नक्षत्रमें शुक्रसे २४ वें नक्षत्र में और शनिके नक्षत्रसे ८ वें नक्षत्रमें, राहुके नक्षत्रसें २० वें नक्षत्रमें, रविके नक्षत्रसे १२ वें नक्षत्रमें, और चंद्रमा पूर्ण होय तौ सातवें नक्षत्रमें लत्तादोष होता है, यह दोष मालवदेशमें अशुभ और अन्य देशोंमें शुभ होता है ॥

ग्रहणतथाउत्पातनक्षत्रदोष——यस्मिन्धिष्ण्येमहोत्पातो ग्रहणं वाभवेद्यदि ॥ तस्मिन्धिष्ण्येशुभंकर्मषण्मासंवर्जयेद्बुधः ॥

टीका-जिस नक्षत्रमें उत्पात अथवा ग्रहण होय तिस नक्षत्रमें षट्मासतक शुभ कर्म वर्ज है ॥

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र।

श्रुत्यग्निभेभिजिद्ब्राह्मये वैश्वेन्द्रर्क्षेतुरुद्रभे ॥ मूलादित्ये च पुष्येंन्द्रेमे-

*एक दिनका यामार्द्ध८कुलिकादि१६वारानुसार जानै परंतु उनमेंसे जिस वारको जो वर्जित हैं वे कोष्टकमें लिखेहैं।

त्राश्लेषेमघान्तके ॥ दस्रभागार्यमान्त्ये च हस्ताहिर्बुध्न्यभेतथा ॥ चित्राजचरणेस्वातीवारुणे च परस्परम् ॥ वासवेन्द्राग्निभेतद्वद्वेधः सप्तशलाकजः ॥ त्याज्यःपापोद्भवोयत्नाद्भूतबन्धादिकर्मसु ॥

टीका–पंच सप्त शलाकाचक्रमें जिस रेखापर जो नक्षत्र होय और उसीमें पाप ग्रह होय तौ वह शुभनक्षत्र विद्ध जानिये ॥

नक्षत्रचरणवेध ।

सप्तपञ्चशलाकाभ्यां विद्धमेकार्गलेनयेत् ॥ लत्तोपग्रहगं धिष्ण्यं पादमात्रंशुभेत्यजेत् ॥ वेधमाद्यंतयोरद्र्योरन्योन्यं द्वितृतीययोः ॥ क्रूरैरपित्यजेत्पादंकेचिदूचुर्महर्षयः ॥

टीका–विद्धनक्षत्र एकार्गल और लत्ता उत्पात नक्षत्र इनके चरणमें शुभ ग्रह होय तौ वह चरण शुभ कर्ममें वर्जित है प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्रके चरण परस्पर विद्ध होते हैं किसीके मतमें पापग्रह विद्ध नक्षत्रोंके चरण वर्जित हैं 'एकार्गलदोषो मार्तंडमते' विष्कंभादि दुष्ट योग रहित दिननक्षत्रसे अभिजित् सहित गुणनासे विषमनक्षत्रमें सूर्य होय तो एकार्गल दोष होता है ॥

चण्डायुध–शूलगण्डान्तपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ॥ अन्त्यंयच्चन्द्रभंतस्मिन्नेतच्चण्डायुधंनसत् ॥

टीका–शूल गंड व्यतीपात साध्य वैधृति हर्षण योगोंके अंतमें जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

पञ्चशलाकाचक्र ।

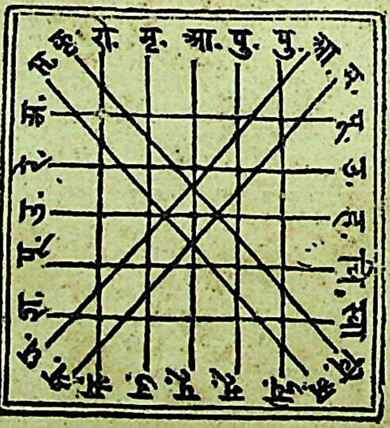

सप्तशलाकाचक्र ।

क्रान्तिसाम्य।

युग्मेधनुःकर्किरलौ च युक्तेकन्या च मीनेवृषनक्रयुक्ते ॥
मेषे च सिंहे च घटेतुलायांक्रान्ते च साम्यंशशिसूर्ययोगे ॥

टीका–धन मिथुन इन लग्नोंके सूर्य और चंद्रमा होंय तौ कांति साम्य होय इसी प्रकारसे कर्क वृश्चिक आदि दो २ राशियोंके क्रांतिसाम्यदोष जानिये ॥

चक्रकाक्रम–ऊर्ध्वरेखात्रयं चैवतिर्यग्रेखात्रयं तथा॥
क्रान्तिसाम्यंबुधैर्ज्ञेयंमध्ये मीनंतुयोजयेत् ॥

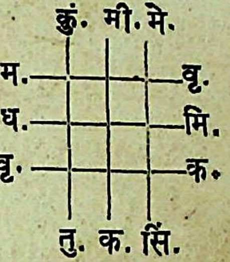

टीका–तीन ऊर्ध्व और तीन आडी रेखा खींचे मध्य भागकी रेखाओंमें तीन २ लग्न क्रमसे लिखे द्वादशलग्नोंमेंसे दो २ का क्रांति साम्य होता है ॥

यामित्रदोष।

लग्नेन्दोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदायामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ क्रूरोवायदिवासौम्यो लग्नाच्चन्द्राच्चखेचरः ॥ एकोपियदियामित्रे समांशेचतदाभवेत् ॥ यामित्रंनप्रशंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ॥ आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः ॥

टीका–लग्न चंद्र मध्य सप्तम स्थानका पापग्रहशून्य करनेसे उसके तुल्यांश आवैं तौ यामित्र दोष होय, अधिक वा न्यून होय तो दोष नहीं है ॥ दूसरा पक्ष ॥ लग्न चंद्रसे सप्तमस्थानी शुभग्रह अथवा पापग्रह सम अंश होय तौ यामित्र दोष होय, गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियोंके मत अनुसार यामित्र दोष विवाहमें वर्जित है जो लग्नसे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें सूर्य होय तौ यामित्र दोष शुभ और सुखदायक जानिये ॥

चरत्रयदोष–कर्कलग्नेथवामेषे घटांशोयदिदीयते॥
तुलायांमकरेचन्द्रे वैधव्यंजायतेध्रुवम्॥

टीका–कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्रमा ऐसे योगोंका दोष वैधव्य करता है ॥

तिथिअनुसारवर्जितलग्न ।

प्रतिपदितुलामकरौ सिंहमकरौतृतीयायाम् ॥ कन्यामिथुनेपञ्चम्यां सप्तम्यांचैवधनुःकर्कौ ॥ नवम्यांकर्कसिंहौ एकादश्यांधनुर्मीनौ ॥ त्रयोदश्यांवृषभमीनौ शून्यलग्नानितिथियोगात् ॥

टीका–प्रतिपदाको तुला और मकर, तृतीयाको सिंह मकर, पंचमीको कन्या मिथुन, सप्तमीको धन कर्क, नवमीको कर्क सिंह, एकादशीको धन मीन, त्रयोदशीको वृष मीन इन तिथियोंमें ये लग्न शून्य वर्जनीय हैं ॥

दोषनिवारण–द्यूनंविनाकेन्द्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ॥ निहन्तिदोषांस्त्रिशतंभृगुश्च शतंबुधोवापिहिहृद्यमूर्त्तिः ॥

टीका–गुरु शुक्र अथवा बुध ये १।४।९।१०।५ इन स्थानोंमें होय तो एक लक्ष गुरु तीन सौ शुक्र १ सौ बुध दोषोंको नाश करे हैं ॥

लग्नप्रमाण वा राश्युदय–गजाग्निदस्रागिरिषट्कदस्रा व्योमेन्दुरामा रसरामरामाः ॥ कुरामरामा गजचन्द्ररामा नागेन्दुलोकाः कुगुणानलाश्च ॥ षड्रामरामाः खशशाङ्करामाःसप्ताङ्गपक्षाश्चगजाग्निदस्राः ॥

टीका–राशिउदय कहिये मेषादि बारह राशि तिनकी १२ लग्न होतीहैं जिस राशिके सूर्य होय वही उदयकालकी प्रथम लग्न जानिये तिसकी पल संख्याका क्रम कोष्टकमें है ॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
पल	२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३१८	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्नकी घटिकाओंकी संख्या– मीनेमेषेत्र्यष्टपञ्चक्रमान्नाड्यःपलानिच॥वृषेकुम्भेऽब्धिसप्ताद्विपञ्चादिङ्मिथुनेमृगे॥धनुःकर्केशरेषट्त्रिसिंहाल्योः शरभूत्रयम् ॥ बाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाड्यःपलानिच॥

टीका–मेषादि लग्नोंकी घटी और पलोंका क्रम ॥

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	धन	मक	कुंभ	मीन
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

प्रतिदिवस भुक्तपल जाननेका क्रम ।

मीनाजेसप्तषट्पञ्च पलानिविपलानितु ॥ गोकुम्भेष्टौयुगशरादि-

ग्विंशतिर्नृयुक्मृगे ॥ कर्कचापेभवाःसूर्याःसिंहाल्योरुद्रदृङ्मिताः ॥ तुलाङ्गेदिक्चषट्त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥

टीका–जो लग्न उदय कालमें होय तिसकी प्रतिदिन भोग्य पल विपल संख्या॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुंभ	मी
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नकथन–यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तल्लग्नमुदयोभवेत् ॥ तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते ॥

टीका–जिस राशिके सूर्य होंय वही लग्न सूर्योदयमें होतीहै और उससे सप्तम लग्न सूर्यास्तमें होतीहै उसीको अस्तलग्न जानिये ॥

लग्नकेउक्तअंशदेनेकाक्रम–वृषश्चमिथुनंकन्या तुलाधन्वीझषस्तथा ॥ एतेशुभनवांशास्तु ततोन्येकुनवांशकाः ॥

टीका–वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये अंश द्वादश लग्नोंके शुभ होतेहैं शेष अशुभ, मेषादि १२ लग्न वा अंश ७ कोष्टकमें हैं तिनमेंसे जिसके अंशकी वर्ग शुद्धि होय उनकी कोष्टकमें लग्न लिखे और उस अंश घडीको अयनांश देकर भुक्त काल लाईये ॥

लग्न	वृ	मि	क	कं	तु	धन	मीन
मेष	० ३ २०	० ६ ४०	० १० ०	० १६ ४०	० २० ०	० २६ ४०	० ० ०
वृष	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ०	१ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मिथुन	२ २३ २०	२ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	२ ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
कर्क	० ० ०	० ० ०	३ ० ०	३ ६ ४०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २६ ४०
सिंह	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	२ २६ ४०	० ० ०
कन्या	५ १३ २०	५ ६ ४०	५ २० ०	५ २६ ४०	४० ० ०	० ० ०	० ० ०
तुला	६ २३ २०	६ २६ ४०	६ १ ०	६ ० ०	६ ० ०	६ ६ ०	१ १६ ४०
वृश्चिक	० ० ०	० ० ०	७ १ ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
धन	४ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	६ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ०
मकर	९ १३ २०	९ २६ ४०	९ २० ०	९ २६ ४०	४० ० ०	० ० ०	० ० ०
कुंभ	१० २३ २०	१० २६ ४०	० ० ०	० ० ०	१० ० ०	१६ ६ ४०	१० ६ ४०
मीन	० ० ०	० ० ०	११ १ ०	११ ६ ४०	११ १० १	११ १६ ४०	११ २६ ४०

टीका—प्रत्येक कोष्टकमें ४ अंक हैं उनके नाम राशि अंश कला विकला जानिये राशिकी संज्ञा शून्यका नाम मेष और वृषके नाम १ इस प्रकार १२ राशि होती है ॥

तात्काल स्पष्टसूर्य लेनका साधन ।

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तः खरसप्तांशवियुग्युतोग्रहःस्यात् ॥

टीका—पंचांगस्थ ग्रहोंके कोष्टकमें पूर्णिमासे अमावास्यापर्यंत और अमावास्यासे पूर्णिमा पर्यंत सूर्य स्पष्ट है, परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिनका सूर्य स्पष्ट करना हो उसदिनको लेकर और दिनोंके अंतरको वर्तमान दिनकी सूर्यगतिसे कोष्टांतमें गुणे और ६० का भाग देनेसे जो अंक आवैं वे अंश घटी पल जानिये, परंतु पूर्णिमाके सूर्य्यसे जो पीछेका स्पष्ट करना हो तो पंचांग सूर्यके अंश घटी पल जो कोष्टकमें हैं उनमेंसे उन अंकोंको हीन करे जो आगे काल न होय तौ उनमें जोडदे इस प्रकारसे तात्कालिक सूर्य स्पष्ट होजाताहै यह जानिये ॥

भुक्त दिवसोंका उदाहरण ।

शकः १७६९ कार्तिक शुक्ल ९ भौमका स्पष्ट सूर्य कहो ॥

सूर्यकी गति — स्पष्ट रविका उत्तर

प. वि. — रा. अं. क. वि.

६० ४७ गति — पंचांगस्थरवि ७ ७ २१ ५७

६ दिन ९ से १५ तक — गति ६ ४ ४२

अंतरको गुणे

३६० २८२ गुणा — शेष संख्या ७ १ १७ १५

भाग ६०) २८२ (४ अंश — यह स्पष्ट सूर्य जानिये.

२४०

४२ शेषफल

३६०

४ ४२ मिलावे

३६४ ४२ — अं. प. वि.

६४ ४२ भाग ६०) ३६४ (६।४।४२

अभुक्त दिवसोंका उदाहरण।

शकः १७६९ कार्तिक कृष्ण ६ को सूर्य स्पष्ट लानेका क्रम पूर्णिमाका स्पष्ट रवि राशि ७ अंश ७ घटी २१ पल ५७ अभुक्त दिवस ६ सूर्यकी गति ६०।४७ इन अंकोंको ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इनमें ६० का भाग देनेसे शेष रहे वे अंश ६ घटी ४ प. ४ इन अंकोंको सूर्यके अंश घटिका और पलों मिलावे तौ ७ राशि १३ अंश २६ घटी ३९ पल इस प्रकार होतेहैं.

अयनांश लानेका क्रम।

शाकोवेदाब्धिवेदोनःषष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥
देयास्तेतुरवौस्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥

टीका—वर्तमान शकमें ४४४ घटानेसे जो शेष बचै उसमें ६० का भाग दे ॥ चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंको स्पष्ट सूर्यके अंश और घटिकाओंमें मिलानेसे सायन सूर्य होजाताहै ॥

उदाहरण।

शके १७६९	भा.६०)१३२५(२२अंश	७ १ १७ १५ स्पष्टरवि
उनसे ४४४	१२०	२२ ५ अयनांशमिलावे
घटाना	१२५	७ २३ २२ १५
१३२५	१२०	यह सायनसूर्य जानिये.
	५	
	६० गुणक	
	भाग ६०)३००(५ कला	
	३००	
	०००	

लग्नसे इष्टकाल लानेका क्रम।

स्फुटसायनभागर्कभोग्यांशफलसंमितः ॥ सायनांशतनोश्चापि

भुक्तांशफलसंयुता ॥ मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्टयाप्तानाडिकास्तनोः ॥

टीका-सायन सूर्यसे भोग्य और सायन लग्नसे भुक्त बनानेकी रीति ॥ दोनोंका योग करके सूर्य लग्नके मध्यका उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्न परसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट होजाताहै. ॥ उदाहरण ॥ शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारको स्पष्ट सूर्यकी राशि आदि ७।१। १७।१५ और अयनांश २२।५ को सूर्यके अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशिका सूर्य २३ अंश २२ घटिका १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक राशिका है तो वृश्चिकका उदय कहिये ३३१ से भोग्यांश गुणनेसे हुए अंक २१९४ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ७३।८ यह सूर्यका भोग्य काल जानिये ॥

लग्नसे भुक्त लानेका प्रकार ॥ मकर लग्न वृषकी तिसको कोष्टकमें देख कर वह स्पष्ट लग्न लेते वे राश्यादि ९।१३।२० कहिये मकर राशिकी लग्न १३ अंश २० घटिका होतीहै, इस लग्नके अंश घडीमें अयनांश २२।५ मिलानेसे सायन लग्न १०।५।२५ हुई कुंभराशिके लग्न अंश ५ घडी २५ सायन लग्न होती है, लग्नके भुक्तांश ५।२५ कुंभ राशिका उदय २६७ इनको गुणनेसे अंक हुए १४४६ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ४८।१२ यही अंक लग्नका भुक्त होताहै ॥

भोग्य भुक्तसे इष्टकाल लानेका प्रकार।

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न जिस राशिके मध्यांतरका उदय २ धन ३१६ मकर ३१० इनका योग ६४६ भोग्य भुक्त योग १२१ इसमें मिलाये तो अंक हुए ७६७ इस युक्त अंकमें ६० का भाग दिया तो वह इष्ट कालकी घटी १२ पल ४७ हुए इन पलोंमें वृत्तिके ५ पल जोडनेसे स्पष्ट इष्टकाल १२।५२ आय जाताहै ॥

उदाहरण।

सायन सूर्यके भोग्य लानेका क्रम

अंश	घटी	पळ
३०	०	०
२३	२२	२५
६	३७	४५

		३३१ गुणक
१९८६	२३१७	१६५५
२०८	९९३	१३२४
२१९४	१२२४७	भाग ६०) १४८९५ (घटिका २४८
	२४८	१२०

भाग ६०) १२४९५ (अं २०८ | २८९
१२० | २४०
४९५ | ४९५
४८० | ४८०
१५ शेष | १५ शेषपळ

रविके भोग्य काल लानेका प्रकार.

अंश — घटी

भाग ३०) २१९४ — १५ (७३।८
२१०
९४
९०
४
६० गुणक
२४०
१५ शेषघटी
भाग ३०) २५५ (८ शेष
२४०
१५ शेष

लग्नसे भुक्तकाल लानेका क्रम.

रा अं क
९ १३ २० मकरलग्न
२३ ५ अयनांश मिलावे
१० ५ २५ सायनलग्नभुक्त
२६७ लग्नका उदय
१३३५ १७५
१३३५ १७५
१११ १५०
१४४६ ५० अंश
६०)६६७५(१११
६०
६७
६०
७५
६०
१५

अभुक्तांश
भाग३०)१४४६(१४१.१२
१२०
२४६
२४०
६
६० गुणक
भाग ३०)३६०(१२
३६०

इष्टकाल.

घन ३२६
मकर ३१० मिलावे
६४६
१२१ यह भुक्त मिलावे
भाग ६०)७६७(१२ घ
६०
१६७
१२०
४७
६० गुणक
भाग ६०)२८२०(४७ पल
२४०
४२०
४२०

भुक्तभोगयोग.

४८ १२ भुक्त
७३ ८ भोग्यां
१२१ २० सूर्य व लग्न इन राशीको मध्यंतरका उदय

उत्तर इष्टघटिका
घ प
१२ ४७
५ प्रवृत्तिका फल
१२ ५२ उत्तर इष्ट घटा

इष्टकाल समयका तत्कालसूर्यसाधन।

तत्कालभवस्तथाघटिघ्न्याःखरसैर्लब्धकलोनसंयुतःस्यात् ॥

टीका—इष्ट घडीमें सूर्य लाना होय तौ उसको और उससे सूर्यकी घडियोंको गुणाकर ६० का भाग दे जो लब्धि होय उसमें जो सूर्य गत होय तौ हीन करे और जो भोग होय तौ उसमें युक्त करनेसे तत्काल सूर्य आजाता है ॥

उदाहरण।

टीका—शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारके दिन प्रातःकालका सूर्य्य ७। १। १७। १५ है तो कहो कि सायन सूर्य कितना होगा॥

इष्ट घडीकी गतिका गुणाकार.

```
         १२          ५२ इष्टघटी
ग. ६० ७२०        ३१२०
  ४७ ५६४        २४४४
       ७२०        ३६८४ २४४४
इनका भाग ६० ) ७८२ ( १३। २
              ६०
              १८२
              १८०
                २
              ६० गुणक
  भाग २० ) १२०
              १२०
```

घटीपलोंका भागाकार.

```
७२०   ३६८४   ६० ) २४४४
 ६२     ४०          २५
७८२   ३७२४   ८६२
      ३६०
       १२४
       १२०
         ४
७  १  १७  १५ प्रातःकालका रवि
      १३   २  गम्यघटि
७  १  ३०  ३५
      ३२   ५  अयनांश
७  २३  ३५  १७ सायनतत्कालसूर्य
```

इष्टघटीसे लग्न लानेका क्रम।

तत्कालार्कःसायनोस्योदयघ्ना भोग्यांशाःखत्र्युद्धृता भोग्यकालः ॥
एवंयातांशैर्भवेद्यातिकालो भोग्यः शोध्योभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥
तदनुविहीनगृहोदयांश्चशेषंगगनगुणघ्नमशुद्धह्रल्लवाद्यम् ॥ सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोयनांशहीनम् ॥

टीका—पीछे सायन सूर्य जिस राशिमें होय उसका उदय लेना चाहिये और

सायन सूर्यके अंशादिकोंको ३० अंशोंमें हीन करे वे भोग्यांश जानिये और उदयको भोग्यांशसे गुणिके ३० का भाग दे तो सूर्यका भोग्यकाल निकल आवै। सूर्यका गतकाल लानेका क्रम ॥ सायन सूर्यके उदयमें उसीके अंशादिकोंको गुणिके ३० का भाग दे तौ भुक्तकाल आजायगा इष्ट घटियोंके पल करके उसमें भोग्यकाल हीन करे शेष जिस राशिमें सूर्य उदय होगा वह राशि आगे जितनी राशि उदय राशिमें कम होंगी उनको घटादे जो उदय न घटे तो अशुद्ध जानिये और शेष अंकोंको ३० से गुणाकर अशुद्ध उदयसे भाग दे तौ अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशिसे अशुद्ध राशिको पूर्व राशितक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट होजाताहै ॥ उदाहरण—पीछे जो सायनसूर्य आयाहै वह ७।२३।३५।१७ उसका उदय ३३१ सूर्यके अंश २३। ३५। १७ ये ३० अंश में हीन करै शेष बचै वह भोग्यांश ६। २४। ४३ इनको उदयसे गुणै वे अंक २१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्यकाल निकल आवै ॥ उसके हिसाबका क्रम

३० ३५ १७ सायन सूर्यके अंश घटावै
२३
६ २४ ४३ शेष भोग्य
३३१ उदय

अंश कला विकला
१९८६ १२२४ ४३
१३६ ६६२ १२९
३०) २१२२ (७० ७९४४ १२९
२१० २३७ भाग ३०) १४२३३ (२३७ कला
२२ ६०) ८१८१ (१३६ अं १२०
६० गुणक १६० २२३
३०) ३९० (४४ २१८ १८०
१२० १८० ४३३
२७० ३८१ ४२०
३६० १३
२१

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये.

इष्ट घटीमें १२ । ५२ इनके पल ७७२ इस अंकमें भोग्यकाल घटायातो शेष अंक ७० । १ । १६ धन राशिका उदय ३३६ वा मकर राशिका उदय ३१० इन दोनोंका योग ६६४ शेष अंक मा न्यून किया तो रहे ५५।३६ इन अंकोंमें कुंभ राशिका उदय २६७घटा नहीं सकते इसलिये अशुद्ध उदय जानिये॥

इष्ट घटी १२
गुणक ६० ५२
७२०
५२
७७२

भोग्यकाल ७० ४४
३३६ धनराशिका उदय ७०१ १६
३१० मकरराशिका उय ६४६ इन अंकोंमें कुंभका उदय नहीं घट
६४६ ५५ १६ सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते है

अंशादि ५५ । १६ इनको ३० से गुणे वे अंक १६ । ५८ हुए इनका अशुद्ध उदयमें भाग दे जितने भाग आवें वे अंश और शेष अंक ५६ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर इनके उदयमें भाग दिया तौ घटी १२ और शेष१५६ को ६० से गुणा तौ हुए ९३६०फिर उनके उदयमें भाग दिया तो पल ३५ मेष राशिसे अशुद्धकी पूर्व राशितक राशि १०और पहलीके अंशादिक ६। १२ । १५ तिनके और राशिके अंशोंके लिखनेसे स्पष्ट सायन लग्न १०। ३६।१२। ३५ अयनांश १२ । ५ सायनलग्नके अंश घटियोंमें घटानेसे स्पष्ट लग्न ९ । १४ ।७। ३५ मकर लग्न १४ अंशं ७ घटिका ३५फल जानिये॥

शेषांक ५५ १६ ५६ १५६
१६५० ३० गुणक ६० गुणक ६० गुणक
८ ६०) ४८० (८ २६७) ३३६०(१२ घ २६७) ९३६० (३५प.
२६७) १६५८(६अं. ४८० २६७ ८०१
१६०२ ६९० १३५०
५६ ५३४ १३३५
२५६ १५

राशि	अंश	घटी	पल	
१०	६	१२	३५	
	१२	५		अयनांश घटावे
	१४	७	३५	

इस प्रकार मकर लग्नका प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ॥

सूर्य और लग्न एक राशिके हों तौ इष्टलानेका क्रम।

यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशान्तरहतउदयःस्या-
त्खाग्निहृत्त्विष्टकालः ॥

टीका—सूर्य और लग्न एक राशिके हों तौ दोनोंका अंतर निकाले और तिसको राशिके उदयसे गुणे ३० का भाग दे जो लब्धि होय सोई इष्टकाल जाने और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकालना होय तौ सूर्यकी राशि६ उसमें मिलावे॥

लग्नके शुभाशुभ ग्रहोंका विचार।

लग्ने चन्द्रखलारिपौशशिसितौसवैद्युनेखेबुधोऽब्जोऽत्येगुः सुख-
गोष्टमाः कुजशुभाःशुक्रस्तृतीयःशुचे॥ लाभे सर्वखगाःशुभा
अखिलगात्र्यष्टारिगाः स्युःखलाश्चन्द्रस्त्र्यम्बुधने श्रियेंशभट्टके-
ट्रस्यान्मृत्यवेष्टारिगः ॥

टीका—लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्नसे षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्र और सप्तमस्थानमें कोई ग्रह होय, दशमस्थानमें बुध, द्वादशमें चन्द्र, चतुर्थ स्थानी राहु, अष्टमस्थानी मंगल व शुभग्रह, और तृतीयस्थानमें शुक्र, ऐसे लग्नके ग्रह होंय तौ अनिष्ट शोककारक अशुभस्थानी ग्रह जानिये ॥

लग्नसे एकादशस्थानमें संपूर्ण ग्रह और निंद्यस्थान वर्जितके और शेष स्थानमें शुभग्रह होय और तृतीय अष्टम तथा षष्ठमस्थानमें सूर्य और २।३ चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा होय तौ शुभ लक्ष्मीकारक जाने, लग्नका स्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ वा अष्टमस्थानमें होय तौ मृत्युदायक जानिये ॥

पञ्चभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥ स्थानादि-
फलसमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥

टीका—लग्नोंके पांचग्रह शुभस्थानी होंय तो पुष्टिकारक होतेहैं और अशुभ होय तो अनिष्टकारक होतेहैं और यवनादिमतसे चार ग्रहभी इष्टकारक जानिये॥

षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम ।

गृहंहोरा च द्रेष्काणोनवांशो द्वादशांशकः ॥
त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभा ॥

टीका—प्रथम जाननेमें लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६ ये छः वर्ग इनमें शुभग्रहोंके वर्ग शुभ होतेहैं ॥

त्रिंशांशादिकथनम् ।

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नंहोरातस्यार्द्धमुच्यते ॥ लग्नात्त्रिभागोद्रेष्काणो नवांशोनवमांशकः ॥ द्वादशांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥

टीका—लग्नके अंश ३० होतेहैं तिनका अर्द्ध १५ अंश होरा कहताहै और लग्नहीका तीसरा भाग १० ऐसे ३ तीन द्रेष्काण होतेहैं और नवम भाग नवांश और तिसका बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवाँ भाग त्रिंशांश इस रीतिसे एकलग्नके ३० अंश होतेहैं और उन्ही तीस अंशोंके छः वर्ग होतेहैं ॥

आदौ गृहज्ञानम् ।

यस्य ग्रहस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टीका—जिस ग्रहकी जो राशि होय सो गृह उसीका कहा जाताहै ॥

ग्रह	भौ	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	धन	मक.	कुंभ	मीन

होराकथनं—सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्नेहोराचन्द्रार्कयोःसमे ॥

टीका—विषमलग्नमें १५ अंशतक सूर्यका होरा तदनंतर चन्द्रमाका होरा जानिये सम लग्नमें १५ अंशके अन्त लग्न होय सो चंद्रमाका होरा तिसपिछे सूर्यका जानिये होरा चंद्रमाका शुभ और सूर्यका अशुभ ॥

लग्न	मे ०	वृ १	मि २	क ३	सिं ४	क ५	तु ६	वृ ७	ध ८	म ९	कुं १०	मी ११
अंश १५	सू	चं	सू	च	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
अंश ३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

द्रेष्काणकथनम् ।

द्रेष्काणआद्योलग्नस्य द्वितीयःपञ्चमस्यच ॥

द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥

टीका–प्रथम द्रेष्काण कहिये लग्नके ३० अंश तिनमेंसे १० अंशका एक द्रेष्काण ऐसे २० अंश ३० अंश तीन द्रेष्काण होतेहैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका स्वमी होताहै द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी होताहै और तृतीयद्रेष्काणका नवम स्थानका स्वामी होताहै शनि मंगल सूर्यका द्रेष्काण अशुभ जानिये ॥

क्रम	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	क०	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अं १०	म०	शु०	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
२ अं १०	र०	बु०	शु०	म०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	शु०	बु०	चं०
३ अं १०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	श०	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०

सप्तांश ।

	मेष ०	वृषभ १	मि० २	कर्क ३	सिंह ४	क० ५	तुला ६	वृ० ७	धन ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
४ १७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८ ३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२ ५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७ ८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२१ २५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५ ४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्नका नवांश ।

मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशामेषतःस्मृताः ॥ वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥ कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतःस्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुम्भेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥

टीका–मेष सिंह धन इन लग्नोंका नवांशका क्रम मेषसे जानिये और वृष कन्या मकर इनका मकरसे क्रम और मिथुन तुल कुंभका तुलसे क्रम कर्क वृश्चिक मीन इन लग्नोंका नवांश कर्कराशि जानना चाहिये नवांश सूर्य मंगल शनिका अशुभ होताहै ॥

		मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं
६	४०	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र
१०	०	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु
१३	२०	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु
१६	४०	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं
२०	०	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु
२३	२०	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श
२६	४०	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श
३०	०	गु	बु	बु	गु	बु	बु	गु	गु	गु	बु	बु	गु

द्वादशांशकथन॥ ॥लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेवकीर्त्तिताः॥

टीका—लग्नके अंश ३० तिनके भाग १२ द्वादश कहातेहैं तिनका क्रम चलते लग्नसे जो पर्यंत लग्नके अंशहों ताके स्थानसे जो द्वादशांश पति जानियें तिनमें मंगल शनि रवि इनके अंश अशुभ होतेहैं॥

	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
२ ३०	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
५ ०	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं
७ ३०	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१० ०	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२ ३०	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं
१५ ०	बु	श	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र
१७ ३०	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु
२० ०	मं	गु	श	श	मं	शु	बु	चं	र	बु	बु	शु
२२ ३०	गु	श	शु	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं
२५ ०	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु
२७ ३०	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
३० ०	गु	मं	शु	शु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श

विषमत्रिंशांश॥ ॥कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात्॥
पंचपंचाष्टशैलेषु भागानां विषमेगृहे॥

टीका–विषमलग्नमें पंचमांश लग्न पर्यंत होय तौ भौमके आगे५अंश शनिके गुरु ८ अंश तिसके आगे ७ अंश बुधके ओर ५ अंश शुक्रके इस क्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानो इनमें मंगल शनि अशुभ जानिये ॥

अं.	मे	मि	सिं	तु	ध	कुं
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं
५	श	श	श	श	श	श
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांश ॥ ॥ शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयःसमे ॥
पञ्चाङ्गेष्वेषु पञ्चानां भागानां कथिता बुधैः ॥

टीका–सम लग्नमें प्रथम ५ अंश पर्यंत शुक्र तिसके आगे ७ अंश बुध तिसके आगे ८ अंश गुरु तिसके आगे ५ अंश शनि तिसके आगे ५ अंश मंगल ये सम लग्नमें त्रिंशांशपति जानिये तिसमें मंगल शनि अशुभ हैं ॥

अ	वृ	क	क	वृ	म	मी
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
५	श	श	श	श	श	श
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं

षड्वर्ग जाननेका क्रम ।

कार्तिक शुक्ल ९ मंगलवार लग्न मकर अंश १४ घटिका ११पल ५। स्वामी शनि सो गृहेश ॥ ये षड्वर्ग तिनमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये ॥

गृहेश	होरा	द्रेष्का.	नवमां	द्वादशां	त्रिंशां
शनि	चन्द्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु

उच्चांश।

मेषेषष्ठघटौवृषेत्रिदृगिनाद्वन्द्वेद्रिगोकाग्नयः कीटेऽध्य ङ्गनवाद्रयोर्कभवनेङ्गाश्वाः स्त्रियांत्र्यर्कषट् ॥ जूकेको- द्रिखगा अलौगवगषट् चापेत्रिषट्गोद्रयोनक्रेशाद्यरु- णाघटेझषवृषौमीनेद्रिगोषट्शुभाः ॥

रा. उ.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	३	७	४	६	६	१२	९	[illegible]	३	१२	७
	७	३	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९
		१८	१२	९		६	९	६	९			६
			३	७					७			

षड्वर्गं पञ्चवर्गंवा चतुर्वर्गमथापिवा ॥
केश्चित्त्रिवर्गसत्प्रोक्तंद्वयेकवर्गं तनुंत्यजेत् ॥

टीका—६ अथवा ५ किंवा ४ वर्ग लग्नके होंय तौ लग्न बलिष्ठ होय और किसी २ के मतसे ३ वर्ग शुभ होतेहैं और दो एक होंय तो लग्न वर्जनीय है ॥

लग्नांशफल।

लग्नेचतुर्दशोभागो वृषस्यमकरस्यच ॥
कन्याकर्कटमीनानामष्टमे द्वादशोलिनः ॥

टीका—वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीनके ८ अंश और वृश्चिकके १२ अंश ये शुभ फल देतेहैं ॥

कुम्भस्यांशेचषड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके ॥

टीका—कुंभके २६ अंश तुलाके २४ मिथुनके ७ और धनुके १० अंश शुभ हैं इस प्रकारसे जानिये ॥

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशेहरेः ॥
संपूर्णफलदंचादौ मध्येमध्यफलप्रदम् ॥

टीका—मेषके २१ अंश सिंहके १८ ऐसे लग्नों आदिमें संपूर्ण और मध्यम फल अंश अनुसार जानिये ॥

लग्नवर्गोत्तमलक्षण ॥ अन्तेतुच्छफलंलग्नंयदिवर्गो-
त्तमंनचेत् ॥ लग्नस्यस्वनवांशोयः सवर्गोत्तमउच्यते ॥

टीका—लग्नके अंतभागमें वर्गोत्तम न होय तो लग्न अनिष्ट फल देताहै और लग्न अपने नवांशमें होय तो वर्गोत्तम कहिये ॥

गोधूललग्नका कथन।

गोधूलंपदजादिके शुभकरंपश्चाङ्गशुद्धौरवेरर्धास्तात्परपूर्वतो-
र्धघटिकंतत्रेन्दुमष्टारिगम् ॥ सोग्राङ्गंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपात-
मर्कक्रमंजह्याद्विप्रसुखेतिसंकटइदंसद्यौवनाद्येक्वचित् ॥

टीका—शूद्रादिकोंको पंचांग शुद्ध देखि करिके सूर्यके अर्द्धास्त समय प्रथम और पश्चात् १५ पल गोधूलिकाल शुभ और गोधूललग्नसे षष्ठ और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पापग्रह भौम अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जिके शुभ और किसीके मतमें विप्रादिकके अति संकटमें वर और कन्या होय तो गोरज शुभ होय ॥

वधूप्रवेश ॥ विवाहमारभ्यवधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरान्तात्॥
तदूर्ध्वमध्येयुजिपञ्चमान्तादतः परस्तान्नियमोनचास्ति ॥

टीका—विवाहसे सम १६ दिवस पर्यंत वधूप्रवेश कहाहै आगे पांच वर्ष पर्यंत विषममासादिक कहेहैं आगे स्वेच्छा ॥

उक्तमासादि ॥ माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदि-
ने ॥ गुर्वाद्यस्तविशुद्धौस्यात् नित्यंपत्नीद्विरागमः ॥

टीका—माघ फाल्गुन और वैशाख शुक्लपक्षमें शुभदिवसमें गुरु आदि अस्त वर्जिके द्विरागमन उक्त है ॥

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनीशाक्रेभास्करवायु-
विष्णुवरुणत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ ॥ कुम्भाजालिगतेरवौशुभकरे
प्राप्तोदयेभार्गवेजीवज्ञास्फुजितांदिने नववधूवेश्मप्रवेशःशुभः ॥

टीका—मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा ये नक्षत्र और कुंभ मेष वृश्चिक इनराशियोंके सूर्य शुक्रादिका उदय और गुरु बुध चंद्र ये वार ऐसे शुभदिवसमें प्रवेश करावै॥

नूतनपल्लवधारणका मुहूर्त।

हस्तादिपञ्चमृगपूषभदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारे॥
स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमये खलुपीतवस्त्रैः॥

टीका—हस्तसे पांच और मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा ये नक्षत्र और बुध गुरु शुक्र ये वार और वे ग्रह होंय जो विवाह कालमें कथित हैं ऐसे दिवसमें नूतन पीतवस्त्र करिके स्त्रियोंको प्रथम पल्लव धारण करावै॥

गन्धर्वविवाहमुहूर्त।

शूद्रान्त्येषुपुनर्भवापरिणयः प्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नालोक्यं तिथिमास-वेधभृगुजेज्यास्तादितत्रार्कभात्॥ त्रित्र्यर्क्षेषुमृतिर्धनंमृतिमृती पु-त्रोमृतिर्दुर्भगं श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशकृततत्वर्क्षेत्यय: साभिजित्॥

टीका—शूद्र आदि और रजक आदि और अन्यजाति जिनकी स्त्रियोंका पुनर्विवाह होजाताहै उनके धरेजेका मुहूर्त विवाह नक्षत्र अवश्य देखै मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्तका कुछ दोष नहीं और सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यंत नक्षत्र गिनें क्रमसे प्रथम ३ मरण द्वितीय ३ धन तृतीय ३ मरण चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ पुत्रलाभ षष्ठ ३ मरण सप्तम ३ दुर्भगा अष्टम ३ ल-क्ष्मी नवम ३ औन्नत्य और सूर्यनक्षत्रसें चौथे ग्यारहें पचीसवें इन चार स्था-नोंके नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र सब अशुभ होतेहैं।

दूसरे मत अनुसार।

इन्द्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयंवारुणंतथा॥
अश्विनीवसुदेवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम्॥

टीका—ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी धनि-ष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करनेमें शुभ जानिये॥

दत्तक पुत्र लेनेका मुहूर्त्त।

हस्तादिपञ्चकभिषक्वसुपुष्यभेषुसूर्यर्क्षमाजगुरुभार्गववासरेषु॥
रिक्ताविवर्जिततिथौ अलिकुम्भलग्नेसिंह वृषेभवतिदत्तपरिग्रहोयम्॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और

रविवार मंगलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्त हैं और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी वृश्चिक कुंभ ये लग्न वर्जित और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं ॥

वास्तुप्रकरण ।

ग्रामादिअनुकूल.

ग्रामादेरनुकूलत्वंदिशोभूतग्रहस्यच ॥
मासधिष्ण्यादिशुद्धिंच वीक्ष्यायव्ययभांशकान् ॥

टीका—ग्रामदिशा और भूतग्रह इनके अनुकूल देखिके मास व नक्षत्र शुद्धि और आय व्यय व लग्न अंश शुद्धि शुभ देखिलीजिये ॥

ग्रहबल ।

गुरुशुक्रार्कचन्द्रेषु स्वोच्चालिबलशालिषु ॥
गुर्वर्केन्दुबलंलब्ध्वा गृहारम्भः प्रशस्यते ॥

टीका—गुरु शुक्र सूर्य चंद्र इनको अपने उच्चादिक स्थानोंमें बलयुक्त देखिके और सूर्य चंद्र गुरु इनका बल पाके गृहका आरंभ करना शुभ है ॥

॥ वर्ज्य ॥ विवाहोक्तान्महादोषानृतेजामित्रशु-
द्धितः ॥ रिक्ताकुजार्कवारौच चरलग्नंचरांशकम् ॥

टीका—जामित्र शुद्धि बचाके विवाहके जो दोष कहेहैं वे सब वर्जित हैंऔर रिक्ता तिथि भौमवार रविवार वा चरलग्न और लग्नांके अंश वर्जित हैं ॥

त्यक्त्वाकुजार्कयोश्चांशंपृष्ठेचाग्रेस्थितंविधुम् ॥
बुधेज्यराशिगं चार्ककुर्याद्गेहंशुभाप्तये ॥

टीका—रवि भौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्र वर्जित हैं ॥ मिथुन कन्या धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभ है ॥

द्वारशुद्धिः ।

द्वारशुद्धिंनिरीक्ष्यादौभशुद्धिंवृषचक्रतः ॥
निष्पञ्चकेस्थिरेलग्नेद्व्यङ्गेवाऽऽलयमारभेत् ॥

टीका—प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्रशुद्धि देखि करि पंचकरहित स्थिर वा द्विस्वभाव लग्नमें प्रारंभ कीजिये ॥

ग्रामअनुकूल।

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशराङ्केशदिङ्मितः ॥
सग्रामः शुभदःप्रोक्तस्त्वशुभःस्यात्ततोन्यथा॥

टीका—अपनी राशिसे २।५।९।११।१० जिस ग्रामकी राशि होय वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये ॥

एकभसप्तमंव्योमगृहहानिस्त्रिषष्ठगे ॥
तुर्याष्टद्वादशेरोगाः शेषस्थानेभवेत्सुखम्॥

टीका—एक राशि अथवा सप्तम होय तो शून्य तीसरी अथवा सप्तम होय तौ गृहकी हानि, चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी होय तो रोगकारक जानिये और शेष स्थान शुभ ॥

जातक जाननेका क्रम।

अकचटतपयशवर्गाअष्टौक्रमतःस्मृताः ॥ एकोनखेषुवर्णानां स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ अवर्गेषोडशज्ञेयाःस्वराःकादिषुपञ्चसु ॥ पञ्चपञ्चैववर्णाःस्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ॥

टीका—अवर्गादि सवर्गपर्यंत ४९ अक्षर हैं तिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गके पवर्ग पर्यंत ५ तिनके अक्षर २५ और यश इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार ४ होतेहैं यह स्वरशास्त्रके ज्ञाता कहतेहैं ॥

वर्गोंके स्वामी।

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजसूकराः ॥
वर्गेशाःक्रमतोज्ञेयाःस्ववर्गात्पञ्चमोरिपुः ॥

टीका—अवर्गका स्वामी गरुड १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका श्वान ४ तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्गका शूकर ८ इस क्रमसे वर्गके स्वामी जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपने नामका होय उससे पांचवे वर्गका स्वामी उसका रिपु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥

काकिणी ॥ ॥ स्ववर्गंद्विगुणंकृत्वापरवर्गेणयोजयेत् ॥

अष्टभिश्चहरेद्भागंयोधिकःसऋणीभवेत् ॥

टीका–अपने नामके वर्गको द्विगुणा करै उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलावै और आठका भाग दे पुनि ग्रामादिकका वर्ग द्विगुण करके अपने नामका वर्ग मिलावै पूर्ववत् आठका भाग दे इन दोनोंमेंसे जिसके शेष अधिक बचैं सो उसका अर्थात् न्यूनवालेका ऋणी जानिये ॥

चंद्रमाके मुख जाननेका वि० ।

वाह्नान्मैत्रान्नगर्क्षस्थेचन्द्रेयाम्योत्तराननम् ॥
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत्प्राक्परास्याद्गृहंशुभम् ॥

टीका–कृत्तिकासे ७ ॥ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख दक्षिणको और अनुराधासे ७ नक्षत्रोंका चंद्र होय तो गृहोंका मुख उत्तरको और मघासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पूर्वको और धनिष्ठासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पश्चिमको शुभ जानिये ॥

आयादिसाधन ॥ गृहेशकरमानेनगृहस्यायादिसाधयेत् ॥ करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥

टीका–गृहस्वामीके हस्तमानसे अथवा अंगुलीमानकरके इष्ट आयादि साधन करै

क्षेत्रफल ।

विस्तारगुणितंदैर्घ्यंगृहक्षेत्रफलंलभेत् ॥
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तंशेषमायोध्वजादिकः ॥

टीका–ध्वज आदि साधनका प्रकार ॥ चौडाई लंबाई अथवा लंबाई चौडाईको आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफल जानिये ॥ और उसीमें आठका भाग देनेसे जो शेष बचै सो ध्वजआदि आय जानिये ॥

आयोंके नाम ॥ ॥ ध्वजोधूमोथसिंहःश्वासौरभेयः खरोगजः ॥ ध्वांक्षश्चैवक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥

टीका–ध्वजा १ धूम २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ या क्रम करिके आयाष्टक जानिये ॥

वर्णअनुसारउक्तआय ॥ ॥ ब्राह्मणस्यध्वजोज्ञेयःसिंहोवैक्षत्रियस्यच ॥ वृषभश्चैववैश्यस्यसर्वेषांतु गजःस्मृतः ॥

टीका–ब्राह्मणको ध्वजा आय, क्षत्रीका सिंह, वैश्यका वृषभ, और सर्व वर्णोंके गज आय उक्त हैं ॥

मतांतरसे आयोंका फल।

ध्वजकृतार्थों मरणंचधूमे सिंहेजयश्श्वाथशुनिप्रकोपः ॥ वृषेच राज्यंच खरेचदुःखंध्वाङ्क्षेमृतिश्चैवगजेसुखंस्यात् ॥

टीका–ध्वज आयका फल कृतार्थ, धूमायका मरण, सिंहायका जय, श्वान आयका कोप, वृषआयका राज्य, खरआयका दुःख, ध्वांक्ष आयका मृत्यु, और गजआयका फल सुखप्राप्ति होती है ॥

॥ नक्षत्रअनुसार व्ययसाधन॥ ॥ पूर्वद्वारेवृषःश्रेयान्गजःप्राग्यमदिङ्मुखः ॥ क्षेत्रमष्टाहतंधिष्ण्यैर्विभक्तंस्याद्गृहस्यभम् ॥ भेष्टभक्तेव्ययःशेषमायादल्पोव्ययःशुभः ॥

टीका–पूर्वाभिमुख गृहोंका वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होताहै और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहोंका गजाय कहाहै पूर्वमेंके क्षेत्रफलको आठसे गुणाकरै और २७ का भाग दे शेष बचैं सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ८ का भाग दे शेष रहै सो उस गृहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ ॥

गृहोंकी राशि।

अश्विन्यादित्रयेमेषो मघादित्रितयेहरिः ॥
मूलादित्रितयेधन्वी भद्वयंशेषराशिषु ॥

टीका–गृहोंके अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनर्वसुकी मिथुन ३ पुष्य आश्लेषाकी कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाती विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी वृश्चिक ८ मूल पूर्वाषाढाकी धन ९ श्रवण धनिष्ठाकी मकर १० शतभिषा पूर्वाभाद्रपदाकी कुंभ ११ उत्तराभाद्रपदा रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये ॥

गृहोंके नाम लानेका प्रकार।

गृहस्यपूर्वतोदिक्षुक्रमात्कक्ष्याग्धिदन्तिनः ॥
संस्थाप्यालिन्दजानङ्कास्तन्मित्याषोडशगृहाः ॥

टीका–गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करै वे ऐसे पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाके अंकमें सालकी संख्या अधिक एक करके मिलावै जो अंक होय सोई नाम गृहका जानिये ॥

॥ गृहोंके नाम ॥ ॥ ध्रुवं धान्यंजयंनंदंस्वरं कांतंमनोरमम् ॥
सुमुखंदुर्मुखंक्रूरं रिपुदं धनदंक्षयम् ॥ आक्रंदंविपुलंज्ञेयं विजयंचेतिषोडश ॥ गृहंध्रुवादिकंज्ञेयंनामतुल्यफलप्रदम् ॥

टीका–और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादिक सोलह नाम हैं इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये ॥

॥ अंश लानेका प्रकार ॥ ॥ व्ययेन संयुतेक्षेत्रेगृहनामाक्षरान्विते ॥ त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषांद्वितीयांशोनशोभनः ॥

टीका–पीछेका जो व्यय होय उसे क्षेत्रफलमें मिलावै और गृहोंको नामके अक्षर संयुक्त करिके तीनका भाग दे शेष दो बचैं तो अशुभ और एक अथवा पूर्ण भाग लगजानेसे शुभ फल होताहै ॥

॥ गृहोंके भाग ॥ ॥ नवभागंगृहंकुर्यात्पञ्चभागंतुदक्षिणे ॥
त्रिभागंवामतःकुर्याच्छेषंद्वारंप्रकल्पयेत् ॥

टीका–गृह क्षेत्रके नव भाग कर तिसमेंसे पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करै ॥

॥ गृहोंके द्वार ॥ ॥ द्वारस्योपरियद्द्वारंद्वारस्यान्यच्चसंमुखम् ॥
व्ययदं तु यदातच्च न कर्त्तव्यं शुभेप्सुभिः ॥

टीका–द्वारके ऊपर द्वार और सामने सामनेके द्वार व्ययदायक होतेहैं शुभाभिलाषी पुरुषोंको ऐसे वर्जने चाहिये ॥

गृहोंके स्थानोंकी योजनाका प्रकार।

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यां पचनालयम् ॥ याम्यायांशय-

नागारं नैर्ऋत्यांशस्त्रमन्दिरम् ॥ प्रतीच्यांभोजनागारं वायव्यांपशु-
मन्दिरम् ॥ भाण्डकोशंचोत्तरस्यामीशान्यांदेवमन्दिरम् ॥

टीका–पूर्वमें स्नानका घर १ अग्निकोणमें रसोईका स्थान २ दक्षिणमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शस्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५ वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भंडारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस प्रकारसे स्थानोंकी योजना करावै ॥

॥ अल्पदोष ॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषायनभवेद्गृहम् ॥
आयव्ययौप्रयत्नेनविरुद्धं भं च वर्जयेत् ॥

टीका–जिस गृहमें दोष तो अल्प होय परंतु वह बहुत गुणों करके श्रेष्ठ होय तौ दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तौ यत्न करिके वर्जित करै ॥

॥ गृहारंभचक्र ॥ ॥ आरम्भे वृषभं चक्रं स्तम्भे ज्ञेयं तुकूर्मकम् ॥
प्रवेशेकालशंचक्रंवास्तुचक्रंबुधैः शुभम् ॥

टीका–गृहारंभमें वृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें कलश यह वास्तुचक्रमें देखिलीजिये ॥

॥ गृहारंभके मास ॥ सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्तिकाः॥
मासाः स्युर्गृहनिर्माणेपुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥

टीका–पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ जानिये पुत्रलाभ आरोग्यता और आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय ॥

गृहारंभके मासोंका फल।

शोकोधान्यं पञ्चतानिःपशुत्वं स्वाप्तिर्नैःस्व्यं सङ्गरंभृत्यनाशम् ॥
सच्छ्रीप्राप्तिंवह्निभीतिंचलक्ष्मींकुर्युश्चैत्राद्यागृहारम्भकाले ॥

टीका–चैत्रमासमें शोकप्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्ठमें मृत्यु ३ और आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ और

आश्विनमें कलह ७ और कार्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशीर्षमें धनप्राप्ति ९ पौषमें लक्ष्मी १० माघमें अग्निभय ११ फाल्गुनमें लक्ष्मी १२ इस प्रकार शुभाशुभ फल जानिये ॥

अथ मासप्रवेशसारणीयम् ॥

श्रीः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स०
मे. १	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५६	घटी
	३४	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१८	२६	३५	४२	५३	२	पल
वृ. २	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२६	२४	घटी
	११	१९	२४	२९	२४	२८	४१	४५	५८	५१	५१	५४	५३	५३	५१	४८	४५	४२	३७	२९	२४	१७	९	०	५०	३९	२७	१३	५९	४३	पल
मि. ३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	२५	२६	२८	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	घटी
	३८	५	४५	२६	६	४५	२३	५९	३२	५	३५	५	३३	२	२८	५३	१७	३९	०	१०	१७	५२	६	१८	३०	४१	५२	२	८	१३	पल
क. ४	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३६	३६	३६	३९	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९	घटी
	१७	१८	२०	२१	१७	१२	८	३	५७	४८	३७	२५	११	५६	४०	२३	४	४४	२१	५८	३५	११	४४	१६	४८	१६	४३	९	३५	०	पल
सिं. ५	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	३	३	३	३	३	३	३	३	वार
	२८	२७	२७	२८	२५	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	घटी
	२३	४६	६	२७	४६	३	१७	३०	४४	५७	९	२०	३०	३९	४७	५४	०	३	८	१२	१४	१५	१६	१६	१५	१३	१२	१०	८	४	पल
क. ६	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	१०	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५१	५०	४९	४८	४७	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३७	३६	३५	३३	३२	३१	३०	२९	२७	घटी
	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५०	३८	२७	१६	६	५५	५४	३३	२२	१०	५९	४७	३५	२२	९	५६	४३	३०	१६	४	५३	पल
तु ७	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	वार
	२६	२५	२४	२३	२१	२०	१९	१५	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५६	५५	५४	५३	घटी
	४२	२९	१६	३	५१	४०	२९	१७	४	५३	४३	३०	२२	१२	२	५२	४२	३२	२८	२५	२२	१७	१२	८	४	०	५७	५४	५२	५०	पल
वृ. ८	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	५२	५२	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३३	३२	३१	३१	३०	२९	२९	घटी
	४९	५०	५१	५३	५६	०	२	४	१०	१६	२३	३१	४०	५१	२	१३	२४	३५	४९	३	१७	३१	४८	७	२७	४८	९	३१	५४	१८	पल
ध. ९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९	घटी
	४३	९	३६	५	३५	५	३६	८	३९	१३	५०	२८	६	४४	२३	३	४५	२९	१४	५९	४४	३१	२१	१५	१७	२१	५२	४४	४०	३८	पल
म. १०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२६	घटी
	३३	३२	३२	३२	३४	३७	४२	४८	५४	१	१०	२०	३१	४४	५७	११	२६	४१	५८	१८	३८	५८	१९	४०	१	२३	५२	२२	५२	२२	पल
कुं. ११	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	वार
	२६	२७	२७	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	घटी
	५०	२१	५३	२७	१	३६	११	४७	२४	४	४८	२७	९	५१	३८	२०	३	४७	३२	२०	११	२	५४	४६	३८	३०	२१	१३	७	३	पल
मी. १२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	वार
	४९	५०	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०	घटी
	२	०	५८	५६	५५	५५	५७	५९	०	२	५	८	१२	१६	२१	२७	३४	४०	४८	५६	४	१२	१९	२७	३६	४६	५८	११	२०	२९	पल

Madan Gopal Sharma

दिशानुसार गृहोंका मुख करना।

कर्कनक्रहरिकुम्भगतेर्केपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि ॥
तौलिमेषवृषवृश्चिकयातेदक्षिणोत्तरमुखानिवदन्ति ॥

टीका—कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य होय तौ घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करै तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य होय तो गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करै इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहाहै ॥

गृहारंभके नक्षत्र।

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ॥ धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारम्भःप्रशस्यते ॥ आदित्यभौमवर्ज्यंतुसर्वेवाराःशुभावहाः॥ चन्द्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्नेशुभनिरीक्षिते॥ स्तम्भोच्छ्रायस्तुकर्त्तव्योह्यन्यत्तुपरिवर्जयेत् ॥ प्रासादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि॥

टीका—तीनों उत्तरा मृग रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा रेवति ये नक्षत्र शुभ रविं भौमवार वर्जिके शेषवार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि देखे और स्तंभारोपण करावै अन्य कर्मोंको उक्त नहीं. देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्योंको शुभ जानिये ॥

वृषचक्र।

त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रिमेष्वर्कतःशशी ॥ कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासंस्थैर्यंलक्ष्मीं दरिद्रताम् ॥ धनं हानिं क्रमान्मृत्युमारम्भे वृषचक्रकं॥

टीका—सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र तक जितने नक्षत्र होंय तिनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मिदायक दूसरा भाग ४ उद्वास तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थ भाग ३ लक्ष्मी पंचम भाग ४ दरिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभफलदायक हो उसीमें गृहारंभ करावै ॥

॥ शिलान्यास ॥ ॥ दक्षिणपूर्वेकोणेकृत्वा पूजांशिलां न्यसेत् प्रथमाम् ॥ शेषाःप्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंप्रतिष्ठाप्याः ॥

टीका—पूजन करिके आग्नेय कोणमें प्रथम शिला स्थापनकरे शेष शिला प्रदक्षिण स्थापित करावै इसी प्रकार स्तंभस्थापनभी करे ॥

॥ शिलान्यासनक्षत्र ॥ ॥ शिलान्यासःप्रकर्त्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे ॥ पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥

टीका--श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा इनमें शिलान्यास कर्त्तव्य है ॥

शेषोंके मुख ।

कन्यासिंहेतुलायांभुजगपतिमुखं शम्भुकोणेग्निखातं वायव्ये स्यात्तदास्यंत्वलिधनमकरे ईशखातंवदन्ति ॥ कुम्भे मीने च मेषनिर्ऋतिदिशि मुखंखातवायव्यकोणेचाग्न्ये कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥

टीका—कन्या तुला सिंह इन लग्नोंमें शेषके मुख ईशान्यकोणको जानो तो अग्निकोणमें खात करावे ॥ वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमें शेषके मुख वायव्यको तिनमें ईशानको खात करावे ॥ कुंभ मीन मेष इन लग्नोंमें शेषके मुख नैर्ऋत्यको तामें वायव्यकोणमें खात करावे ॥ वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके मुख आग्नेयको तामें नैर्ऋत्यको खात करावे ॥

॥ दुष्टयोग ॥ ॥ वज्रव्याघातशूलश्चव्यतीपातश्चगण्डकः ॥ विष्कम्भपरिघौवर्ज्यौवारौमङ्गलभास्करौ ॥

टीका—वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जित हैं ॥

कूर्मचक्र ।

तिथिस्तु पञ्चगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ॥ तथाद्वादशमिश्राचनवभागेनभाजिता ॥ फल ॥ जले वेदामुनिश्चन्द्रः स्थलेपञ्चद्वयंवसुः ॥ त्रिषट्कनवचाकाशं त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥ जलेलाभस्तथाप्रोक्तःस्थले हानिस्तथैवच ॥ आकाशेमरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥

टीका—गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणाकरे और कृत्तिका नक्षत्रसे लेकर दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्याको उस गुणन फलमें मिलावै फिर १२ और उसीमें मिलावै नवका भाग दे जो ४।७।१ शेष रहैं तो कूर्म जलस्थानमें जानिये ताको फल लाभ और ५।२।८ बचैं तो कूर्म स्थलमें जानिये तिसका फल हानि और ३।६।९ शेष बचैं तो कूर्म आकाशमें जानिये तिसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहाहैं ॥

॥ स्तंभचक्र ॥ सूर्याधिष्ठितभद्वयंप्रथमतो मध्येतथाविंशतिःस्तम्भाग्रे रससंख्ययामुनिवरैरुक्तंमुहूर्त्तंशुभम् ॥ फल ॥ स्तम्भाग्रेमरणंभवेद्गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोतिकर्त्तासदा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम दो २ नक्षत्र स्तंभमूल तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तंभके मध्यमें तिसका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति और तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभके अग्रभामें मृत्यु जानिये ऐसे शुभ फल देखके स्तंभारोपण करावै ॥

देहलीका मुहूर्त्त ॥ मूले मोभेत्रिऋक्षंगृहपतिमरणं पश्चगर्भे सुखंस्यात् मध्येदेयाष्टऋक्षंधनसुखसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः ॥ पश्चाद्देयंत्रिऋक्षंगृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यर्क्षाच्चन्द्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रंविलोक्य ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्र संख्या और फल ऐसे क्रमसें जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें तिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे ८ नक्षत्र मध्यमें फल धनसुत सुख चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छ भाग फल मित्रहानि पंचम ३ नक्षत्र अग्र भागमें सुख भोग पुत्रलाभ ऐसे शुभफल हैं ॥

॥ द्वारचक्र ॥ अर्काच्चत्वारिऋक्षाणिऊर्ध्वेचैवप्रदापयेत् ॥ द्वौ द्वौकोणेषु दद्याद्वैशाखायां च चतुश्चतुः ॥ अधश्चत्वारिदेयानिमध्येत्रीणि प्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेतुलभते राज्यमुद्वासं कोणकेषुच ॥ शाखायांलभतेलक्ष्मींमध्येराज्यप्रदंतथा ॥

अधःस्थेमरणं प्रोक्तंद्वाचक्रंप्रकीर्तितम् ॥

टीका-सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम, तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण चार तिनमें प्रतिकोणमें २ नक्षत्र तिनका फल उद्वसन, बाजू दो तिनमें नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी, और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य, मध्यमें नक्षत्र ३ तिनका फल मरण यह जानिये ॥

शांतिका अग्निचक्र।

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषे गुणेभ्रेभुविवह्निवासः ॥
सौख्यायहोमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौदिविभूतलेच॥

टीका-जिस तिथिको शांति करनी होय तिसमें एक मिलावे और जो वार होय सो अंक मिलावे ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल तीन अथवा शून्य बचैं तो अग्नि मृत्युलोकमें जानियें तिनका फल सुख प्राप्ति और उसमें शांति करनीभी शुभ है और एक शेष रहे तो स्वर्गमें अग्नि० प्राणनाश और दो बचैं तो पातालमें तिसका फल धननाश होय ॥

ग्रहके मुखमें आहुतिका विचार।

तरणिविद्भृगुभास्करिचन्द्रमःकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ॥
रविभतोदिनभंगणयेत्क्रमात्प्रतिखगंत्रितयंत्रितयंन्यसेत् ॥

टीका-सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका इस क्रमसे फल जानिये ये प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य फल अशुभ, द्वितीय भाग ३ न. बुध शु. तृतीय भाग ३ न. शनि फल अशुभ राहुके फिर ३ न. चंद्रके फिर ३ न. भौमके फिर ३ न. गुरुके तिस पीछे ३ न. राहुके फिर ३ न. केतुके इसमें शुभ ग्रहके शुभ पाप ग्रहके अशुभ जानिये ॥

गृहप्रवेशका मुहूर्त्त।

अथप्रवेशेनवमन्दिरस्ययात्रानिवृत्तावथभूपतीनाम् ॥ सौ-
म्यायने पूर्वदिनेविधेयं वास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक् ॥

टीका-यात्रा और राजदर्शनके मुहूर्तमें उत्तरायण सूर्य होय, और प्रवेशके प्रथम दिवसमें वास्तुपूजा और भूतबलि करके गृहप्रवेश योग्य है ॥

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातीधनिष्ठाश्रवणंचमूलम् ॥

वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः ॥

टीका—चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागिके गृह प्रवेश कीजिये ॥

॥ कलशचक्र ॥ प्रवेशः कलशेर्कर्क्षात्पञ्चनागाष्टषट्क्र-
मात् ॥ अशुभंचशुभं ज्ञेयमशुभंचशुभंतथा ॥

टीका—सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र तक जो नक्षत्र होय उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसें कलश चक्र जानिये ॥

॥ वामार्कलक्षण ॥ रन्ध्रात्पुत्राद्धनादायात्पञ्चस्वर्केस्थि-
तेक्रमात् ॥ पूर्वाशादिमुखं गेहंविशेद्वामोभवेदतः ॥

टीका—घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वामार्क होय तिसका जाननेका क्रम प्रवेश लग्नोंमें अष्टमस्थानमें पंचमस्थानीं सूर्य होय और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको होय तिसका स्थान ०या० पंचमस्थान पर्यंत और घरका मुख पश्चिमको होय २ स्थान०या०पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा गृहोंका मुख उत्तरको होय तौ सूर्य ११ स्थान ५ स्थानों तक आवे प्रवेशमें वामार्क युक्त है ॥

॥ शुभाशुभग्रह और लग्न ॥ त्रिकोणकेन्द्रगैःशुभैस्त्रिषष्ठला-
भसंस्थितैः ॥ असद्ग्रहैः स्थिरोदयेगृहंविशेद्बलेविधौ ॥

टीका—त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह होय ऐसी स्थिर लग्न देखिके और तीसरें छेठ तथा लाभस्थानमें पापग्रह होय तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभ जानिये ॥

॥ गृहारम्भकी लग्नशुद्धि ॥ त्रिषडायगतैः पापैरष्टान्त्येन्तरगैः
शुभैः ॥ चन्द्रेलग्नेऽरिरन्ध्रान्त्यवर्जितेस्याच्छुभंगृहम् ॥

टीका—३।६।११ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८।१२ स्थानमें इतरस्थानोंमें शुभग्रह होय तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठ द्वादश अष्टमस्थानमें न होय ॥

॥ अशुभयोगोंके लग्न ॥ धनकेन्द्रत्रिकोणस्थःक्षीणश्चन्द्रोन

शोभनः ॥ शत्रोर्नवांशगःखेटःखास्तसंस्थोपिनोशुभः ॥

टीका—लग्नविषे २ । १ । ४ । ७ । १० ।५। ९ स्थानोंमें क्षीणचंद्र स्थित होय तौ अशुभ है और स्वराशिका शत्रु नवांशकमें होय तोभी अशुभ. क्षीणचंद्र कृष्णपक्षकी पंमचीसे जानों ॥

॥ आयुष्यप्रमाण ॥ लग्नेजीवःसुखेशुक्रोबुधःकर्मण्यरौ रविः ॥ रविजः सहजेनूनंशतायुःस्यात्तदागृहम् ॥

टीका—लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ४ बुध १० सूर्य ३ शनि ऐसी लग्नमें गृहारंभ करनेसे उस गृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जाननी ॥

॥ दूसरा प्रकार ॥ भृगुर्लग्नेबुधोव्योम्निलाभेऽर्कःकेन्द्रगो गुरुः ॥ यस्यारम्भेचतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ॥

टीका—शुक्र और बुध १० मस्थानीं ११ रवि और १ । ४ । ७ । १० गुरु ऐसी लग्नमें गृह आरंभ करावे तौ २०० वर्षकी आयु कहिये ॥

॥ अन्यच्च ॥ जीवोबुधोभृगुर्व्योम्नि लाभगोभानुभूमिजौ ॥ प्रारम्भेयस्यतस्यायुःसमाशीतिःसहश्रिया ॥

टीका—गुरु बुध शुक्र ये १० स्थानीं ११ रवि भौम होय तौ लक्ष्मी युत घरकी ८० वर्षकी आयु जाननी ॥

स्वोच्चवर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमन्त्रिणिरसातलेऽथवा ॥ स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽऽयगेस्यात्स्थितिश्चसुचिरंसहश्रिया ॥

टीका—लग्नमें उच्चका शुक्र होके बैठा हो गुरु ४ होय उच्चका वा स्वक्षेत्रीं शनि होके ११ स्थानीं हो तो लक्ष्मी युक्त चिरकाल घरकी आयु कहना ॥

स्वर्क्षगेहिमगौलाभेसुरेज्यकेन्द्रसंस्थिते ॥ धनधान्यसुतारोग्ययुक्तंधामचिरंभवेत् ॥

टीका—कर्कका चंद्रमा ११ में स्थानमें और गुरु केंद्रमें १ । ४ । ७ ।१० होय तौ वह धनयुक्त और सुत आरोग्य सहित चिरकाल रहै ॥

दूसरे मतसे पृथ्वी शोधनेका प्रकार ।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यःप्रथमंस्फुटीभवेत् ॥

वर्गादिवर्णःकिलतद्दिशिस्मृतंशल्यंमुनीन्द्रैर्हपयास्तुमध्यतः॥ स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम्॥ गृहीत्वा तुततःशल्याशल्यंसम्यग्विचार्यते॥

टीका–कुंडके निमित्त अर्थात् नूतन गृहके बनानेको प्रथम भूमि शोधनेका प्रकार-पृच्छक इष्टदेवताका स्मरण करके ब्राह्मणके प्रश्न करे ताके मुखसे आदि अक्षर जिस वर्गका निकले तिसके उत्तर अक चट तप यह वर्ग पूर्वादि अष्टदिशाओंमें मध्यभागी हपय वर्गोंके आदि अक्षर जहां होय इस स्थानमें अमुक शल्य है तिसका प्रकार नीचे लिखाहै जिसमेंसे उन २ स्थानोंका फल जानिये॥

प्रश्नअक्षरफल।

पूर्व॥ पृच्छायांयदिअःप्राच्यांनरशल्यंतदाभवेत्॥ सार्धहस्तप्रमाणेनतच्चमानुष्यमृत्युकृत्॥ आग्नेय॥ आग्नेय्यांदिशिकःप्रश्नेखरशल्येकरद्वयम्॥ राजदण्डोभवेत्तत्रभयंनैवनिवर्त्तते॥ दक्षि०॥ याम्यायांदिशिचःप्रश्नेतदास्यात्कटिसंस्थितम्॥ नरशल्यंगृहेतस्यमरणंचिररोगतः॥ नै०॥ नैर्ऋत्यांदिशिटःप्रश्नेसार्धहस्तादधःस्थले॥ शुनोस्थिजायतेतत्रबालानांजायते मृतिः॥ प०॥ तः प्रश्नेपश्चिमायांतुशिशोःशल्यंप्रजायते॥ सार्धहस्तेगृहस्वामीनातिष्ठतिसदागृहे॥ वाय०॥ वायव्यांदिशिपःप्रश्नेतुषाङ्गाराश्चतुष्करे॥ कुर्वन्तिमित्रनाशंचदुःस्वप्नदर्शनंसदा॥ उत्तर॥ उदीच्यांदिशियःप्रश्नेविप्रशल्यंकरादधः॥ तच्छीघ्रंनिर्धनत्वायकुबेरसदृशस्यहि॥ ई०॥ ईशान्यांयदिशःप्रश्नेगोशल्यंसार्द्धहस्ततः॥ तद्गोधनस्यनाशायजायतेगृहमेधिनः॥ मध्यभाग॥ हपयामध्यकोष्ठेचवक्षोमात्रंभवेदधः॥ नृकपालमथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकृत्॥

टीका–पृच्छकके मुखसे आदि अक्षर अवर्गका निकले तौ पूर्वको डेढहाथ

गहरा खोदै तौ मनुष्यकी हड्डी निकलैं वह मृत्युकारक जानिये १ (क) निकले तौ २ हाथके गहरावमें गदहेकी निकले उससे राजदंडका भय कभी निवृत्ति न होय २ (च) अक्षरका उच्चारण होय तो दक्षिणकी ओर कटि बराबर खोदनेसे नरके अस्थि निकलैं तिसका फल चिरकालके रोगसे मरण ३ (ट) का उच्चार होय तो नैर्ऋत्य दिशामें डेढहाथ ओंडा खोदनेसे कुत्तेके अस्थि निकलें तिसके फल बालक न जीवें ४ (त) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ हाथके गहरावमें बालकके अस्थि निकलें तिसका फल गृहका स्वामी सदा घरमें न रहै ५ (प) होय तो वायव्य दिशामें ४ हाथ पर जली हुई धातुकी भूसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्रनाश दुःस्वप्नदर्शन ६ (य) वर्ग होय तो एक हाथपर उत्तर कोणमें ब्राह्मणके हाड निकलें तिसका फल कुबेर समानभी धनाढ्य दरिद्री होय ७ (श) होय तौ ईशान दिशामें डेढ हाथपर गौकी अस्थि निकलैं तिसका फल गोधनका नाश ८ (ह प य) होय तो मध्य भागमें छाती बराबर ओंडेमें मनुष्यका कपाल वा भस्म वा लोह निकले तिसका फल कुलका नाश ९ जिस वर्गका नाम प्रश्नकर्ताके मुखसे उच्चारण होय उसी दिशाको देखै॥

यात्राप्रकरण।

शुक्र संमुख॥ एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे॥
विवाहेतीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रोनविद्यते॥

टीका—गांवके गांवमें अथवा शहरके शहरमें दुर्भिक्षकालमें तथा देशोपद्रवमें विवाह समयमें और तीर्थ यात्रामें सन्मुख शुक्र होय तो दोष नहीं है॥

पौष्णदाद्वाग्निपादान्तं यावत्तिष्ठतिचन्द्रमाः॥
तावच्छुक्रोभवेदन्धः सन्मुखंगमनंशुभम्॥

टीका—रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके प्रथम चरण चंद्रमा होनेसे शुक्र अंध होताहै उसके सन्मुख गमनमें दोष नहीं है॥

शुभाशुभफलम्॥ दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसंमुखोहन्ति
मङ्गलम्॥ वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोधयेदस्तगःशुभः॥

टीका–गमन अर्थात् यात्रामें दाहिना शुक्र होय तो दुःखदायक संमुख कार्य नाशक और वाम भागमें पीछेका शुक्र मंगल दायक और पूर्वमें अस्त होय तो पश्चिमको गमन शुभ और पश्चिममें अस्त होय तो पूर्वमें शुभ गमन जानिये॥

घातचंद्रनिर्णय ॥ प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे ॥ वादेचैवगृहारम्भेवर्जितोघातचन्द्रमाः ॥

टीका–यात्रा युद्ध खेतकर्ममें व्यापार अन्न आदि भरनेमें विवाद गृहके आरंभमें घात चंद्रमा वर्जित है ॥

घातप्रकरणम् ॥ घाततिथिंघातवारंघातनक्षत्रमेवच ॥ यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम् ॥

टीका-घाततिथि घातवार घातनक्षत्र यात्रामें वर्जित हैं और कार्योंमें शुभ जानिये॥

मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठीप्रथमचन्द्रमाः ॥ वृषभेपञ्चमोहस्तश्चतुर्थीशनिरेवच ॥ मिथुनेनवमःस्वातीअष्टमीचंद्रवासरः॥कर्केद्विरनुराधाचबुधःषष्ठीप्रकीर्तिता ॥ सिंहेषष्ठश्चन्द्रमाश्चदशमीशनिमूलके॥ कन्यायांदशमश्चन्द्रःश्रवणःशनिरष्टमी॥तुलेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचन्द्रमाः ॥वृश्चिकेरेवतीसप्तदशमीभार्गवस्तथा॥ धनेचतुर्थीभरणीद्वितीयाभार्गवस्तथा॥ मकरेष्टमीरोहिणीद्वादशीभौमवासरः॥ कुम्भेएकादशश्चार्द्रा चतुर्थीगुरुवासरः॥मीनेचद्वादशःसार्पाद्वितीयाभार्गवस्तथा॥

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्च.	धन	मक.	कुंभ	मीन
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	च.	बु.	श.	श.	गु.	शु	शु.	मं.	गु.	शु.
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि १२ राशि घातचंद्रादि चतुष्टय बचाकर यात्रामें शुभनक्षत्र आदि देखले.

कालचंद्र ॥ मेषेवेदावृषेऽष्टौचमिथुनेचतृतीयकः ॥ दशकर्केरविः सिंहेकन्याअङ्कःप्रकीर्तितः ॥ षट्तुलेवृश्चिकेखेन्दुर्धनेरुद्राःप्रकीर्तिताः ॥ मकरेऽऋषयःप्रोक्ताःकुम्भेबाणाउदाहृताः ॥ मीनेत्वङ्घ्रिःकालचन्द्राःशौनकश्चेदमब्रवीत् ॥

टीका–मेषराशिको ४ वृषको ८ मिथुनको ३ कर्कको १० सिंहको १२ कन्याको ९ तुलाको ६ वृश्चिकको ११ धनको ११ मकरको ७ कुंभको ५ मीनको ४ चौथा चंद्रमा कालचंद्र जानिये ये कालचंद्र शौनक ऋषि प्रोक्त सर्व कर्मोंमें वर्जित हैं ॥

तिथिपरत्वसे वर्जित लग्न।

नन्दायामलिहर्योस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायांमीनधनुषोः कालस्तिष्ठतिसर्वदा ॥ जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायांमेषकर्कयोः ॥ पूर्णायांकुम्भवृषयोर्मनुष्यमरणंध्रुवम् ॥

टीका–नंदातिथिको वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रातिथिको मीन धन और जया तिथिको कन्या मिथुन और रिक्ता तिथिको मेष कर्क पूर्णा तिथिको कुंभ वृष इन तिथियोंमें लग्न वर्जित हैं ॥

यात्राके नक्षत्र।

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्वितिष्यपौष्णश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥ प्रोक्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपञ्चादिमसप्ततारा: ॥

टीका–हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र प्रयाणमें उक्त हैं परंतु ३।५।१।७ये तारा गमनमें वर्जित हैं ॥

मध्यनक्षत्र ॥ रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥ षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणेमध्यमाःस्मृताः ॥

टीका–रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यम हैं ॥

वर्ज्यनक्षत्र।

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका ॥ सार्पस्वातीविशाखाचनित्यंगमनवर्जिताः ॥ कृत्तिकाएकविंशत्या भरण्याःसप्तनाडिकाः ॥ एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश ॥ विशाखासार्पचित्रासुस्वातीरौद्रचतुर्दशी॥ आद्यास्तुघटिकास्त्याज्याःशेषांशेगमनंशुभम् ॥

टीका–इन नक्षत्रोंको प्रयाण कालमें वर्जित करै परंतु जो कुछ आवश्यक काम व संकट आन पडै तौं तीनों पूर्वाकी १६ घटिका मघाकी ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घटिका कृत्तिकाकी २१ जन्मनक्षत्र संपूर्ण आश्लेषा विशाखा चित्रा स्वाती आर्द्रा इन नक्षत्रोंकी आद्य १४ घटिका वर्जिके प्रयाण करै॥

प्रयाणमें शुभाशुभ विचार॥ अर्केक्लेशमनर्थकंचगमने सोमेचबन्धुप्रियंचाङ्गारेऽनलतस्करज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे॥ क्षेमारोग्यसुखं करोतिचगुरौलाभश्चशुक्रेशुभोमन्देबन्धनहानिरोगमरणान्युक्तानिगर्गादिभिः॥

टीका–रविवारको गमन करै तौ मार्गमें क्लेश और अर्थकी हानि होय सोमवारको गमन करै तौ बंधु और प्रियदर्शन मंगलमें अग्नि चोर भय और ज्वर प्राप्ति बुधवारमें द्रव्य और सुखप्राप्ति गुरुवारमें आरोग्य और सुख शुक्रवारमें लाभ और शुभ फलप्राप्ति शनिवारमें गमन करै तौ बंधन रोग और मरण प्राप्ति होय॥

होराकथन व शकुन।

वारात्षष्ठस्यषष्ठस्य होरासार्द्धद्विनाडिका॥ अर्कशुक्रौबुधश्चन्द्रोमन्दोजीवोधरासुतः॥ गुरुर्विवाहेगमनेचशुक्रोबोधेसौम्यः सर्वकार्येषुचन्द्रः॥ कुजेचयुद्धंरविराजसेवामन्देचवित्तं इतिहोरयोगाः॥ यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम्॥ तस्य ग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते॥

टीका–जिसवारका होरा होय उसीमें प्रथम २ घटिका होरा तिसके छठे वारको दूसरा होरा इस क्रमसे दिवसके वार होरा जानिये २ रविवारका होरा राजसेवाको शुभ द्वितीय २ शुक्रका गमनको तृतीय बुधका ज्ञानप्राप्ति चतुर्थ चंद्रका सर्वकार्यको, पंचम शनिका द्रव्यका संग्रह योग्य, छठा गुरुका विवाहको, सातवा मंगलका युद्धको जानिये इस प्रमाण होराका क्रम जानिये॥ और जिस २ ग्रहका जो २ वार तिसमें कथित कृत्य उसके होरामें करावै॥

सूर्यका होरा॥ सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयंच॥ काकत्रयंद्वौनकुलौ तथैव चाषस्तथैको वृषभश्चगौश्च॥

टीका–रविके होरामें गमन करै तौ आगे जो शकुन हौंय तिनको कहतेहैं रजकी, वस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, दो न्योला, दो चाष, एक बैल, और गायके शकुन मिलैं ॥

चंद्रका होरा।

चन्द्रस्यहोरेद्विजयुग्मकाकभेरीमृदङ्गानकुलाःखरोष्ट्रौ ॥
हयश्चगोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे ॥

टीका–चंद्रमाके होरामें गमनकरै तौ मार्गमें दो ब्राह्मण और काक नगारे मृदंग और न्योला गर्दभ ऊंट घोडा गाय मेंढा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियां ये शकुन मिलैं ॥

मंगलका होरा।

मार्जारयुद्धंकलहःकुटुंबेरजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ॥
नपुंसकःश्वत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तोधरणीसुतस्य ॥

टीका–मंगलके होरामें गमन करै तौ मार्जार युद्ध अथवा स्त्रीपुरुषोंका कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलता हुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण भेटे ॥

बुधका होरा।

बुधस्यहोरेशकुनस्यसर्वःस्त्रीपुत्रयुक्ताकलशस्तुपूर्णः ॥
सुचातकश्चाषगजौकुमारःपुष्पाणिनारीखलुदर्पणश्च ॥

टीका–बुधके होरामें सर्व शकुन स्त्री पुत्रयुत, पानी भराहुआ कलश, चातक पक्षी वा चाषपक्षी, गज किंवा बाल, पुष्प, स्त्री, दर्पण ये मार्गमें मिलैं ॥

गुरुका होरा।

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुःस्त्रीबालयुक्तासजलोघटस्तु ॥
ऊर्णाचकाकोनकुलोबकश्चहंसस्यराजाबहवस्तुवैश्याः ॥

टीका–गुरुके होरामें ब्राह्मण गणिका अथवा गाय पुत्रसहित स्त्री जलपूर्ण घट शाल अर्थात् ऊनवस्त्र काक न्योला बगला हंसका राजा किंवा बहुत वैश्य मिलैं ॥

शुक्रका होरा।

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेन्द्रःकाकत्रिपञ्चाथनपुंसकोवा ॥
मद्यंहिमांसंगणिकाचधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः ॥

टीका–शुक्रके होरामें ब्राह्मण गणिका ३ काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलैं ॥

शनीका होरा।

पतङ्गसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकस्तथैव ॥
पिशाचगृध्रौविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचण्डः ॥

टीका–शनिके होरामें नग्न मुसलमान, रजस्वला स्त्री, प्रेत, पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक तथा प्रचंड तरुण पुरुष, ये शकुन मिलैं ॥

उत्तम प्रश्न न होय तौ।

मनुका वाक्य ॥ गमनंप्रतिराजंस्तु सन्मुखादर्शनेनच ॥
प्रशस्तांश्चैवसंभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्तयेत् ॥

टीका–राजाप्रति कहतेहैं गमनकालमें पूर्वोक्त शकुनोंका कीर्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तौ मनमें स्मरण करिके गमन करै तौ शुभ होय ॥

वारानुसार वस्त्रधारण।

रवौनीलं बुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ॥
श्वेतं गुरौभृगौभौमेरक्तंसोमेतुचित्रकम् ॥

टीका–रविवारको नीलवस्त्र धारणकरै बुधवारको पीत शनिवारको काले गुरु व शुक्रको श्वेत मंगलको रक्त सोमवारमें चित्र इस प्रकार वस्त्र धारण करिकें गमन करै ॥

नक्षत्रतिथिवार अनुसार दिक्शूल वर्ज्य॥पूर्वदिशा॥

मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नवमीषुच ॥
शनौसोमेबुधे चैव पूर्वस्यांगमनं त्यजेत् ॥

टीका–मूल श्रवण ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी तिथि और शनि सोम बुध वार इनमें पूर्व दिशाको गमन न कीजिये ॥

दक्षिणदिशा ॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्योपञ्चमीचत्रयोदशी ॥
गुरुर्धनिष्ठार्द्राचैवयाम्येसप्तविवर्जयेत् ॥

टीका–पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी नक्षत्र और पंचमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा इनमें दक्षिण दिशाको गमन न कीजिये ॥

पश्चिम ॥ रोहिण्यांचतथापुष्येषष्ठीचैव चतुर्दशी ॥
भौमार्कगुरुवारेषुनगच्छेत्पश्चिमांदिशम् ॥

टीका–रोहिणी पुष्यनक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि रवि गुरुवार इनमें पश्चिम दिशाको गमन न कीजिये ॥

उत्तर ॥ करेचोत्तरफाल्गुन्यांद्वितीयांदशमींतथा ॥
बुधेरवौ भौमवारे नगच्छेदुत्तरांदिशम् ॥

टीका–हस्त उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र २ । १० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तर दिशाको गमन न कीजिये ॥

विदिक्शूल ॥ ईशान्यांज्ञेशनौशूलआग्नेय्यांगुरुसोमयोः ॥
वायव्यांभूमिपुत्रेतुनैर्ऋत्यांशुक्रसूर्ययोः ॥

टीका–वारानुसार विदिशाओंका शूल होताहै तिसमें गमन न कीजिये बुध और शनिवारमें ईशान्य दिशाको वर्जित है और गुरु और सोमवारमें आग्नेयको और मंगलमें वायव्यको शुक्र और रविवारमें नैर्ऋत्यको गमन वर्जित है ॥

शूलदोषनिवारणार्थ भक्षण ।

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमेपयस्तथा ॥ गुडमङ्गारवारे तुबुधवारेतिलानपि ॥ गुरुवारेदधिज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि ॥
माषान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥

टीका–रविवारको घी और सोमवारको दूध पीवे मंगलको गुड बुधको तिल गुरुको दधि शुक्रको यव शनिवारको उरदकी वस्तु खाय ऐसे भक्षण करिके गमन करै ॥

कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जितकर्म ।

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणाजिनम् ॥
याम्यदिग्गमनंकुर्यान्नचन्द्रेकुम्भमीनगे ॥

टीका—पलंग बुनवाना और प्रेताग्नि क्रिया और तृणकाष्ठादिसंग्रह और दक्षिणको गमन ये सकल कर्म कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जित है ॥

संमुखचंद्रविचार ॥ करणभगणदोषंवारसंक्रान्तिदोषंकुतिथिकुलिकदोषंवामयामार्द्धदोषम् ॥ कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषंहरतिसकलदोषंचन्द्रमाःसंमुखस्थः ॥

टीका—करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मंगल शनि रवि राहु केतु इत्यादि दोषोंको सन्मुखस्थ चंद्रमा गमन करनेसे समय दूर करताहै॥

दिशानुसार संमुखचंद्रमाविचार ।

मेषेचसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्ये ॥ तुलेचकुम्भे मिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीने दिशिचोत्तरस्याम् ॥ फल ॥ संमुखश्चार्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदः ॥ पृष्ठतःप्राणनाशायवामेचन्द्रेधनक्षय ॥

टीका—मेष सिंह धन इन राशियोंका चंद्रमा पूर्वमें है और वृष कन्या मकरका दक्षिणमें तुला कुंभ मिथुनका पश्चिममें कर्क वृश्चिक मीनका उत्तरमें वास करताहै ॥ फल ॥ दिशानसार सम्मुख चंद्रमा होते गमन करे तो अर्थलाभ होय और दाहिना होय तौ धनसंपत्तिकी प्राप्ति होय और पृष्ठ भागमें चंद्रमा होय तो प्राणनाश और वामभागी होय तो धनक्षय जानिये ॥

कालवेलाविचार ॥ पूर्वाह्णेचोत्तरांगच्छेत्प्राच्यांमध्याह्नकेतथा ॥ दक्षिणेअपराह्णेतुपश्चिमेअर्धरात्रके ॥

टीका—दिवसके प्रथम प्रहरमें उत्तरको दूसरे प्रहरमें तथा मध्यान्हमें पूर्वको और तीसरेमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रिमें पश्चिमको गमन करे ॥

योगिनीवास ॥ प्रतिपन्नवमीपूर्वेद्वितीयादिशिचोत्तरे ॥ तृतीये-

कादशीवह्नौचतुर्द्वादशिनैर्ऋते ॥ पञ्चत्रयोदशीयाम्येषष्ठभूतं चपश्चिमे ॥ सप्तमीपूर्ववायव्येअमावास्याष्टमीशिवे ॥ फल ॥ पृष्ठेचशिवदाप्रोक्तावामेचैवविशेषतः ॥ योगिनीसाभवेन्नित्यंप्रयाणेशुभदानृणाम् ॥

टीका—प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें द्वितीया और दशमीको उत्तरमें तीज और एकादशीको आग्नेयमें चौथि और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें सप्तमी और पूर्णिमाको वायव्यमें अमावास्या और अष्टमीको ईशान्यमें इस प्रमाणसे योगिनीका वास जानिये ॥ तिसका फल ॥ पृष्ठभागी अथवा वामभागी होय तौ शुभ जानिये ॥

वारानुसार कालराहुका वास ॥ अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमेभौमे प्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच ॥ याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रेमन्देचपूर्वेप्रवदन्तिकालम् ॥

टीका—रविवारको उत्तरमें सोमवारको वायव्यमें मंगलको पश्चिममें बुधवारको नैर्ऋत्यमें गुरुवारको दक्षिणमें शुक्रवारको आग्नेयमें शनिवारको पूर्वमें इसप्रमाणसे कालराहु वार अनुसार जानिये ॥

फलका श्लोक ॥ रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्येवरुणदिशितुभौमेचोत्तरेसौरिसंस्थे ॥ प्रतिदिनमितिमत्वाकालराहुर्दिशानांसकलगमनकार्येवामपृष्ठेचसिद्धिः ॥

टीका—रवि अथवा गुरु इन वारोंमें पूर्वको गमन करै तौ कालराहु वाम पृष्ठभागी जानिये तिसमें गमन करै तौ सर्व कार्यकी सिद्धि होय सोमशुक्रमें दक्षिणको गमन करे भौमवारमें पश्चिमको शनिवारमें उत्तरको गमन करै तौ कार्यसिद्धि होय ॥

क्षुधितराहु ॥ इन्द्रेवायौयमे रुद्रेतोयेग्नौशशिरक्षसोः ॥ यामार्द्धे क्षुधितोराहुर्भ्रमत्येवदिगष्टके ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगोनच चन्द्रमाः ॥ सिद्धचन्तिसर्वकार्याणियात्रायांदक्षिणेरवौ ॥

टीका—प्रथम यामार्द्धमें क्षुधित राहु पूर्वका जानिये द्वितीयमें वायव्यको

तृतीयमें दक्षिणको चतुर्थमें ईशान्यको पंचममें पश्चिमको षष्ठमें आग्नेयको सप्तममें उत्तरको अष्टम यामार्द्धमें नैर्ऋत्यको इसप्रमाणसे अष्टदिशाओंमें भ्रमण करताहै परंतु दक्षिण भागमें स्थितरवि विचारके गमन करै तौ तिथि नक्षत्रादिकका दोष जाता रहै और समस्त कार्य सिद्धि होंय ॥

काल कहां है तिसका ज्ञान॥ कालःपलंपातकलोहपातवडवानलाः खड्गकचोलिकान्तिकाः ॥ नखाश्चतुर्विंशतिषट्तथादिकुरुद्राधृतिवेदगुणाःक्रमेण ॥ तिथ्यायुतंवैवसुभाजितंचशेषश्चकालोमुनयो वदन्ति ॥ फल ॥ कालंचपृष्ठेफलसंमुखेनपातंचलोहंवडवांचपृष्ठे ॥ खड्गंचचाग्रेकवचंचवामेकान्तिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम् ॥

टीका—कालोंके नाम ॥ १ काल २ पल ३ पातक ४ लोहपात ५ वडवानल ६ खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे आठ नाम तिनके ऊपर अंक लिखेहैं उनमें गमन कालकी जो तिथि है उनको एक (१) अंकमें मिलावे आठका भाग दे शेष जो अंक रहे तिस दिशाको काल जानिये इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा क्रमसे जानिये पृष्ठ भागी काल शुभ सन्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमें पातक लोह और वडवानल ये तीनों शुभ अग्रभागमें खड्ग शुभ वामभागमें कवच शुभ दक्षिणभागमें कांति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचारिके उस दिशाको युद्धमें किंवा यात्रामें गमन करे तो शुभ हो ॥

पंथाराहुचक्र ॥ स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थेयाम्याज्याङ्घ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥ वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षोऽथरोहिण्यर्यम्णाब्जेन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणिपन्थादिराहौ ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित्	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषा.	रेवती

टीका—नक्षत्र २८ तिनके भाग ४ तिनके नाम प्रथम धर्ममार्गके नक्षत्र ७ दूसरे अर्थ मार्गके नक्षत्र ७ तृतीय काम मार्गके नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्गके

नक्षत्र ७ याप्रकार चार मार्गोंके नक्षत्र जानियें तिनमें मार्गके नक्षत्रमें सूर्य होय तौ चंद्रमा चारि वर्गोंके नक्षत्रमें फिरताहै तिनके फल कहतेहैं ॥

धर्ममार्गीके फल ॥ धर्ममार्गेगतेसूर्ये अर्थांशेचंद्रमायदि ॥
तदाशत्रुभयंतस्यज्ञेयंतुविबुधैःशुभम् ॥

टीका-धर्ममार्गी नक्षत्रमें सूर्य और अर्थमार्गी नक्षत्रमें चंद्रमा होय तौ गमन करनेसे मार्गमें शत्रुभय होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
संहारश्चभवेत्तत्र भङ्गोहानिःप्रजायते ॥

टीका-धर्ममार्गी नक्षत्रोंके सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो संहार भंग-हानि प्राप्ति होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्येकामांशेचन्द्रमायदि ॥
विग्रहोदारुणंचैवचौराद्युपद्रवम् ॥

टीका-धर्ममार्गीमें सूर्य और काममार्गी नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तौ विग्रह दारुण और चोरभय ॥

धर्ममार्गे गतेसूर्येचन्द्रेमोक्षगतेयदि ॥
गृहलाभोभवेत्तस्य विज्ञेयो नात्रसंशयः ॥

टीका-धर्ममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल गृहलाभ व मार्गसुख होय ॥

अर्थमार्गके फल ।

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रे धर्मस्थितेयदि ॥
गजलाभोभवेत्तस्य तत्रश्रीः सर्वतोसुखी ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल लाभ और लक्ष्मीप्राप्ति और सर्वदा सुखी होय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभङ्गो भविष्यति ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और चंद्रमा दोनों होंय तो प्रथम कार्यसिद्धि होय और पीछे भंग हो जाय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्ये चन्द्रे कामांशसंस्थिते ॥
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ॥

टीका–अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो ऐसे योगका फल सर्व कार्यसिद्धि होंय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेमोक्षस्थितेयदि ॥
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तःसुखी भवेत् ॥

टीका–अर्थमार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगोंका फल भूमिलाभ व हर्षयुक्त सुख मार्गमें स्थिर पावै ॥

काममार्गीके फल ॥ काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रे धर्मेचसंस्थिते ॥
गजाश्वाश्वविलभ्यन्तेराजसन्मानसंभवात् ॥

टीका–काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोडा भूमि इनका लाभ और राजसन्मान पावै ॥

काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेचैवार्थसंस्थिते ॥
सकलंजायतेतस्यविघ्नभङ्गंविनिर्दिशेत् ॥

टीका–काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा ऐसा योग होय तो सब विघ्नोंका नाश होंय ॥

काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवकार्यनाशंविनिर्दिशेत् ॥

टीका–काममार्गी सूर्य और चंद्रमा होंय तो विग्रह और कार्यनाश होय ॥

काममार्गेगते सूर्येचन्द्रेमोक्षगतेपिवा ॥
राज्ञोलाभोभवेत्तस्य स्वर्णलाभंविनिर्दिशेत् ॥

टीका–काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा होय तो राजासे लाभ सुवर्णलाभ हो ॥

मोक्षमार्गीके फल ॥ मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चन्द्रेधर्मेस्थितेयदि ॥
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्ध्यति ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य व धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हेमलाभ और सर्वसिद्धि होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये अर्थांशेचन्द्रमायदि ॥
विफलंतस्यकार्यंचचोरराजरिपोर्भयम् ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा होय तो राजा और चोरसे रिपुसे भय होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेकामस्थितेयदि ॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोतिकार्येचजयमेवच ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो सर्वकार्यसिद्धि और जयप्राप्ति होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवविघ्नस्तस्यभविष्यति ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो दारुण विग्रह और विघ्न प्राप्ति होय ॥

पन्थाराहु व कर्मकरनेयोग्य ॥ यात्रायुद्धेविवाहेचप्रवेशेन-गरादिषु ॥ व्यापारेषुचसर्वेषुपन्थाराहुःप्रशस्यते ॥

टीका–यात्रामें युद्धमें और विवाहमें और नगरादि प्रवेशमें और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तुके लेनदेनमें राहु मार्गमें शुभदायक होताहै ॥

गर्गादिकोंका मुहूर्त्त ॥ उषःप्रशस्यतेगर्गः शकुनंचबृह-स्पतिः ॥ अङ्गिरामनउत्साहोविप्रवाक्यंजनार्दनः ॥

टीका–गर्गजीके मतसे रात्रिकी पिछली ५ घटी उषःकालमें गमन शुभ और बृहस्पतिके मतसे शकुन और अंगिराके मतसे मनका उत्साह शुभ और जनार्दनके मतसे ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेवच ॥ ए-कीकृत्वाहरेद्भागंनन्दशेषेचवाहनम् ॥ रासभोऽश्वोगजोमेषोज-म्बुकःसिंहसंज्ञकः ॥ काकश्चैवमयूरश्चहंसइत्येववाहनम् ॥ फल ॥ रासभेअर्थनाशश्चधनलाभश्चघोटके ॥ लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये हिमेषेचमरणंध्रुवम् ॥ जम्बुकेस्वल्पलाभश्चसर्वसिद्धिश्चसिंहके ॥ काकेचनिष्फलंकार्यंमयूरेचसुखावहम् ॥ हंसेतुसर्वसिद्धिःस्या-द्वाहनानांफलंस्मृतम् ॥

टीका-अपने जन्म नक्षत्रसे दिवसके नक्षत्रतक गिने नवका भाग दे शेष बचै सो वाहन जानिये १ रहे तौ गर्दभ तिसका फल अर्थनाश २ वचैं तो घोडा धनलाभ होय ३ वचैं हस्ती लक्ष्मी ४ वचैं मेंढा मरण ५ वचैं जंबुक स्वल्पलाभ ६ वचैं तौ सिंह सर्व कार्यसिद्धि ७ वचैं तो काक निष्फल ८ बचैं तो मोर सुखप्राप्ति ९ वचैं तौ हंस सर्वसिद्धि जानिये ॥

अंकमुहूर्त।

तिथयःपक्षगुणिताःसप्तभिर्भाजिताश्चताः ॥ वाराःस्यु-
र्वह्निगुणिता वसुभिश्चैवभाजिताः ॥ चतुर्गुण्यानिमा-
न्यङ्कभाजितानियथाक्रमम् ॥

टीका-जिस तिथिमें गमन करना चाहे उसे १५से गुणाकरके सातका भाग दे और जो वार होंय तिसे तीन गुणाकरे आठका भाग दे और जो नक्षत्र होय तिसे चार गुणा करके ६ का भाग दे जो शेष वचैं उसका फल कहैंगे ॥

फल ॥ पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्यशून्येमहद्भयम् ॥
अन्त्यशून्येतुमरणंत्र्यङ्केचविजयीभवेत् ॥

टीका-प्रथमतिथिके भागका शून्य वचैं तौ पीडा और वारके भागमें शून्य वचैं तौ बहुत भय होय और नक्षत्रके भागमें शून्य हो तो मरण और तीनों जगह अंक वचैं तो विजय होंय ॥

भ्रमणाडलमुहूर्त।

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंसप्तभिर्भागमाहरेत् ॥ त्रिषड्भ्रमणंचैवद्विः-
सप्तमहदाडलम्॥ प्रथमंपञ्चचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम्॥
आडलेताडनंप्रोक्तं भ्रमणेकार्यनाशनम्॥

टीका-सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताई गिने सातका भाग दे ३। ६ वचैं तौ भ्रमण और २। ७ वचैं तौ महदाडल ये ताडनामें जानिये और १। ४। ५ वचैं तो आडल नहीं होता ये गमनमें उक्त है ॥

हैवरमुहूर्त ।

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंपक्षादितिथिवारयुक् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरम् ॥

टीका–सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताई गिनके पक्ष तिथि वार मिलाके नौका भाग देनेसे ७ शेष वचैं तो हैवर योग होताहै सो यात्रामें शुभ है ॥

घबाडमुहूर्त ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंत्रिगुणंतिथिमिश्रितम् ॥
नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघबाडकम् ॥

टीका–सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुनाकर तिथि मिलाय नवका भाग दे तीन शेष वचैं तो घबाड मुहूर्त जानिये ॥

वारअनुसार स्वरशकुन ।

गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणःस्वरः ॥ अन्यवारेषुवामस्तुस्वरश्चैवशुभःस्मृतः ॥ निर्गमेवामतःश्रेष्ठ प्रवेशेदक्षिणःशुभः ॥ य स्वर सचनासाग्रेयोगिनांमतमीदृशम् ॥

टीका–गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें शुभ होय और सोम बुध शुक्र वारोंमें वामस्वर चले तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियोंके मतसे कहाहै ॥

वारानुसार छायाशकुन ।

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधराणिसुतेसप्तजीवेपदानिज्ञेयंचैकादशार्केशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थंचतुष्कम् ॥ तस्मिन्कालेमुहूर्तेसकलगुणयुतेकार्यसिद्धिःशुभोक्ता नास्मिन्पञ्चाङ्गशुद्धिर्नखलु शशिबलं भाषितंगर्गमुख्यैः ॥

टीका–आठ पद अपनी छाया होय तौ बुधवारमें गमन करे नवपाद होय तो भौमवारको गमन कीजे ७ पद गुरुको ११ सूर्यवारको गमन करै शनि सोम शुक्रमें चार २ पद होय तो सब गुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त इसमें चंद्रमा आदि न देखे शुभ हैं ॥

काकशब्दशकुन ॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायांतुकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाषड्भिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथा सौख्यं भोजनंचतथागमः ॥ अशुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—काकका शब्द सुनके अपने पैरोंकी छाया मापके १३ और मिलाके ६ का भाग दे शेष बचैं उसका फल १ बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन ५ धनप्राप्ति पूरा भाग लगजाय तो अशुभ ये गर्ग मुनिका वचन है ॥

पिंगलशब्दशकुन ॥ उल्हास किल्बिलेचैवचिलिपल्यांभोजनं तथा ॥ बन्धनंखिट्टिखिट्टिस्यात्कुर्कुशब्देमहद्भयम् ॥

टीका—जो किल्बिल शब्द होय तो उल्हास होय और चिल्बिल शब्द होय तो भोजनप्राप्ति खिटखिट शब्द होय तो बंधन कुर्कुशब्द होय तो महाभय होय ॥

छिक्कानुसार पादच्छायाशकुन।

बुधश्छिक्कारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःसिद्धिर्हानिशोकौभयंश्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टीका—छींकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया मापे १३ मिलावे ८ का भाग दे शेष रहे तिसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक ५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ० निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहतेहैं ॥

छींकशकुन।

छिक्कप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखं स्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणम् ॥ वायव्यधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मच्छिक्कामहद्भयम्॥ऊर्ध्वेचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम्॥ आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने ॥ वामाङ्गपृष्ठतश्चैवषट्छिक्काश्चशुभावहाः ॥

टीका—दिशानुसार छींक फल ॥ पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक दुःख करै दक्षिणकी अरिष्ट करै नैर्ऋत्यकी शुभ पश्चिमकी मिष्टभक्षण वायव्यकी

धनदायक उत्तरकी कलहकृत ईशान्यकी शुभदायक और अपनी छींक बहुत भय दे ऊपरकी छींक शुभ मध्यकीमेंभी बडा भय आसनमें सोनेमें दानमें भोजनमें वाईं ओर वा पीछे होय तो ये ६ शुभ जानिये ॥

पल्लीशब्दशकुन।

वित्तंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रेहुताशेभयंयाम्येमित्रवधः क्षयश्चनिर्ऋतेलाभःसमुद्रालये ॥ वायव्यांवरमिष्टमन्नमशनंसौम्येऽर्थलाभस्तथाईशान्यांग्रहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभूमौभयम्॥

टीका—पूर्वमें शब्द पल्ली करे तो शकुन वित्त ब्रह्मसंबंधी कार्य विशेष धनप्राप्ति आग्नेयमें अग्निका भय होय दक्षिणमें मित्रवध होय नैर्ऋत्यमें क्षय पश्चिममें शब्द होय तो लाभ वायव्यमें सुंदर मीठा भोजन उत्तरमें धनप्राप्ति ईशानमें कार्यसिद्धि और जो भूमिमें होय तो भय करे ॥

पल्लीपतन और सरठका अवरोहण।

राज्यंतुशिरसिज्ञेयं ललाटेबन्धुदर्शनम् ॥ भ्रूमध्येराजसन्मानमुत्तरोष्ठेधनक्षयम्॥ अधरोष्ठेधनैश्वर्यनासान्तेव्याधिपीडनम्॥ आयुष्यंदक्षिणेकर्णेबहुलाभस्तुवामके ॥ अक्ष्णोस्तुबन्धनंज्ञेयंभुजेभूपातितुल्यता ॥ राजक्षोभंतथावामेकण्ठेशत्रुविनाशनम् ॥स्तनद्वयेचदुर्भाग्यमुदरेमण्डनंशुभम्॥प्रजानाशःपृष्ठदेशेजानुजङ्घेशुभावहम् ॥करद्वयेवस्त्रलाभःस्कन्धयोर्विजयीभवेत् ॥ नाभौबहुधनंप्रोक्तमूर्वोश्चैव हयादिकम्॥ दक्षिणेमणिबन्धेचमनस्तापोधनक्षयः॥ मणिबन्धेतथा वामेकीर्तिवृद्धिधनप्रदम्॥ नखेषुधान्यलाभंचवक्रेमिष्टान्नभोजनम्॥ गुल्फयोर्बन्धनंज्ञेयंकेशान्तेमरणंध्रुवम् ॥ अध्वातुदक्षिणेपादेवामेबन्धुविनाशनम्॥ स्त्रीनाशःस्यात्पादमध्येपादान्तेमरणंभवेत्॥पल्ल्याः प्रपतनेज्ञेयंसरठस्याधिरोहणे ॥ यात्रोद्युक्तमनुष्यस्यैतच्छुभाशुभसूचकम् ॥ तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने ॥ पिनाकिनं नमस्कृत्यजपेन्मन्त्रंषडक्षरम् ॥ शतंसहस्रमथवासर्वदोषनिवर्हणम्॥ शिवालयेप्रदद्याद्दीपंदोषोपशान्तये ॥

टीका– मनुष्योंके गमन समयमें अंगपर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरे अथवा गिरगिट चढै तो शुभाशुभ सूचक फल स्थानानुसार कहाहै ॥

१ सिर राज्यप्राप्ति	११ वामबाहु राज्यभय	२१ ऊरूपर घोडावाहन
२ कपाल बंधुदर्शन	१२ कंठपर शत्रुनाश	२२ दाया पहुंचा धनक्षय
३ भ्रुकुटी राजसन्मान	१३ स्तनोंपर दुर्भाग्य	२३ वा.मणिबंध कीर्ति
४ उत्तरोष्ठ धनक्षय	१४ उदरपर शुभमंडन	२४ नख धनलाभ
५ अधरोष्ठ धनऐश्वर्य	१५ पृष्ठ बुद्धिनाश	२५ मुखपर मिष्टान्नभोजन
६ नासिका व्याधिपीडा	१६ जानुओंपर शुभ	२६ टकनोपर बंधन
७ दा. कान आयुष्य	१७ जंघाओंपर शुभ	२७ केशोंपर मरण
८ वायां कान बहुतलाभ	१८ हाथोंपर वस्त्रलाभ	२८दाहों पाव मार्ग चलाना
९ नेत्रोंपर बंधन	१९ कांधोंपर विजय	२९ वामपद बंधुनाश
१० बाहु राजासम	२० नाभिपर बहुधन	३० मध्यपाद स्त्रीनाश

छिपकली अंग.पर गिरे अथवा गिरगट चढै तो सचैल स्नान करके तिल उडद दान दे और ब्राह्मणको दान दे और शिवके नमस्कार करके ११०० शिवमंत्र जपै और शिवके मंदिरमें दीपक घृतको प्रज्वलित करे तो दोषनिवृत्ति होजाय ॥

अंगस्फुरण–मनुः ॥ ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानिअशुभानिशुभानिच॥
सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठत्वंहिसर्वविबुद्धचसे ॥

टी०–मनु मत्स्यप्रति प्रश्न करतेहैं हे धर्म धारियोंमें श्रेष्ठ! शुभाशुभ फल वर्णन कीजिये ॥

अङ्गस्यदक्षिणेभागे प्रशस्तंस्फुरणंभवेत् ॥
अप्रशस्तंतथावामे पृष्ठस्यहृदयस्यच ॥

टीका–अंगस्फुरण दक्षिणभागमें शुभ और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदयमें अशुभ ॥

अङ्गानांस्पंदनंचैव शुभाशुभविचेष्टितम् ॥ तन्मेविस्तरतोब्रूहि येनस्यात्तद्विधोभुवि ॥ ॥ मत्स्य उवाच ॥ ॥ पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्नि ललाटेरविनन्दन ॥ स्थानवृद्धिसमायाति भ्रूनसोःप्रिय-

संगमः ॥ भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्तेधनागमः ॥ उत्कण्ठोपगमेमध्ये दृष्टंराजन्विचक्षणैः ॥ दृग्बन्धनेसङ्गरेच जयंशीघ्रमवाप्नुयात् ॥ योषिल्लाभोपाङ्गदेशे श्रवणान्तेप्रियश्रुतिः ॥ नासिकायांप्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ॥ कण्ठेतुभोगलाभःस्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥ सुहृत्श्रेष्ठश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधनागमः ॥ पृष्ठेपराजयोत्सेधो जयोवक्षस्थलेभवेत् ॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाःप्रजननंभगे ॥ स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अन्त्रे चैवधनागमः ॥ जानुसंधौपरैःसंधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप ॥ एकदेशे भवेत्स्वामी जङ्घाभ्यांरविनन्दन ॥ उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यां प्रस्फुरणेनृप ॥ अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप ॥

टीका–मनु प्रश्न करतेहैं कि अंगके स्थान स्फुरणका विचार शुभाशुभ फल विस्तारसहित वर्णन कीजिये ॥

१	मस्तकस्फुरण	पृथ्वीलाभ हो	१४	दोनों बाहु	मित्रका मिलाप
२	ललाटस्फुरण	स्थानकी वृद्धि	१५	दोनों हाथ	धनप्राप्ति
३	भृकुटीके मध्यमें	प्रियदर्शन	१६	पृष्ठमें	दूसरेसे जय होय
४	नेत्रोंमें	भृत्य मिले	१७	ऊरुमें	जयप्राप्ति
५	नेत्रोंकी कोरोमें	धनप्राप्ति	१८	कुक्षिमें	प्राप्ति होय
६	कंठमध्ये	राजप्राप्ति होय	१९	शिश्नइंद्रि.	स्त्रीप्राप्ति होय
७	दृग्बंधन	युद्धमें जानेसे जय	२०	नाभिमें	स्थानभ्रंश
८	अपांगदेशमें	स्त्रीलाभ होय	२१	आंतोंमें	धनप्राप्ति
९	कर्णांतमें	प्रियमित्रकी सुधि	२२	जानुसंधीमें	बलवानशत्रुओंसें संधि
१०	नासिकामें	प्रीतिसुख होय	२३	जंघाके एकदेश	एकदेशका स्वामीहोय
११	अधरोष्ठ	प्रियवस्तुकी प्राप्ति	२४	पादोंमें	उत्तमस्थानमें मान्यता.
१२	कंठमें	ऐश्वर्यप्राप्ति	२५	तलुओंमें	अलाभ और गमन.
१३	कंधोंमें	भोगवृद्धिप्राप्ति			

स्त्रियोंका अंगस्फुरण।

लाञ्छनं पीठकंचैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा ॥ विपर्ययेणविहितः सर्वे-स्त्रीणांविपर्ययः ॥ दक्षिणेपिप्रशस्तेङ्गं प्रशस्तंस्याद्विशेषतः ॥

टीका-स्त्रियोंका अंगस्फुरण भ्रूमध्यमें तो पुरुषोंहीक समान है परंतु और सब अंग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अंग स्त्रियोंका शुभ कहाहै ॥

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशस्तस्यचनिन्दितस्य ॥ अनिष्टनिद्रोपगमेद्विजानां कार्यंसुवर्णेनतुतर्पणंस्यात् ॥

टीका-हे राजा अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे सुवर्ण दान करे तो अंगस्फुरणका दोष जाता रहे ॥

नेत्रस्फुरण ॥ नेत्रस्योर्ध्वे हरतिसकलं मानसंदुःखजालं नेत्रो-पान्ते दिशतिचधनं नासिकान्तेचमृत्युः ॥ नेत्रस्याधः स्फुरण-मसकृत्सङ्गरेभद्रहेतुर्वामेचैतत्फलमविफलं दक्षिणेवैपरीत्यम् ॥ स्त्रीणांविपर्ययो ॥

टीका-नेत्रोंके ऊर्ध्वप्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण होय तिसका फल कहतेहैं नेत्रके ऊपरका पलक स्फुरण होय तो मनका दुःख जाय और धनकी प्राप्ति होय और नासिकाके निकट स्फुरण होय तो मृत्यु नेत्रके नीचेकी पलकमें स्फुरण होय तो युद्धमें पराजय होय ये सर्वफल वामनेत्रके स्त्रियोंको और दक्षिणके पुरुषोंके नेत्रका विचार जानो ॥

त्रिशूलयंत्र ॥ रोगिणश्चकुजाद्यर्क्षे दिनाद्यर्क्षंचयुद्धतः ॥ कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्ररविदीयते ॥

टीका-रोगीके प्रश्नका त्रिशूल मध्याग्रमें जिस नक्षत्रका मंगल होय तिसको धरे और चंद्रमा जिस स्थानविषे यंत्रमें होय तो फल देवे इस प्रमाणसे आगे फल जानो. युद्धमें जाना होय तो दिवस नक्षत्रसे सूर्य नक्षत्रतक गिने और गमन करना होय तो कृत्तिकासे दिवस नक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंके सूर्य नक्षत्रसे चंद्र नक्षत्र तक इस क्रमसे जाने ॥

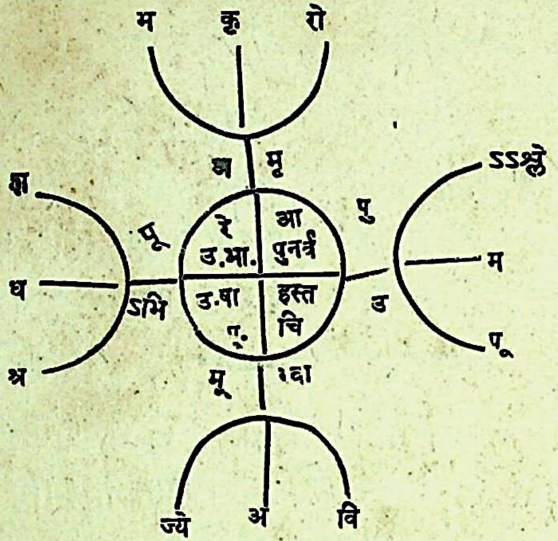

त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमंबहिरष्टकम् ॥
लाभंक्षेमं जयारोग्यं चन्द्रगर्भेषुसंमतम् ॥

टीका—त्रिशूलके अग्रभागमें दिवस नक्षत्र होय तो मृत्यु और बाहिरी अष्टकमें होय तौ मध्यम मध्याष्टकमें होय तौ लाभ क्षेम जय आरोग्य ये सर्व संमत जानिये ॥

गमनकी लग्न ॥ चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ॥ लग्नेस्थिरेनगन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥

टीका—चरलग्न कहिये कर्क तुला मकर ये चार और द्विस्वभाव मिथुन कन्या धन मीन ये चार इन आठोंमें गमन करना शुभफल दायक है और बाकी चार लग्न स्थिर हैं उनमें गमन न करै ॥

दूसरा प्रकार लग्नका ।

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्यविलम्बान्नृणां पञ्चत्वंमकरे तथैव चघटे तद्वत्फलंवृश्चिके ॥ सिंहेकर्कटके वृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यं शुभान्नंवसु ॥

टीका—धन मेष तुला इन तीन लग्नोंमें गमन करे तौ कार्यमें विलंब होय और मकर कुंभ वृश्चिक ये तीन लग्न मृत्युकारक सिंह कर्क वृष इनमें कार्य सिद्ध होय कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभकारक अन्न और धनदायक जानिये ॥

द्वादशस्थानोंके अनुसार गमनलग्नमें ग्रहबल।

प्रथमस्थान ॥ जन्मस्थंचाष्टमंत्याज्यं लग्नेद्वादशमेवच ॥
ग्रहाणांचबलंवीक्ष्य गच्छेदिग्विजयंनृपः ॥

टीका—लग्न और अष्टम और द्वादशमें पापग्रह वर्जिके ग्रहबल देखि गमन करै तौ दिग्विजय और कार्यसिद्धि होय ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्ध्यन्तिकार्याणिचपञ्चमेह्नि ॥
राज्ञःपदंवासुखदेशलाभं मासस्यमध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥

टीका—लग्नमें गुरु अथवा बुध शुक्र होंय तो पांच दिवसमें अथवा एक मासमें राज्यपद सुख किंवा देशलाभ होय ॥

दूसरे स्थानके फल ॥ जीवोबुधोवा भृगुनन्दनोवा स्थानेद्वितीये गमनस्यकाले ॥ सुवस्त्रलाभंचतुरङ्गलाभं मासस्यमध्ये चचतुर्दशेह्नि ॥

टीका—दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होय तौ वस्त्र और तुरंग लाभ एकमास मध्यमें अथवा चौदह दिवसमें होय ॥

क्रूराधनस्था रविराहुभौमाः सौरिश्चकेतुस्त्रिभिरवमासैः ॥
वित्तस्यनाशंचददातिमृत्युं सत्यंहिवाक्यं मुनयोवदंति ॥

टीका—२रे स्थानमें रवि अथवा राहु मंगल शनि केतु इनमेंसे कोईभी क्रूर ग्रह होय तो तीन मासमें मृत्यु और वित्तनाश होय यह मुनीश्वरोंने सत्यवाक्य कहाहै॥

तृतीय स्थानके फल॥ स्थानेतृतीये गुरुभार्गवौच सोमस्यसूनुश्च निशापतिश्च॥ करोतिकार्यसफलंचसर्वं पक्षद्वयेनापिदिनत्रयेण॥

टीका— तृतीयस्थानमें गुरु शुक्र अथवा चंद्र बुध होय तो दो पक्ष अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

चतुर्थ स्थान ॥ क्रूराश्चतुर्थेगमनेयदातु नस्युश्चशेषाःशुभदा हि कार्ये ॥ तत्रापिदैवेन भवेच्चसिद्धिर्मासत्रयेणापिदशाहमध्ये ॥

टीका—क्रूरग्रह जो कहेहैं उनमेंसे काई ग्रह चतुर्थ स्थानमें होय उसे वर्जिके शेष ग्रह होंय वे शुभ परंतु दैवयोग करिके तीन मास वा दसवें दिवसके अंतमें कार्य सिद्ध होय ॥

पंचमस्थान ॥ गुरुर्भृगुश्चन्द्रबुधोयदास्याच्छुभेचलग्नेतुसुतेचयु-
क्ताः ॥ कुर्वन्तिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टांमासद्वयेनापिवदन्तिसत्यम् ॥

टीका—गुरु शुक्र चंद्र अथवा बुध चारों ग्रह पंचमस्थानमें होंय तो शुभ होय और दो मासमें इष्ट कार्य सिद्धि होय ॥

षष्ठस्थान।

जीवश्चशुक्रश्च बुधश्चषष्ठे करोतियात्रां सुफलांविलग्नात् ॥ पक्ष-
द्वयेनापि वदन्ति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्चचन्द्रः ॥

टीका— शुक्र गुरु अथवा बुधमें चारि ग्रह शुभस्थानमें होय तौ यात्रा सफल और मृग नक्षत्रका चंद्रमा उस स्थानमें होय तौ सकल कार्य एक मासमें सिद्ध होंय ॥

सप्तमस्थान।

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वन्तियात्राविजयंनृपाणाम् ॥
सर्वेनृपास्तस्यभवन्तिवश्या मासद्वयेनापिचपञ्चभिर्दिनैः ॥

टीका—सप्तमस्थानमें गुरु अथवा सोम बुध होंय तौ यात्रामें विजय होय और सर्व राजा दो मास वा पांच दिवसमें वशीभूत होंय ॥

अष्टमस्थान।

क्रूराश्चसर्वेयदिलग्नकाले मृत्युस्थितामृत्युकराभवन्ति ॥ सौम्यो
गुरुर्वा भृगुनन्दनश्च दीर्घायुषंमृत्युकरश्चचन्द्रः ॥

टीका—क्रूर कहिये शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें होंय तौ मृत्युकारक और ये न होंय सौम्यग्रह होंय तौ आयुष्यकी वृद्धि परंतु चंद्र होंय तो मृत्युकारक जानिये ॥

नवमस्थान।

धर्मेस्थितायदिभवन्तिहिपापखेटाः प्रयाणकालेचतथैवचन्द्र-
माः ॥ तदाजयंवैसबलेचचन्द्रे मासत्रयेणापिदिनैश्चतुर्भिः ॥

टीका—नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्र होय और चंद्र सबल होंय तौ तीन मास वा चार दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

धर्मेस्थितौवायदिजीवशुक्रौ सोमस्यसूनुर्यदिलग्नकाले ॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा कार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः ॥

टीका–धर्म स्थानमें गुरु शुक्र अथवा सोम बुध ये ग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें स्थित होंय तो कार्यसिद्धि और लाभ होय ॥

कर्मस्थान।

कर्मस्थिताःपापखगास्तुसौम्याः कुर्वन्तिकार्यंशनिवर्जिताश्च ॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा मासत्रयेणापिचचैकमासः ॥

टीका–दशमस्थानमें शनि आदिके पापग्रहोंको छोडके सौम्य ग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें होय तो उक्त तीन मासमें अथवा एक मासमें कार्यसिद्धि होंय ॥

लाभस्थान।

लाभस्थितौगुरुबुधौभृगुनन्दनोवा क्रूराश्चसर्वेशशिनैवयुक्ताः ॥
सद्यःफलाप्तिश्चभवेद्धियात्रा पक्षैकमध्येदिवसत्रयेच ॥

टीका–एकादशस्थानमें रविको आदिले पापग्रह चंद्रसहित अथवा गुरु आदिले सौम्यग्रह होंय तौ एक पक्षमें वा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होंय ॥

व्ययस्थान।

सर्वेशुभाद्वादशसंस्थिताश्च यात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः ॥
पापाश्चसर्वेव्ययदाभवन्ति यात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतम् ॥

टीका–द्वादश स्थानोंमें सर्वग्रह शुभ होंय तो विचित्र लाभ होय और पापग्रह होंय तौ व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनिने कहाहै ॥

प्रस्थानरखना।

सुमुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यम् ॥ श्लोक ॥ ॥ यज्ञोपवीतकंशस्त्रं मधुचस्थापयेत्फलम् ॥ विप्रादिकमतःसर्वं स्वर्णधान्याम्बरादिकम् ॥

टीका–मुहूर्तके समय जो किसी कार्यवशसे आप न जासके तो प्रस्थान करना योग्य है उसकी विधि ब्राह्मणादिक अनुसार कहते हैं ब्राह्मण यज्ञोपवीतका और क्षत्रिय शस्त्रका वैश्य मधुका और शूद्र फलका प्रस्थान करै इस क्रमसे जानिये और सुवर्ण वस्त्र धान्य सर्वोंको युक्त है ॥

प्रस्थान कितने दिवसतक उपयोगी होय।

राजादशाहंपश्चाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत् ॥
अङ्गप्रस्थानसंपूर्णं वस्तुप्रस्थानकेर्द्धकम् ॥

टीका–राजाओंको प्रस्थान करनेपर दश दिवस औरोंको पांच दिवस तक मुहूर्त उपयोगी रहताहै परंतु वस्तुप्रस्थानमें आधा फल जानिये और अंगके प्रस्थानमें पूर्णफल जानिये ॥

प्रस्थानके स्थानका विचार।

गेहाद्गेहान्तरंगर्गः सीम्नःसीमान्तरंभृगुः ॥ बाणक्षेपंभरद्वाजो व-
सिष्ठोनगराद्बहिः ॥ प्रस्थानेपिकृतेनोयान्महादोषान्वितेदिने ॥

टीका–गर्गजीके मतसे दूसरे घरमें और भृगुके मतसे सीमाके बाहर तथा भरद्वाजके मतसे बाणके पतन स्थानमें अर्थात् जितना तीर जाताहै और वसिष्ठके मतसे नगरके बाहर प्रस्थान करै तिसपरभी महादोष युक्त दिवसमें यात्रा न करे॥

प्रस्थानदिवसमें वर्ज्य पदार्थ।

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासवक्षाराभ्यङ्गभयासि-
ताम्बरवमिस्तैलंकटूज्झेद्गमे ॥ क्षीरक्षौररतीःक्रमात्र्यङ्गरसमा-
हंपरंतद्दिनेरोगंस्यात्तवकंसितान्यतिलकं प्रस्थानकेपीतिच ॥

टीका–कोप क्षौर स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड द्यूत रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्य विषयक भय श्वेतवस्त्र गमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थान दिन वर्जित है तिनमें दूध क्षौर स्त्रीसंग ये क्रमसे ३।५।७ दिवस प्रस्थान दिनसे पहिले वर्जित है ॥ शेष और कहीं हुई वस्तु केवल प्रस्थान दिनमें वर्जित है और श्वेतसे भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्णआदि तिलक और रोगविषयक चिंताभी प्रस्थानके दिन वर्जित है ॥

मात्स्योक्त दुष्टशकुन कहतेहैं।

ओषध्याचनियुक्तोहि धान्यंकृष्णंतुयद्भवेत् ॥
कार्पासश्चतृणंशुष्कं शुष्कंगोमयमेवच ॥

टीका–औषधी युक्त मनुष्य, कालाधान्य, कपास, सूखातृण अर्थात् भूसा इत्यादि वस्तु उपला ये प्रस्थान समय आगेसे आवै तो अशुभ जानिये ॥

इन्धनंचतथाङ्गारं गुडंसर्पिस्तथाशुभम् ॥
अभ्यक्तोमलिनोमन्दस्तथानग्नश्चमानवः ॥

टीका-ईंधन भस्म गुड घी दुष्टपदार्थ तैल लगानेसे मलिन मंद नग्नमनुष्य ये अशुभ जानिये ॥

मुक्तकेशोरुजार्तश्च काषायाम्बरधारिणः ॥
उन्मत्तःकथितोसत्वो दीनोवाथनपुंसकः ॥

टीका-खुले केशयुक्त मनुष्य रोगी गेरुआ वस्त्र पहिने मनुष्य, उन्मत्त कंथा युक्त पुरुष, पापी पुरुष, दीन अथवा नपुंसक येभी अशुभ शकुन जानिये ॥

अयःपङ्कस्तथाचर्म केशबन्धनमेवच ॥
तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादितथैवच ॥

टीका-लोहेका खंडकी चर्म केश बांधता हुआ मनुष्य, जिनके सार निकल लिये गयेहैं ऐसे पदार्थ, और पिण्याक येभी अशुभ जानिये ॥

चाण्डालस्यशवंचैव राजबन्धनपालकाः ॥
वधकाःपापकर्माणो गर्भिणीस्त्रीतथैवच ॥

टीका- चंडालप्रेत बंधुओंके रक्षक वधकर्ता पापी पुरुष गर्भिणी स्त्री येभी अशुभ जानिये ॥

तुषंभस्मकपालास्थि भिन्नभाण्डानियानिच ॥ रक्तानिचैवभाण्डा-
निमृतसारङ्गएवच ॥ एवमादीनिचान्यानिह्यप्रशस्तानिदर्शने ॥

टीका-तुष भस्म कपाल अस्थि रीते वा फूटे बर्तन, मराहुआ सारंगपक्षी ये गमनकालमें हानि कारक हैं ॥

क्वयासितिष्ठआगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु ॥
अन्यशब्दाश्चयेनिष्टास्तेविपत्तिकराआपि ॥

टीका-कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जानेसे तुमको क्या होगा ये तथा औरभी अनिष्ट शब्द विपत्तिकारक होते हैं ॥

ध्वजादौवायसास्थानं क्रव्याद्दानंविगर्हितम् ॥
स्खलनंवाहनानांच वस्त्रसङ्गस्तथैवच ॥

टीका-ध्वजा वा पताकाके ऊपर काक बैठे अथवा अग्निदान और वाहनोंको गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष येभी अशुभ जानिये ॥

दुष्टशकुन दोष निवारण ।

दुष्टेनिमित्तेप्रथमे अमङ्गल्यविनाशनम् ॥
केशवंपूजयेद्विद्वान् स्तवेनमधुसूदनम् ॥

टीका–यात्रासमयमें ऊपर कहेहुए अपशकुनोंमेंसे जो प्रथम अमंगल दृष्टि आवै तौ नाशकारक होय इसके निवारणके लिये विष्णुकी पूजा और मधुसूदनके स्तोत्र पाठ करावै ॥

द्वितीयेचततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्गृहम् ॥
अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मङ्गलानितथानघ ॥

टीका–जो दूसरी वारभी अशुभ शकुन दृष्टि आवैं तौ घरमें प्रवेश करै इसके वाद मंगलकारक शकुन कहतेहैं ॥

गमनकालमें उत्तम शकुन ।

प्रशस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवास्तथा ॥ पुरतःशब्दएहीति शस्यतेनतुपृष्ठतः ॥ गच्छेतिचैवपश्चाद्यः पुरस्ताद्धुविगर्हितः ॥

टीका–गमन कालके शुभ शकुन कहतेहैं वाजनोंके शब्द भेरी अर्थात् नकारोंका शब्द और आओ यह आगेसे होय तो शुभ और पृष्ठ भागमें अशुभ और जाओ यह शब्द पीठपीछे होय तो शुभ और आगे होय तो अशुभ जानिये॥

श्वेताःपुष्पाःसुमनसःपूर्णकुम्भस्तथैवच ॥
जलजाःपक्षिणश्चैव मांसंमत्स्यस्यपार्थिव ॥

टीका–बडे बडे श्वेतपुष्प पूर्ण कुंभ जलके पक्षी मत्स्यका मांस ये शुभ जानिये॥

गावस्तुरङ्गमोनागो वृद्धएकःपशुस्त्वजा ॥
त्रिदशासुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः ॥

टीका–गाय, तुरंग, हस्ती, वृद्ध, एकपशु, बकरी, देवता, मित्र, ब्राह्मण, जलता अग्नि ॥

गणिकाचमहाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्चगोमयम् ॥
रुक्मंरौप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ ॥

टीका–गणिका हरितदूर्वा गोवर सोना रूपा तांवा और सर्वरत्न ये शुभ जानिये ॥

औषधानिचसर्वज्ञा यवाःसर्वार्थकास्तथा ॥
खड्गपात्रंपताकाच मृत्तिकायुधपीठकम् ॥

टीका–औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव श्वेत सरसों खड्गपात्र पताका मृत्तिका आयुध आसन ये शुभ ॥

राजलिङ्गानिसर्वाणि शवंरुदितवर्जितम् ॥
घृतंदधिपयश्चैव फलानिविविधानिच ॥

टीका–समस्त राजचिन्ह रोदन रहित मृतक घृत दधि दूध नानाप्रकारके फल॥

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्तःसकौस्तुभः ॥
वादित्राणांशुभःशब्दो गम्भीरःसुमनोहरः ॥

टीका–आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभ मणिके साथ नंद्यावर्त्तमणि वाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशक हैं॥

गान्धारषड्जऋषभा येगीताःसुस्वराःस्वराः ॥
वायुःसशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥

टीका–गांधार षड्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाये स्वर सुंदर मीठा पवन अथवा उष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्द्विजः ॥
अनुकूलोमृदुःस्निग्धःसुखस्पर्शःसुखावहः ॥

टीका–वर्णसंकर मनुष्य तैसेही नीच मुसलमानादिक ब्राह्मण बडा भयंकर होतेहैं अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे और सुखस्पर्श मनुष्यादिक सुखकारी होतेहैं॥

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसःप्रियम् ॥
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम् ॥

टीका–हे धर्मज्ञ ! ऊपर कहे हुये शकुन शुभ जानिये और जो अपने मनको प्यारी वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम और तुष्टीकारक तथा जयदायक जानिये॥

चित्तोत्सवत्वं मनसःप्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ॥
माङ्गल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञां ज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि ॥

टीका–यात्रासमयमें मनमें हर्ष शुभ तथा लाभकारक विजयवाद औ मंगलप्राप्तिका श्रवण शुभ जानो ॥

क्षेमंकरानीलकण्ठाः श्वोलूकखरजम्बुकाः ॥ प्र-
स्थाने वामतःश्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाःशुभाः ॥

टीका—मयूर कुत्ता उलूकपक्षी गर्दभ जंबुक, प्रस्थान समय वामभागी होय तो गमनमें शुभ और प्रवेश समय दक्षिण भागमें शुभ जानिये ॥

अथ शिवद्विघटीमुहूर्ताः।

देव्युवाच ॥ श्रीशंभोप्राणनाथेश वदमेकरुणानिधे ॥ त्रिपुरस्यवधेप्रोक्ता मुहूर्तायेशुभप्रदाः ॥ भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ॥ यातुरर्थप्रदंब्रूहि करुणाकरसुन्दर ॥ ईश्वर उवाच॥शृणुदेविप्रवक्ष्यामि ज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम् ॥ ज्योतिःसारस्ययत्सारं देवानामपिदुर्लभम् ॥ नतिथिर्नचनक्षत्रं नयोगंकरणंतथा ॥ कुलिकंयमयोगंच नभद्रानचचन्द्रमाः ॥ नशूलयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः ॥ व्यतीपातेच संक्रान्तौ भद्रायामशुभेदिने ॥ शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ कदाचिच्चलतेमेरुःसागरश्चमहीधरः ॥ सूर्यःपततिवाभूमौ वह्निर्वा यातिशीतताम् ॥ निश्चलश्चभवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ॥ तत्रादौकथयिष्यामि मुहूर्तानिचषोडश ॥ गुणत्रयप्रयोगेनचलन्त्येवअहर्निशम् ॥ अथषोडशमुहूर्त्तम् ॥ रौद्रंश्वेतंतथामैत्रंचार्वटंचचतुर्थकम् ॥ पञ्चमोजयदेवश्च षष्ठंवैरोचनंतथा ॥ तुरगादिकंसप्तमंच तथाष्टौचाऽभिजित्तथा ॥ रावणंनवमंप्रोक्तं बालवंदशमंतथा॥ बिभीषणंरुद्रसंज्ञं द्वादशंचसुनन्दनम्॥ याम्यंत्रयोदशंज्ञेयं सौम्यंज्ञेयंचतुर्दशम् ॥ भार्गवंतिथिसंज्ञंच सविताषोडशंभवेत् ॥ अथकार्यमुहूर्त्तम् ॥ रौद्रेरौद्रतरंकार्यं श्वेतेकुञ्जरबन्धकः ॥ स्नानदानादिकंमैत्रे चार्वटेस्तम्भनं भवेत् ॥ कार्यंजयदेवसंज्ञे सर्वार्थकरमुच्यते ॥ तद्वैरोचनसंज्ञकेप्रभवति पट्टाभिषकंक्रमात् ॥ ज्ञात्वैवंतुरदेवतानिविदिते शस्त्रादिकंसाधयेत् ॥ सत्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ रावणेसाधयेद्वैरं युद्धकार्यंचबालवे ॥ बिभीषणंशुभंकार्यं यन्त्रकार्यंसुनन्दने ॥ याम्येभवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्येस-

भायांनृपवेशनंस्यात् ॥ स्त्रीसेवनंभार्गवकेमुहूर्त्ते सावित्रिनाम्निप्रपठेत्सुविद्याम् ॥ अथमुहूर्तोदयंवारपरत्वेन ॥ उदयेरौद्रमादित्ये मैत्रंसोमेप्रकीर्तितम् ॥ जयदेवंकुजोवारे तुरदेवंबुधे तथा ॥ रावणंचगुरौज्ञेयं भार्गवेचविभीषणम् ॥ शनौयाम्यंमुहूर्त्तंच दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ अथमुहूर्त्ताङ्गत्वेनगुणोदयम् ॥ गुरुसोमदिनेसत्वं रजश्चाङ्गारकेभृगौ ॥ रवौमन्देबुधेचैव तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ सत्यंगौरंरजश्श्यामं तामसंकृष्णमेवच ॥ इमंवर्णंविजानीयात्सत्त्वादीनांयथोदितम् ॥ अथसत्वादिगुणानांफलं ॥ सत्वेनसाधयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदाम् ॥ तमसासाधयेन्मोक्षं इतिज्ञेयंसदाबुधैः ॥ सत्त्वेरजसिसत्कार्यमथवा शुभमेवच ॥ तमसाछेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ अथ मुहूर्त्ताङ्गत्वेनरेखाज्ञानम् ॥ शून्यंनभःखादिभिरेववर्णैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युंतथापादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ अमृतश्चोर्ध्वैरेखैका कालरेखात्रयंभवेत् ॥ विघ्नमावर्त्तकंतत्र शून्येशून्यमितिक्रमात् ॥ अथरेखाफलम् ॥ शून्येनैवभवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तकेभवेत् ॥ कालरेखामृत्युकरी सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥ धनुर्मीनकर्कटानां घातसत्वेविनिर्दिशेत् ॥ तुलालिवृषमेषाणां घातोरजसिनिश्चितम् ॥ कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्यमकरस्यच ॥ घातस्तामसवेलायां विपरीतंशुभावहम् ॥ धनुःकर्कटमीनाख्या गौरवर्णःक्रमोदितः ॥ वृषेमेषतुलायांच वृश्चिकेश्यामवर्णता ॥ मिथुनेमकरेकुम्भे कन्यासिंहेचकृष्णता ॥ गौरश्चम्रियतेसत्त्वे श्यामवर्णोरजोगुणे ॥ कृष्णस्तामसवेलायां म्रियतेनात्रसंशयः ॥ यस्मिन्वर्षेभवेन्मासो गौणाधिक्यस्तथाक्षयः ॥ मासेनगृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थसाधने ॥ माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखेश्रावणेतथा ॥ नभस्थे मासवाराणां मुहूर्त्तानियथाक्रमात ॥ रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानं शिवायैरुद्रयामले ॥ गोपनीयंप्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥

रवौनभः केशवविघ्नराजौ गोविन्दनामानभ आखुगामी ॥ रात्रौ नृसिंहौयुगलं नभोयत्लक्ष्मीशलम्बोदररामसंज्ञौ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	८	८	६	६	०	[illegible]	८	८	८	६	६	६	६	८	८	०

सोमेहरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ ॥ एवंनिशायांखखविष्णुशून्यंयुग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	६	६	६	६	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
[illegible]	०	०	८	८	०	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६	०

भौमेयमौमारमणोऽथयुग्मंयुग्मेहरिश्चैव गजाननश्च ॥ नक्तं च विघ्नंद्विपदोर्मुकुन्दपदत्रयं श्रीपतिखंनभः श्रीः ॥

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	[illegible]	[illegible]	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	६	६	६	६

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	[illegible]	[illegible]	८	८	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८	८	०	०	०	०

बुधेधनुः कृष्णयमौ च शौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ॥ रात्रौसुपर्णध्वज एवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुञ्जरास्यौ ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	६	६	८	८	[illegible]	[illegible]	३	८	८	६	६	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	८	८	८	८	६	६	०	८	८	८	८	६	६	६	६	०

गुरौगोपिनाथस्तथाविघ्नराजोनभः केशवःकुञ्जरारयस्तथैव ॥ निशायांपदंनन्दजः सूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकंहरिश्च ॥ ३८ ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	b	b	b	b	६	६	६	६	०	b	b	b	६	६	६	६

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	b	b	b	👣	👣	👣	👣	०	b	b	b	६	६	b	b	०

शुक्रेकृष्णेस्याधमः खंमुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिःशून्यमेकम् ॥ नक्तंकालःकेशहाखंच युग्मंपादद्वन्द्वोवामनः खंचपादौ॥ ३९॥

शुक्र	नि	त	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	त	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	b	b	👣	👣	०	b	b	b	६	६	६	६	b	b	b	०

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
👣	👣	b	b	b	६	६	👣	👣	b	b	b	b	०	👣	👣	०

शनौपदःश्रीः खनभोनभःखंनारायणौ नाहरिखंहरिश्च ॥ रात्रौचशून्यं यमयुग्ममाधवौखविघ्नराजौनृहरिश्चपादौ ॥ ४० ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	ग	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	👣	b	०	०	०	०	b	b	b	b	०	b	b	०	b	b

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	👣	👣	b	b	b	०	६	६	६	६	b	b	b	👣	👣	०

तथाश्विने कार्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तयोगाः ॥ नामाक्षराणां प्रचनं प्रवृत्त्याविचारपूर्वंविबुधैर्विचिन्त्यम् ॥ ४१ ॥

सूर्येनृसिंहोद्विपदं च चापोहरिर्नभः खेपदमच्युतोऽङ्घ्रिः ॥ रात्रौपदंचापखमच्युतं चयुग्मंयमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ४२ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	b	b	b	👣	👣	६	६	b	b	०	०	👣	b	b	b	👣

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
👣	६	६	०	b	b	b	६	६	६	👣	👣	b	b	b	b	०

सोमेऽग्निचापंस्वनभो मुकुन्दोनभश्वयुग्मंहरिखंहरिश्च ॥ पदंनिशायांखयुगंमुरारिविनायकौविष्णुनभश्वविष्णुः ॥ ४३ ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	मै	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	🦶	६	६	०	०	८	८	८	०	६	६	८	८	८	८	८

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	ग	सौ	भा	मा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र		त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
🦶	६	६	०	८	८	८	६	६	६	६	८	८	०	८	८	०

भौमेमहेभाग्यनभोऽथ विष्णुंनभोयुगंगोपतिखंगणेशः ॥ नक्तंगजेन्द्रास्य खमच्युतंचयुग्मंचशून्यं नृहरिश्चयुग्मम् ॥ ४४ ॥

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	ग	त	न	स	स	र	र	त	त	स	स	र	ग	त	त
०	६	६	६	६	०	८	८	०	६	६	८	८	८	०	६	६

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	म	र	र	त	त	म	स	र	ग	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	८	८	८	६	६	०	८	८	८	६	६	०

बुधेधनुःश्रीपतिपादयुग्मंनारायणःस्याद्गणनाथसिद्धिः ॥ रात्रौतुकालौहरिशून्यकालौगोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥ ४५ ॥

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	गै	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स		र	त	त	स	स
०	६	६	८	८	८	🦶	🦶	८	८	८	६	६	६	६	८	८

अ	ग	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
🦶	🦶	८	८	०	🦶	🦶	८	८	८	६	६	६	६	०	८	०

गुरौहरिःशून्ययुगंसुरेशः श्रीविघ्नराजोगगनंतथाश्रीः ॥ निशांघ्रिदैत्यारिखकार्मुकंच पदेमुरारिःखयुगंपुनःश्रीः ॥ ४६ ॥

गुरु	ग	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	गै	श्वे	मे	च	ज	वै	तु	अ
दिन	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	त	त	र	र
०	८	८	०	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६	०	०	८

वा	वि	सु	ग	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	त	प	रात्रौ
🦶	८	८	८	०	६	६	🦶	🦶	८	८	८	०	६	६	८	०

शुक्रेऽमृतंचापमरिन्दमश्वलम्बोदरःकेशवशून्यपादम् ॥ नक्तंचयुग्मं नृहरिःखयुग्मं नृसिंहयुग्मं गगनंचयुग्मम् ॥ ४७ ॥

शुक्र	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	म	स	र	र	त	त	स	म	र	र	त	त
०	८	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	०	पाद

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	०	६	६	८	८	८	६	६	०	६	६	०

शनौपदंश्रीर्ननभोनकृष्णः खंश्रीपदंविष्णुनभोहरिःपदं ॥ रात्रौपदेखंपदनन्दसूनुर्गजाननोगोपतिशून्यपादः ॥ ४८ ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
८	पाद	८	०	०	०	८	८	०	पाद	पाद	८	८	८	८	८	पाद

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
पाद	०	पाद	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	८	पाद	०

३ चक्रं ॥ ज्येष्ठेमासेतथाषाढे तथैवचमलिम्लुचे ॥ सूर्यादिवारे संशोध्यमुहूर्तानिक्रमादिह ॥ ४९ ॥

अर्केसूर्येचकृष्णोयुगपदयुगलंखंहरिर्विष्णुचापम् ॥ रात्रौ शल्मीशयुग्मंयुगलहरियुगंयुग्मकृष्णंत्रिशून्यम् ॥

रवि	गौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	न	त	स	स
०	०	०	८	८	६	६	पाद	०	६	०	८	८	८	८	६	६

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	८	८	६	६	६	६	८	८	६	६	६	६	८	८	०	०

सोमेचापेद्वयंनो नृहरिखयुगलंपीतवासश्च शून्यंचापद्वन्द्वंनिशायामजखपदमजश्चापपद्मेशपादम् ॥ ५० ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	६	६	६	६	०	८	८	८	०	६	६	८	८	८	८	०

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	गौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
६	६	६	६	८	८	पाद	८	पाद	८	६	६	६	६	८	पाद	०

भौमेशून्येचक्रकृष्णोयुगगगनहरिश्श्रोणिचापानिसिद्धिः ॥ नक्तयुग्मंद्विशून्यंयुगलयुगपदंश्रीखचापंहरिश्च ॥

भौम	ज	बै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	०	०	८	८	६	६	०	८	८	६	६	६	६	६	६	८

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	६	६	६	६	[illegible]	८	०	६	६	८	८	०

सौम्येश्रीविघ्ननाथोथहरिगणपतिःपद्मनाभश्चपादः ॥ दोषायांसिद्धियुग्मंहरिस्वगजमुखाकृष्णशून्येचकृष्णः ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	८	८	८	८	[illegible]

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुधे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	६	६	६	६	८	८	०	०	८	८	०

जीवेविष्णुश्चचापोगगनभजितखमंघ्रियुग्मंनृसिंहः ॥ रात्रौनोखंमुरारिर्गगनयुगनजोविष्णुचापोंघ्रियुग्मम् ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	६	६	०	८	८	८	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	०	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	[illegible]	[illegible]	०

शुक्रेयुग्मेमुरारिर्गगनयुगलजोविष्णुचापांघ्रियुग्मम् ॥ तत्रादौयुग्मगोपीपतियुगगगनंश्रीवरः खंपदश्रीः ॥

शुक्र	वि	सु	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	[illegible]	[illegible]

सु	वा	सौ	भा	सा	रा	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	८	६	६	०	८	८	८	८	[illegible]	[illegible]	८	०

मन्देश्रीयुग्मासिद्धिःस्वहरिहरिनभःशौरिखांसिद्धिखंवा ॥ नक्तंश्रीयुग्मासिद्धिःस्वगयुगलहरिर्व्योमगोविन्दशून्यम् ॥

शनि	या	सो	भा	सा	रौ	श्व	मै	चा	ज	वे	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिंने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	०

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	अ	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	०	६	६	८	८	०	८	८	८	०	०

अथ चौपहरा मुहूर्त श्रीमुछंदर गोरखनाथकृतयात्रानिमित्तारम्भः ॥ तृतीया त्रयोदशीका फल १ चौथ चतुर्दशीकाफल १ पंचमी पूर्णिमाका फल १ अमावास्याकेदिन गमन न करै । मूल काम अच्छानकरे । कृष्ण वा शुक्लपक्षकी तिथिको फल १ जिस मासकी तिथिको जायतौ अपने चित्तसे गमनकरै-चंद्रमाको बल भरणी भद्रा दिशा शूल योगिनी काल वास तिथिघात नक्षत्रघात चंद्रमाघात व्यतीपात कल्याणी संक्रांतिअनेक कुयोगके दोष न होंगे यह गोरक्षनाथने कहा है जो तिथि साधिके यात्रा करैगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्यसिद्धि करिके आवेगा ॥ शुभम् ॥

पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वैशा	ज्येष्ठ	आषा	श्राव	भाद्र	आ.	का.	मार्ग	प्रथमप्रहर	द्वितीयप्र.	तृतियप्रहर	चतुर्थप्रहर	ति.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अर्थलाभ	सौख्य.	अतिसुख	राजपद	१	सुख	क्लेश	शुभ	गमनार्थ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भलानहो.	क्लेश	विघ्नहोय	अतिसुख	२	दुःख	निष्ट	विघ्न	मध्यम
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थप्राप्ति	राजपद	अतिसुख	विघ्नहो	३	द्रव्यक्ले	दुःख	अर्थप्राप्त	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेशहोय	अशुभ	कार्यसिद्ध	अतिभय	४	लाभ	सुख	मंगल	धनलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अर्थलाभ	मित्रलाभ	शत्रुभय	कार्यसिद्ध	५	लाभ	धनला.	धनागम	सुखहाय
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	संकटहोय	क्लेश	सर्वसुख	कर्जदना	६	शून्य	लाभ	मित्रलाभ	अर्थगव
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	विलंबहो	अर्थप्राप्ति	यमघंट	सर्वसुख	७	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुखप्राप्त
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यमघंट	अशुभ	सर्वसुख	यमघंट	८	कष्ट	सुख	क्लेश	सौख्य
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थलाभ	अशुभ	सुखसेआ	सर्वसुख	९	सुख	लाभ	कार्यसिद्ध	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	चिंताव्या.	चिंताहोय	कार्यसिद्ध	सुखसेआ	१०	क्लेश	दुःख	अर्थगवन	धनप्राप्त
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विग्रह	विघ्नहोय	सुखपावे	सुखप्राप्त	११	मृत्यु	लाभ	द्रव्यनाश	मृत्युप्रद
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मृत्यु	मृत्यु	अशुभ	कार्यसिद्ध	१२	सुख	मृत्यु	अशुभ	कष्टप्रद

अथ गोरक्षकमतेन तिथिचक्रम् ।

फलञ्च ॥

मासेशुक्लादिकेपौषे तिथिःप्रतिपदादितः ॥ द्वितीयाद्यास्तुमाघेस्युस्तृतीयाद्यास्तुफाल्गुने ॥ एवंचान्येषुमासेषु तिथ्योद्वादशसंज्ञकाः ॥ लेख्याश्चक्रेत्रयोदश्यां संविहायतिथित्रयम् ॥ तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिकेफलम् ॥ यानेप्राच्यादिकाष्ठासु वक्ष्येद्वादशधाक्रमात् ॥ सौख्यंशून्यंधनार्तिश्च लाभोलाभंभयंधनम्॥कष्टंसौख्यंकलिर्मृत्युः शून्यंप्राच्यांफलंक्रमात्॥ क्लेशोनैःस्वंव्यथासौख्यं द्रव्याप्तिर्लाभपीडनम्॥ सौख्यंलाभःकष्टसिद्धिर्लाभःसौख्यंतुदक्षिणे ॥ भयंनैःस्व्यंप्रियाप्तिश्च भयद्रव्यं मृतिर्धनम् ॥ क्लेशाल्लाभोर्थसिद्धिःस्वं लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ॥ धनंमिश्रंधनंलाभः सौख्यंलाभःसुखंसुखम् ॥ कष्टंद्रव्यत्वशून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥

यथाचक्रम् ।

पौ.	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा.	आ	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व्य	नैःस्व.	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लं ।	दुःख	प्रिया.	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	भय	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्र.प्रा.	धनप्रा.	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्र.ला.	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टं	सौख्यं	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का.सि.	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टांग	अर्थसि.	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्य	लाभ	द्र.ला.	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्यं	मृत्यु	कष्टं

अथ आनन्दादिशुभाशुभयोग।

सूर्येश्विभात्तुहिनरोचिषिचन्द्रधिष्ण्यात्सार्पाच्चभूमितनयेथबुधेचहस्तात् ॥ मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदेवाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशःस्युरेवम् ॥ आनन्दः कालदण्डश्च धूम्राख्योथप्रजापतिः ॥ सौम्योध्वाङ्क्षो ध्वजोनामा श्रीवत्सोवज्रमुद्गरः ॥ छत्रंमैत्रोमानसश्च पद्माख्योलम्बकस्तथा ॥ उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सिद्धिश्चैवशुभोमृतः॥ मुसलोथगदाख्यश्च मातङ्गोराक्षसश्चरः ॥ स्थिरःप्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिःक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ आनन्देलभतेसिद्धिं कालदण्डेमृतितथा ॥ धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापतौ ॥ सौम्येचैवमहत्सौख्यं ध्वाङ्क्षेचैवधनक्षयम् ॥ ध्वजनाम्निचसौभाग्यं श्रीवत्सेसौख्यसंपदः ॥ वज्रेक्षयोमुद्गरेच श्रीनाशस्तुतथैवच ॥ छत्रेचराजसन्मानं मैत्रेपुष्टिर्नसंशयः ॥ मानसेचैवसौभाग्यं पद्माख्येचधनागमः ॥ लम्बकेधनहानिश्च उत्पातेप्राणनाशनम् ॥ मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणेचक्लेशमादिशेत् ॥ सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिः शुभेकल्याणमेवच ॥ अमृतेराजसन्मानो मुसलेचधनक्षयः ॥ गदाख्येचाक्षयाविद्यामातङ्गेकुलवर्द्धनम् ॥ राक्षसेतुमहत्कष्टं चरेकार्यंचसिद्ध्यति ॥ स्थिरयोगेगृहारम्भः प्रवृद्धेपाणिपीडनम् ॥

	आनंदादि	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	फल
१	आनंद	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	सिद्धि
२	काल	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्यु
३	धूम्र	कृ.	पु.	पु.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	अशुभ
४	प्रजापति	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	सौभाग्य
५	सौम्य	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	अधिकसौ.
६	ध्वांक्ष	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	धनक्षय
७	ध्वज	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	सौख्य
९	वज्र	आ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	क्षय
१०	मुद्गर	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	लक्ष्मीना.
११	छत्र	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	राजसन्मान
१२	मैत्र	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टि
१३	मानस	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	सौभाग्य
१४	पद्म	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	धनप्राप्ति
१५	लुंबक	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	धन हानि
१६	उत्पात	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	मृत्यु
१८	काण	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेश
१९	सिद्धि	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	कल्याण
२१	अमृत	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	राजसन्मान
२२	मुशल	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	धनक्षय
२३	गदा	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	अक्षयविद्या
२४	मातंग	ध.	रे.	रो.	पु	उ.	वि.	पू.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	उ.	महाकष्ट
२६	चर	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	गृहारम्भ
२८	प्रवर्द्धमान	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	लग्न

टीका–आनंदादियोग अठाईस हैं तिनमें एक १ योगका ७ वार और ७ नक्षत्र तिनका क्रम ऐसे जानिये रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलवारको आश्लेषा, बुधवारको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको उत्तराषाढा, शनिवारको शततारका, इनवारोंमें नक्षत्रोंका संयोग होय तो आनंदादिक यो-

ग जानिये ऐसे अट्ठाईस योगोंका क्रम पीछे लिखा है ॥

चरयोग।

रवौपूषागुरौपुष्यः शनौमूलंभृगौमघा ॥ सौम्येब्राह्म्यं विशा भौमे चन्द्रेर्द्राचरयोगकः ॥ ॥क्रकचयोग ॥ ॥ रवौतुद्वादशी प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ॥ चन्द्रेचैकादशीप्रोक्ता नवमीबुधवासरे ॥ शुक्रेचसप्तमीज्ञेया शनौचैवतुषष्ठिका ॥ गुरौचाष्टमिकाज्ञेयो योगस्तुक्रकचोबुधैः ॥ ॥ दग्धयोग ॥ ॥ बुधेतृतीया कुजपञ्चमीच षष्ठ्यांगुरावष्टमीशुक्रवारे ॥ एकादशीसोमशनिर्नवम्यां द्वादश्यमर्कामितिदग्धयोगः ॥ ॥ मृत्युदा ॥ ॥ रवौभौमेभवेन्नन्दा भद्राजीवशशाङ्कयोः ॥ जयाशुक्रेबुधेरिक्ता शनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ ॥ सिद्धियोग ॥ ॥ शुक्रेनंदाबुधेभद्रा जयाभौमेप्रकीर्तिता ॥ शनौरिक्तागुरौपूर्णा सिद्धियोगाउदाहृताः ॥ ॥ उत्पातादियोगाः ॥ ॥ विशाखादिचतुष्कंतु भास्करादिक्रमेणतु ॥ उत्पातमृत्युकालाख्यासिद्धियोगाःप्रकीर्तिताः ॥ ॥ यमदंष्ट्रयोग ॥ ॥ मघाधनिष्ठासूर्येतु चन्द्रेमूलविशाखके ॥ कृत्तिकाभरणीभौमे सौम्येपूषापुनर्वसुः ॥ गुरौपूषाश्विनीशुक्रे रोहिणीचानुराधिका ॥ शनौविष्णुःशतभिषग् यमदंष्ट्रःप्रकीर्तितः ॥ ॥ यमघण्ट ॥ ॥ रवौमघाबुधेमूलं गुरौ चैवचकृत्तिका ॥ भौमेचार्द्राशनौहस्तः शुक्रेचैवतुरोहिणी ॥ चन्द्रेविशाखायोगोऽयं यमघण्टःप्रकीर्तितः ॥ ॥ मुसलवज्रयोग॥ चन्द्रेचित्राभृगौज्येष्ठा शनौचैवतुरेवती ॥ चान्द्रजेतुधनिष्ठोक्ता रवौतुभरणीतथा ॥ उषाश्चैवतुभौमेच गुरौचैवोत्तरातथा ॥ अयंमुसलवज्राख्ययोगोवर्ज्यःशुभेबुधैः॥ ॥ अमृतसिद्धियोग॥ आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणीच ॥ सोमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनीचामृतसिद्धियोगः ॥

टीका—चरयोगादिक त्रयोदश योग और वार सात कोष्टकमें लिखेहैं तिनमें जिस वारमें नक्षत्र किंवा तिथि होंय सो योग उस दिन जानिये ॥

	योग.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	चरयोग	पू. षा.	आर्द्रा	वि.	रो.	पुष्य	म.	मूल
२	क्रकचयोग	१२ ति.	११	१०	९	८	७	६
३	दग्धयोग	१२ ति.	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युयोग	ति. १।६।११	२।७।१२	१।६ ११	४। ९ १४	२।७ १२	३।८ १३	५।१० १५
५	सिद्धियोग	ति०.	ति०	३।८ १३	२।७ १२	५।१० १५	१।६ ११	४।९ १४
६	उत्पातयोग	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.
७	मृत्युयोग	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.
८	कालयोग	ज्ये.	अ.	प.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.
९	सिद्धियोग	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.
१०	यमदंष्ट्रयोग	म. ध.	मू. वि.	कृ.रो.	पू. षा. पु.	उ. षा. अ.	रो. अ.	श्र.श.
११	यमघंट	म.	वि.	मृ.	मू.	कृ.	रो.	ह.
१२	मुशलवज्र	भ.	चि.	उ.षा.	ध.	उ.	ज्ये.	रे.
१३	अमृतसिद्धि	ह.	श्र.	अ.	अनु.	पुष्य	रे.	रो.

दासदासी लेनेका मुहूर्त्त ।

दासचक्र ॥ नराकारंलिखेच्चक्रं सेवार्थंमृत्युसंग्रहे ॥ शीर्षेत्रीण्यर्थलाभःस्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम् ॥ हृदिपञ्चधनंधान्यं पादेषट्कंदारिद्रता ॥ पृष्ठेद्वेप्राणसंदेहो नाभौवेदाःशुभावहम् ॥ गुदेद्वेभयपीडाच दक्षहस्तेकमथकम् ॥ एकंवामेनाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ॥

टीका—नराकारचक्रके अवयवस्थानोंमें स्थापित करै सिरपै ३ नक्षत्र धरै तिसका फल अर्थलाभ, मुखमें ३ फल नाश, हृदयमें ५ फल धन धान्यवृद्धि, पदोंपर ६ फल दरिद्र, दृष्टिपर २ फल मृत्यु, नाभिमें ४ फ. शुभ, गुदापर २ फल भयपीडा, वामहाथपर १ फल अर्थप्राप्ति नवेस्थान, दाहिन हाथपर १ फल नाश होय॥

दासीचक्र॥दासीचक्रंप्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभान्तकम्॥शी-

षैत्रीणिमुखेत्रीणि स्कन्धयोश्चद्वयंस्मृतम् ॥ हृदयेपञ्चऋक्षाणि नाभौपञ्चभगेकैकम्॥ जानुद्वयेद्वयंज्ञेयं पादयोश्चत्रयंत्रयम् ॥ फल ॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभोमुखेहानिःप्रजायते॥स्कन्धेचस्वामिनोमृत्युर्हृदयेपुष्टिवर्द्धनम् ॥ नाभौहानिप्रदंप्रोक्तं भगेचैवपलायनम् ॥ जानौसेवांलभेन्नित्यं पादयोस्तुधनक्षयः ॥

टीका—दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका क्रम सीसपर ३ फल लाभ, मुखमें ३ फल हानि, कंधापर २ फल स्वामीकी मृत्यु, हृदयमें ५ फल पुष्टि होंय, नाभिमें ५ फल हानि, भगपर १ फल पलायन, जानुपर २ फल सेवा करै, पदपर ६ फल धनक्षय कारक इनमें शुभफल देखिके रखै ॥

गवादिपशु लेनेका मुहूर्त।

गोवृषमहिषीचक्र॥ शीर्षेत्रयंमुखेद्वेच पादेष्वष्टौविनिर्दिशेत् ॥ हृदयेपञ्चऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौभगेकैकम् ॥ ॥ फल ॥ शिरः स्थानेभवेल्लाभो मुखेहानिःप्रजायते ॥ पादयोरर्थलाभःस्याद्धृदयेसौख्यवर्द्धनम्॥ स्तनयोस्तुमहालाभो गुह्यस्थानेमहद्भयम् ॥ अर्यमादिगवांज्ञेयं महिष्यांसूर्यभान्न्यसेत् ॥ इदमेववृषेज्ञेयंविशेषःपत्सुषोडश ॥

टीका—गाय अथवा वृषभ लेना होय तो उत्तराफल्गुनीसे दिवसनक्षत्रतक गिनै उसमेंसे मस्तकपर ३ फल लाभदायक, मुखमें २ फल हानि, पदपर ८ फल अर्थलाभ, हृदयमें ५ फल सुख, स्तनमें ८ फल महालाभ, भगपर १ फल प्रजावृद्धि, गुह्यपर ४ फल भय जानिये ॥ और महिषी लेनी होय तोभी इसीक्रमसे शुभाशुभ फल जानियें. परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक गिनै और वृषभ लेना होय तौभी यही क्रम जानिये परंतु पदपर १६ नक्षत्र धरै शेषस्थानमें २ धरै और गायके समान शुभाशुभ फल जानै ॥

अश्व मोल लेनेका मुहूर्त।

अश्वेतुसूर्यभाच्चैव साभिजिद्भानिविन्यसेत्॥ पञ्चस्कन्धेजन्मभान्तं

पृष्ठेतुदशकंन्यसेत् ॥ पुच्छेज्ञेयंद्वयंप्राज्ञैश्चतुष्पादेचतुष्टयम् ॥ उद-रेपञ्चधिष्ण्यानि मुखेद्वेचप्रकीर्तिते ॥ ॥ फल ॥ ॥ सौभाग्यमर्थला भश्चस्त्रीनाशोरणभंगता ॥ नाशश्चअर्थलाभश्चफलंप्रोक्तंमनीषिभिः ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्म नक्षत्रतक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे इस क्रमसे स्थानोंका फल कंधेपर ५ फ० सौभाग्य, पीठिपर १० फ० अर्थलाभ, पूंछपर २ फ० स्त्रीनाश, पैरोंपर ४ फ० रणभंगता, उदरपर ५ फल नाश, मुखमें २ फ० अर्थलाभ, ऐसे फल पंडितोंने कहाहै ॥

हाथी मोल लेनेका मुहूर्त।

गजाकारंलिखेच्चक्रं जन्मभान्तंचसूर्यभात् ॥ कर्णेशीर्षेद्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्रयोजयेत् ॥ शुण्डायांतुद्वयंयोज्यं वेदाःपृष्ठोदरेमुखे ॥ षड्वैचतुर्षुपादेषु साभिजिद्वैन्यसेत्क्रमात् ॥ ॥ फल ॥ ॥ कर्णेचैवमहाँल्लाभो मस्तकेलाभएवच ॥ दन्तेचैवभवेल्लाभो पुच्छेहानिःप्रजायते ॥ शुण्डायांतुशुभंज्ञेयं पृष्ठेतुसुखसंपदः ॥ उदरेरोगसंभूतिर्मुखेतुमध्यमंस्मृतम् ॥ पादयोश्चभवेल्लाभो गजेचैवंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रथम सूर्य नक्षत्रसे जन्म नक्षत्रतक स्थापित करनेका क्रम लिखाहै, परंतु इसके स्थानों और फलों तथा नक्षत्रोंकी संख्या भिन्न है प्रथम कानों पर २ फ० लाभ मस्तकपर २ फ० लाभ दातोंपर २ फ० लाभ पूंछपर २ हानि सूंडपर २ शुभ, पीठपर ४ सुखसंपदा पेटपर ४ रोग मुखपर ४ मध्यम, पायोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥

शिबिकारोहणचक्रमुहूर्त।

सूर्यभादिनभंयावत्पञ्चपञ्चचतुर्दिशि ॥ मध्येतुसप्तदेयानिचक्रं ज्ञेयंसुखावहम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकम् ॥ पश्चिमेकृशताचैवउत्तरेव्याधिसंभवः ॥ मध्यमंचशुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंपरम् ॥ पालकारोपणंचैतद्बालकस्यबुधैर्हितम् ॥

टीका-सूर्यनक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यंत पालकी अथवा पालना इनमेंसे जिसपर आरोहण करना चाहैं उसके चहू ओर और मध्य भागमें लिखनेका क्रम पूर्वभागमें ५ फ० आरोग्य, दक्षिणमें ५ कष्टकारक, पश्चिममें ५ कृशता, उत्तरमें ५ व्याधिनाश, मध्यमें ७ फ० शुभ तथा आयुष्य वृद्धिकारक जानिये ॥

छत्रचक्र।

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रं पुष्यश्चशततारका ॥ धनिष्ठाश्रवणश्चैव शुभानिच्छत्रधारणम् ॥ फल ॥ मूलेत्रीणिसप्तदण्डे कण्ठेचैवतुपञ्चकम् ॥ मध्येवसुप्रदातव्यं शिखरेवेदएवच ॥ मूलेचजायतेनाशो दण्डेहानिर्धनक्षयः॥ कण्ठेचराजसन्मानो मध्येछत्रपतिर्भवेत्॥ शिखरेकीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ॥

टीका-तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शततारका धनिष्ठा श्रवण ये नक्षत्र छत्रधारणमें शुभ हैं परंतु अपने जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक लिखनेके क्रमसे प्रथम मूलपर ३ फल जीवनाश, दंडपर ७ हानि धनक्षय, कंठपर ५ राजसन्मान, मध्यमें ८ छत्रपति, शिखरपर ४ कीर्तिवृद्धि जानिये ॥

मञ्चकचक्रम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं मञ्चमूलेचतुश्चतुः ॥ गात्रेषुत्वेकविन्ध्यासु मध्येसप्तविनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ मूलेतुसुखसौभाग्यं गात्रेप्रोक्तं भयंमहत् ॥ मध्येसत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम् ॥

टीका-सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र मंचक चक्रमें अंक स्थापन करनेकी रीति पहिले मुखपर १६ फ० सुखप्राप्ति, मध्यगात्रपर ४ भयप्राप्ति, आगे विंध्यापर १ भय, मध्यमें ७ पुत्रलाभ, और आयुकी वृद्धि होय ॥

शरसहितधनुषचक्र। सूर्यभाज्जन्मभान्तंच धनुष्येवंचयोजयेत् ॥ चापाग्रेबाणसंख्याकं शराग्रेपञ्चयोजयेत् ॥ शरमूलेतथापञ्च पञ्चसंधौप्रकीर्तयेत् ॥ दण्डेचैवतुदद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ ॥ फल ॥ अग्रेहानिःशरेलाभः शरमूलेजयस्तथा ॥ चापसंधौतुशौर्यंस्याद्दण्डेभङ्गःप्रजायते ॥

टीका-सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्र पर्यंत धनुषपर अंकस्थापन करनेकी रीति

प्रथम अग्रपर ५ हानि, शराग्रपर ५ लाभ, शरमूलपर ५ जय, फिर संधिपर५ शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग इनमेंसे शुभफल देखके धनुष धारण करावै ॥

रथचक्र ।

रथाकारंलिखेच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदण्डे रथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेचभत्रयंज्ञेयं षड्ऋक्षाण्यन्तिमेऽध्वनि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोसुखे ॥ ॥ फल ॥ ॥ शृङ्गेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदण्डके ॥ रथाग्रेदण्डअध्वानं मध्येचैवसुखंशुभम् ॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभान्तंक्रमेणच ॥ गर्गेणोक्तानिचक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ॥

टीका—रथके आकार चक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम। प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ, और सर्वत्र ३ सुख जानिये ।

तिलोंकी घानी करनेका मुहूर्त ।

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्घाणकेशुभं ॥ ॥ फल ॥ ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेवच ॥ स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखोंका रस काढनेका मुहूर्त ।

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाःक्रमात् ॥ ॥ फल ॥ प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीर्द्वितीयेहानिमेवच ॥ तृतीयेसर्वलाभंच चतुर्थेचक्षयंतथा पञ्चमेचभवेन्मृत्युःषष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेनियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्रतक घानी चक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके भाग घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखे है ॥

घाना.			ऊखोंका रस.		
३	प्रथमभाग	हानि	४	प्रथमभाग	लक्ष्मी
३	भाग	ऐश्वर्य	२	भाग	हानि
३	भाग	आरोग्य	२	भाग	सर्वलाभ
३	भाग	नाश	१	भाग	क्षय
३	भाग	द्रव्य	५	भाग	मृत्यु
३	भाग	स्वामिघात	५	भाग	शुभ
३	भाग	निर्धन	२	भाग	पीडा
३	भाग	मृत्यु	६	भाग	धनक्षय
३	भाग	सुख			

इनमें जिसदिन शुभफल आवै उस दिन काढे.

कृषिकर्मका मुहूर्त।

स्वातीब्राह्म्यमृगोत्तरादितियुगे राधाचतुष्कंमघारेवत्युत्तरविष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ॥ गोकन्याझषमन्मथाश्वशुभदा वाराःकुजार्कीतरं षष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्यंद्वितीयाद्वयम् ॥

टीका–स्वाती रोहिणी मृग उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा मघा उत्तराफाल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मिथुन ये लग्न शुभ हैं मंगल शनि और षष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्वणी अर्थात् १५ । ३० और दोनों द्वितीया इनको छोडके कृषिकर्मका आरंभ और बीजादिकोंका वपन करावै ॥

हलचक्र।

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपञ्च त्रिकंपञ्चत्रिकंत्रिकम् ॥
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमशुभंचशुभंक्रमात् ॥

टीका–प्रथम हल धारन करनेका मुहूर्त सूर्य नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यंत गिनै तिनके भाग ८ तिनका क्रम प्रथम ३ फल अशुभ द्वितीयभाग ३ शुभ

तृतीय भाग ३ अशुभ चतुर्थ ५ शुभ पंचम ३ अशुभ षष्ठ ५ शुभ सप्तम ३ अशुभ अष्टम २ नक्षत्र शुभ जिस नक्षत्रके भागमें दिवस नक्षत्र आवे उस-दिन धारण करै ॥

नौका बनाने वा जलमें उतारनेका मुहूर्त।

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्रशीतोष्णरश्मिवसुजीवकभा-न्यमूनि ॥ वारेचजीवभृगुनंदनकौप्रशस्तौ नौकादिसंघटनवाह-नमेषुकुर्यात् ॥

टीका–रेवती पुनर्वसु अश्विनी आश्लेषा शततारका अनुराधा चित्रा मृग हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार शुभ हैं इनमें नौका बनवाना वा जलमें उतारना उत्तम हैं ॥

नौकाचक्र।

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात्त्रीण्युदयेचषट् ॥ नाल्यांत्रीणिहृदित्री-णिपृष्ठेभूःपार्श्वगंत्रयम् ॥ शुक्काणेत्रीणिषण्मध्ये नौकाचक्रेभसंस्थि-तिः ॥ उपरिस्थंचमध्यस्थं षट्श्रेष्ठंचपरंनसत् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे तीन नक्षत्र लिखनेका क्रम ऊपरके भागमें ६ नालीमें ३ हृदयपर ३ पीठपर १ पार्श्वमें ३ शुक्कणमें ३ नौकाके मध्यभागमें ६ दी-जिये तिन तिनमेंसे ऊपर और मध्यके नक्षत्रं शुभ और अन्यस्थानोंके अ-शुभ जानिये ॥

लग्न और ग्रहबल।

त्रिषडायगतःसूर्यश्चन्द्रोद्वित्र्यायगःशुभः ॥ कुजार्कीत्रिषडाय-स्थौ त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ द्विसुतास्ताष्टरिःफायरिपुसंस्थोबुधः स्मृतः ॥ सुखान्त्यारीन्विनायत्र नौयानेशुभदः सितः ॥

टीका–नौकामें माल भरने अथवा चलानेकी लग्नका ग्रहबलज्ञान तृतीय षष्ठ एकादश इन स्थानोंमें सूर्य अथवा चंद्रमा मंगल शनि ये होंय तो शुभ और ३ । ६ । १० इन स्थानोंको छोडकर अन्यस्थानोंमें गुरु शुभ २ । ५

७।८।१२।६ इन स्थानोंमें बुध होय तो शुभ ७।१२।६। इनस्थानोंमें छोड अन्यस्थानका बुध शुभ जानिये॥

नौकास्थानके ग्रह।

नाल्यांपापखगाःसौम्याः शुक्काणेशुभकारकाः॥ व्यस्तामृत्युकराःक्रूराःपृष्ठेकूर्पेचभीतिकृत्॥ अन्तेबाह्येस्थितास्तेचह्यला-भायस्मृताबुधैः॥ एवंविचार्यदेवज्ञो नौयानसमयंवदेत्॥

टीका—लग्नकुंडली लिख तिसमें जो २ ग्रह जिस २ स्थानमें पडाहोय तिसका तैसा फल, नालमें पापग्रह शुभ शुक्काणपर शुभग्रह शुभ ये विपरोति होंय तो अशुभ और क्रूर ग्रह पीठपर अथवा कूर्पपर आवै तो भयदायक और इन ग्रहोंमेंसे बाहर बाहर आवै तो लाभ होय यह विचार करिके ज्योतिषी बनावे॥

दीपिकाचक्र।

दीपिकायांमुखेपञ्च राजसन्मानलाभदः॥ कण्ठेनवधनप्राप्तिर्मध्ये-ष्टौस्वामिमृत्युदाः॥ दण्डेपञ्चभवेद्राज्यं अग्निऋक्षाच्चदीपिकाम्॥

टीका—कृत्तिका नक्षत्रसे दिवस नक्षत्र पर्यंत लिखनेका क्रम मुखपर ५ लाभ राजसन्मान, कंठपर ९ धनप्राप्ति, मध्यमें ८ स्वामि मृत्यु, दंडपर ५ राज-प्राप्ति, इस रीतिसे नक्षत्रक्रम जानिये॥

कूपचक्र।

कूपवाप्योस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैःशुभम्॥ रोहिणीगर्भमेतस्यत्रि-त्रिऋक्षाणिचन्द्रभम्॥मध्येपूर्वेतथाग्नेये याम्येचैवतुनैर्ऋते॥पश्चि-मेचैववायव्यां सौम्येशूलिदिशिक्रमात्॥ ॥ फल॥ ॥ शीघ्रं जलंनजलंमध्यमजलमजलंबहुजलंच॥ अमृतजलंबहुक्षारं सज-लंमध्यजलंक्रमातज्ञेयम्॥ मत्स्येकुलीरेमकरे बहुजलंतथैवचार्धं वृषभकुम्भयोश्च॥ अलौचतौलौचजलाल्पतामताशेषाश्चसर्वेऽ-जलदाःप्रकीर्तिताः॥

टीका—नवीनकूप और वापी खोदनेका मुहूर्त रोहिणीसे वर्तमानदिवसके नक्षत्र पर्यंतका क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियोंका चंद्रमा होय तौ बहुत जल निकले वृष कुंभ इनका पद होय तो उसका आधा जल रहे वृश्चिक तूल इनका चंद्रमा होय तो अल्पजल रहे शेषराशियोंके चंद्रमामें खोदे तो जल नहीं निकले यह बात सिद्धि है ॥

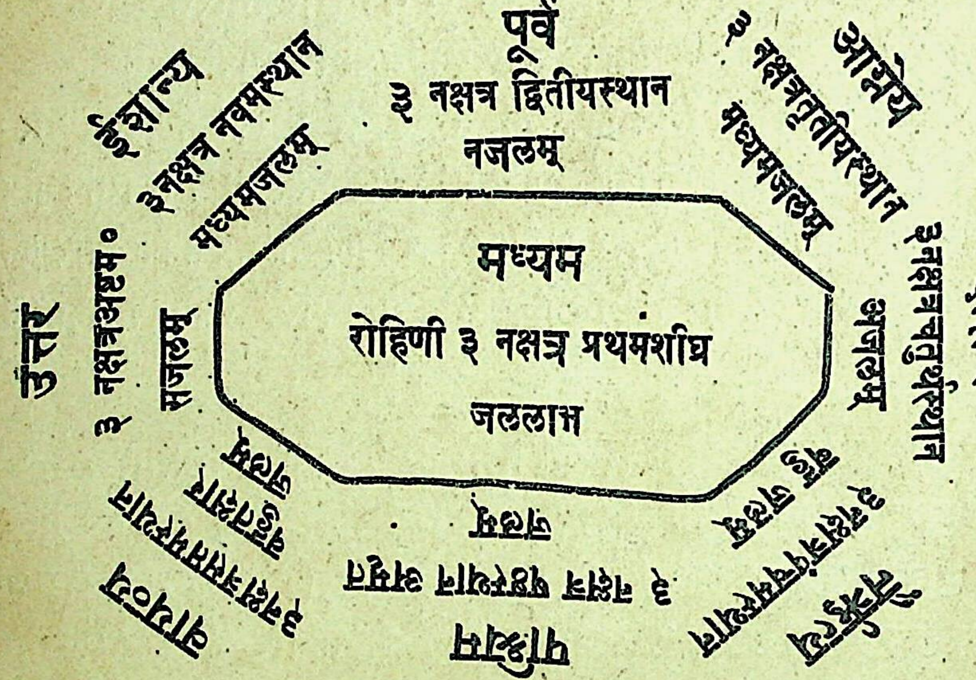

बाग लगानेका मुहूर्त।

गोसिंहालिगतेषुचान्तरगते भानौबुधादित्रये चन्द्रार्केचशुभाबुधैर-भिहितारामप्रतिष्ठाक्रिया ॥ आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषक् त्य-क्त्वाविशाखांकुहूं रिक्तापक्षतिमष्टमींपरिहरेत्षष्ठीमपिद्वादशीम् ॥

टीका—उत्तरायणमें वृष अथवा सिंह वृश्चिक इनराशियोंका सूर्य और बुध गुरु शुक्र चंद्र रवि इनमें कोई वार होय ऐसा शुभदिन देखिकर नवीन बाग लगावै और आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावास्या रिक्ता तिथि द्वितीया अष्टमी षष्ठी द्वादशी इन सबोंको छोडकर अन्यदि-नोंमें बाग लगावै ॥

सिक्का ढालनेका मुहूर्त्त।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषु योगेप्रशस्तेशनिचन्द्रवर्ज्यम् ॥
वारेतथापूर्णजलाह्वयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ॥

टीका-मृदु ध्रुव क्षिप्र चर इन नक्षत्रोंमें शुभ और शनि चंद्र ये वार वर्जित हैं॥

अथ प्रश्नप्रकरण।

तिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्न।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तुहरेद्भागं शेषंसत्त्वंरजस्तमः ॥ ॥ फल ॥ ॥ सिद्धिस्तात्कालिके सत्वे रजसातुविलम्बिता ॥ तमसानिष्फलंकार्यं ज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

टीका-जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहरमें प्रश्न करै तिसका उत्तर नीचे लिखतेहैं उदाहरण-तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोडा तो हुए १७ इसमें ३ का भाग दिया तो भोग्य १५ शेष २ जिसका नाम दूसरा रज तिसका फल कार्यमें विलंब इस प्रमाणसे ३ वचैं तो तम निष्फल १ वचै तो सत्व फल कार्यसिद्धि होय ॥

अपनी छायासे प्रश्न।

आत्मच्छायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता ॥ वसुभिश्चहरेद्भागं शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिःपंचमसप्तके ॥ द्वयोर्हानिश्चतुःशोकं षष्ठाष्टेमरणंध्रुवम् ॥

टीका-अपनी छायाको तिगुनी करके उसमें १३ मिलावे फिर आठका भाग दे शेष वचै वह फल जानिये ॥

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ	हानि	सिद्धि	शोक	वृद्धि	मरण	वृद्धि	मरण

अथ पन्थाप्रश्न।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं तुफलमादिशेत् ॥ वर्तमानंचनक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ॥ सप्त-

मिश्रंहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सप्तभिर्भाजितंतथा ॥ फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांहिशुभाशुभम् ॥

टीका—तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करिके सातका भाग दे शेष वचैं ते फल जानिये ॥ दूसरा प्रकार—कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतक गिनके सातका भाग दे ॥ तीसरा प्रकार—प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाके सातका भाग दे शेष वचैं ते फल जानिये ॥

फल—एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पञ्चमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं वदेत् ॥ शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥

टीका—१ शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, २ रहे तो मार्गमें, ३ वचै तो अर्धमार्गमें, ४ वचैं ग्राममें आया जानिये, ५ वचैं तो मार्गसे लौट गया कहिये ६ वचैं तो रोगग्रस्त, ७ वचैं तो शून्य अर्थात् मरण जानिये ॥

दूसरा प्रकार ।

धनसहजगतौसितामरेज्यौकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥
तनुहिबुकगताविमौचतद्वज्झटितिनृणांकुरुतोगृहप्रवेशम् ॥

टीका—द्वितीयस्थानीं शुक्र तृतीयस्थानीं गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र चतुर्थ स्थानीं गुरु ऐसा योग होय तौ परदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये ॥

अथ कार्याकार्यप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पञ्चैकेत्वरितासिद्धिः षट्तुर्येचदिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलम्बश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥

टीका—पृच्छकका मुख जिस दिशाको होय वह दिशा और प्रहर वार नक्षत्र इन सबको एकत्र करिके आठका भाग दे शेष वचैं तिनमें शुभाशुभ फल जानिये १ अथवा ५ शेष वचैं तो शीघ्र कार्यसिद्धि जानिये, ६ । ४ वचैं तो तीन दिनमें कार्यसिद्धि, ३ । ७ वचैं तो विलंबसे, २ । ८ वचैं तो कार्य नहीं होय ॥

अंकप्रश्न ॥ अङ्कंद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम् ॥ त्रयोदश-युतंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि ॥ स्त्रीलाभःपञ्चशेषेस्यात्षष्ठे बन्धुविनाशनम् ॥ सप्तमेईप्सितासि-द्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ॥ नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका–जितने अंकका नाम होय उनको दूना करके फल और नामके अक्ष-रोंको मिलावै फिर १३ जोडकरी नवका भागदे शेष वचैं तिसका फल कहिये एक से धनवृद्धि, २ से धनक्षय, ३ से आरोग्य, ४ से व्याधि, ५ से स्त्रीलाभ, ६ से बं-धुनाश, ७ से कार्यसिद्धि, ८ से मरण, ९ से राज्यप्राप्ति, यह गर्गमुनिका वचन है ॥

नवग्रहात्मकंयन्त्रं कृत्वाप्रश्नंनिरीक्षयेत् ॥
फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका–नवग्रहात्मक यंत्र बनाके उसमें अवलोकन करे जो अंक आवे उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ॥

दूसरामत॥सप्तत्रयाङ्केकथयन्तिवार्ता नवैकपञ्चत्वरितंवदन्ति ॥ अष्टौद्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्ववेदा घटिकात्रयंच ॥

टीका–पूर्व जो अंक कहेहैं तिनके प्रमाणसे कृत्य परंतु फल भिन्न है शेष ७ वा ३ रहे तो वार्त्ता करना जानिये और जो ९। १। ५ वचैं तो शीघ्रकार्य होय २।८ वचैं तो कार्य नहीं होय ६।४ वचैं तो तीन घडीमें कार्य होय ॥

वारनक्षत्रयुक्त पन्थाप्रश्न।

बुधेचन्द्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरे श-नौचपरिपीड्यते ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशभवेत् ॥ व्याधितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तुचान्द्रभम् ॥

टीका–बुध अथवा सोमवारको प्रश्न करै तो मार्गमें चलताहुआ जानिये और जो गुरु तथा शुक्रको प्रश्न करै तो समीप आया जानिये रवि तथा भौमके दूर जानिये और शनिको पीडायुक्त जानिये. सूर्य नक्षत्रसे चंद्रमा नक्षत्र पर्यंत

लिखनेका क्रम प्रथम ७ नक्षत्र पर्यंत चंद्रमा आवै तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्षत्रतक चंद्रमा आवै तो जीवता जानिये, तृतीय नव नक्षत्र पर्यंत चंद्र आवै तो रोगकी उत्पत्ति जानिये इस भांति यथा प्रश्न समुझि लीजिये ॥

नष्टवस्तुप्रश्न।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंवह्निविमिश्रितम् ॥ पञ्चभिस्तुहरेद्भागं शेषं तत्त्वंविनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ पृथिव्यांतुस्थिरंज्ञेयं अप्सुव्योम्निनलभ्यते ॥ तेजस्तुराजसंज्ञेयं वायौशोकंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रश्न तिथि वार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाके ५का भाग दे शेष १ वचैं तो पृथ्वीमें, २ वचैं जलमें, पर मिले नहीं. ३ वचैं तो आकाशमें यहभी मिले नहीं, ४ वचैं तो तेजमें वह राजमें गई जानिये, ५ वचैं तो वायु इसमें शोक जानिये ॥

गर्भिणीप्रश्न।

तत्पृच्छलग्नेरविजीवभौमे तृतीयसप्तेनवपञ्चमेच ॥ गर्भः पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहेस्त्रीविबुधैःप्रणीता ॥

टीका—गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्न कहे, उस लग्नसे प्रश्न कहैं. लग्नके तृतीय अथवा सप्तम नवम पंचम स्थानमें रवि भौम गुरु ये ग्रह स्थित हों तो पुत्र होय और इन्हीं स्थानोंमें अन्य ग्रह पडे होंय तो कन्या होय ॥

मुष्टिप्रश्न ॥ मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ॥ कर्केचपाण्डुरं ज्ञेयं सिंहेधूम्रंप्रकीर्तितम् ॥ कन्यायांनीलमिश्रंतु तुलायांपीतमिश्रितम् ॥ वृश्चिकेताम्रमिश्रंच चापेपीतंविनिश्चितम् ॥ नक्रे कुम्भेकृष्णवर्णं मीनेपीतंवदेत्सुधीः ॥

टीका—प्रश्नकर्ताकी मुष्टिमें किस रंगकी वस्तु है तिसके बतानेकी रीति जो मेष लग्न होय तो लाल रंगकी वस्तु मुष्टिमें है, और वृष होंय तो पीत, मिथुन होय तो नील, कर्क पांडुर, सिंह धूमिली, कन्या नीलमिश्रित, वृश्चिक ताम्रमिश्रित, धन पीतमिश्रित, मकर और कुंभ लोहमय अर्थात् काली, मीन पीतवर्ण ॥

लग्नसे मनचिन्तितप्रश्न कहना।

मेषेचद्विपदांचिन्ता वृषेचिन्ताचतुष्पदः ॥ मिथुनेगर्भचिन्ताच

व्यवसायस्यकर्कटे ॥ सिंहेच जीवचिन्तास्यात्कन्यायांचस्त्रिया-स्तथा ॥ तूलेचधनचिन्ताचव्याधिचिंताचवृश्चिके ॥ चापेचध-नचिन्तास्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ॥ कुम्भेस्थानस्यचिन्ता स्यान्मीने चिंताचदैविकी ॥

टीका—लग्नसे प्रश्नका उत्तर मेषलग्नमें प्रश्न करै तो मनुष्यकी चिंता कहिये' वृषमें गाय भैंसकी, मिथुनमें गर्भकी, कर्कमें व्यापारकी, सिंहमें जीवकी, कन्यामें स्त्रीकी, तुलामें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें शत्रुकी कुम्भमें स्थानकी मीनमें भूतपिशाचादि बाहरी बाधाकी चिंता है ॥

संज्ञाके अनुसार लग्नोंके नाम।

धातुमूलंजीवश्चरस्थिरद्विस्वभावाश्च ॥
मेषादयःक्रमेणैवज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः ॥

टीका—मेषादिक्रमसे बारह लग्न तिनके नामकी दो दो संज्ञा कहतेहै धातुचरसे मेषलग्नकी संज्ञा, मूलस्थिर, वृषकी जीव द्विस्वभाव, मिथुनकी धातु चर, कर्ककी मूल स्थिर, सिंहकी जीव द्विस्वभाव, कन्याकी धातु चर, तुलाकी मूलस्थिर, वृश्चिककी जीव द्विस्वभाव, धनकी धातुचर, मकरकी मूलस्थिर, कुंभकी जीव द्विस्वभाव, मीनकी यह प्रकारसे बारह लग्नोंकी संज्ञा जानियें ॥

अंकप्रश्न।

अष्टोत्तरशताङ्केषु प्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ॥ शेषंद्वादशभिर्भक्तं शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ ॥ फल ॥ ॥ एकंदुर्गासप्तकेवैविलम्बश्चाङ्कतुर्येदिक्षुभूतेषुनाशः॥ रुद्रेसिद्धिर्युग्मलेवृद्धिरुक्ताशीघ्रंकार्यस्यात्त्रिषट्द्वादशेषु ॥

टीका—पृच्छककें कहे एकसो आठ अंकोंमेंसे एक अंकका नाम लिखावे और उसमें बारहका भाग दे शेष बचैं तिससे फल कहिये १। ७। ९ बचैं तो देरमें काम हो ८।४।१०। ५ बचैं तो नाश ११ सिद्धि २ वृद्धि ६ ।० बचैं तो शीघ्र प्रश्नकार्य होय ऐसा जानिये ॥

रोगप्रश्न।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंप्रहरएवच॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंतुफल-

मादिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ हयाग्नौदेवताबाधा पैत्रीवैनेत्रदन्तिषु ॥ षट्चतुर्षुभूतबाधा नबाधाएकपञ्चके ॥

टीका–तिथि वार नक्षत्र और प्रहर लग्न इन सबको एकत्र करिके ८ का भाग दे शेष वचैं तो तिससे फल कहिये ७ अथवा ३ वचैं तो देवताकी बाधा २ । ८ पितरोंकी ६ । ४ भूतकी १ । ५ वचैं तो बाधा नहीं जानियें ॥

केवल लग्नसे प्रश्न ।

मेषेचदेवीदोषःस्याद्वृषेदोषश्चपैतृकः ॥ मिथुनेशाकिनीदोषःक-र्केटभूतदोषकः॥ सिंहेसहोदराणांवै कन्यायांकुलमातृजः ॥ तु-लेदोषश्चंडिकाया नाडीदोषोहिवृश्चिके ॥ चापेचयक्षिणीपीडा मकरेग्रामदैवतात् ॥ अपुत्राद्दृष्टिजःकुम्भेमीनेआकाशगामिनः ॥

टीका–जिस लग्नमें रोगी प्रश्न करै तिसका उत्तर मेष लग्नमें देवीका दोष वृषमें पितृदोष, मिथुनमें शाकिनी, कर्कमें भूत, सिंहमें भाईयोंका, कन्यामें कु-लदेवताका, तुलामें चांडकाका, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणी, मकरमें ग्रामदेवता, कुंभमें अपुत्रा स्त्रीकी दृष्टिका, मीनमें आकाशगामियोंका दोष, ऐ-से प्रश्न बतावे ॥

मेघका प्रश्न ।

आषाढस्यासितेपक्षे दशम्यादिदिनत्रये ॥ रोहिणीकालमाख्या-तिसुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ रात्रावंवर्निरभ्रंस्यात्प्रभाते मेघडम्बरम्॥ मध्याह्नेजलबिन्दुःस्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥

टीका–आषाढ कृष्णपक्षकी दशमी किंवा एकादशी द्वादशी इन तीनों दिवसोंमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तीन फल तिथि क्रमसे जानियें और रात्रि मेघरहित होय प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्यान्हमें बूंदैं पडैं ऐसे लक्षण जिस संवत्सरके होंय उसमें महर्घता जानिये ॥

जललग्न ।

कुम्भःकर्कवृषोमीनमकरौवृश्चिकस्तुला ॥ जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम् ॥ लभत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥

टीका-कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये ७ जल लग्ने हैं इनमें जो सूर्य नक्षत्र मिलै तो वर्षा जानिये ॥

मेघनक्षत्र।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासुच ॥
स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ॥

टीका-अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वाती इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करै तौ वृष्टि अधिक होय ॥

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्र।

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखात्त्रिनपुंसकम् ॥ मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ वायुर्नपुंसकेभेच स्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ॥ स्त्रीणांपुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥

टीका-आर्द्रा आदि स्वाति पर्यंत १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं और विशाखादि ज्येष्ठांत ३नपुंसक मूल आदि मृगपर्यंत १४ पुरुष नक्षत्र हैं. नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवें तो वायु चलै और दोनों स्त्री नक्षत्र आवें तो मेघदर्शन होय जो स्त्री पुरुष नक्षत्रोंका योग हाय तो निश्चयकरि वर्षा होय ॥

सूर्य तथा चंद्रनक्षत्रकी संज्ञा।

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादेः पञ्चकंतथा ॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥ उक्तानिशशिभान्यत्र प्रोच्यन्तेसूर्यभान्यथ ॥ रोहिणीचमृगश्चैव पूर्वाफल्गुनिकातथा ॥ सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रेनवर्षति ॥ चान्द्रसूर्योभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट् ॥

टीका-अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्रनक्षत्र और शेष सूर्य नक्षत्र जानिये ॥ ॥ फल ॥ ॥ दिवस नक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों जो सूर्यके होय तौ वायु चलै और जो दोनों चंद्रके होंय तौ मेघ नहीं वर्षे जो चंद्र और सूर्य नक्षत्रका योग होय तौ वर्षा अच्छी होय ॥

धान्यप्रश्न ।

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौ मित्राणिसर्वंशुभं गोरायेप्रियसुग्धनानिलपरे लाभारिनाशादिकम् ॥ रय्याङ्केकलहःश्रियश्चबलगे स्थानानिमित्रागमौ रोरोरांविपदःपराङ्गकलहःखालेयशोकावहः॥

टीका—सत्ताईस दानें धान्यके लेकर एक राशि करै उसी राशिमेंसे एक चुटकी भर निकालकर रक्खे ऐसे तीनि राशि करै उसमेंसे तीन २ दाने जूदे जूदे करता जाय जो तीन राशियेंमेंसे एक २ वचें तौ जय. और लाभ होय १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये १ ऐसी तीन राशियोंसे पृथक् २ एक२ वचैं उसका फल जय और लाभ ॥

२ कु	क०	१ गी	क०	३ रौ क० २ मितादिसर्वसिद्धि
३ गौ	क०	३ रा	२ ये	१ प्रियभोग धन प्राप्ति
४ ल	३ प	१ रे	३	लाभ और पुत्रका नाश
५ र	२ प	१ ग	३	कलह होय
६ व	३ ल	३ ग	३	लक्ष्मी और मित्रलाभ
७ रो	२ रो	२ रां	२	विपत्ति प्राप्ति
८ प	१ रां	२ ग	३	कलह
९ खा	२ ला	३ य	१	शोकप्राप्ति—ऐसे ३ वार करनेसे बुरा भला

फल जानिये और राशिकी गणनाके समय तीन २ दानै गिनै ॥

पशुके विषयमें प्रश्न ।

द्युमणिभान्नवभेषुवनेपशुस्तदनुषट्सुचकर्णपथेस्थितम् ॥ अच-लभेषुगतं गृहमागतं द्व्यगतं गतमेव मृतंत्रिषु ॥

टीका—जो सूर्यनक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्र नवम होय तौ पशु वनमें जानिये और जो ६ नक्षत्रांत आवै तो मार्गमें जानिये तिसके आगे ७ नक्षत्रांत आवै तो घरमें आया जानिये तिस पीछे २ नक्षत्रांत आवैं तो आवनहार नहीं तिसके आगे ३ नक्षत्रांत आवैं तो मृत्यु पावैं ऐसा जानिये ॥

राज्यभंगादियोग।

यदिभवतिकदाचिच्चाश्विनीनष्टचन्द्रा शशिरविकुजवारे स्वाति- रायुष्मयोगे ॥ गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां नृपतिजनवि- नाशो राज्यभङ्गस्तुचोक्तः ॥

टीका–कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वारकरि युक्त अमावास्या- को अश्विनी किंवा स्वाती नक्षत्र और आयुष्मान योग होय जो ऐसा योग पडै तौ पक्षी पशु जंगम स्थावर व राजा व जन इनका नाश और राज्यभंग होय॥

सूर्य तथा चंद्रके परिवेष अर्थात् मंडलका फल।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामेचपीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामेच वृष्टिः॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे॥

टीका–रविका अथवा चंद्रका मंडल जो प्रथम प्रहरमें होय तो जनोंको पीडा होय दूसरे प्रहरमें होय तो मेघ वर्षे तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश चौथे प्रहरमें राज्यभंग होय॥

उत्पातोंका फल।

रात्रौधनुर्दिनेउल्का ताराचैवदिनेतथा॥ रात्रौतुधूमकेतुश्चभूक- म्पश्चतथैवहि॥ एतानिदुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणिच॥

टीका–रात्रिमें धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतु- का उदय तथा भूमिकंप ऐसे दुष्ट चिन्ह लक्षित हों तो देशक्षयकारक जानिये॥

अथ छायाबलयात्रा।

शनौसप्तपादः कवौषोडशस्यू रवौभौमके रुद्रसंख्याविधेया॥ निशेशेवधेष्टेशसंख्याविधेया गुरावग्निभूसंख्यछायाविधेया॥ न- लत्तानपातं व्यतीपातघातं नभद्रानसंक्रान्तिशूलंतथाच॥ नरो यातिसंशोध्य छायायदाहि तदाकार्य्यसिद्धिस्त्ववश्यंभवेत्र॥ स्वच्छायात्रिगुणाविश्वयुताभाज्याष्टभिःफलम्॥ लाभो८१४२

हानी३रुग्४वृद्धि५र्भयं६सिद्धि७र्मृतिः८क्रमात् ॥

टीका-शनिवारको ७ पावकी छाया शुक्रवारको १६ पांवकी छाया रविवार तथा मंगलमें ११ पांवकी छाया विधान करीहै चंद्रवारको ८ और बुधवारको११संख्या विधान करी है गुरुको १३ संख्या विधान करी है इस छायाबलमें जो यात्रा करते हैं उनको लत्तापात व्यतीपात भद्राघात संक्रांति दिशाशूल नहीं फल देता अपनी छायाके साधन करनेमें मनुष्यको कार्य सिद्धि अवश्य होतीहै पुनः अपनी छायाको तीन गुणा कर फिर १३ युक्त करै ८ का भाग देय जो १ बचै तौ लाभ, २ बचै तौ लक्ष्मीप्राप्ति, ३ बचै तौ हानि, ४ बचैं तौ रोग,५ बचै तो वृद्धि,६ बचैं तो भय,७ बचैं तौ सिद्धि,८बचैं तौ मृत्यु इस क्रम करनेसे यथावत् फल देती है सो यात्रामें विचार लेना चाहिये ॥

अथ वायुपरीक्षाकथनम् ।

आषाढमासस्यचपूर्णिमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवातिवातः ॥
पूर्वस्तदासस्ययुताचमेदिनी नन्दन्तिलोकाजलदायिनोघनाः ॥

टीका-जो आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त कालमें पवन पूर्व दिशाकी होय तौ पृथ्वी धान्ययुक्त लोक सुखी मेघकी वृष्टि करै ऐसा फल जानना॥

कृशानुवातेमरणंप्रजानामन्नस्यनाशःखलुवृष्टिनाशः ॥
याम्येमहीसस्यविवर्जितास्यात्परस्परंयान्तिनृपाविनाशम् ॥

टीका-अग्नि कोणकी वायु चलै तो प्रजाका मरण अन्नका नाश और वर्षाका नाश होय.और दक्षिण दिशाकी पवन होय तौ पृथ्वी धान्य करके वर्जित होय और परस्पर राजोंमें विरुद्ध होय यह फल दक्षिण दिशाका जानना॥

नैशाचरोवारियदात्रवातो नवारिदोषक्षतिकारिभूरि ॥
तदामहीसस्यविवर्जितास्यात्क्रन्दन्तिलोकाःक्षुधयाप्रपीडिताः ॥

टीका-नैर्ऋत कोणकी जो पवन होय तौ थोडी वर्षा होय और पृथ्वी धान्य करके वर्जित क्षुधा करिकें रोगी और पीडित लोग रुदन करें ॥

आषाढमासेयदिपौर्णिमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवारुणेनिलः ॥
प्रवातिनित्यंसुखिनःप्रजाःस्युर्जलान्नयुक्तावसुधातदास्यात् ॥

टीका—आषाढ मासमें पूर्णिमाके दिन जो सूर्यास्त कालमें पश्चिम दिशाकी पवन होय तौ प्रजा सुखी रहै और पृथ्वी जल अन्न करके पूरित होय ऐसा पश्चिमकी दिशाका फल जानना ॥

वायव्यवातेजलदागमः स्यादन्नस्यनाशःपवनोद्धताद्यौः ॥ सौम्ये-
निलेधान्यजलाकुलाधरानन्दन्तिलोकाभयदुःखवर्जिताः ॥

टीका—जो वायव्य कोणकी पवन होय तौ जलका आगमन अन्नका नाश और पृथ्वी प्रचंड पवन करके युक्त और उत्तर दिशाकी पवन होय तौ श्रेष्ठ वर्षा और धन्यधान्य करके पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःख करके वर्जित ऐसा कहना चाहिये ॥

ईशानवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धराचगावोबहुदुग्धसंयुताः ॥ भवन्ति
वृक्षाःफलपुष्पदायिनो वातेभिनन्दन्तिनृपाःपरस्परम् ॥

टीका—जो ईशान कोणकी पवन चले तो पृथ्वी जलसे पूरित होय और गौ दुग्ध करिके पूरित और वृक्ष फल पुष्पोंसे युक्त और राजोंका परस्पर मैत्री ऐसा जानना चाहिये ॥

वर्ष निकालनेका प्रकार।

गताब्दवृन्दैर्भुविखाभ्रचन्द्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैःसुभक्ता॥[illegible]फलं
वारघटीपलानि स्वजन्मवारादियुतानिइष्टम् ॥

टीका—वर्तमान संवत्में जन्म संवत् हीन करे तौ गताब्द संज्ञा होगी गताब्दोंका भुवि १ ख० अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १०० से गुणा किया नभ० व्यो म०गज ८अर्थात् ८०० का भाग देय ३ इसमें स्थापना करे जो फल प्राप्त होय सो वार इष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड देय और ऊर्ध्वांकमें ७ का भाग देय तौ वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा उदाहरण वर्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४इन्होंका अंतर २ इसको १०० से गुणा तौ २०१४ हुये और इसमें ८० का भाग दिया तौ २ प्राप्ति हुये और शेष ४१४ रहे इनको ६० से

गुणा तौ २४८४० ये हुये फिर इनमें ८०० का भाग दिया तौ ३१ मिले और शेष ४० रहे इनको ६० से गुणा तौ २४०० हुये तौ इनमें ८०० का भाग दिया तौ ३ मिले इस कारण ०२ वार ३१ घटी ०३ पल सिद्ध हुए इनमें जन्म वारादि ६ । ४५०५ जोडे० ९ । १६ । ०८ ऊर्ध्वांक ९ में ७ के भागसे शेषांक०२ । १६ । ०५ यह वर्षका इष्ट हुवा ॥

अथ तिथि बनानेका क्रम ।

याताब्दवृन्दोगुणवेदरामै३४३र्निघ्नःकुरामै३१ र्विहृतोदिनाद्यम् ॥
घस्रैःसहोत्थैःसहितंखरामै३० र्भक्तंचशेषातिथिरत्रवर्षे ॥

टीका—गत वर्षोंको ३४३ से गुणा करै पुनः ३१ का भाग देय जो अंक प्राप्ति होय सो तिथि जानना. इसमें जन्मकी तिथि युक्त करै फिर ३० से जो शेष रहे सो वर्षकी तिथि होगी परंतु तिथिमें १ ऊनाधिक कहीं हो जाती है ॥

अथ नक्षत्र लानेका क्रम ।

व्योमेन्दु १०भिःसंगुणितागताब्दाःखशून्यवेदाश्वि२४०लवैर्वि-
हीनाः॥जन्मर्क्षयोगैः सहिताप्रवस्था नक्षत्रयोगौ भवतोभ२७तष्टौ॥

टीका—गत वर्षोंको १० गुणा करै फिर दो जगह रक्खै और एक जगहमें २४ का भाग देय जो बल प्राप्ति हो वह दूसरेमें घटा दे,और जन्मर्क्ष या योग जोड देय और उस नक्षत्रमें २७ का भागसे शेष नक्षत्र होगा ॥

अथ ग्रहचालनकथनम् ।

स्वेष्टकालोयदाग्रेस्यात्पङ्क्तीचशोधयेद्धनम् ॥
पङ्क्तीश्चैवयदाग्रेस्यादिष्टंचशोधयेदृणम् ॥

टीका—इष्टकाल पंचांगस्थ पंक्तिसे आगे होय तौ पंक्तीमें काल शोधन करना तौ चालन धन करना होताहै और जो पंक्ती इष्टकालसे आगे होय तौ इष्टमें पंक्तिशोधन करना तौ चालन ऋण होता है ॥

अथ ग्रहस्पष्टीकरणम् ॥

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नी।खषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकंशोध्यं योज्यंस्पष्टोभवेद्ग्रहः ॥

टीका—गत दिनसे अथवा आगत दिनसे सूर्यादि ग्रहोंकी गतिको गुण देना और ६० से भाग देना लब्धि अंशादि जो आवे सो गत दिनका होय तौ ग्रहमें कम करना और आगत दिनका होय तौ युक्त करना इस्से ग्रह स्पष्ट होता है ॥

अथ भयातभभोग बनानेकी रीति ।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः ॥
भभुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाःशुद्धाःसुयुक्ताश्चभभोगसंज्ञकाः ॥

टीका—गत नक्षत्रकी घडीको ६० में शुद्ध करना और वर्षमें सूर्योदयसे जो इष्ट घटी होय सो युक्त करना तौ भयात होताहै.और ६० में शुद्ध किआ जो नक्षत्र उसमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी युक्त करना तौ भभोग होताहै ॥

अथ चंद्रस्पष्टक्रममाह ।

खषड्घ्नंभयातंभभोगोद्धृतंतत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तांद्विनिघ्नम् ॥
नवाप्तंशशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः खखाभ्राष्टवेदाभभोगेनभुक्ताः ॥

टीका—वीचे हुये नक्षत्रका पिंड बांधके ६० से गुणे और भभोगका पिंड बांधके तीन वार भाग देय गत नक्षत्रको ६० से गुणे और जो भभोगके भागसे प्राप्त हुवा जो भयात है उसे इसमें जोड देय फिर इसे दुगुणा करे और ९ का भाग देय तीन वार तौ चंद्रमा अंश पूर्वक होताहै और अंशोंमें ३० का भागमें समी करै और ४८००७ से गुणे और भभोगका भाग देय दोवार तौ चंद्रमाकी भुक्ती स्पष्ट हो जायगी ॥

अथ लग्नसाधनम् ।

समागणश्चन्द्रकृशानुनिघ्नः खचन्द्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः ॥
तष्टोदिनेशैःकिलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥

टीका—गताब्दको ३१ से गुण देना १० से भाग लेना उसमें जन्म लग्न युक्त करना १२ से उसे तष्टित करना जो शेष बचे तौ सामान्यरीतिसे वर्ष लग्न जानना चाहिये ॥

अथ मुन्था।

सैकागताब्दाविरताःपतङ्गैस्तच्छेषभावे मुथहाजनुर्भात् ॥

टीका—गताब्दमें १ युक्त करना १२ से भाग देना जो शेष रहै सो जन्म-लग्नसे मुंथाका स्थान जानना चाहिये ॥

अथ पञ्चाधिकारी।

मुन्थेशो१वर्षलग्नेर२शस्तत्त्रैराशिकनायकः ॥ दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौचन्द्रर्क्षनायकः ॥ जन्मलग्नेश्वर५श्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः ॥

टीका—वर्षमें पंचाधिकारी बनानेका क्रम। मुंथेश १ वर्षलग्नेश२त्रिराशीश ३ दिनमें वर्ष प्रवेश होय तौ सूर्यके राशिका स्वामी रात्रिमें वर्ष प्रवेश होय तौ और चंद्रके राशिका स्वामी ४ जन्म लग्नेश्वर ५ वर्षमें यह पंचाधिकारी शुभाशुभ फलके लिये ग्रह अधिकार देखना। जिसके दो तीन अधिकार आवें सो बलवान् जानना चाहिये ॥

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्किशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्ष्माजाः ॥ मेषाच्चतुर्णांहरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥

टीका—त्रिराशीपति हो ते सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिनमें मेषसे आदि लेकर कर्क राशितक चक्रसे प्रतीत होगा ॥

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू.	शु.	श.	शु.	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वामी	बृ.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	मं.	बु.	चं.	बु.	मं.
हद्दास्वामी	श.	मं.	बृ.	मं.	श.	चं.	बृ.	मं.	श.	मं.	बृ.	मं.

दृष्टिक्रममाह।

पादंत्रिरुद्रे १५ सदलंस्वतुर्ये३० पादत्रयंस्यान्नवपञ्चमेपि ४५ ॥ पश्यन्तिपूर्णंसमसप्तकेच ग्रहानचान्यत्रविलोकयन्ति ॥

स्पष्टार्थचक्रं विलोकयन्ति।

१ ११	४ १०	०५ ९	०४ ७	भावं
१५	३०	४५	६०	कलादृष्टि

लग्नस्थमुन्थाप्रकरोतिसौख्यं नृपप्रसादं विजयंरिपूणाम् ॥ हर्षोदयं बाहुबलप्रतापं वृद्धिंविलासं धनलाभमुग्रम् ॥ मुन्थाधनस्थानगेलाभमुग्रं करोतिमिष्टान्नसमागमंच ॥ सर्वार्थसिद्धिंनिजबाहुवीर्यात्सुखोदयंमित्रसुतोदयंच ॥ लोकाजयंनिजजनाच्चसहोत्थसौख्यं देहार्त्तिकीर्तिशुभकार्यसमृद्धदात्री ॥ सत्सङ्गतिश्चसबलातनुतेहमैत्री मुन्थाचप्राक्रमगंतानृपतिप्रसादम् ॥ वित्तक्षयंरिपुजनादशयस्यवृद्धिं वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात् ॥ गुप्तार्तिकृद्धदरुजस्यविवर्तिदात्री तुर्येन्थिहाविविधरोगभयानिपुंसाम् ॥ प्रतापमाहात्म्यसुरार्चनंच सुबुद्धिवृद्धिर्यशसःप्रवृद्धिः ॥ वित्तप्रलाभो जनताप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं मुथनेन्थिहायाम् ॥ नृपाद्भयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजंभयंच ॥ कार्यार्थहानिःकुमतीष्टवैरं षष्ठेथिहादुष्टरुजंविदध्यात् ॥ सौख्यार्थनाशोवनितादिकष्टं चिंतामनोमोहमनल्परोगम् ॥ क्लेशोदयं स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेंथिहायाम् ॥ दुष्टंभयार्तिं धनधान्यनाशो विपक्षभीतिर्व्यसनानिमोहाः ॥ कान्तेविनाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेंथिहायाम् ॥ धर्मार्थलाभं स्वजनेषुमैत्री नृपोत्तमैःप्रीतियशःप्रवृद्धिः ॥ प्रमोदभाग्योदयकार्यसिद्धी पुण्योपगेन्था प्रकरोतिसौख्यम् ॥ मनोरथाप्तिं स्वजनेषुसौख्यं निजेष्टमन्त्री स्वजनोपकारकः ॥ भूपात्प्रसादो दशमेंथिहायां पुण्योदयःस्याद्विपुलंयशश्च ॥ सुखार्थलाभं शुभबुद्धिवृद्धिर्मनोरथाप्तिं नृपतिप्रसादम्॥ निजेष्टसौख्यं मनसांप्रहर्षं करोतिमुन्था भवगेवशित्वम् ॥ निरुद्यमत्वं

निजमित्रकष्टं दुष्टातिरुक्नृपतेर्भयंच ॥ धर्मार्थनाशो रिपुचौरभीतिः स्वाभीष्टपीडा व्ययगेथिहायाम् ॥

अथ त्रिपताकीचक्रका प्रकार।

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ॥
स्मृतंबुधैस्तत्त्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा ग्रहवर्षलग्नात् ॥

टीका—रेखा ३ टेढी ३ सीधी करै और परस्पर ईशान कोणसे रेखाका वेध करै इसको पंडितजन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्वके मध्य रेखापर वर्षलग्नका न्यास करना ॥

तत्र ग्रहन्यासमाह।

न्यसेद्भचक्रंच विलग्नकार्यां ताराब्दसंख्या विभजेन्नभोगैः ॥ शेषोन्मिते जन्मगचारराशेस्तुल्येचराशौ विलिखेच्छशाङ्कं ॥ परेचतुर्भाजितशेषतुल्येस्थानेखरांशेखचरास्तुलेख्याः॥

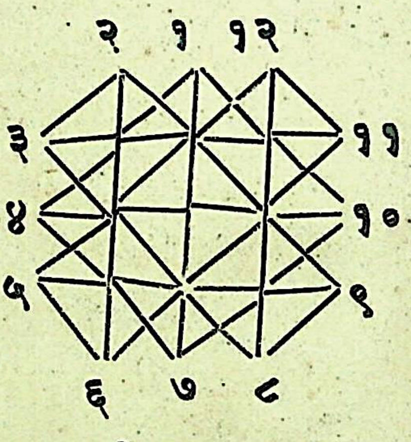

टीका—त्रिपताकी चक्रपर १२ राशि न्यास करना और ग्रहन्यासका प्रकार गतवर्षमें १ युक्त करना ८ से भाग लेना जो शेष रहै सो जन्मकालमें चंद्र राशीसे शेष स्थानमें चंद्रमा लिखना और ग्रहको ४ से भाग देकर जो शेष बचै उसे वहां अपने स्थानसे लिखना और राहु,केतु अपने स्थानसे पीछे लिखना तौ त्रिपताकी चक्र स्पष्ट होताहे ॥

वेधाविचार।

स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोर्कविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ॥
महीजविद्धेतु शरीरपीडा शुभैश्चविद्धे जयसौख्यलाभाः ॥
शुभाशुभव्योमगवीर्यगोत्रफलंतुवेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥

टीका—त्रिपताकी चक्रमें वधे देखनेका प्रकार सर्व ग्रहोंका वेध चंद्रमासे दे-

खना और राहुसे चंद्रसे वेध होय तो अरिष्ट जानना सूर्यसे वेध होय तौ ताप जानना. शनिसे वेध होय तौ रोग जानना. मंगलसे वेध होय तौ शरीरकी पीडा जानना. और शुभ ग्रहसे वेध होय तौ जयप्राप्ति सौख्य लाभ. और शुभग्रहका वीर्य देखकर वेधमें फल कहना ॥

मुद्दादशा।

जन्मर्क्षसंख्या सहितागताब्दा द्व्यूनितानन्दहृतावशेषात् ॥
आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वं भवन्तिमुद्दादशिकाक्रमोयम् ॥

टीका—जन्मनक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलावना और दोनोंकी जो संख्या होय उसमेंसे दो दो कमती करना और ९ से भाग देना जो अंक शेष रहे सो दशा जानना १ शेष रहे तौ सूर्यकी दशा, २ शेष रहे तौ चंद्रमाकी दशा, ३ शेष रहे तो मंगलकी दशा, ४ शेष रहें तो राहुकी दशा, ५ शेष रहें तो गुरुकी दशा, ६ शेष रहें तो शनिकी दशा, ७ शेष रहें तो बुधकी दशा, ८ शेष रहें तो केतुकी दशा, ० शेष रहे तो शुक्रकी दशा जानना. यह दशाका क्रम ज्योतिष शास्त्रके आचार्योंने कहाहै ॥

मुद्दादशाचक्रम्।

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

मास बनानेका क्रम।

मासार्कस्यतदासन्नपङ्क्त्यर्केणसहान्तरम् ॥ कलीकृत्यार्कगत्या-प्तदिनाद्येनयुतोनितम् ॥ तत्पङ्क्तिस्थंयातपूर्वं मासार्केधिक-हीनके ॥ तद्वाराद्येमासवेशोब्दप्रवेशःकलासमः ॥

टीका—वर्ष सूर्य मासको जो सूर्य सो वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट होय हीन वा अधिक तौ उसका अंतर करै राशि छोड फिर उसका पिंड बांधिकर सूर्य पंक्तिके ग्रतिका पिंड बांधिके भाग दे तीन दफै तो उस्से वार आदि प्राप्त होंयगे. फिर जिस पंक्तिके सूर्यका अंतर किया है उसे उसी मिश्रमानमें घटा दे अथवा जोड दे, जो सूर्य वर्षकी पंक्तिके सूर्यसे अधिक होय तौ जोडदे. और हीन होय तौ घटा देय तब मास वारादि स्पष्ट होगा ॥

अथ ग्रहचक्रप्रकरण ।

सूर्य॥ऋक्षसंक्रमणंयत्र द्वेवक्रेविनियोजयेत् ॥ चत्वारिदक्षिणे बाहौ त्रीणित्रीणिचपादयोः ॥ चत्वारिवामबाहौच हृदयेपञ्च निर्दिशेत् ॥ अक्ष्णोर्द्वयंद्वयंयोज्यं मूर्ध्निचैकैककंगुदे ॥ फल ॥ रोगोलाभस्तथाध्वाच बन्धनंलाभएवच ॥ ऐश्वर्यंराजपूजाच अपमृत्युरितिक्रमात् ॥ ॥ चंद्र॥ ॥ चन्द्रचक्रंप्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकं त्रीणिदक्षिणहस्तके ॥ हृदि षट्कंप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ कुक्ष्योःषट्कंचदातव्यं पादै-कैकं विनिर्दिशेत् ॥ ॥ फल ॥ ॥ शीर्षेलाभकरंज्ञेयं मुखेतु द्रव्यहारकम् ॥ हानिर्दक्षिणेहस्ते हृदयेच सुखावहम् ॥ वाम-हस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्तथैवच ॥ पादयोर्हानिरोगौच जन्मधिष्ण्यादिचन्द्रभम् ॥ ॥ भौम ॥ ॥ भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ण्यादिभौमभम् ॥ शीर्षे षट्कं मुखेत्रीणि त्रीणि वैद-क्षिणकरे ॥ पादयोःषट्प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ गुह्ये चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेवच ॥ ॥ फल ॥ ॥ विजयश्चैव रोगश्च लक्ष्मीःपन्थाभयंतथा ॥ मृत्युर्लाभः सुखंचापि फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥

सूर्य.			चंद्र.			मंगल.		
सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्रमें होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गणनेसे जितने नक्षत्र आवे वे फल जानिये॥			जन्म नक्षत्रसे जिस क्षनत्रमें चंद्र होय तिस पर्यंत गिनै जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये॥			जन्मनक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें मंगल होंय तिनके गिननेसे जितने नक्षत्र आवै वे फल जानिये॥		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मुखमें	३	रोगप्राप्ति	मस्तकमें	६	लाभ	शिरपर	६	विजय
दाहिनेहा.	४	लाभ	मुखमें	१	द्रव्यहरण	मुखमें	३	रोगप्राप्ति
पायोंमें	६	मार्गचलन	दाहिनेहा.	३	हानिकर	दायाहाथ	३	लक्ष्मीप्रा.
बाईबाहु	४	बंधन	हृदयमें	६	सुखप्राप्त	पायोंमें	६	मार्गचल.
हृदयमें	५	लाभ	बायेंहा.	३	रोगप्राप्ति	बायांहाथ	३	भय
नेत्रोंमें	४	लक्ष्मीप्रा.	कुक्षिमें	६	शोक	गुदामें	१	मृत्यु
मस्तकमें	१	राजसपूजा	दाहिपा.	१	हानि	नेत्रोंमें	२	मृत्यु
गुदामें	१	अपमृत्यु	बायापाय.	१	रोगप्राप्ति	हृदयमें	३	सुख

बुध॥ बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मऋक्षादि सौम्यभम् ॥ शिरसि त्रीणिराज्यंस्याद्वक्रैकंधनधान्यदम् ॥ नेत्रेद्वे प्रीतिलाभौच नाभौ श्रीपञ्चकंतथा॥पादयोः षट्प्रवासश्चवामेवेदा धनंतथा ॥चत्वारि दक्षिणेहस्ते धनलाभस्तथैवच॥गुह्यस्थाने भद्वयंच बन्धनंमरणं फलम्॥ ॥ गुरुः ॥ ॥गुरुचक्रंप्रवक्ष्यामि गुरुभाज्जन्मऋक्षकम्॥ दद्याच्छिरसिचत्वारि चत्वारि दक्षिणेकरे ॥ एकंकण्ठे मुखेपञ्च पादयोःषट्प्रदापयेत् ॥ करेवामेच चत्वारि त्रीणि दद्याच्चनेत्रयोः ॥ ॥ फल ॥ ॥ राज्यंलक्ष्मीर्धनप्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ॥ सुखंचैव क्रमेणैवं फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ॥शुक्र ॥ ॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तुजन्मभम् ॥ मुखेत्रीणि महालाभः शीर्षे पञ्च शुभावहः ॥ त्रिकंतु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ॥ तथै-

व वामपादेच त्रीणिभानितुयोजयेत् ॥ हृदयेद्वे धनंसौख्यं भाष्टकं हस्तयोर्द्वयोः॥मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणि तथैवच॥ स्त्रीलाभश्चफलंप्रोक्तं भृगुपुत्रस्यसूरिभिः ॥

बुध.			गुरु.			शुक्र.		
जन्म नक्षत्रसे बुध जिस नक्षत्रमें होय तिस पर्यंत गिनै जिस स्थान बुध पडै उसका फल जानिये ॥			जिननक्षत्रमें होय उससे जन्मनक्षत्रतक गिन्नेसे जिसस्थानमें पडा होयउसका फल जानिये ॥			शुक्रजिस नक्षत्रमें होय उससे जन्मनक्षत्रपर्यंत गणनेसे जिस स्थानमें पडाहोय उस स्थानका फल जानिये॥		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	४	राज्यप्राप्त	मुखमें	३	उत्तमला.
मुखमें	१	धन	दाहिनेहा.	४	लक्ष्मीप्राप्त	मस्तकमें	५	शुभ
नेत्रोंमें	२	प्रीतलाभ	कंठमें	१	धनलाभ	दाहिनेपा.	३	क्लेशहानि
नाभिमें	५	लक्ष्मी	मुखमें	५	पीडा	वामें पादमें	२	क्लेशहानि
पायोंमें	६	प्रवास	पायोंमें	६	मृत्यु	हृदयमें	२	धनसौख्य
वायेहाथ	४	धनलाभ	वायेंहाथ	४	सुखप्राप्ति	हाथोंमें	८	मित्रसुख
दाहिनेहा.	४	धनलाभ	नेत्रोंमें	३	सुखप्राप्त	गुह्यमें	३	स्त्रीलाभ
गुदामें	२	बंध व मर.	०	०	०	०	०	०

शनिः ॥ सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभम् ॥ मूर्ध्येंकंच तथावक्रे करेचत्वारि दक्षिणे ॥ विन्यसेत्पादयुग्मे षट् वामबाहौ चतुष्टयम् ॥ हृदये पञ्चऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः ॥ हस्तेद्वयं गुदे चैकं मन्दस्य पुरुषाकृतेः॥ ॥ फल॥ मूर्द्धवक्रस्थभेरोगो लाभो वै दक्षिणेकरे॥ स्यादध्वा चरणद्वन्द्वे बन्धो वामकरे नृणाम्॥ हृदये पञ्चलाभेवै नेत्रप्रीतिरुद्राहृता॥ पूजामस्ते परानूनं गुदेमृत्युं विनिर्दिशेत्॥ ॥ राहु॥ ॥ राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभम्॥ मूर्ध्नित्रीणि तथाप्रोक्तं करे

चत्वारि दक्षिणे ॥ पादयोःषट्चऋक्षाणि वामहस्ते चतुष्टयम् ॥ हृदयेत्रीणि कण्ठैकं मुखेद्वौ नेत्रयोर्द्वयम् ॥ गुह्येद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभादतः ॥ फल ॥ ॥ राज्यं रिपुक्षयः पन्था मृत्युर्लाभोऽथरोगकः ॥ जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयं फलं बुधैः ॥ ॥ केतु ॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुनक्षभम् ॥ मूर्ध्निपञ्चजयश्चैव मुखेपञ्च महद्भयम् ॥ हस्तयोर्भानिचत्वारि विजयश्चजयस्तथा ॥ पादयोःषट्चसौख्यंस्याद्धृदि द्वे शोककारके ॥ कण्ठेचत्वारिचव्याधिर्गुह्येकंच महद्भयम् ॥

शनि.			राहु.			केतु.		
शनि जिसनक्षत्रमें होय उससे जन्मनक्षत्र पर्यंत गिनै जिसस्थलमें नक्षत्र पडा होय वह फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे राहुनक्षत्र पर्यंत गिनै जहां नक्षत्र पडाहोय वह फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे केतु जिस नक्षत्रमें होय उसतक गिनै जितने नक्षत्र पडै वे फल जानिये ॥		
स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	दायांहा.	४	रिपुक्षय	मुखमें	५	बडाभय
दक्षिणहा.	४	लाभ	पायोंमें	६	मार्गचलन	हाथोंमें	४	बिजय
पायोंमें	६	मार्गचलन	वायेंहाथ	४	मृत्यु	पायोंपर	६	सुख
वायांहाथ	४	बंधन	हृदयमें	३	लाभ	हृदयमें	२	शोक
हृदयमें	५	लाभ	कंठमें	१	रोग	कंठमें	४	व्याधि
नेत्रोंमें	४	प्रीतिला.	मुखमें	२	जय	गुह्यपर	१	बडाभय
मस्तकमें	१	पूजा	नेत्रोंमें	३	सौख्य	०	०	०
गुदामें	१	मृत्यु	गुदामें	२	कष्ट	०	०	०

जन्मनक्षत्र कहां पडा है तिसका ज्ञान।

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं चरविभादेकैकभं स्कन्धयोरेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पञ्चोदरे ॥ नाभौ गुह्यतलेच जानु-

युगले चैकैकमृक्षं क्षिपेज्जन्तोःकेचिदितिब्रुवन्तिगणकाः शेषाणिपादद्वये ॥ अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनं देशान्तरंजानुभे गुह्येस्यात्परदाररम्भनमथो नाभौचसौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यंहृदि चौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलं वैमुखे मिष्टान्नं च लभेच्च मानवगणो राज्यं स्थिरंमूर्द्धनि ॥

टीका—केवल मनुष्य चक्र सूर्य नक्षत्रसे जन्म नक्षत्रतक देखनेका क्रम प्रथम ३ नक्षत्र मस्तकपर फल राज्य प्राप्ति, मुखपर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्नभोजन, स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजापर २ नक्षत्र फल बल, हाथके तलवेपर २ नक्षत्र फल चोर, हृदयपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभीपर १ नक्षत्र फल सुख, गुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसें लंपट, जानूपर २ नक्षत्र फल देशवास, पादपर ६ नक्षत्र फल थोडा आयुष्य, ऐसा जन्म नक्षत्रसे स्थान विचार करना ॥

लग्नशुद्धिपंचक देखना।

गततिथियुतलग्नं नन्दहृच्छेषकंच वसुयमयुगषट्के क्षोणिसंख्याक्रमेण॥ रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपञ्चकंस्याद्व्रतगृहनृपमार्गोद्वाहके वर्जनीयम् ॥

टीका—गततिथिको लेकर उसमें लग्न मिलावे और नवका भाग दे शेष बचैं तिसका फल जानिये। ८ बचैं तौ रोगपंचक वे यज्ञोपवीतमें वर्जित, २ बचैं तौ अग्निपंचक वे गृहारंभमें वर्जित, ४ बचैं तौ राजपंचक ये और ६ बचैं तौ चौरपंचक ये दोनों पंचक गमन लग्नमें वर्जित हैं, १ बचैं तौ मृत्युपंचक ये विवाहमें वर्जित, इनसे अधिक जो शेषांक बचे तौ निष्पंचक जाने वे सर्व कार्यमें उक्त है ॥

वारोंमें पंचक वर्जित।

रवौरोगं कुजेवह्निःसोमेतुनृपपञ्चकम् ॥
बुधेचौरं शनौमृत्युः पञ्चकानितुवर्जयेत् ॥

टीका-रविवारमें रोगपंचक, मंगलमें अग्निपंचक, सोमवारमें राजपंचक, बुधवारको चोरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक, ऐसे ये पंचक इनवारोंमें वर्जित जानिये ॥

दिनमान रात्रिमान।

अयनादिकवासररामहताः गगनानलबाणशशाङ्कयुताः ॥
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका कर्कादिनिशा मकरादिदिनम्॥

टीका-अयन कहिये कर्क संक्रांतिसे मकर संक्रांतितक ६ महिने तैसेही मकरसे कर्कतक ६ महिने जिस दिवसका दिनमान जानना होय तिस पर्यंत कर्क संक्रांतिसे दिन गिनके उसको ३ से गुणाकरे जो अंक आवे उनमें १५३० मिलावे और ६० का भाग दे जो बचे वह रात्रिमान और जो मकर संक्रांतिसे गणना करे तौ दिनमान आवे यह जानिये ॥

दिन कितना चढा है यह जाननेकी रीति।

पादप्रभा नगयुता रहिताचमेषात् षट्स्विन्दुनात्रियुगबाणश-
राब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजको दिनदलस्य नगाहतस्य पूर्वगताः
स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ॥

टीका-अपनी छायाको पावसे मांपे जितने पाव आवे उनमें ७ मिलावैं और मेष संक्रांतिसे कन्या संक्रांति पर्यंत इन्दु कहिये एक उसमें घटावे तिसके आगे तुलासे मीनपर्यंत जो संक्रांति होय उसका क्षेपक तौ घटादेवे ऐसे तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इस प्रमाणसे अंक घटावे जुदे लिखै तिस पीछे दिनदल कहिये १५ इसको ७ से गुणाकिया तौ हुए १०५ इनमें पीछे लिखे हुए अंकको भाग दे जो भागांक आवैं वे घटि जानिये परंतु दिनके पूर्वार्द्धमें दिवसकी घडी आवैं और उत्तरार्द्धमें दिन शेष आवे यह जानिये ॥

रात्र कितनी गई यह जाननेकी रीति।

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्तसंख्याविशोधितम् ॥

विंशतिघ्नंनवहृतं गतारात्रिःस्फुटाभवेत् ॥

टीका–रात्रिमें जो नक्षत्र होय तिस पर्यन्त सूर्य नक्षत्रसे गिनके ७ घटा दे शेष रहै उसको २० से गुणा करै और ८ का भाग दे जो अंक शेष रहैं उतनीही गत रात्रि कहिये ॥

अंतरंगबहिरंगनक्षत्र।

सूर्यभादुडुगणंपुनःपुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ॥
अन्तरङ्गबहिरङ्गसंज्ञकं तत्रकर्मविदधीततादृशम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्त्तमान नक्षत्र तक वारंवार गिने तो वे क्रमसे अंतरंग बहिरंग संज्ञक होते हैं इनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करे ॥

सूतिकास्नान।

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्ये मैत्रेन्दवाश्विध्रुवमेऽह्निपुंसाम् ॥ तिथावरिक्तेशुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधिंमुनीन्द्राः ॥ इति श्रीशुकदेवविरचिते ज्योतिषसारे संवत्सरादिप्रकरणं समाप्तम् ॥

टीका–हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुनी स्वाती धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्विनी और ध्रुव नक्षत्र इनमेंसे कोई नक्षत्र जिस दिन होय उस दिन सूतिकास्नान शुभ कहाहै परंतु रिक्तातिथि वर्जित है यह मुनींद्रोंने कहाहै ॥ इति पं० केशवप्रसादविरचितज्योतिषसारभाषा समाप्ता ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण–मुंबई.

जाहिरात।

श्रीवाल्मीकीयरामायणम्।

(गोविंदराजीय भूषण-तनिश्लोकी-रामानुजीयव्याख्यासमेतम्)

तनिश्लोक्याख्यया भूषणाख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतं श्रीवाल्मीकीयरामायणम् अत्युत्तमतैलङ्गदेशीयपुस्तकमालोच्य पण्डितैः संशोधितं, तच्च सम्प्रति सुन्दरैः स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वरमुद्रणयन्त्रे मुद्रितम्, अस्य च नागेशप्रभृतिविनिर्मिताः सन्ति यद्यपि बह्वयो व्याख्याः, तथापि सहृदयहृदयाह्लादकनानाविधाऽपूर्वार्थान्वेषणे प्रयतमानैरार्यकुलोचितधर्ममर्यादाविचारशीलैर्महाशयैर्निर्विशेषत्वेन सविशेषत्वेन च ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तवाक्यानां प्राचीनतर्कसहकृतविषयभेदव्यवस्थापनेन तात्पर्यार्थनिर्णायकतया श्रीवाल्मीकीयाभिप्रायानुगा रामानुजीयव्याख्यातनिश्लोकीव्याख्यासमेता भूषणाख्यव्याख्याऽवश्यं संग्रहोचितास्ति, मूल्यं (२५) रूप्यकमात्रं, एतद्ग्राहकाणां द्वादशपारिमितो भगवद्गुणदर्पणाख्य-विष्णुसहस्रनामभाष्यग्रन्थः पारितोषिकं प्राप्नुयात्।

विष्णुसहस्रनाम।

(निरुक्ति-निर्वचन-भगवद्गुणदर्पणभाष्य सहित.)

अनुष्टुप्श्लोकात्मक निरुक्ति व्याख्यासमेत और प्रकृतिप्रत्यय को दिखाके पाणिनिसूत्रों से गर्भित ऐसी निर्वचन नामक द्वितीय व्याख्या से भगवद्गुणदर्पण नामक विष्णुसहस्रनाम भाष्य संपूर्ण छपके तय्यार है. ७ रु. और उक्त भाष्य के अनुसार विष्णुसहस्रनाम का व्युत्पत्तिसहित भाषा में दीपिका नामक ग्रंथ (कीमत रु० १) तथा शाङ्करभाष्य अनुकूल विष्णुसहस्रनाम का व्युत्पत्तिसहित हिंदीभाषा में चन्द्रिका

नामक ग्रन्थ (कीमत १२ आ०) केवल भाषाटीका सहित गुटका की० ८ आना। सो ये चार पुस्तकें अत्यंत सुंदर छोटे बडे अक्षरों में छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं जिन महाशयों को लेने की इच्छा हो, वे शीघ्र सूचना करें।

मदनपालनिघंटु.

वैद्यजनों का परम सहायक और संपूर्ण द्रव्यों के नाम गुण बतानेवाला चमत्कारक प्राचीन ग्रन्थ भाषाटीकासहित छपकर तैयार है. ग्लेज कीमत २। रु० । रफ की० २ मात्र.

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासहित.

यह पुराण ग्रंथ तो सब भारत वर्षमें प्रसिद्धही है सब पुराणोंमें श्रीमद्भागवत परम कठिन है जिसके अर्थविचारमें बडे बडे पंडित तथा शास्त्री लोगोंकीभी बुद्धि रुक जाती है औरभी महात्माओंने कहा है कि " विद्यावतां भागवते परीक्षा " (विद्वानोंकी भागवतमें परीक्षा) तस्मात् इसका वर्णन मनुष्यवाणीसे नहीं हो सक्ता। विशेष यह कि परमप्रिय सुमधुर व्रजभाषामें श्रीमन्नारायणशास्त्रीजीने कीहुई " पदार्थ मुक्तावली " नामक भाषाटीका सहित श्रीमद्भागवत चार प्रकारसे छपता है। जिस एकमें तौ मूल और भाषाटीका। दूसरे केवल भाषा, इसमें श्रीमद्भागवतके प्रत्येक अध्यायके आदि अंतका श्लोक लिखकर शेष श्लोकांक और महापुराणमें कथा कहनेवालोंके उपयोगी सब दृष्टांत पांच सो (५००) टिप्पणीरूपसे लगाकर उसका यथार्थ नाम श्रीमद्भागवतभाषा रक्खा गया है, यह पुस्तक पौराणिक लोगोंके सुभीतेके लिये खुले पत्रोंका रक्खा है। तीसरा प्रकार श्रीमद्भागवतभाषा-शुक-सागर इस नामसे किया है, इसमेंभी ऊपर लिखे हुए प्रकार प्रत्येक अध्यायके आदि अंतका श्लोक आदि लगाकर भागवतके प्रेमी लोगोंके बाचनेके वास्ते जिल्द बनाई है। चौथा केवल श्रीमद्भागवत मूल यह पुस्तकभी पाठक लोगोंके वास्ते बडे अक्षर और खुले पत्रोंका है। इन चार प्रकारोंसे पंडित लोगोंसे पुनः पुनः सुद्ध करवाकर तृतीयावृत्ति हालमें छपती है।

मुहूर्तचिन्तामणि--(भाषाटीकासहित) द्वितीयावृत्ति शुद्धतापूर्वक छपके तैयार है. की. १। रु० ।

षट्पंचाशिका भाषाटीकासहित, यह भाषाटीका बहुत विशाल सुबो[ध] लिखी गई है. इसमें जिस जिस विषयकी अपेक्षा होतीहै तिन सब विषयोंक और ग्रंथोंने समावेश किया है और स्पष्टताके लिये कोष्टकें तथा अन्य आचा[र्य]

श्रीः ।

सविनय-सूचना ।

हारीतसंहिता-वैद्यकग्रन्थ ।

(मूल संस्कृत और भाषाटीकासहित)

समस्त महशयोंको विदित करनेमें आताहै कि,-"हारीतसंहिता"-नामक वैद्यकग्रन्थ सरल हिन्दीभाषानुवाद बनवाकर और शास्त्रीजीद्वारा शुद्ध करवाकर सुन्दर मध्यम अक्षरोंमें छपाकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहै,- लीजिये तो यह ग्रन्थ बहोतही उपकारक और स्वल्प होकरभी सर्व वैद्योंको सबतरहके औषध ज्ञान तथा रोगोंकी चिकित्सा करनेमें अप्रतिम साह्य होगा इस्में कुछ संदेह नहींहै इसवास्ते वैद्य महाशयजी! अभी ज्यादा लिखना बाहुल्य मात्रहै. तथापि इस अपूर्व ग्रन्थको अवश्य संग्रहमें रखकर रोगनिवारणद्वारा निर्मलकीर्तिको प्राप्त करेंगे इस ग्रन्थका मूल्य केवल ३ रु.

श्रीभगवद्गीता गूढार्थदीपिका भाषाटीका

(श्रीचिद्घनानन्द स्वामिकृत)

खुलापत्रा ।

उक्तस्वामिजीनें मूलश्लोक कहकर अन्वयाङ्क देकर पदच्छेद कियाहै फिर पदार्थ कहाहै तिस्के पीछे विस्तारपूर्वक शाङ्करभाष्य, आनन्दगिरी, मधुसूदनी, श्रीधरी आदि अनेक टीकाओंका आशय लेकर भाषामें शंकासमाधानसहित अर्थ कहाहै यद्यपि गीताकी टीका अनेक महात्माओंने कियाहै परंतु अद्यावधि इतना विस्तारपूर्वक टीका किसीनें नहीं कियाहै ग्रन्थसंख्या ३६००० हजार है गीताके प्रेमिजनोंको अवश्य रखने योग्यहै कीमत ७ रु०

ज्योतिषग्रन्थाः ।

बृहज्जातक सटीक १ रु. ८ आ. बृहज्जातक भाषाटीका अत्युत्तम १ रु. ८ आ. वर्षदीपकपत्रीमार्ग (वर्षजन्मपत्र बनानेका) ४ आ. मुहूर्तचिन्तामणि प्रमिताक्षरा टीकासह रफ् रु. १-ग्लेज १ रु. ८ आ. मुहूर्तचिन्तामणि

पीयूषधारा टीका ३ रु. ताजिकनीलकंठी सटीक तन्त्रत्रयात्मक १रु.४ आ. ज्योतिषसार भाषाटीकासहित १ रु. मुहूर्त्तचिन्तामणि भाषाटीका १ रु. मानसागरीपद्धति १ रु. ४ आ. बालबोधज्योतिष २ आ. ग्रहलाघव सटीक १२ आ. चमत्कारचिन्तामणि भाषाटीका ४ आ. जातकालङ्कार भाषाटीका ६ आ. जातकालङ्कार सटीक ६ आ. जातकाभरण १२ आ. लघुपाराशरी सटीक ३ आ. मुहूर्त्तगणपति १२ आ. मुहूर्तमार्तंड सटीक १२आ. शीघ्रबोध भाषाटीका ६ आ. षट्पञ्चाशिका सटीक ३ आ. षट्पञ्चाशिका भाषाटीका ४ आ. भुवनदीपक सटीक ४ आ. जैमिनिसूत्र सटीक चार अध्याय ७ आ. रमलनवरत्न ८ आ. रमलनवरत्न भाषाटीका (मथुराका छापा) १० आ सर्वार्थचिन्तामणि १२ आ. लघुजातक सटीक ६ आ. सामुद्रिक ४ आ. यवनजातक २ आ. पञ्चाङ्गतिथिपत्र संवत् १९५० का .. आ. अर्घप्रकाशज्योतिष भाषाटीका इसमें तेजी मंदी वस्तु देखनेका विचारहै ४ आ. ज्योतिषकी लावणी १ आ. शकुनवसन्तराज भाषाटीकासहित ३ रु. ८ आ. रत्नद्योत भाषाटीका ५ आ. बृहत्मुहूर्त्तसिंधु २ रु.

लक्ष्मीवेङ्कटेशाय नमः ।

गोविन्दराजीयभूषणाख्यया तनिश्लोक्याख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतस्य श्रीवाल्मीकिरामायणस्य

प्रसिद्धिपत्रिका ।

भो भो विद्यापारावारपारीणा इदं विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः तनिश्लोक्याख्यया भूषणाख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतं श्रीवाल्मीकिरामायणम् अत्युत्तमतैलङ्गदेशीयद्राविडदेशीयपुस्तकमालोच्य पण्डितैः संशोधितम्, तच्च सम्प्रति सुव्यक्तैः स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर—मुद्रणयन्त्रे मुद्यते, तस्य च नागेशप्रभृतिविनिर्मिताः सन्ति यद्यपि बह्वचो व्याख्याः, तथापि सहृदयहृदयाह्लादकनानाविधाऽपूर्वार्थान्वेषणे प्रयतमानैरार्यकुलोचितधर्ममर्यादा-

वा नहीं मानते संसारमें सभी पुरुष ई[illegible] अंश हैं स्त्रियोंको पुरुषोंकी कमी नहींहै.इन अबला विचारियोंका जी[illegible]धव्यरूपमें क्यों व्यर्थ करावें. हमारी माताको केवल तेरे दुर्वचनसे कुछ दि[illegible]धव्य मानना पडा फिर तो ईश्वर कृपासे ऐसा सौभाग्य हुवा कि, जिसके प्रतापसे हम ऐसे पंडित भंड संसारमें अवतारित हैं. अब कहिये ! हमारी माताके वैधव्ययोग है वा सौभाग्य ? तुम झूठे तुम्हारे पाठक झूठे हायरे कलियुग!तुझे अपना अधिकार प्रथम क्या इसी अद्भुत रत्नपर करना था,क्या इसीके साथ तेरी मुख्य शत्रुता थी. हां ! तेरा यह प्रयोजन अवसरहै कि, प्रथम शिरोमणि शास्त्रको आक्रमण करूं तो और सभी अंतर्गत होजायँगे परंतु यह अनादि शास्त्र सहसा तेरे आक्रमणमें आक्रमित इस दशामेंभी नहीं होनेका; कुछ दिन सम[illegible] करनेके लिये ज्योतिष रत्नराज पक्षसंकोच किये प्रतीक्षु हैं परिणाममें रत्नरत्नहीहै. [illegible]स समयमें ज्योतिषकी प्रभुता न्यूनहोनेके कारण यहहै कि, ज्योति[illegible]योंके कहे फल पूरे ठीक नहीं लगते. क्योंकि कलिराजने प्रथमावेश ज्योतिषियोंसेही आरंभ उठाया. पूर्व ऋषिलोग यमनियमादि तप और मिताहारी अप्रतिग्राही, योगाभ्यासी, सर्वशास्त्रज्ञ वेदाभ्यासी और नित्य अग्निहो-[illegible] इससे भूत, भविष्य, वर्त्तमान, समाधि, अर्थात् एकाग्र विचारसे [illegible]. अब ज्योतिषी लोग यमनियमादिके स्थानमें दंभलोभादि और [illegible]रके स्थानमें अग्निसम और अप्रतिग्राही के स्थानमें सर्वग्राही, योगा-[illegible] स्थानमें द्रव्यार्जन, प्रपंच शास्त्र, वेदाभ्यासके स्थानमें वेदविक्रय, [illegible]र जितेंद्रियताके स्थानमें स्त्रीलोलुपता, अग्निहोत्रके स्थानमें तम्बाकू. [illegible]रके सांप्रतीय ऋषि होगये तो सर्व शास्त्रज्ञताके योग्य बुद्धि कहांसे [illegible]ना बहुज्ञता और बिना दमादिकोंके चमत्कार फल क्योंकर कहसकें. [illegible]विस्व गायत्रीके उपदेश मात्रसे दक्षिणा निमित्त जप विक्रय और प्रतिग्रह ग्रहण करने लगे तो बुद्धि निर्मल और कही बात सच्ची क्यों [illegible]दाचित् किसीने कुछ परिश्रम पठनपाठनमें किया और कुछ [illegible] पाईभी, तो दंभ और मत्सरमें परिपूर्ण होजाते हैं. ज्योतिषमें [illegible]लक्ष्यस्थान हैं उन युक्तियोंके दूसरेकी प्रभुताका मत्सर

भूमिका ।

अहो ! ईश्वरने ज्योतिषशास्त्र संसारमें कैसा अद्वितीय रत्न दियाहै
वसे मनुष्य पुराकृत और अर्वाक्कृत जो अपने कृतकर्म और उनका
पूर्ण जान सकते हैं. इस अपार संसारमें समस्त वस्तुमात्र उद्यमी
गत हैं. ऐसा कोई पदार्थ नहीं कि, जिससे बुद्धिबलवाला मनुष्य
वा न करसके. केवल जन्म और मरण मनुष्यके अगोचर हैं
रकी ईश्वरता विदित होतीहै. परंतु ज्योतिषशास्त्र ऐसा अनमोल
जिसकी सलाई नेत्रोंमें देनेसे परोक्षीय जन्ममरणभी प्रत्यक्ष
हैं. ब्रह्माजीने जब वेदके चार भाग करदिये तब उसके अंग "शिक्षा
करण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष" ये छः शास्त्र बनाये इनमेंसे प्रत्यक्ष
चमत्कृत होनेसे ज्योतिष शिरोमणि गिना जाता है. अ
य आया कि, वह ऐसा अद्वितीय रत्न शिरोमणि कैसा गिरता
भागता जाता है. कोई इसे पूछताभी नहीं कि, आप कह
न हैं. कदाचित् किसीने पहचान लिया तो भर्त्सना करताहै
वही है जिसने हमारे पितृपितामहादिकोंको अपने चमत्काररूप
नाकर समस्त धन तन दान धर्म्मादि व्यर्थ कार्य्योंमें व्ययकरा
गोगामी और हम तिरस्कार योग्य करदिया, तेरे प्रपंचमें
तते तो उनका उपार्जित व सब हमहींको अनायास मिलने
नेक प्रकारके परिश्रम आजीवनार्थ क्यों करने पडते. अब हम तो ते
ा करेंगे. बाप दादे अज्ञान हुये तो हुये अब हम तो कभी न भूलें
पनी इज्जत बचाइये "कुछआगेबढ़कर" एक और महाशय
बोल उठे कि, अजी साहब ! अलग ही अलग चले जाइये अपना
मारे ऊपर न पडने दीजिये तुम अमंगली हो. हमने सुनाहै
वाहपर तुम्हारे अंजन नेत्रवाले किसीने कहाथा कि, इस कु
है अकस्मात् विवाहोत्तर अल्पकालमें वैसाही होगया. उप